[illegible] शिक्षा

VOL. 14 1984 No. 6,11,12 Vol. 15 No. 2,3,6,10,11

Vol. 16 1985 No. 2,5

G.K.V. Lib. Hardwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
139504

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Stock Verification-2[illegible]

Stock Verification-2[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

079504

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

जनवरी १९८४ वर्ष १४, अंक ६ पूर्णांक १६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

संदेश		१
संपादकीय : किसीकी यादमें	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		४
श्रीमातृवाणी : दुःख झेलना जानो		८
१९२९में माताजीके साथ हुए वार्तालाप		१०
जन्मदिनका महत्त्व		१७
निराशावाद और श्रद्धा इत्यादि		१९
मूलभूत तरीका		२३
सामूहिक साधना		२४
आंतरिक और बाह्य सत्ता		२६
श्रीअरविंद-वाणी : भारतीय राजनीतिज्ञ इत्यादिके बारेमें		२८
श्रीअरविंद-वचन : भौतिक विज्ञान		३०
मानव त्रुटियां		३१
गीर्वाणी		३२
ऋषिवर बोले : नन्दन कानन		३३
सोसायटी समाचार		३६
अतिमानवका ऊपर उठना	श्रीअरविंद	३७

अग्निशिखा वार्षिक रु० १०.००; पुरोधा १४.००; दोनों २२.००
अग्निशिखा आजीवन रु० १७५.००; पुरोधा रु० २२५.००
दोनों मिलाकर रु० ४००.००
पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :
संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र, अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्देश

(किसी साधकको उसके जन्मदिनपर)

मनकी अचंचलतामें, अपने हृदयमें तथा सर्वत्र भगवान्‌की उपस्थिति-की ओर खुलो। निस्तब्ध मन और हृदयमें भगवान् ऐसे दिखलायी देते हैं जैसे शांत जलमें सूर्य।

— श्रीअरविंद

*

दिन रात भागवत सत्ता सदा उपस्थित रहती है।
चुपकेसे अंदरकी ओर मुड़ना काफी है, हम उसे खोज लेंगे।
इस वर्ष तुम्हें यह अनुभूति प्राप्त हो।
मेरे प्यारे बालकको प्रेम और आशीर्वाद।

— माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय :

किसीकी यादमें

इतनी जल्दी उनकी पहली पुण्यतिथि भी आ गई। इसी महीनेकी १९ को सोसायटीके संस्थापक, ओरोविलके स्वप्नद्रष्टा और हमारे प्रिय भाई नवजात, इस पृथ्वीको छोड़कर, किसी अन्य लोकमें चले गये। स्मृति मंजूषाको खोलते ही कितने मनोहर चित्र सामने आ खड़े होते हैं। छोटे बालककी तरहसे उत्साहित होकर, ओरोविलके भावी विभागोंका चित्र खींचते हुए नवजात, अपने कमरेमें श्रीमांके चित्रके आगे गंभीर, ध्यानमें डूबी उनकी सौम्य मुख मुद्रा, अपने कार्यकर्ताओंका क्षेमकुशल पूछते हित-चिंतक नवजात! अदम्य साहससे समर्थ शक्तिके सामने जूझनेवाले, राजस्थानी आनबानके बांकुरे वीरोंकी याद दिलाती ओजस्वी मुद्रा वाले नवजात!

कइयोंके मनमें यह प्रश्न उठता था कि ओरोविल शहरकी ऐसी अभूत-पूर्व और कष्टसाध्य योजनाके संपादनके लिये बड़े-बड़े उद्योगपाति, विद्वान् और आदर्शवादियोंको छोड़कर नवजातजीको श्रीमांने क्यों चुना?

उसका उत्तर शायद अब मिला है। उस योजनाको कार्यान्वित करनेके लिये अपने व्यक्तित्वकी सुधबुध खोकर, संभव-असंभवके पचड़ेमें न पड़कर, पागलोंकी तरह भावीकी ओर टकटकी लगाए काम करनेवालेकी जरूरत थी। जरूरत पड़नेपर उसे अपनी बलि तक चढ़ानेको तत्पर रहना था। इन संभावनाओंको देखकर ही श्रीमांने उनके अनुकूल यह आदमी चुना होगा।

उनकी उस वीर मुद्राको देखकर बरबस मुझे सादियोंसे चली आ रही एक दंतकथाकी याद हो आती है।

किसी छोटी-सी रियासतमें अकालके कारण जल अलभ्य हो गया। ठाकुरने नया कुंआं खुदवाया। बहुत खोदनेपर भी जलका नामो-निशान न मिला तो ज्योतिषी बुलाये गये जो मेष, वृष देखनेके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद, उंगलियोंपर गिनती गिन-गिनकर अंतमें दुःखभरी वाणीमें बोले, "महाराज, भूमि प्यासी है, रक्तकी प्यासी। वह चाहती है बलि। ऐसे वैसे नहीं, हंसते हुए खुशी-खुशी कोई नवविवाहित दंपति अगर उस कुंएमें उतर जायें तो भूमि सहर्ष वारि-दान देगी। नया जोड़ा भी ऐसा हो जिसके अभी कंगन भी न उतरे हों।" सुनकर दरबारमें सन्नाटा छा गया। विषादकी काली छाया सबके मुखको ढकने लगी, हठात् ठाकुरने उसे झटककर दूर फेंक दिया। अंदरसे आते शहनाईके सुरोंकी ओर हाथ बढ़ाकर बोले, "चिंता न करें। अभी-अभी कुंअर विवाह करके लौटेगा। मैं आप सबके सुख-दुःखका साथी हूं। गांवपर संकट आन पड़ा है तो मैं ही उसे दूर करूंगा।" दीवानने हाथ जोड़कर कहा "सरकार, बेटेसे पूछ तो लें।" आत्मविश्वाससे भरी वाणी गूंज उठी। "दीवानजी, मेरा बेटा है। मैं उसे खूब जानता हूं। वह खुशीसे तैयार होगा।"

जैसे ही आंगनमें कोलाहल मचा, दरबार बेटे बहूका स्वागत करने आगे बढ़े। उन्हें आशीर्वाद देकर अलग ले गये। सारी कथा सुनते ही बेटेने उत्साहपूर्वक कहा, "पिताजी मुझसे क्या पूछना है? हां, पराई बेटी जो आज घरमें आई है उससे पूछ लें।" पास खड़ी नववधूने घूंघट उठाकर चमकीले नेत्र और लज्जामिश्रित मधुर मुस्कान भरे सिरको हिलाकर हामी भर दी।

दूसरे दिन सवेरे-सवेरे सारा गांव उमड़ पड़ा। दूल्हा और दुलहन शादीके सारे श्रृंगार समेत कुंएकी सीढ़ियां उतरने लगे। दसवीं सीढ़ीपर पांव धरा कि जलधारा चमकने लगी। नव विवाहित जोड़ा जैसे-जैसे उतरता चला, जल मानों उसका स्वागत करनेके लिये ऊपर उठने लगा . . . और कुछ क्षण बाद वधूकी ओढ़नी और वरके उत्तरीयके सिवा वहां कुछ न था।

हां, तो ओरोविलकी जमीन भी मानों प्यासी थी, और मानों कह रही थी "जो सिर देवे आपना सो चले हमारे संग।" अपना सब कुछ देनेवाले वीर बांकुरे निकले मैया नवजात।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका इसी महीनेमें (३ तारीखको) जन्म हुआ और इसीमें विलय।

हम कोशिश करें कि उनके जीवनसे प्रेरणा लेकर जो हमें सत्य और उचित लगे हम उसके लिये वैसा ही आत्मोत्सर्ग कर पायें।

नये वर्षके लिये हमारा संकल्प हो कि सत्यके पथको किसी कारण भी न छोड़ें, न डरसे, न लालच व लोभसे।

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

—— अनुबेन

दैनन्दिनी

जनवरी

१. एक क्षणके लिये भी न भूलो कि यह सब स्वयं भगवान्ने अपने अंदरसे बनाया है। वे केवल हर चीजमें उपस्थित ही नहीं हैं अपितु स्वयं हर चीज हैं। भेद केवल अभिव्यंजना और अभिव्यक्तिमें है।
अगर तुम यह भूल जाओ तो सब कुछ खो बैठोगे।

२. विश्वके आश्चर्योंका कहीं अंत नहीं है।
हम अपने छोटेसे अंहकारकी सीमाओंसे जितना अधिक मुक्त होते चलें, उतना ही अधिक ये आश्चर्य अपने-आपको हमारे आगे प्रकट करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. जो अपने हृदयके अंदर सुनना चाहता है उससे सारी सृष्टि भगवान्‌की बातें करती है।

४. प्रकृतिमें सब कुछ सहज रूपसे उदार है।

५. अगर तुम अपनी जिम्मेदारीका अनुभव नहीं करते, हमेशा सावधान और परिश्रमी नहीं रहते तो प्रकृति तुम्हारे साथ शरारत करेगी।

६. प्रकृतिकी शरारतको बन्द करना चाहो तो तुम्हें अपना काम यथार्थता और जिम्दारीके साथ करना चाहिए।

७. कुछ भी अधूरा न छोड़ना चाहिए। हमेशा सावधान और जाग्रत रहना चाहिए, तब तुम सुरक्षित रहोगे।

८. कृष्ण वैश्व भगवान् और अन्तस्थ भगवान् दोनोंका प्रतिनिधित्व करते हैं। हम उनसे अपनी सत्ताके अंदर भी मिल सकते हैं और अभिव्यक्त जगत्‌में जो कुछ है, उसमें भी।

९. कृष्णकी लीला रूप रंगोंके पीछे छिपी प्रगतिकी शक्ति।

१०. मांके सभी रूपोंमें काली सबसे अधिक शक्तिके साथ स्पंदनशील और सक्रिय प्रेमको प्रकट करती है।

११. हमें विरोधी शक्योंको अपनी शरारत करनेका अवसर कभी न देना चाहिए। वे जरा-सी निश्चेतनाका भी लाभ उठाती हैं।

१२. विरोधी शक्तियोंको संसारमें इसीलिये सहा जाता है, क्योंकि वे मनुष्यकी सच्चाईकी परख करती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३. सभी पूजा करनेवालोंके प्रति हितैषितापूर्ण सद्भावना, सभी धर्मोंके प्रति प्रबुद्ध उदासीनता।

१४. तुम्हें नैतिकताको छोड़ देने या पानेका तबतक कोई अधिकार नहीं है जबतक तुम अपने-आपको किसी नैतिक विधि-विधानसे ऊंचे और अधिक कठोर विधानके आधीन न कर लो।

१५. तुम नैतिक नियमोंको तभी तोड़ सकते हो जब तुम भागवत विधानका पालन करो।

१६. भगवान्‌की सेवा आत्म-आहुतिकी ऐसी सचाईकी मांग करती है जिसका किसी नैतिकताको पता भी नहीं है।

१७. किसी उद्देश्यकी विजयके लिये हिंसा कभी बहुत अच्छा साधन नहीं होती।

१८. कोई अन्यायद्वारा न्याय, घृणाद्वारा सामंजस्य प्राप्त करनेकी आशा कर सकता है?

१९. भगवान् हर जगह हैं और हर जगह परम रूपसे सचेतन हैं। ऐसी कोई चीज न करनी चाहिए जो भगवान्‌के आगे न की जा सके।

२०. भगवान्‌के अंदर ही संरक्षण है, उन्हींकी शरण लो और समस्त भयको दूर फेंक दो।

२१. सर्वोत्तम सुरक्षा है, भागवत कृपामें अचल श्रद्धा।

२२. आओ, हम अपने-आपको पूरी तरह और सचाईके साथ भगवान्‌को दे दें, तब हम उनके संरक्षणका रस पायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३. समस्त गतिविधियोंका ऐकांतिक रूपसे भगवान्‌की ओर मुड़ना कुशलक्षेम पानेका सबसे अच्छा उपाय है।

२४. मिथ्याभिमानसे दिया गया उपहार न तो देनेवालेके लिये लाभदायक होता है, न पानेवालेके लिये।

२५. दी हुई चीजकी अपेक्षा उपहारके साथ जानेवाले विचार, भावना और शक्ति बहुत अधिक मूल्यवान् और महत्त्वपूर्ण होते हैं।

२६. जब कोई उपहार बिना शर्तके दिया जाता है, तो तुम हमेशा उसे भगवान्‌से आये हुए उपहारके रूपमें ले सकते हो।

२७. दूसरोंपर शासन करनेकी आशा करनेसे पहले तुम्हें अपने ऊपर नियंत्रण रखना चाहिए।

२८. हर एकके साथ धीरज रखना और सहिष्णु होना चाहिए। केवल वही बोलना जो एकदम अनिवार्य हो।

२९. समस्त उपलब्धिके लिये संगठन और अनुशासन आवश्यक नींव है।

३०. अच्छी तरह हुकुम देना जाननेसे पहले तुम्हें अच्छी तरह आज्ञा-पालन जानना चाहिए।

३१. अगर तुम धरतीपर शांति चाहते हो
तो पहले अपने हृदयमें शांति स्थापित करो।
अगर तुम जगत्‌में ऐक्य चाहते हो
तो पहले स्वयं अपनी सत्ताके विभिन्न भागोंको एक करो।

(श्रीमातृवाणी खंड १५से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुःख झेलना जानो

यदि किसी समय तुम्हें कोई गभीर दुःख, दारुण संशय या तीव्र कष्ट हताश कर रहा हो तो शांति और स्थिरता पुनः प्राप्त करनेका एक अचूक साधन है।

हमारी सत्ताकी गहराईमें एक ज्योति चमक रही है जो जितनी चमकदार है उतनी ही पवित्र भी। वह ज्योति विश्वव्यापी भगवान्‌का सजीव और सचेतन अंश है, वह जड़-तत्त्वको जीवन, गरमी और प्रकाश प्रदान करती है। वह उन लोगोंकी सशक्त और अचूक पथप्रदर्शक है जो भगवान्‌का विधान जाननेकी इच्छा रखते हैं। जो उन्हें देखना चाहते हैं, उनकी आवाज सुनना चाहते हैं, उनके आदेशका पालन करना चाहते हैं, यह उनकी आश्वासन और प्रेमसे पूर्ण सहायिका है। उनके प्रति की गयी कोई भी सच्ची और स्थायी अभीप्सा व्यर्थ नहीं जा सकती, उनपर किया गया कोई भी दृढ़ और आदरपूर्ण विश्वास निराश नहीं हो सकता; कोई भी आशा भंग नहीं हो सकती।

मेरे हृदयने भी दुःख झेला है और कातर पुकार की है, दुःखके भारी बोझसे टूटने-टूटनेको होकर, अत्यधिक यंत्रणासे दलित होकर...। पर, हे शांतिदायक भगवान्, मैंने तुझे पुकारा, उत्कंठासे तेरी प्रार्थना की और तेरी दीप्तिमान ज्योतिकी प्रभा प्रकट हुई और उसने मुझे नवजीवन दान दिया।

जब तुम्हारी महिमाकी किरणोंने मेरी संपूर्ण सत्ताके भीतर प्रवेश कर उसे प्रकाशित कर दिया तो मैंने स्पष्ट देखा कि मुझे किस पथपर चलना है और दुःखकी क्या उपयोगिता हो सकती है; जिस दुःखने मुझे निचोड़ डाला था वह इस पृथ्वीके दुःख, अतल वेदना और यातनाकी कितनी हल्की-सी परछाई मात्र है, यह मैंने समझा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो स्वयं दुःख भोग चुके हैं केवल वे ही दूसरोंका दर्द समझ सकते हैं, उसमें हिस्सा बंटा सकते हैं, और उसे हल्का कर सकते हैं। और मैं यह भी समझ गयी हूं, हे शांतिदायक भगवान्, हे परम आत्म-त्यागी, कि हमारे सब कष्टोंके बीच हमें सहारा देनेके लिये, हमारे सारे दुःख दर्द शांत करनेके लिये तूने पृथ्वीके सकल दुःखोंको, बिना किसी अपवादके, जाना तथा अनुभव किया होगा।

पर फिर यह कैसी बात है कि जो तेरे पुजारी होनेका दावा करते हैं, उनमेंसे कुछ ऐसे भी हैं जो तुझे यंत्रणा देनेवाला निर्दयी समझते हैं, तुझे ऐसा कठोर न्यायाधीश मानते हैं जिसने इन सब यंत्रणाओंको स्वेच्छासे भले न रचा हो, पर इनका अनुमोदन तो करता ही है?

नहीं, मैं अब समझ रही हूं कि ये सब कष्ट जड़-पदार्थकी अपूर्णतासे आते हैं, जो अपनी अव्यवस्था और मलिनताके कारण तुझे अभिव्यक्त करनेके अयोग्य हैं; और उससे सर्वप्रथम कष्ट भी तू ही पाता है, इससे असंतुष्ट हो तू उत्कंठासे प्रयत्न और परिश्रम करता है ताकि अव्यवस्थाको व्यवस्थामें, दुःखको सुखमें, विरोधको मिलनमें परिवर्तित कर दे।

कष्ट अनिवार्य नहीं है, वांछनीय भी नहीं। पर जब वह आता है तो हमारे लिये कितना उपयोगी हो सकता है!

प्रत्येक बार जब दुःखके बोझसे हृदय टूटता प्रतीत होता है, तब अंतरकी गहराईमें एक द्वार खुलता है और अधिकाधिक समृद्ध गुप्त रत्नराशि लिये नये-नये क्षितिज प्रकट होते हैं और उनकी स्वर्णिम आभा मरणासन्न जीवनको एक नवीन और अधिक प्रखर जीवन प्रदान करती हुई आती है।

और जब, उत्तरोत्तर अवतरणोंसे होता हुआ मनुष्य उस यवनिकातक पहुंचता है जिसके उठते ही तू साक्षात् प्रकट होता है, तब, हे प्रभु, कौन वर्णन कर सकता है 'जीवन'की उस प्रखरताका जो समस्त सत्ताके अंदर पैठ जाती है, 'ज्योति'की उस शोभाका जो उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिप्लावित कर देती है, 'प्रेम'की उस महिमाका जो चिरकालके लिये उसका रूपांतर कर देती है।
(१९१०)

(श्रीमातृवाणी खंड २से)

१९२९में माताजीके साथ हुए वार्तालाप

[माताजीके वार्तालापोंमे १९२९ वाले वार्तालाप सबसे ज्यादा पढ़े जाते हैं। ये १५ वार्तालाप अंग्रेजीमें हुए थे। बादमें उन वार्तालापोंमें उपस्थित एक शिष्यने स्मृतिके आधारपर उनका प्रतिलेखन कर दिया। श्रीअरविंदने प्रकाशनसे पहले उन्हें अच्छी तरह दोहराया था।

हाल ही में १९२९के तीन अतिरिक्त वार्तालाप प्रकाशमें आये हैं जो यहां पहली बार प्रकाशित हो रहे हैं। ध्यान रहे कि ये प्रतिलेखन श्रीअरविंदद्वारा संशोधित नहीं हैं और न ही इन्हें प्रकाशित करनेके लिये माताजीको दिखाया गया था।

पहले दो वार्तालाप बुलेटिनके पिछले अंकमें प्रकाशित हो चुके हैं, अंतिम यहां प्रकाशित किया जा रहा है।]

२१ जुलाई १९२९

क्या गहने, कपड़े, फर्नीचर आदि जैसी चीजें जिनका आदमी उपयोग करता है उसके प्रभावको ग्रहण करती या उसपर प्रभाव डालती हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी भी चीजमें जिसके साथ तुम कुछ समयतक रहे हो, कुछ ऐसा प्रभाव रहता है जो तुमसे आया हो और उससे यह प्रभाव निकलता है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि किसी चीजको हाथमें लेने मात्रसे तुम उसका सारा इतिहास या उसके स्वामीका इतिहास जान लोगे। यह सच है कि जो चीज लंबे समयतक तुम्हारी चेतनामें रही है उसके ऊपर उस चीजकी अपेक्षा तुम्हारा प्रभाव अधिक रहेगा जिसका तुम कभी-कदास उपयोग करते हो, जिसे तुम हमेशा अपने विचारमें नहीं लिये रहे। उदाहरण-के लिये जिस चीजको तुमने अपने हाथसे बनाया है उसके अंदर उस चीजकी अपेक्षा जिसे तुमने अपने कमरेके एक कोनेमें रख छोड़ा है या बिना उपयोग किये यूं ही डाल रखा है, तुम्हारा अधिक अंश होगा। यह वह चीज है जिसे हम यांत्रिक प्रभाव कह सकते हैं। इसके अतिरिक्त समस्त जड़-तत्त्वमें एक और तरहकी ग्रहणशीलता होती है। यांत्रिक प्रभाव किसी विशेष एका-ग्रतापर निर्भर नहीं होता, वह अपने-आप आता है। लेकिन किन्हीं वस्तुओंमें तुम्हारा प्रभाव सोखा और एकाग्र कराया जा सकता है और इस तरह उनमें जो शक्ति भर जाती है उसे सुरक्षित रखा जा सकता है।

सामान्यतः मानव इन्द्रियां बहुत सीमित होती हैं इसलिये हम उन चीजोंको अनुभव नहीं कर सकते जो बहुत सूक्ष्म होनेके बावजूद प्रायः मूर्त और वास्तविक होती हैं। उदाहरणके लिये ये प्रभाव। इसी तरह कुत्ता उन चीजोंमें गन्ध पा सकता है जिनमें हमें कोई गन्ध नहीं आती। कुत्ता गन्धद्वारा ही अपने मालिकका पता रखता है। हमारी इन्द्रियां सीमित हैं यद्यपि प्रशिक्षणद्वारा हम अधिक शक्ति पा सकते हैं, इन्द्रियोंके क्षेत्रको विस्तृत कर सकते हैं, वर्तमान इन्द्रियोंमें नयी इन्द्रियां जोड़ सकते हैं। कुछ लोग जिन्होंने यह प्रशिक्षण पाया है इतने सफल होते हैं कि लोग उन्हें अपवादिक पुरुष मानते हैं जिनमें चमत्कारपूर्ण शक्तियां हैं लेकिन साथ-ही-साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे लोग भी होते हैं जो केवल इसलिये अपवादिक नहीं हैं क्योंकि उन्होंने उसके लिये आवश्यक प्रशिक्षण पानेका कष्ट नहीं उठाया। कुछ लोगोंमें यह स्वाभाविक प्रतिभा होती है। उदाहरणके लिये अमरीकाके रेड इंडियन धरतीपर कान लगाकर ही सुन लेते हैं कि वहांसे बहुत दूर क्या हो रहा है। मनुष्योंकी अपेक्षा पशु इन्द्रियोंका अधिक उपयोग करते हैं। मनुष्योंने इन्द्रियोंकी स्वाभाविक क्रियाओं-पर नियंत्रण रखनेके लिये मनका उपयोग किया है। हो सकता है कि मनुष्यकी पहली जातियां इस विषयमें हमारी वर्तमान अवस्थाकी अपेक्षा अधिक विकसित थीं।

बेतारके यंत्र अदृश्य स्पंदनोंको ग्रहण और प्रसारित कर सकते हैं। मनुष्य भी इस तरहकी शक्ति विकसित कर सकता है। प्रायः चीजोंके साथ हमारे संपर्क बहुत अनगढ़, अपूर्ण और सीमित होते हैं। जब हम पत्थर देखते हैं तो पत्थरके सिवाय कुछ नहीं देखते लेकिन एक और आंखसे हम केवल पत्थरकी जगह उसकी प्रकृति, उसके स्पन्दन और उसके सर्जनमें लगी सूक्ष्म शक्तियोंको देख सकते हैं।

चीजोंका यह पहलू प्रभावकी क्रियाके लिये द्वार खोल देता है और तुम्हें यहीं एक प्रभाव और दूसरे प्रभावके बीच फर्कको खोजना चाहिये। किसी वस्तुमें और उसके चारों ओर जो क्षेत्र प्रभावको ग्रहण करता, रखता और प्रभाव डालता है उसे हम उसका स्नायविक कोष कह सकते हैं। इस कोषसे विकीरित होकर प्रभाव संचारित होते हैं। कुछ पदार्थ बहुत ग्रहणशील होते हैं और उन्हें आसानीसे स्पंदन-संचारके काममें लगाया जा सकता है। वे सभी जातियां, जिन्होंने गुह्यविद्याओंका अभ्यास किया है, इन चीजोंको जानती थीं और इस ज्ञानसे प्राप्त होनेवाली शक्तिका प्रभावशाली ढंगसे उपयोग करती थीं।

वस्तुओंके इस गुह्य पहलूके संपर्कमें आकर हम किस हदतक उनका पिछला इतिहास जान सकते हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस दिशामें कल्पनाका दरवाजा बहुत अधिक खुला रहता है। किसी वस्तुपर एकाग्रता उसके अतीतसे संबद्ध रूपोंको जगा सकती है, अपने मनको एकदमसे अचंचल रखकर तुम उन्हें कागजपर उतार सकते हो और यह देख सकते हो कि वह क्या बनता है; लेकिन किसी भौतिक वस्तुमें बहुत सीमित मात्रामें चेतना यानी, अचेतन चेतना रहती है, अतः वह वस्तुओंके संस्कारोंको उसी तरह अंकित नहीं कर सकती जिस तरह अधिक पूर्ण रूपसे विकसित चेतना अंकित कर सकती है। इसके अतिरिक्त तुम किसी चीजको जीवनकी सभी घटनाओंमें अपने साथ नहीं लिये रहते, अतः उसके अंदर अनस्तित्वके लंबे अंतराल होते हैं। अगर किसी वस्तुको किसी बक्सेमें या बाहरी घटनाओंसे अछूता, कहीं अलग-थलग रख दिया जाय तो वह युगोंतक अधिक इतिहास अंकित किये बिना, वैसी ही पड़ी रहेगी। उदाहरणके लिये किसी कब्रमें रखी चीजें इसी तरहकी होती हैं। लेकिन अगर वस्तुका किसी ऐसे व्यक्तिने उपयोग किया है जो बहुत सचेतन है और अगर वस्तु उसकी चेतनाकी क्रियामें हिस्सा लेती है तो वह उस चेतनाका कुछ प्रतिबिम्ब ग्रहण कर सकती है और उसके कुछ इतिहासको अंकित कर सकती है। लेकिन सामान्यतः जब लोग ऐसी चीजोंको पढ़नेकी कोशिश करते हैं तो एक पूरा-का-पूरा उपन्यास गढ़ लेते हैं।

क्या कुछ वस्तुएं भाग्यशाली होती हैं और दूसरी अभागी?

यह बहुत कुछ उन व्यक्तियोंपर निर्भर है जो उन वस्तुओंके संपर्कमें आते हैं। इसके लिये कोई पक्का नियम नहीं है। इस मामलेमें स्वतः-सुझाव बहुत हस्तक्षेप करता है। उदाहरणके लिये, यह सच है कि कोई वस्तु ऐसी हो सकती है जिसमें वह हो जिसे तुम गलत स्पंदन कहते हो, ऐसे स्पंदन जिनमें असामंजस्य पैदा करनेकी प्रवृत्ति होती है। इस तरहकी वस्तुद्वारा डाला गया कोई

3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी बुरा प्रभाव तबतक कोई अधिक शक्ति नहीं रखता जबतक कि वह किसी शक्तिशाली जादूगरका सचेतन कार्य न हो। लेकिन एक बार तुम उसपर विश्वास कर लो तो यह तुरंत क्रिया करना आरंभ कर देती है। इस संबंधकी एक कहानी सुनो। यूरोपके लोगोंका यह विश्वास है कि बीचमें छेदवाले सिक्के बहुत शुभ होते हैं। एक व्यक्तिको, जिसे अपने व्यापारमें बहुत कठिनाइयोंका सामना करना पड़ रहा था, एक सिक्का मिल गया और उसने तुरंत सोच लिया और विश्वास कर लिया कि यह उसके लिये आनेवाले सौभाग्यका चिह्न है। उसने उसे अपनी जेबमें डाल दिया और यह अनुभव किया कि अब चीजें ठीक हो जायेंगी। वह श्रद्धा, आशा और ऊर्जासे भर गया। और उस दिनसे उसके मामलोंमें सचमुच सुधार आने लगा, सब कुछ ठीक होने लगा और कुछ वर्षोंमें वह बहुत समृद्ध हो गया और उसकी स्थिति भी विलक्षण हो गयी। वह हमेशा उस भाग्यशाली सिक्केको एक छोटे-से थैलेमें अपने हृदयके ठीक ऊपरकी जेबमें रखा करता था और इस बातकी पूरी सावधानी बरतता कि जब भी कपड़े बदलता तो उस थैलेको भी साथ कर लेता। उसने इस विषयमें अपनी पत्नीको विशेष हिदायतें दे रखी थीं कि वह हमेशा यह देख लिया करे कि थैला हमेशा उसकी जेबमें रखा हो, वह कहीं खो न जाये। जब वह अपनी सफलताके शिखरपर था, तो एक दिन उसने अपनी पत्नीसे थैलेमेंसे वह सिक्का निकालनेके लिये कहा ताकि वे दोनों उसे एक नजर देख लें और अपनी समृद्धिके कर्ताको धन्यवाद दे सकें। पत्नीने यह कहते हुए उसके निवेदनको टालनेकी कोशिश की कि इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। लेकिन पतिने जोर दिया और अंतमें जब सिक्का निकाला गया तो देखा कि उसमें कोई छेद न था। पत्नीने स्वीकार किया कि सिक्का मिलनेके ठीक अगले ही दिन जब वह खिड़कीके बाहर कोट झाड़ रही थी, उसी समय थैला जेबसे निकलकर सड़कपर जा गिरा और सिक्का निकलकर कहीं खो गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। वह न मिला तो उसने उसकी जगहपर दूसरा सिक्का रख दिया, लेकिन उसमें छेद न था। और उसने छेदवाले सिक्केकी तरह शक्तिशाली रूपमें काम किया!

फिर भी, यह संभव है कि किसी वस्तुका उपयोग अच्छी या बुरी शक्तियोंकी एकाग्रताके लिये यंत्रके रूपमें किया जाय, लेकिन इसके लिये बहुत अधिक गुह्य ज्ञानकी और विशेष शक्तियोंके विकासकी आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त शायद अधिकतर चीजोंमें वही प्रभाव होते हैं जिनकी तुम उनमें कल्पना कर सकते हो।

लेकिन क्या कुछ चीजें सचमुच अशुभ नहीं होतीं? उदाहरणके लिये हमने ऐसे घरोंके बारेमें सुना है जो हर रहनेवालेके लिये दुर्भाग्य ही लाते थे।

हो सकता है शुरूमें कोई विरोधी शक्ति हो, किसी तरहका कोई गलत स्पन्दन रहा हो जो अपनी पंक्तिमें और ऐसे ही स्पंदनोंको बुलाता रहता हो। अगर किसी चीजमें अमुक स्पन्दन आ मिलें तो स्वभावत: उसे उसी स्पन्दनको दोहरानेकी आदत हो जाती है। उदाहरणके लिये, वह स्थान, जहां कोई दुर्घटना हुई हो, हमेशा खतरनाक होता है; क्योंकि स्पन्दन लयबद्ध चक्करमें घूमते हैं, वे यांत्रिक रूपसे घूम-फिरकर आते ही रहते हैं, और एक बार जो हो वही दुबारा घटनेकी प्रवृत्ति होती है। यह तब भी सच होता है, जब हफ्तेका कोई दिन तुम्हारे लिये बुरा होता है, तो अगले हफ्ते भी वही दिन तुम्हारे लिये अशुभ सिद्ध होनेकी कोशिश करेगा। अगर तुमने उस दिन झगड़ा किया था, तो संभव है आनेवाले हफ्तोंमें भी उसी दिन तुम्हारे अंदर असामंजस्यपूर्ण अनुभव आयें और तुम विक्षुब्ध हो उठो, जबतक कि तुम सतर्क न रहो और यांत्रिक गति-विधिके बहावमें बहनेसे इंकार न कर दो। जो शक्तिशाली है वह इस गतिविधिको पार करके उसपर विराम लगा सकता है। ऐसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई अभ्यासगत गतिविधि नहीं है जिसपर विजय न पायी जा सके। हो सकता है कि कुछ स्थानोंमें कई चीजोंमें विरोधी स्पंदन हों लेकिन शक्तिशाली इच्छा और चेतना न केवल उन्हें अहानिकर बना सकते हैं बल्कि उनकी प्रकृतिको भी बदल सकती हैं।

कुछ पत्थरोंमें स्पंदनके विशेष प्रकार होते हैं। अगर तुम किसी पत्थरके साथ ठीक तरह व्यवहार करना न जानो तो बहुत संभव है कि वह पत्थर तुम्हारे लिये अशुभ सिद्ध हो। उदाहरणके लिये दूधिया नग सत्ताके सबसे अधिक जड़-भौतिक स्तरमें चेतनाका प्रतीक है। दूधिया नग पहननेवाला व्यक्ति उस चेतनाके स्पंदनका अनुभव कर सकता है; तब वह अचानक बाहरी जगत्में सब तरहकी कठिनाइयों और रुकावटोंसे अवगत हो सकता है। और तब वह अपने अंदर ऐसी त्रुटियां और अवांछनीय वस्तुएं पाता है जिनकी वह कभी कल्पनातक नहीं कर सकता था। ये सारी चीजें मिलकर उसे दुःखी और अभागा बना देती हैं। उसी तरहसे, मोतियोंमें आह्वान करनेकी एक तरहकी शक्ति होती है और काले मोती ऐसी शक्तियोंका आह्वान कर सकते हैं जिनका सामना करनेके लिये तुम तैयार न हो। इसी तरह वैदूर्य, एक तरहकी कामनाकी शक्तिसे जुड़े रहते हैं।

समस्त स्पंदनों और प्रभावोंका तुम्हारे ऊपर, तुम्हारे संकल्पपर और तुम्हारी चेतनापर निर्णायक प्रभाव तुम्हारी प्रतिरोध करनेकी शक्ति और तुम्हारी सर्जक शक्तिपर निर्भर है। अगर तुम्हारे अंदर आवश्यक ज्ञान और आवश्यक बल हो तो संसारमें ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो एक बहुत बड़ी सहायतामें नहीं बदली जा सकती।

वस्तुओं और स्थानोंके प्रभावका वही आधार है जो ग्रहों और नक्षत्रोंके प्रभावका है। निःसंदेह ये खगोलीय पिण्ड व्यक्तिके जन्मपर प्रभाव डालते हैं; अभिव्यक्त विश्वकी समस्त योजना शक्तियोंकी एकमात्र राशि है और किसी एक भागमें परिवर्तन (जो व्यक्तिके जन्मके कारण हो जाता है) दूसरे सभी भागोंकी शक्तियोंके संतुलनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ बहुत गहरा जुड़ा हुआ है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि तुम जड़-भौतिक विश्वकी योजनाद्वारा एकदमसे जकड़े हुए हो, जबतक तुम उसके अंदर हो और उसके विधानोंका अनुसरण करते हो—जिन्हें हम प्रकृतिके विधान कहते हैं—तबतक निःसंदेह तुम्हारे लिये उसमेंसे बच निकलनेका कोई रास्ता नहीं; तुम्हें प्रकृतिकी यांत्रिक गति और स्पंदनको वफादारीके साथ प्रतिध्वनित करना होगा। लेकिन तुम उस योजनासे अलग हटकर खड़े हो सकते हो और अपने-आपको एकदमसे भिन्न पद्धतिमें रख सकते हो, तो उस समय प्रकृतिकी शक्तियोंद्वारा बनायी गयी तुम्हारे जीवनकी समस्त योजना धराशायी हो जाती है। उसे तुम्हारे द्वारा लाये गये उस नये और अदृष्ट तत्त्वके अनुसार फिरसे ढालना और व्यवस्थित करना होता है। योगका यथार्थतः अर्थ है इसी नये तत्त्वको, नयी चेतनाको लाना जो अबतक इस पुराने जगत्‌में हमारी निम्न प्रकृतिकी रूढ़िगत चेतनामें अदृष्ट और अभिव्यक्त है। इसी तरह तुम उन आदतों और विधानोंके इन्द्रजालको तोड़ सकते हो जो तुम्हें अतीतसे बांधे रखते हैं और प्रगति करने और उच्चतर उपलब्धिके लिये दरवाजा खोल सकते हो।

(बुलेटिन अप्रैल ८२)

जन्मदिनका महत्त्व

श्रीअरविंदाश्रममें जन्मदिनको बहुत महत्त्व दिया जाता है। पहले लोग इस दिन श्रीमाताजीको विशेष प्रणाम करने जाया करते थे, अब श्रीअरविंदके कमरेमें जाया करते हैं।

इस बारेमें आश्रमके एक विद्यार्थी मोना सरकारके साथ माताजीकी जो बातचीत हुई थी उसे मोनाने लिख लिया था। यह लेख उसीके आधारपर है। माताजीने कहा :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हां, जन्मदिन सचमुच तुम्हारे जीवनमें एक विशेष दिन होता है यह वर्षके उन दिनोंमेंसे एक है जब परम पुरुष हमारे अंदर उतरते हैं या हम शाश्वतके सामने होते हैं। यह उन दिनोंमेंसे एक है जब हमारी अंतरात्मा शाश्वतके संपर्कमें आती है और अगर हम जरा सचेतन रहें तो हम अपने साथ उनकी उपस्थिति अनुभव कर सकते हैं। इस दिन अगर हम जरा-सा प्रयास करें तो हम बिजलीकी कौंधकी तरह कई जन्मोंका काम पूरा कर सकते हैं। और इसी कारण मैं तुम्हारी चेतनाको जरा ऊपरकी ओर खोलनेकी कोशिश करती हूं ताकि तुम शाश्वतके संपर्कमें आ सको।

मेरे बालक यह बहुत ही विशेष दिन होता है क्योंकि यह निर्णयका दिन होता है, ऐसा दिन जब तुम परम चेतनाके साथ एक हो सकते हो। उस दिन प्रभु हमें हमारे लिये ऊंचे-से-ऊंचे स्तरतक उठाते हैं ताकि हमारी अंतरात्मा, जो शाश्वत ज्वालाका एक भाग है वह अपने उद्‌गमके साथ एक हो सके।

सचमुच यह दिन जीवनमें एक सुअवसर होता है। तुम इतने खुले और इतने ग्रहणशील होते हो कि तुम्हें जो कुछ दिया जाय तुम उसे आत्मसात् कर सकते हो। मैं बहुत-सी चीजें कर सकती हूं, इसीलिए यह इतना महत्त्वपूर्ण है।

यह उन दिनोंमेंसे एक है जब प्रभु हमारे लिये अपना द्वार पूरी तरह खोल देते हैं, मानों वे हमें अभीप्साकी ज्वालाको ज्यादा शक्तिशाली रूपमें फिरसे सुलगानेका निमंत्रण दे रहे हों। यह उन दिनोंमें से एक है जो वे हमें प्रदान करते हैं। हम अपने निजी प्रयासद्वारा भी इसे पा सकते हैं परंतु वह समय साध्य, कठिन और दुष्कर होगा। और यह, यह जीवनमें एक सचमुच सुअवसर है—कृपाका दिन है।

(कुछ दिनों बाद माताजीने कहा)

यह एक गुह्य घटना है जो अनिवार्य रूपसे हमारे जाने बिना इस दिन घटा करती है। अंतरात्मा शरीरको पीछे छोड़ जाती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ऊपर और ऊपर उठती जाती हैं ताकि परम पुरुषमें जाकर, वहां अपने उद्गमसे शक्ति, प्रकाश, आनंदको अपने अंदर फिरसे भरकर आत्मसात् कर ले। वर्षपर वर्ष यही हुआ करता है।

('हार्मनिज आफ लाइट'से)

निराशावाद और श्रद्धा इत्यादि

वह सब जो भगवान्‌को नहीं चाहता, जान-बूझकर निराशावाद-का वातावरण पैदा कर देता है ताकि उन लोगोंका उत्साह भंग करे जो भगवान्‌को चाहते हैं। तुम्हें उसकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिए, बिलकुल नहीं देना चाहिए। यह शैतानका मार्ग है। निराशावाद शैतानका अस्त्र है — वह हमेशा स्थितिको मांप लेता है। यह हमेशा शैतान होता है। जैसे ही तुम निराशावादकी पूंछ देखो तो समझ जाओ कि यह शैतान है। यह उसका बड़ा अस्त्र है।

*

अगर हम अपनी चेतनासे समस्त पराजयवादको निकाल फेंकें तो हम उपलब्धिकी ओर एक बड़ा कदम उठायेंगे।

भागवत कृपापर अपनी श्रद्धाको पूर्ण बनाकर हम अपनी अव-चेतनामें बैठे पराजयवादको जीत सकेंगे।

२०-१२-१९७१

*

तुम्हारी श्रद्धा तुम्हें उन परम पुरुषके रक्षणमें बिठा देती है, जो सर्वशक्तिमान हैं।

२६-४-१९६९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम मार्गपर एकदम अकेले नहीं हो। अगर तुम्हें विश्वास है तो तुम्हें सहायता मिलती है।...

जरूरी यह है कि जो प्रतिरोध करता है उसपर कान न दो, जो विरोध करता है उसपर विश्वास न करो। विश्वास रखो, सच्चा विश्वास, एक ऐसा भरोसा रखो जो बिना हिसाब-किताब किये, बिना मोलभाव किये, तुमसे आत्मदान करवाता है। विश्वास! ऐसा विश्वास जो कहता है: मेरे लिये यह कर दो, मेरे लिये यह कर दो, मैं तुम्हारे ऊपर छोड़ता हूं।

यही सबसे अच्छा उपाय है।

—माताजी

अभीप्सा और प्रार्थना

तुम्हारे अंदर काफी अभीप्सा और काफी तीव्रतावाली प्रार्थना होनी चाहिए। मानव प्रकृतिको यह देन मिली है। भागवत कृपाने मानव प्रकृतिको जो अद्‌भुत उपहार दिये हैं उनमें ये भी हैं लेकिन मनुष्य इनका उपयोग करना नहीं जानता।

*

अगर तुम्हारे अंदर काफी सच्ची अभीप्सा है, या काफी तीव्र प्रार्थना है तो तुम किसी ऐसी चीजको उतार सकते हो जो सब कुछ बदल सकती है, सब कुछ। सचमुच वह सब कुछ बदल सकती है।

*

चाबी है काफी सच्ची अभीप्सा या काफी तीव्र और भावपूर्ण प्रार्थना..कुछ लोगोंको इनमेंसे एक चीज ज्यादा अच्छी लगती है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछको दूसरी। लेकिन दोनोंमें जादुई शक्ति है। तुम्हें उसका उपयोग करना आना चाहिए।

(श्रीमातृवाणी खंड ५)

पृथ्वीके बारेमें माताजीसे प्रश्नोत्तर

प्रश्न—मैं यह जानना चाहूंगा कि आप पिछली कितनी शताब्दियोंसे धरतीपर हैं?

उत्तर—जबसे धरती बनी है मैंने उसे कभी नहीं छोड़ा।

१०-१-१९३५

प्रश्न—आप इस भयंकर अंधकार और अज्ञानके बीच धरतीपर कैसे रह सकती हैं?

उत्तर—मैं धरतीपर इसलिये हूं क्योंकि भगवान्‌का कार्य धरतीपर ही करना है, किसी और कारणसे नहीं।

प्रश्न—आपने प्रार्थना और ध्यानमें लिखा है "मैं जानती हूं कि छोटी-छोटी अपूर्णताओंकी एक बड़ी राशिसे और अनगिनत आसक्तियोंसे पर्दा बना है।" मेरा ख्याल है कि यह पर्दा परम पुरुष और भौतिक जगत्‌के बीच है। आपका तो इसके साथ कोई संबंध नहीं है?

उत्तर—अपना काम करनेके लिये मैं भौतिक जगत् और उसकी अपूर्णताओंके साथ एक होनेके लिये बाधित हूं।

*

प्रश्न—प्रार्थना और ध्यानमें आप कहती हैं "मैं तेरे कार्य और अपने जीवनमें अपने व्यक्तित्व और धरतीमें भेद करनेमें अधिकाधिक असमर्थ होती जाती हूं", क्या इसका यह अर्थ है कि आपका समस्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन भागवत कार्य बन गया और स्वयं आप पृथ्वी बन गयीं ?

उत्तर—हां।

आत्मरति सबसे बड़ी बाधा है

भागवत प्रेम सबसे बड़ा उपचार है।

*

माताजीके प्रति किस तरह खुला जाय ?

उपाय	माताजीका उत्तर
१) आपका सतत या समय-समयपर स्मरण	अच्छा है।
२) आपके नामका जप	सहायक है।
३) ध्यानकी सहायतासे	ध्यानकरनेकी आदत न हो तो ज्यादा कठिन है।
४) जो आपसे प्रेम करते और आपका मनन करते हैं उनसे आपके बारेमें बातचीत करके	खतरनाक है, बातें करते समय प्रायः ऊटपटांग या कमसे कम व्यर्थ चीजें कही जा सकती हैं।
५) आपकी पुस्तकें पढ़ना	अच्छा।
६) आपके विचारोंमें समय बिताना	बहुत अच्छा।
७) सच्ची प्रार्थना	अच्छा।

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूलभूत तरीका

अगर . . . तुम अपने-आपको सरलतासे, समग्र रूपसे और बिना किसी शर्तके दे दो, अगर तुम परम यथार्थ तत्व, परम इच्छा और परम सत्ताके हाथोंमें अपने-आपको पूरी तरह दे दो, समस्त सत्ता और सत्ताके सभी तत्वोंको एक उमड़में बिना हिसाब-किताब किये दे दो तो यह अहंकारसे पिंड छुड़ानेका सबसे अधिक तेज और मूलभूत तरीका होगा। लोग कहेंगे कि यह कठिन है लेकिन उसमें कम-से-कम ऊष्मा तो है, उमंग है, उत्साह, प्रकाश, सुन्दरता और उत्साह-भरा सृजनशील जीवन . . .

और यही वह तरीका है जिसे मैं रचनात्मक तरीका कहती हूं, ऐसा आत्मदान जो पूर्ण, समग्र, सर्वांगीण, बिना शर्त, बिना मोल-भावका है।

केवल अपने बारेमें न सोचने, अपने ही लिये न जीने, अपनेको कुछ न सौंपनेमें, केवल उसके बारेमें सोचनेमें जो परम, सुन्दर, प्रकाश-मय, आनन्दमय, शक्तिशाली, दयालु और अनंत है, ऐसा गहरा आनंद है कि किसी चीजसे उसकी तुलना नहीं की जा सकती।

यही एकमात्र चीज है जो सराहनीय है, जो प्रयास करने योग्य है। बाकी सब समय काटना है।

वही फर्क है जो पहाड़के ऊपर गोल-गोल चक्कर लगाते हुए, मेहनतके साथ, एक-एक कदम करके सैंकड़ों वर्षोंमें चढ़ने और अदृश्य पंख फैलाकर उड़ते हुए सीधे शिखरपर जा पहुंचनेमें है।

—श्रीमाताजी

(बुलेटिन अगस्त ८२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंदसे बातचीत (स्मृतिके आधारपर)

सामूहिक साधना

३१-१-२४

शिष्य: क्या सामूहिक साधनामें वैयक्तिक साधनाकी अपेक्षा कुछ विशेष लाभ है?

श्रीअरविंद: हां, है।

शिष्य: और साथ ही, कुछ हानियां भी हैं?

श्रीअरविंद: हां, कुछ हानियां भी हैं। जो कम विकसित हैं उनके लिये यह ज्यादा लाभदायक है और जो अधिक विकसित हैं उनके लिये हानि है। सामूहिक साधनामें हमेशा किसी ऐसे व्यक्तिकी जरूरत होती है जो किसी बाहरी साधनसे नहीं, अपनी उपस्थिति मात्रसे आवश्यक वातावरण बना सके।

शिष्य: हानिको कैसे कम किया जा सकता है और नेता या नेताओंके भारको कैसे हल्का किया जा सकता है?

श्रीअरविंद: जैसा कि मैंने कहा इसमें किसी ऐसे व्यक्तिकी जरूरत होती है जो अमुक शक्तियोंको दूर रख सके और अपनी उपस्थितिसे ही एक वातावरण बना सके। उदाहरणके लिये जब मैं तुम्हारे साथ ध्यान करता हूं तो मैं उसी चेतनाको नहीं लाता जो मेरे अंदर तब होती है जब मैं अंतर्मुख होऊं। यह किसी व्यक्तिका प्रश्न नहीं है और उसमें कोई सहायता नहीं कर सकता।

२६-२-२४

कुछ दिन पहले श्रीअरविंदने एक नये साधकके बारेमें कुछ कहा था। आज उसीपर बात चल पड़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद : पता नहीं वह योगमें कितना आगे बढ़ सकेगा। इसके अतिरिक्त उसमें एक विशालता है अगर वह गंभीरतासे साधना करे तो उसे विशेष रूपसे प्राणलोकमें बहुत कठिनाइयोंका सामना करना पड़ सकता है। विशालतामें लाभ भी है और हानि भी। अगर वह चल सके, परिणाम काफी समृद्ध होगा। वह 'क'की तरह सीधा और सीमित नहीं है।

शिष्य : मान लीजिये दो व्यक्ति अतिमानसिक योगका अभ्यास शुरू करते हैं और उसमें पूर्णता प्राप्त कर लेते हैं तो हम यह कैसे कह सकते हैं कि एक दूसरेसे अधिक समृद्ध है क्योंकि दोनों ही तो पूर्णता पा चुके हैं। दोनों अतुलनीय होंगे, हर एक अपने तरीकेसे महान् होगा।

और एक शिष्य : मेरा ख्याल है कि पूर्णतामें भी श्रेणियां रहेंगी। तुम मौलिक रूपसे एक चीजको लेकर चलते हो, अंतमें बहुत कुछ उसपर आधारित होगा।

और एक शिष्य : बात कुछ ऐसी है, हम कहते हैं कि साधनाके अंतमें सब कुछ सोना बन जायगा। लेकिन तुम तांबेकी अमुक मात्रा लेकर चलते हो, यह तांबा ही तो सोना बनेगा। अगर शुरूसे तुम्हारे पास अधिक तांबा है तो तुम्हारे पास सोना भी अधिक होगा। है न?

श्रीअरविंद : अधिक समृद्ध परिपूर्ति या उपलब्धि क्यों नहीं हो सकती? लगता है कि तुम यह मान बैठे हो कि अतिमन भव्य एकरसता है। योगियों और सिद्धोंमें श्रेणियां क्यों नहीं हो सकतीं?

तुम यह क्यों मान लेते हो कि सबको एक समान होना चाहिये और किसीको अधिक समृद्ध या बड़ा न होना चाहिये। तुम्हें इस गणतंत्रात्मक विचारको छोड़ देना होगा। अतिमनमें श्रेणियां, कोटियां और ऊंचाइयां हैं और शायद वे मनकी श्रेणियोंकी अपेक्षा ज्यादा स्पष्ट हों।

शिष्य : जब सारी सत्ता ही अतिमानसिक बन गयी तब कोई भेद कैसे रह सकता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद : अगर तुम तात्त्विक सत्ताके बारेमें कहते हो तो तुम्हारे, एक बिल्ली और एक भेड़के बीच कोई भेद नहीं है। 'तत्त्वतः आत्मा एक ही है। तुम प्रकृतिमें क्या लेकर आते हो, क्या प्रकट करते हो, उसमें भेद होता है। अतिमानसमें भी तुम एक प्रकृतिके द्वारा जो प्रकट करते हो वह दूसरी प्रकृतिद्वारा प्रकट की हुई चीजसे भिन्न होगा और इस तरह तुम कह सकते हो कि एक अभिव्यक्ति दूसरी अभिव्यक्तिकी अपेक्षा अधिक समृद्ध है।

शिष्य : मेरा ख्याल है कि मैं अतिमानसीकरणका मतलब कुछ और ही कर रहा हूं। आप कृपया अपना अर्थ समझानेका कष्ट करें।

श्रीअरविंद : अतिमानसीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने अंदर अतिमानसका अवतरण होने देता है और अपनी सत्ताके विभिन्न भागोंपर उसका अधिकार हो जाता है। पूरा अतिमानसीकरण तब होता है जब अतिमन तुम्हारे अंदर भौतिक शरीरतक सभी भागोंपर अधिकार कर लेता है।

(पुराणीकृत 'इवनिंग टाक्स'के आधारपर)

आंतरिक और बाह्य सत्ता

हम कह सकते हैं कि हमारे अंदर दो सत्ताएं हैं। एक सतहपर हमारा सामान्य बाह्य मन, प्राण और शारीरिक चेतना और दूसरी आंतरिक चेतना जो परदेके पीछे रहती है: आंतरिक मन, आंतरिक प्राण और आंतरिक भौतिक चेतना। इनके मिलनेसे आंतरिक स्व बनता है। एक बार यह आंतरिक स्व खुल जाय तो हमारा अंतर सच्चे शाश्वत स्वकी ओर खुलता है। यह अंदरसे अंतरात्माकी ओर खुलता है जिसे इस योगकी परिभाषामें चैत्य पुरुष कहते हैं जो हमारे उत्तरोत्तर नये जन्मोंको सहारा देता है और हर जन्ममें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये मन, प्राण और शरीरको धारण करता है। यह ऊपरकी ओर, आत्माकी ओर खुलता है जो अजन्मा है और सचेतन रूपसे उसे पाकर हम परिवर्तनशील व्यक्तित्वको पार कर जाते हैं और मुक्ति पाकर अपनी प्रकृतिपर पूरा स्वामित्व पा लेते हैं।

*

मनुष्यके अंदर हमेशा दो अलग-अलग चेतनाएं होती हैं। एक बाहरी जिसमें वह साधारणतः निवास करता है, दूसरी भीतरी, जो छिपी रहती है, जिसके बारेमें वह कुछ नहीं जानता। जब आदमी साधना करता है तो भीतरी चेतना खुलने लगती है और आदमी अंदर बैठकर सब तरहकी अनुभूतियां पाने लगता है। जैसे-जैसे साधना प्रगति करती है तो आदमी अधिकाधिक इस आंतरिक चेतनामें रहने लगता है और बाहरी चेतना अधिकाधिक उथली होने लगती है। शुरू-शुरूमें आंतरिक चेतना केवल एक स्वप्न और बाह्य चेतना वास्तविक जीवन मालूम होती है लेकिन आगे चलकर आंतरिक चेतना वास्तविक जीवन बन जाती है और बाह्य चेतना छिछली, भ्रांत और अधिकाधिक सतही मालूम होने लगती है। आंतरिक चेतना प्रगाढ़ शांति, ज्योति, आनंद, प्रेम, भगवान्‌के सामीप्यका स्थान, माताजीका मंदिर बन जाती है। तब आदमी दो चेतनाओंसे परिचित हो जाता है: एक आंतरिक दूसरी बाह्य। दूसरीको भी पहलीकी भांति शांति, ज्योतिका स्थान और मांका मंदिर बनाना है।

(श्रीअरविंदके पत्रोंके आधारपर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय राजनीतिज्ञ इत्यादिके बारेमें

७-८-१९२६

बात जापानके बारेमें हो रही थी। उसके बीच श्रीअरविंदने कहा, जापानी बहुत ज्यादा चतुर चालाक होते हैं। वे व्यर्थके खतरे मोल नहीं लेते। वे कुछ करनेसे पहले अपना रास्ता टटोल लेते हैं। जब उन्हें लगता है कि सारी परिस्थितियां उनके पक्षमें है, विजयकी पूरी संभावना है तभी वे कोई कदम उठाते हैं। जरूरत हो तो वे ऐसे अवसरके लिये पचास वर्षतक इन्तजार कर सकते हैं।

शिष्य—और भारतीय राजनीतिज्ञोंकी विशेषता क्या है?

श्रीअरविंद—वे कभी कोई काम ठीक समयपर नहीं करते और जो कुछ करते हैं, बुरी तरह करते हैं, (हंसी) उनका वास्तविकताके साथ कोई नाता नहीं है। वे देखते हैं कि अंग्रेज इंग्लैंडमें क्या कर रहे हैं और बस उसीको यहां लागू करनेकी कोशिश करते हैं, वह भले यहांके लिये एकदम अनुपयुक्त क्यों न हो। वे सभी राजनीतिक नारे और शब्दाडम्बर सीखकर उनका अपनी बोलचाल-में प्रयोग करते हैं, अपने कार्यमें नहीं। उनके दिमाग बहुत चलते हैं, उनमें भांति-भांतिके, भिन्न-भिन्न रूपोंके विचार भरे रहते हैं जो किसी कामके नहीं होते।

शिष्य—ऐसा क्यों है?

श्रीअरविंद—यह मायावादके कारण है। हमारे लोग अपने मनमें बहुत सूक्ष्म बन गये हैं और राजनीतिक लोग प्रायः इसी स्तरके हैं और फिर यहांकी शिक्षा-पद्धति भी इस दुर्गतिके लिए जिम्मेदार है।

शिष्य—क्या इंग्लैंडकी शिक्षा-पद्धति यहांकी प्रचलित पद्धतिसे भिन्न है?

श्रीअरविंद—हां, यहां वे केवल लिपिक चाहते हैं इसलिये शिक्षा-पद्धति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी सिर्फ लिपिक तैयार कर सकती है। लेकिन हमारे राजनीतिक लोगोंको जिन कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता है उनसे उन्हें कुछ प्रशिक्षण मिल जाता है। हिन्दुस्तानमें ऐसे काफी लोग हैं जो अच्छे प्रशासक बन सकते हैं पर राजनीति और ही चीज है।

शिष्य—मैकालेने कहा है कि बंगालियोंकी तरह कोई और जाति विदेशी जूएके लिये उपयुक्त नहीं है।

श्रीअरविंद—उस समय बंगालियोंकी दशा सचमुच खराब थी पर मैकालेको अतिशयोक्तिकी आदत थी। बंगाली निश्चय ही अन्य दास जातियोंसे अधिक खराब नहीं है। विदेशी शासनके नीचे रहनेवाले यूनानी निश्चय ही बंगालियोंसे अच्छे न थे।

*

श्रीअरविंद—अगर हम अतिमानसको नीचे लानेमें सफल हो जाएं तो जगत्में एक नया तत्व आ जायगा जो लोगोंको आध्यात्मिकताकी ओर आकर्षित करेगा।

शिष्य—उन्हें जो इसके योग्य हैं?

श्रीअरविंद—नहीं, हमेशा योग्य व्यक्ति ही इस जीवनकी ओर आकर्षित नहीं होते। आज अमरीका जैसे सुदूर देशमें भी लोग हमारे योगकी ओर खिंच रहे हैं।

शिष्य—हिन्दुओंके लिये किसी प्रकारके आन्दोलनकी जरूरत है और उसे कैसे लाया जा सकता है?

श्रीअरविंद—तुमने भारतका इतिहास पढ़ा है? महाराष्ट्रमें शिवाजी और बंगालमें प्रतापादित्यका उदाहरण ले लो। स्वदेशी आन्दोलनके दिनों सभी नेता किसी-न-किसी गुरुसे प्रभावित थे। लोगोंपर दादा भाई नारोजी आदिकी अपेक्षा रामकृष्ण और विवेकानन्दका असर ज्यादा था।

शिष्य—स्वदेशी आन्दोलनके कार्यकर्ताओंमें और आजकलके राज-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीतिक लोगोंमें बहुत फर्क है। पहले वे कार्यकर्ता गीतासे प्रेरणा लेते थे, आजके लोग गीताका बहिष्कार कर रहे हैं, वे आध्यात्मिकताके नामसे हंसते हैं। उन्हें बोलशिविज्म या ऐसे ही आदर्श आकर्षित करते हैं।

श्रीअरविंद–इसी कारण उनका ह्रास हो गया है और वे कुछ कर नहीं पाते। वे बदली हुई परिस्थितियों और समयकी आवश्यकताको देखे बिना पिछले आन्दोलनके बाहरी रूपको अपनाते हैं।

शिष्य—हमारे आजके नेता और कार्यकर्ता अधिकतर आध्यात्मिक जीवनसे खाली हैं।

श्रीअरविंद—मैं व्यक्तियोंके बारेमें कुछ नहीं कह सकता, परंतु हिन्दुओंके लिये केंद्रीय वस्तु है आध्यात्मिकता और कोई भी बड़ा आन्दोलन आध्यात्मिकताके बिना नहीं चल सकता...

हस्पताल बनानेका विचार ईसाई मिशनरियोंसे नहीं आया। स्वयं उन्होंने यह बौद्धोंसे सीखा था।

(१९२६में हुई यह बातचीत स्मरण शक्तिके आधारपर लिख ली गयी थी। इसकी प्रामाणिकता इसी तरहकी और बातोंकी तरह निश्चित नहीं है।)

श्रीअरविंद-वचन :

भौतिक विज्ञान

भौतिक ज्ञान, बाहरी चीजोंके ज्ञानका चाहे अधिक-से-अधिक विस्तार हो जाय, वह दूर-दूरके सौर मंडलोंकी खबर ले आये, पृथ्वी और सागरोंकी अधिक-से-अधिक गहराइयां छू ले, भौतिक तत्त्व और ऊर्जाकी सूक्ष्म-से-सूक्ष्म शक्तियोंका भी पता लगा ले, फिर भी हमारे लिये इससे कोई तात्विक लाभ न होगा, यह वह चीज न होगी जिसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त करनेकी हमें सबसे अधिक आवश्यकता है। इसीलिये भौतिक विज्ञानकी चौंधियानेवाली विजयोंके बावजूद, जड़वादका शास्त्र अंतमें चलकर असहाय और व्यर्थ मत सिद्ध होता है। इसीलिये अपनी सभी उपलब्धियोंके बावजूद, चाहे वह कितनी भी सुख-सुविधा पा ले, फिर भी भौतिक विज्ञान कभी मानवजातिके लिये सत्ताका आनंद और उसकी पूर्ति नहीं ला सकता। हमारा सच्चा आनंद हमारी समस्त सत्ताके विकासमें, जीवनके समस्त क्षेत्रकी विजयमें, बाह्यके साथ-साथ और बाह्यसे बढ़कर, आंतरिक जीवनमें प्रकट और गुप्त स्वभावमें है। हमारी सच्ची पूर्णता, हमने जिस स्तरपर शुरू किया था उसीपर बड़े-बड़े चक्र बनानेसे नहीं, उनके पार जानेसे आयेगी।

('लाइफ डिवाइन')

मानव त्रुटियां

मानव प्रकृति त्रुटियोंसे भरी है और इससे भिन्न हो भी नहीं सकती। लेकिन उसमें अन्य तत्त्व और संभावनाएं भी हैं जो यद्यपि पूरी तरह शुद्ध तो नहीं होतीं, पर मनुष्यका पूरा रूप देखनेके लिये उन्हें जानना भी जरूरी है। लेकिन यह जरूरी नहीं है कि मनुष्यके बारेमें सत्य जाननेसे दोष-दर्शनकी वृत्ति आये। उससे तुम्हारे अंदर चुपचाप अलग-थलग रहनेकी वृत्ति आ सकती है, लेकिन उसमें निराशा या कटुता बिलकुल नहीं होती। उसमें चैत्य उदारता हो सकती है जो सब प्रकारके दोष देख सकनेके बावजूद, प्रेम और सहायता करती है। आध्यात्मिक चेतना किसी ओरसे आंखें मूंद नहीं लेती, न उसे कभी धोखा होता है, न वह घृणा करती है, क्योंकि वह बाहरी आवरणके पीछे छिपे उस भागवत तत्वको देख सकती है जो अभीतक बाहर प्रकट नहीं हुआ है।

('फ्युचर पोएट्री')

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीर्वाणी

अभ्यासतोऽन्तर्जले नलिनं प्रफुल्लं
ज्ञातं मया स्वभवने स्फुरति प्रकाशः।
कृत्वा प्रकाशमचलं निजध्यानयोगात्
शश्वत्सुखे सततमग्नमना अभूवम्॥

अभ्याससे मेरे हृदयमें (आत्म-ज्ञान रूपी) कमल विकसित हुआ और मैं जान गयी कि स्व-प्रकाश मेरी देहमें ही स्थित है। तब मैंने ध्यानपूर्वक प्रकाशको स्थिर किया और नित्य सुख प्राप्त करने लगी।

आकाशो भूर्वायुरापोऽनिलश्च
रात्रिश्चाहश्चेति सर्वं त्वमेव।
तत्कार्यत्वात्पुष्पमर्घादि च त्वं
त्वत्पूजार्थं नैव किंचिल्लभेऽहम्॥

तू ही गगन, भूतल भी तू ही। तू ही दिन, पवन और रात। अर्घ्य, चंदन, पुष्प, पानी भी तू ही। तू ही सब कुछ है, तो फिर तुझे क्या चढ़ाऊं?

त्वं नासि नाहं न च तत्रध्येयं
ध्यानं न तत्रास्ति च सर्वकारकः।
पश्यन्ति नो तत्र च नेत्रहीना
शिवं विपश्यन्ति गुणाभिरामाः॥

वहां न तू है, न मैं हूं, न ध्येय है और न ध्यान। सर्वकर्मी (सर्वकारक परब्रह्म) भी वहां खो जाते हैं। अन्धोंको तो वहां कुछ नहीं दीखता किंतु सहज गुणियोंको परमशिवके दर्शन हो जाते हैं।

(भुवनवाणी प्रेस लखनऊसे प्रकाशित 'लल्द्यद'से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषिवर बोले :

नन्दन कानन

मेरे लिए ऋषिवरके आश्रममें जाना किसी मंदिरमें प्रवेश करनेसे कम न था। लेकिन उस दिन पहुंचते ही लगा मानों वातारवणमें कुछ अजीव-सा तनाव छाया है। खैर ऋषिवरके आनेका समय हो रहा था। मैं हमेशाकी तरह एक कोनेमें जाकर बैठ गयी। ऋषिवर आते ही बोल उठे—क्यों बच्चों, आज हमारी सभामें यह तनाव क्यों छाया है ?

सभी आश्चर्यचकित हो एक दूसरेको देखने लगे मानों पूछ रहे हों—कैसे जाना ऋषिवरने ? तभी अंजु बोल उठी—ऋषिवर अभी-अभी तनया और सुधाकरमें अच्छी लड़ाई हुई थी। सुधाकरने तमतमाये चेहरेके साथ अंजुको देखा मानो कह रहा हो—"हुं, बड़ी आई चुगलखोर कहीं की। तनया बोल उठी—आज सुबहसे इसपर न जाने क्यों लड़ाईका भूत सवार दीखता है बेमतलब मुझसे उलझ पड़ा।

ऋषिवरने ज्यों ही स्नेहभरी दृष्टि सुधाकरकी तरफ फेरी, अपने-आप उसकी आंखें नीची हो गयीं, चेहरेसे लालिमा पुंछने-सी लगी। उठकर बोला—जी हां, गलती मेरी है, मैं स्वीकार करता हूं। आज पता नहीं क्यों सुबहसे मैं अशांतिका अनुभव कर रहा हूं, शरीर और दिमाग दोनों परेशान हैं ऐसा लगता है, मानों कोई बुरी चीज मेरे अंदर घुस गयी है।

ऋषिवर सुधाकरकी पीठ थपथपाते हुए बोले—तुमने अपना अच्छा अध्ययन किया। तुम्हारे न जानते हुए कोई विरोधी शक्ति अंदर घुस गयी जो तुम्हें सुबहसे अशांत बनाये है।...

मंजुला अपनी बात पूछनेसे अपने-आपको रोक न पायी, बीचमें बोल उठी—ऋषिवर, ऐसा तो मेरे साथ बहुत बार हुआ है। मैं उस चीजको देख तो नहीं पाती लेकिन कई बार यह अनुभव करती हूं मानों कोई गलत विचार, विरोधी क्रिया न चाहते हुए भी अंदर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घुस रही है और फिर वह कुछ-न-कुछ गड़बड़ करवा कर छोड़ती है। कई दिनोंसे मैं यह जानना चाहती थी कि ऐसी अवस्थामें हमें क्या करना चाहिए?

ऋषिवर बोले—बहुत अच्छा प्रश्न है। आओ, आज मैं तुम्हें इन विरोधी शक्तियोंके आक्रमणके बारेमें बताऊं ताकि तुम उनसे पिण्ड छुड़ानेका पूरा-पूरा प्रयास कर सको।

देखो, तुम सही और गलत विचारोंमें तो आसानीसे फर्क कर सकते हो। हो ना? इसका सबसे अच्छा तरीका यह है कि सही विचार, सही क्रियाएं तुम्हारे अंदर अपने-आप ही एक प्रकारकी सहज प्रसन्नता-को लाती हैं जब कि गलत विचार या क्रियासे हमेशा अंदर उथल-पुथल और हलचल पैदा होती है। तुम्हारे लिए करने लायक चीज यह है कि जैसे ही तुम्हें लगे कि कोई गलत विचार तुमपर हमला करने जा रहा है तो उससे लड़नेकी ठान लो। हाथापाई नहीं, यह शांतिकी लड़ाई होगी। यानी जहांतक संभव हो तुम शांत और स्थिर रहो। अगर ये आक्रमण किसी व्यक्तिके प्रति बुरे सुझावोंके रूपमें आयें तो उन्हें अपने मनसे उसी तरह झाड़ फेंकनेकी कोशिश करो जिस तरह तुम अपने कपड़ोंसे धूल झाड़ते हो।

लेकिन ऋषिवर यह करना बहुत कठिन है ना? मैंने एक-दो बार कोशिश की लेकिन सफलता नहीं पायी। मान लीजिये कोई मेरे साथ झगड़ा कर रहा है, मैं मन-ही-मन दोहराता हूं—मैं गुस्सा नहीं करूंगा, और अगर सामनेवाला कुछ अधिक अपशब्द कहता है तो अचानक मैं क्षणभरमें मैं अपना निश्चय भूल जाता हूं, मेरे अंदरसे गुस्सेकी ऐसी आग भड़क उठती है कि तब लगता है कि इससे अच्छा था कि यूं अपने गुस्सेको जब्त करनेकी बजाय शुरूमें ही उसे निकाल बाहर करता। सुधाकर बोला।

वाह, सुधाकर वाह। तुम तो खुद ही अपने प्रश्नका उत्तर दे रहे हो। तुमने अभी कहा, "गुस्सेको जब्त करना।" यानी जब सामने वाला बोल रहा हो तो तुम केवल अपने मनको 'शांत रहो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शांत रहो', की ऊपरी थपकियां देते हो, तुम्हारे अंदर बहुत खुदर-बुदर चलती रहती है जो लावेकी तरह फूट पड़ती है, इसीलिये मैं कह रहा हूं कि केवल शब्द मत बोलो, शब्दोंमें सचमुच शक्ति लानेकी कोशिश करो ताकि वे तुम्हारे मन और शरीरपर अपना प्रभाव डाल कर तुम्हें सचमुच शांत कर सकें।

लेकिन ऋषिवर यह शक्ति हम कैसे ला सकते हैं, तनया बोल उठी।

तुम्हें अपने-आपको पहले दृढ़ बनाना होगा फिर श्रद्धा और विश्वासके साथ भगवान्‌को पुकारना होगा। अगर तुम सच्चे दिलसे पुकारोगे तो सहायता जरूर मिलेगी।

तभी राजीव बोल उठा—लेकिन ऋषिवर, मेरी समझमें यह बात नहीं आती कि जब हम अच्छे बच्चे बननेका, सब कुछ ठीक तरीकेसे करनेका भरसक प्रयत्न करते हैं फिर भी ये, जिन्हें आपने विरोधी प्रहार कहा, क्यों आते हैं।

राजीव, तुम्हारा सवाल बहुत ठीक है। जब आदमीको लगता है कि मैं सचमुच अच्छे-से-अच्छा करनेकी कोशिश कर रहा हूं और तब ऊटपटांग क्रियाएं या सुझाव आक्रमण करें तो आदमी हतोत्साह होकर बहुत बार प्रयास करना छोड़ देता है और उसकी पूरी संचित कमाई आक्रमणके एक ही बहावमें बह जाती है। तब तुम्हें सबसे अधिक सावधानी इस बातकी बरतनी चाहिए कि भले आक्रमणोंपर आक्रमण हों, कभी उनके सामने हथियार मत डालो। और इसके करनेका सबसे बढ़िया तरीका यह है कि तुम यह मानकर चलो कि चूंकि मैं विरोधी शक्तियोंको नहीं चाहता इसलिए संभव है वे मुझपर अधिक जोरदार प्रहार करें। मैं इन्हें अपने रास्तेमें आनेवाली परीक्षाके रूपमें लूंगा। देखूं, परीक्षामें कहां तक उत्तीर्ण होऊंगा। और तुम पहलेसे कहीं अधिक निश्चय और श्रद्धाके साथ इनका मुकाबला करनेको तैयार होगे। बिना अपवाद तुम सबने जरूर इसका अनुभव किया होगा कि अगर तुम्हें गुस्सा आ रहा हो तो उस वक्त फूट पड़नेकी जगह शांत बने रहो, उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रहारको जाने दो तो तुम्हें ठोस अनुभव होता है कि तुमने अपने जीवनमें एक कदम आगे बढ़ाया। होता है न? यानी तुम जीवनकी अनगिनत परीक्षाओंमेंसे एक छोटी-सी परीक्षामें पास हो गये।

'जी हां, यह सच है।' समवेत स्वर सुनाई दिया।

इतनेमें घंटीकी टन सुनायी दी। ऋषिवर बोले— लो, बच्चो, फलाहारकी घंटी बज गयी। आजकी बैठक अच्छी रही, मैं आशा करता हूं यह भी कोई सुन्दर फल लायेगी।

"अच्छा, हम कल फिर आयेंगे, ऋषिवर" कह कर सब बच्चे हंसी-खुशी उठ गये।

वातावरण फिर हमेशाकी तरह मधुरतासे गमक उठा। तनया और सुधाकर एक दूसरेका हाथ थामे निकल रहे थे।

उस दिन भी मैं भाव-विभोर हो उठी। प्रणाम कर ऋषिवरसे बोली—आपका आश्रम सचमुच नन्दनकाननके जैसा है, जो आता है किसी-न-किसी सुन्दर उपहारके साथ लौटता है।

ऋषिवर मुस्कराये, बोले, चलो, तुम भी कुछ फलाहार कर लो।

सोसायटी समाचार

नवम्बर और दिसंबरके महीनोंमें, १७ नवम्बर, माताजीके शरीर त्यागकी १०वीं वार्षिकी, २० नवम्बर समाधि-दिवस, २४ नवंबर सिद्धि-दिवस, ५ दिसंबर, श्रीअरविंदके शरीर-त्यागकी ३३ वीं वार्षिकी और ९ दिसंबर समाधि-दिवसपर सुबह आश्रममें और शामको क्रीड़ांगणमें ध्यान हुआ। १७ नवंबर दर्शनार्थियोंने माताजीके कमरेके दर्शन किए और २४ नवंबर और ५ दिसंबरको श्रीअरविंदके कमरेके।

इन विशेष दिनोंपर सोसायटीकी शाखाओं और केंद्रोंमें माताजीका

(शेष आवरण पृ० ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

079504

अतिमानवका ऊपर उठना

एक देवताने अपने-आपको दलदलमें छिपा रखा है। सौंदर्य और पूर्णता गंदगीकी राशिमें अविकसित पड़े हैं। अपने सारके साथ जड़-भौतिकमें यही भगवान्की लीला है।

अणुके अंदर वह सारे संकल्प, समझ और आनंद छिपे हुए हैं जिन्होंने यह सृष्टि रची है। वे मनुष्यमें उभरे तो हैं पर स्वयं अपने ही अधिप्रकाशसे चुंधियाए हुए पलकें झपका रहे हैं। अपने-आपसे और एक दूसरेसे हक्के-बक्के हुए वे एक दूसरेसे ठोकरें खाते, अंधे होकर प्रयासमें भिड़े हुए हैं, क्योंकि वे उच्चतम मनुष्यमें भी अपना ऐक्य और सामंजस्य पूरी तरह उपलब्ध नहीं कर सकते।

हमारी भौतिक प्रकृतिका बाहरी चेहरा और आरंभ-विंदु है एक ऐसा अज्ञान जिसमें समस्त ज्ञान भरा पड़ा है, एक जबर्दस्त जड़ता जिसमें सभी वैश्व शक्तियां असहाय होकर प्रयास कर रही हैं। ऐसी संज्ञाहीनता जिसमें रोके हुए समस्त उपस्थित आनंदका दुख-दर्द और तनाव छिपा है।

इसे पर्देके पीछेसे धीरे-धीरे परंतु कठिनाईके साथ, फिर भी अनिवार्य रूपसे जागती हुई आत्मा ही जीवनका रहस्यमय अर्थ है। इन जमा की कठिनाइयोंके पूर्ण जागरणको चरितार्थ करनेकी शक्ति ही सभी युगोंमें भगवान्की मनुष्यको देन है। अपने वैश्वभावापन्न व्यष्टिगत सांचेमें दिव्य ज्ञान, संकल्प और आनंदकी पूर्णता और एकता ही मनुष्यकी नियति है। उसका भगवान्की ओर आरोहण और अतिमानवमें उन्मीलन है।

विकसित मन ही मनुष्य है, अविकसित अतिमानस ही उसके अंदर अतिमानवको छिपाये हुए है।

(बुलेटिन अगस्त ८२)

—श्रीअरविंद

---

*श्रीअरविंदने यह नोट शायद १९२०के आसपास लिखा था। शीर्षक संपादकका दिया हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Love in her was wider than the universe,
The whole world could take refuge in her single heart.

Sri Aurobindo

Arvind Exports (P) Ltd.

Exporters of Engg. Goods, Pesticides, Chemicals, Ceramics, Readymade Garments & Handicrafts etc.

Calcutta Head Office :

75c, Park Street,
Calcutta - 700 016
INDIA

Bombay Office :

76, 77 Atlanta, Nariman Point
Bombay - 400 021
INDIA

Phones:

Offi: 240277 • 240367
Resi: 814512
Telex: 011-4104
Gram: "ARVIEXPO"

Offi: 249065 • 248642
Resi: 478368
Telex: 021-7984
Gram: "AUROEXPORT"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसे भगवान्‌के साथ ऐक्य प्राप्त है उसके लिये हर जगह भगवान्‌का पूर्ण सुख और आनंद है। वह हर जगह और हर परिस्थितिमें हमारे साथ रहता है।

—श्रीमां

चादर, शाल, दोशाले थोक खरीदनेके लिये पत्र-व्यवहार करें :

यूनिक स्टोर्स

घास मंडी; लुधियाना

दूरभाष : २५४४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वांगीण बाल-विकास

लेखक—डा० सीताराम जायसवाल

निदेशक, भारतीय शिक्षा शोध संस्थान

सरस्वती कुंज, लखनऊ

यह ग्रंथ श्रीमां और श्रीअरविंदके आलोकमें लिखा गया है। इसकी उपयोगिताके विषयमें पद्मविभूषण डा० घनानंद पांडे, भूत-पूर्व कुलपति, रुड़की विश्वविद्यालय लिखते हैं :

"यह पुस्तक सही मायनेमें आचार्यों व अभिभावकों एवं आमतौर-पर शिक्षाविदोंका मार्ग-दर्शन करेगी, इसमें कोई संदेह नहीं है।"

श्रीअरविंद आश्रम पांडिचेरीके साधक, दार्शनिक एवं शिक्षाविद् डा० इन्द्रसेनका मत है :

"डा० जायसवालजीने अत्यंत सरल प्रेरक भावमें, विशाल परि-प्रेक्ष्यमें . . . इस विषयको रखा है। इसमें भारतीय संस्कृतिका आधार है, भारतीय दर्शनका दृष्टिकोण है, भारतीय मनोविज्ञानका समग्र भाव है। श्रीअरविंदसे प्रेरित तथा श्रीमाताजीद्वारा समूर्त रूपमें विकसित सर्वांगीण शिक्षासे भी वे अच्छे परिचित हैं। . . . विश्वास है यह उपयोगी सिद्ध होगा।"

डिमाई पक्की जिल्द०, पृ० संख्या ३७२, मूल्य पचास रु० मात्र।

अग्रिम धन भेजनेपर डाकखर्चकी पूरी छूट। अपना आर्डर निम्नलिखित पतेपर भेजें :—

सरस्वती शिशु मंदिर प्रकाशन

कृष्ण गंगा, मथुरा (उ० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्वन्यांकित संगीत, श्रीअरविंद और माताजीकी पुस्तकोंका पाठ, ध्यान इत्यादिका कार्यक्रम हुआ।

श्रीअरविंद स्वाध्याय केंद्र और श्रीमां श्रीअरविंद निकेतनके तत्वावधानमें अमरनाथ विद्या आश्रम, मथुरामें १७से २३ अक्तूबर, ८३ तक श्रीअरविंद सोसायटी उत्तरप्रदेशका तेरहवां वार्षिक सम्मेलन तथा स्वाध्याय साधना सत्संग संगम हुआ। ७ दिनके शिविरमें १४७ लोगोंने भाग लिया। आश्रमके श्री चम्पकलालने भी इसमें हिस्सा लिया। 'साधना और जीवन', 'सच्ची शिक्षा', 'कलके जगत्‌में भारतका स्थान' इत्यादि विषयोंपर विचार गोष्ठियां हुईं। इसके साथ 'योग', 'आदर्श समाजकी ओर' इत्यादि विषयोंपर कइयोंने भाषण दिये। और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए।

सोसायटीके उत्तर प्रदेशके केंद्रोंके सक्रिय कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियोंकी तीन दिनकी बैठक हुई। उत्तर प्रदेशकी कार्यपालक समितिका पुनर्गठन हुआ। यह समिति केंद्रों और शाखाओंके कार्योंको प्रोत्साहन देगी।

देहरादूनके एस. डी. वर्माने लिखा है कि बहुत प्रयासोंके बाद उत्तर प्रदेशकी सरकार और देहरादून सिटी बोर्डने 'पुराना सहस्रधारा मार्ग'का नाम 'श्रीअरविंद मार्ग' रख दया है। श्री वर्माने श्रीअरविंदकी 'सावित्री'पर १४ अक्तूबरको भाषण दिया।

नानपुरा, गुजरात, के शक्ति केंद्रमें १३ अक्तूबर, ८३को श्रीअरविंदके अवशेष-स्थापनाका पांचवां वार्षिकोत्सव मनाया गया। इस अवसरपर अश्विनभाई कापड़ियाने सावित्रीपर भाषण दिया। चम्पकलालने प्रसाद बांटा। २० अक्तूबर रिचर्ड और कैलाशबेनने केंद्रमें भाषण दिये।

रांचीमें, श्रीअरविंद सर्कल (सोसायटीका रांची केंद्र)ने २९ अक्तूबरको अपना २९वां वार्षिकोत्सव मनाया।

बीजापुर (कर्णाटक) केंद्रने ३ से ७ अक्तूबर एक तीसरे 'आदर्श जीवन' शिविरका आयोजन किया जिसमें ३४ विद्यार्थियोंने हिस्सा लिया।

बंगलौरके श्रीअरविंद भवनमें २ अक्तूबरको डा. रामचन्द्रने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

'आधुनिक व्यवस्थामें भारतीय दार्शनिक विचारका महत्व' विषयपर भाषण दिया।

आयुर्वेद हस्पतालसे लगे आई क्लिनिकमें श्रीअरविंद आश्रमके 'स्कूल आफ परफेक्ट आइसाईट'की तरह दृष्टिके विकारोंके लिए इलाजकी व्यवस्था है।

'नव विहान' हाथसे बने कागजसे लेखन सामग्रीकी विभिन्न चीजें बना रहा है। लेनेके इच्छुक नव विहान, द्वारा शब्द, श्रीअरविंद आश्रम, पांडिचेरी-६०५ ००२से पत्रव्यवहार कर सकते हैं।

सोसायटीके जिन सदस्योंने अभीतक अपना चंदा न भेजा हो वे जल्दीसे जल्दी भेजनेकी कृपा करें।

घोषणाएं—पांडिचेरी सोसायटीकी ओरसे १७ से २७ फरवरी तक स्वाध्याय शिविर होगा जिसमें श्रीअरविंदकी पुस्तकोंका सामूहिक अध्ययन, चिंतन, मनन, प्रश्नोत्तर होंगे। जिन्हें इसमें रस हो वे डा. माहेश्वरी, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरीको ७ फरवरीसे पहले सूचना दे दें।

अंग्रेजी प्रकाशन

'हाऊ टु ब्रिंग अप ए चाइल्ड'का तीसरा संस्करण (मूल्य रु. १०, रजिस्ट्री आदिके रु. ४) शब्द, श्रीअरविंदाश्रम पांडिचेरी से मिल सकता है।

गुजराती प्रकाशन

'नवी पुस्तकमाला।' श्रीअरविंदाश्रमके पूजालाल इन सरल सुन्दर गद्यकाव्यकी पुस्तकोंका प्रकाशन कर रहे हैं। जिन्हें रस हो वे लेखकसे पत्राचार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

जून १९८४

वर्ष १४, अंक ११, पूर्णांक १६७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

माताजीका संदेश १
संपादकीय : कैसी होली अनुबेन २
दैनन्दिनी ४
श्रीमातृवाणी : असंभवता ६
एक अंतर्दर्शन ८
एक तरुण साधकका माताजी और
श्रीअरविंदके साथ पत्र-व्यवहार १३
श्रीअरविंदवाणी : संसदीय सरकार १८
चैत्य सत्ताके बारेमें २०
वैश्व भगवान् २२
श्रीअरविंदकी शिक्षा और साधना-पद्धति २४
ऋषिवर बोले : छुट्टियां २९
श्रीअरविंदकी एक अनुभूति ३४
गीर्वाण-वाणी ३५
सोसायटी समाचार ३६

अग्निशिखा या पुरोधाके दस ग्राहक बनानेवाले मित्रोंको एक साल तक निःशुल्क पत्रिका भेजी जायगी।

वार्षिक अग्निशिखा १०.००; पुरोधा १४.००; दोनों २२.००
आजीवन अग्निशिखा १७५.००; पुरोधा २२५.०० दोनों ४००.००
दोनोंकी आजीवन सदस्यताके लिए ४०० एक मुश्त या किश्तोंमें।

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :
संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र, अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजीका सन्देश

जगत्को ज्यादा अच्छा कैसे बनाया जाय ?

जगत् उसी अनुपातमें ज्यादा अच्छा बन सकता है जिस अनुपातमें हम अपने-आपको ज्यादा अच्छा बनाएं। वेदान्तका यह सत्य कि जगत् हमारी चेतनाका एक प्रक्षेपण, उसकी एक क्रियामात्र है व्यावहारिक रूपमें भी उतना ही सत्य है जितना आध्यात्मिक रूपमें। वैयक्तिक या सामुदायिक रूपमें मानवजाति जिन कष्टोंसे पीड़ित है वे उन भूल भ्रांतियोंसे उभरते हैं जो हमारी अज्ञानभरी प्रकृतिकी जड़में हैं। अगर हम बाहर शुद्ध जगत्को देखनेकी आशा करते हैं तो हमें सबसे पहले व्यक्तिगत रूपसे इन दोषोंसे शुद्ध होना चाहिए। पूर्णताके योगसे पहलेकी शर्त है आत्मशुद्धि योग।

लेकिन अन्ततः धरतीके बालकोंके ऊपर उच्चतर नियति झुकी हुई है और उसके मार्ग गणनाके परे हैं।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय :

कैसी होली ?

मनुष्यने हमेशा अपनी सीमाओंको लांघनेका प्रयास किया है। इस प्रयासके पीछे वह तत्व है जिसे इतालवी कवि दान्तेने 'दिव्य असंतोष' कहा है। इसी तत्वको दूसरे अग्नि कहते हैं जिसकी लपटें मनुष्यको अपना अतिक्रमण करनेके लिए प्रेरित करती रहती हैं। अन्य क्षेत्रोंकी अपेक्षा आज उसके भीम विक्रमके स्पष्ट परिणाम विज्ञान और खेल-कूदके मैदानमें दिखाई देते हैं।

वर्षोंसे चार मिनटसे कम समयमें एक मील दौड़ना असंभव माना जाता था। डा० बर्डनार्ड बेनिस्टरने उस सीमाको तोड़कर यह प्रमाणित कर दिखाया कि मनुष्यके लिए कुछ भी असंभव नहीं है।

मनुष्यकी अदम्य आकांक्षा जीवनके हर पहलूमें प्रवेश करके उसे नये-नये रंगसे भर देती है। शारीरिक सहनशक्तिमें भी अनेक नये कीर्तिमान स्थापित हुए हैं किन्तु केलिफोर्नियाके बिल एबर्टका उदाहरण अनुपम है।

कई उल्लेखनीय लंबी दौड़ोंमें पदक जीतनेके बाद उसने केलिफोर्नियाकी खौफनाक "डेथ वैली"को पार करनेका निर्णय किया। वह दौड़ अपने-आपमें अद्वितीय थी क्योंकि बिलके साथ प्रतियोगिता करनेके लिए कोई मानव प्राणी नहीं, प्रकृतिकी अजीबोगरीब रचना स्वयं "मौतकी घाटी" खड़ी थी। तबतक किसीने उसे पार करनेका साहस नहीं किया था। पहली बार यह दो सिरवाला मानव बिल उस २०० किलोमीटर लंबी घाटीके सामने आया था। उसकी देखा-देखी दो अन्य युवक भी दौड़में शरीक हो गये।

कुछ समय बाद दौड़ते-दौड़ते बिलने सुना कि उसके दोनों साथी "मौतकी घाटी"में ही दम तोड़ चुके हैं। दौड़को बीचमें ही छोड़ देनेके सुझावको ठुकराकर वह आगे बढ़ा। घाटीमें उस समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थर्मामीटर ४१ सेंटिग्रेडकी असह्य गरमी दिखा रहा था। ५० किलोमीटर दूरी तय करनेके बाद एक भयंकर रेतीले अंधड़ने उसे आ घेरा और ४ मीटर दूर ले जाकर पटक दिया।

अभी वह थोड़ी दूर ही गया था कि कहींसे गंधकका धुंआं आकर उससे लिपट गया। सांस लेनेमें तकलीफ होने लगी और वह लड़खड़ा कर बेहोशीकी हालतमें गिर पड़ा। पीछे-पीछे जीपमें उसकी पत्नी नोर्मा आ रही थी। उसने ठण्डे पानीसे बिलके कपड़े भिगो दिये, मालिश की और तीन मिनटमें बिल उठ खड़ा हुआ। दोस्तोंने रोकना चाहा तो जवाब दिया, "इस तरह हार न मानूंगा।"

वह दौड़ता गया, बीचमें पैरोंसे खून रिसने लगा, कई बार फटे बूट बदले। वह रास्तेमें दौड़ते-दौड़ते ही खाता, पानी पीता और फलोंके रससे ताजादम होता हुआ, अपने लक्ष्यतक जा पहुंचा। वह "मौतकी घाटी"को पार करनेवाला पहला मनुष्य था।

कइयोंने कहा होगा "बेकार इतनी जिद करके क्यों दौड़ा? क्या हुआ अगर उसने "मौतकी घाटी"को पार कर लिया।" ऐसे लोगोंको कैसे समझाया जाय कि प्राकृतिक शक्तियोंसे लड़कर अपने शरीरपर नियंत्रण पाकर मानव ऐसी साहस यात्राओंद्वारा अपनी सत्ताकी विजय स्थापित करता है। उनका मूल्य उन सीमाओंको तोड़नेमें है जिन्हें मनुष्योंने अनुभवके आधारपर सामान्य और सहज मान लिया है।

हम भी ऐसे साहसी मित्रोंसे सीख लेकर अपनी सीमाओंको लांघनेका प्रयास कर सकते हैं। यही होगी हमारी सच्ची होली जिसमें मानव सत्ता जीवन और प्रकृतिमें भरे अहंकार आदि अदिव्य तत्वोंकी ढूंढ़ा (होलिका)को जलाकर साहस, निर्भीकता, धैर्य, विश्वास और श्रद्धा आदि दिव्य रंगोंमें सराबोर होकर दिव्यताकी ओर बढ़ेगी।

—अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

जून

१. भाषाका मूल्य उसी हदतक है जहांतक वह तुम्हें परम सद्-वस्तुके संपर्कमें ला सके।

२. आत्मविकास और आध्यात्मिक अभीप्सा मनुष्यको अपने कर्म-पर अधिकार करने योग्य बनाते हैं।

३. तुम्हें कोई विधान छोड़नेका तबतक कोई अधिकार नहीं है जबतक तुम ज्यादा अच्छे और ज्यादा ऊंचे विधानको जानने और उसका अनुसरण करनेके योग्य न हो।

४. सुस्तीमें एक दुर्भावना होती है, प्रयास करनेसे इंकार होता है।

५. दुर्बलता आदमीको सुस्त बनाती है

६. तुम बाहरी रूपसे जो कुछ सीखते हो वह उच्चतर ज्ञानकी ओर अपने-आपको उठानेकी ओर एक कदम है।

७. स्थिर अभीप्साद्वारा ही तुम सीख सकते हो।

८. तुम्हें केवल बौद्धिक रूपसे ही नहीं मनोवैज्ञानिक रीतिसे भी सीखना चाहिए।

९. पूर्ण मुक्ति, पूर्ण सचाई, प्रेम और सत्यपर निर्भर हैं।

१०. सत्यके विना सच्ची स्वाधीनता नहीं होती।

११. स्वाधीनताका अर्थ अपनी कामनाओंका अनुसरण नहीं इसके विपरीत, उनसे मुक्ति है।

१२. एकमात्र सच्ची स्वाधीनता वही है जो भगवान्के साथ ऐक्यसे प्राप्त होती है।

१३. सच्ची स्वाधीनता एक ऊपर उठती हुई क्रिया है जो निम्न वृत्तियोंके आगे नहीं झुकती।

१४. सच्ची स्वाधीनता भागवत अभिव्यक्ति है।

१५. जबतक हम झूठ बोलते रहेंगे, हम सुखकर भविष्यको अपने-आपसे दूर ठेलते जायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६. यह कहनेकी जरूरत नहीं है कि जो सत्यके लिए अभीप्सा करते हैं उन्हें झूठ बोलनेसे बचना चाहिए।

१७. जीवनमेंसे गुजरनेका एकमात्र मार्ग—प्रेम और मुस्कान।

१८. परम जीवनको छोड़कर और कोई जीवन नहीं है।

१९. जीने योग्य जीवन बस एक ही है, वही जीवन भगवान्के साथ ऐक्यके लिए समर्पित हो।

२०. हमारे जीवनपर सत्यके लिए प्रेम और प्रकाशके लिए प्यासका शासन होना चाहिए।

२१. व्यक्तिगत जीवनका आधारभूत कारण है भगवान्को खोजनेका आनंद और उनके साथ ऐक्य।

२२. धरतीपर जीवन तत्वतः प्रगतिका क्षेत्र है।

२३. प्रकाश, अंतहीन प्रकाश, यहां अंधेरेका स्थान नहीं है।

२४. वह सबसे प्रेम करता है, वह सबको चलाता है, सब उसीके हैं। सब वही है।

२५. शाश्वतके साथ एक होकर, उसकी अनंततामें जियो।

२६. अपने मनको फेंक दो, नाम रूपसे पीछे हट, अपने-आपको मिटा दे ताकि भगवान् ही रह सकें।

२७. हमें काम दिये गये हैं, हम केवल उपकरण हैं। हम जो बनाते हैं उसमें कुछ भी हमारा अपना नहीं है।

२८. जीवनके उन सभी रूपोंको, जो परिवर्तन नहीं सह सकते, लुप्त हो जाना चाहिए। जो उसे सह सकते हैं वे सब बच रहेंगे और आत्माके राज्यमें प्रवेश करेंगे।

२९. खोजका और जन्मका कहीं कोई अंत नहीं है। जो जीवन अपने लक्ष्यको पा लेता है वह और बड़े लक्ष्योंकी मांग करता है। जबतक कि वह अपने-आपको न पा ले, वह रुक नहीं सकता।

३०. एक प्रकाश है वहां जो पथ दिखाता है, एक शक्ति है जो सहायता करती है।

—प्रकीर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असंभवता

माताजी, आपने कहा है कि हर एक, एक असंभवताका प्रतिनिधि है। इस हालतमें, हर एकको इस असंभवताको हल करनेपर एकाग्र होना चाहिये, है न?

यह आवश्यक नहीं है कि वह उसपर एकाग्र हो। मगर वह जानता हो या न जानता हो, यह समस्याका एक पहलू है।

मैं यह बात पहले भी एक बार कह चुकी हूं। जब तुम किसी विजयकी संभावनाका प्रतिनिधित्व करते हो, तो हमेशा तुम्हारे अंदर उस विजयसे विपरीत वस्तु भी होती है जो तुम्हारी चिरस्थायी कठिनाई होती है।

हर एककी अपनी कठिनाई होती है। और, मेरा ख्याल है, मैं एक बार उदाहरण दे चुकी हूं। उदाहरणके लिये, जिस सत्ताको निर्भयता, साहसका प्रतिनिधित्व करना है, समझो, यानी, जिसमें यह क्षमता हो कि बिना कदम डिगाये, सभी संकटों और संघर्षोंके आगे डटा रहे, वह सामान्यतः अपनी सत्तामें, कहींपर बहुत **भयानक रूपसे** भीरू होता है और उसे लगभग हमेशा ही इसके विरुद्ध संघर्ष करते रहना पड़ता है क्योंकि वह उस विजयका प्रतिनिधि है जो उसे संसारमें पानी है।

यह ऐसी सत्ताकी तरह है जिसे अच्छा बनना, करुणा और उदारतासे भरपूर होना है; अपनी सत्ताके किसी भागमें वह तीखा, कटु और कभी-कभी खराब भी होता है; और दूसरी चीज बननेके लिये उसे इनके विरुद्ध संघर्ष करना पड़ता है। और इस तरह चलता रहता है। यह बात सभी व्योरोंमें लागू होती है। तो बात ऐसी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब तुम कहीं बहुत काली छाया देखो, बहुत ही काली, कोई ऐसी चीज जो सचमुच कष्टजनक हो, तो तुम इस बातसे निश्चित हो सकते हो कि तुम्हारे अंदर उसके अनुरूप प्रकाशकी संभावना है।

घटनेकी जगह वह बढ़ती क्यों है?

"वह बढ़ती है", इसका क्या, अर्थ है?

(शिष्य उत्तर नहीं दे पाता।)

यहां वह बढ़ती है? हां। क्योंकि यह सिद्धिका स्थान है।

जीवनमें, तुम अचेतन रहते हो, तुम अपना सारा जीवन एकदम अस्पष्ट अर्ध-चेतनामें बिताते हो, तुम अपने बारेमें कुछ नहीं जानते, बस, एक आभास मात्र, और कुछ नहीं। और तुम हमेशा अपने उद्देश्यको पूरा करनेमें असफल रहोगे और इस कारण कठिनाईके हृदयमें जाकर बाधाको नहीं देख पाते, बस एक आभास रहता है, तुम सब आभासोंके बीचमें रहते हो। बस, यही बात है। इस-लिये तुम्हारी गलतियां छोटी होती हैं, तुम्हारे गुण छोटे होते हैं, तुम्हारी क्षमताएं साधारण होती हैं और कठिनाइयां साधारण होती हैं, तुम निरंतर पूरी तरह साधारण होते हो।

केवल तभी जब तुम सिद्धिके पथपर चलना शुरू करते हो, तुम्हारी संभावनाएं वास्तविक बन जाती हैं और तुम्हारी कठिनाइयां कहीं अधिक विशाल बन जाती हैं—एकदम स्वाभाविक रूपसे। वस्तुएं तीव्र और घनीभूत हो उठती हैं।

इसीलिये मैं लोगोंसे कहती हूं: "अगर तुम साधारण जीवनकी परिस्थितियोंमें अपने अंदर शांति और नीरवता नहीं ला सकते, अपने अंदर प्रवेश करनेके लिये पर्याप्त रूपमें स्वयंको अलग नहीं कर सकते, तो निश्चित रूपसे इस स्थानपर तुम उसे नहीं कर सकते, क्योंकि तुम्हारी पहली मुश्किल यह होगी कि तुम्हें लगेगा कि हर चीज और हर व्यक्ति तुम्हारे ऊपर आक्रमण कर रहा है और तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-आपको पृथक् करनेमें एकदम असमर्थ पाओगे। अगर तुमने यह यहां आनेके पहले सीख लिया हो, तो अच्छा है। लेकिन अगर तुम यह करना नहीं जानते, तो तुम्हें यहांपर यह करना बहुत कठिन लगेगा।

और सभी चीजोंके लिये बात यही है। जिनका बुरा स्वभाव होता है, उदाहरणके लिये जिनका गुस्सा काबूमें नहीं रहता, उनका हाल सामान्य जगत्‌की अपेक्षा यहां अधिक बुरा होता है, क्योंकि सामान्य जगत्‌में वे जीवनकी सभी आवश्यकताओंके वशमें रहते हैं, उदाहरणके लिये जब वे दफ्तरमें जाते हैं, अगर वहां अफसरके विरुद्ध भड़क उठें, तो उन्हें बाहर निकाल दिया जायगा। जब कि यहां, हम उन्हें निकाल नहीं देते; उनसे बस कहा जाता है: "स्वयं-को वशमें करनेकी कोशिश करो।"

एक अंतर्दर्शन

(१९५८में माताजीने अपने एक अंतर्दर्शनकी बात कही थी जिसमें प्रेम और चेतनाकी एक अद्‌भुत सत्ता परम स्रोतसे निकली और उसने अपने-आपको सीधा निश्चेतनामें प्रक्षिप्त किया ताकि सृष्टि धीरे-धीरे अतिमानसिक चेतनाकी ओर जागे। माताजीके इस अंत-र्दर्शनका हाल नवंबर १९०६के 'रेव्यू कोस्मिक'में छपा था। यह पत्रिका पैरिससे प्रकाशित हुई थी। १९०६ और १९०७में छह और अंत-र्दर्शन छपे थे। यद्यपि इनपर किसीका नाम नहीं है लेकिन यह तथ्य कि वे एकसे शब्दोंसे शुरू होते हैं, एक ही शैलीमें लिखे गये हैं और अनुभूतिकी एक ही दिशामें चलते हैं, इस बातको प्रायः सिद्ध कर देता है कि वे माताजीके लिखे हुए हैं।

इस अंकमें हम इन सात अंतर्दर्शनोंमेंसे चौथा प्रकाशित कर रहे हैं—सं०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं सो गयी थी और अब मैं जाग उठी हूं।

मैं एक घनी आबादी वाले शहरमें जागी, आनंदसे जगमगाते एक बड़े हालमें जहां एक भोज हो रहा था। एक लंबी, सामानसे लदी मेजके चारों ओर एक दरजन आदमी मजेसे बैठे बतिया रहे हैं, बीचों-बीच मैं एक वृद्ध सज्जनको देखती हूं जिनका उदात्त सिर, लंबी दाढ़ी और लंबे-लंबे सफेद रेशमी बालोंसे मढ़ा हुआ-सा है। उनके चेहरेका भाव एक ही साथ बहुत गंभीर और बहुत मधुर है। उनकी प्रफुल्लतामें भी एक गंभीरता है। उनके साथ ही लहराते श्वेत दुपट्टेसे आच्छादित सुनहरे बालोंवाली युवती बैठी है। अन्य दस पुरुष हैं, वे शिष्य हैं जो अपने गुरुके चारों तरफ जमा हैं।

भोज प्रसन्नतापूर्वक चल रहा है। मुझे लगता है और मैं देखती हूं कि नगरके ऊपर विषसे भरे घने बादल इकट्ठे हो रहे हैं। युवतीने भी आते हुए संकटका आभास पा लिया है। वह अचानक उठ खड़ी होती है और अंतःप्रेरित आवाजमें कहती है कि एक महान् संकट हमारे ऊपर मंडरा रहा है। एक भयंकर विनाशकी तैयारी है। मैं उसका अनुभव कर सकती हूं लेकिन ठीक-ठीक नहीं बता सकती कि वह क्या है। हमें किसी भी कीमतपर, उन लोगोंके साथ जो हमपर विश्वास करते हैं और हमारा अनुसरण करनेको तैयार हैं, इस नगरसे तुरंत निकल जाना चाहिये। उपस्थित लोगोंमेंसे कोई भी इस गंभीर वाणीपर संदेह नहीं करता जिसने इस सामंजस्यभरी बैठकमें गड़बड़ पैदा कर दी। सभी बिना संकोचके उठ खड़े होते हैं और हाल छोड़नेके लिये तैयार हो जाते हैं।

उस समय यह दृश्य मेरी आंखोंसे ओझल हो जाता है और कुछ समयके लिये मैं कुछ नहीं देख पाती। जैसे ही मेरी चेतना लौटती है, मैं उस छोटे-से दलको फिरसे देखती हूं परंतु दृश्य कितना बदल गया है!

वे बारह व्यक्ति उस नगरको छोड़ चुके हैं, वहां अब केवल खंडहर और बरबादी बचे हैं। वह भूकम्प कितना भयंकर रहा होगा!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बड़े नगरमें मलबेके ढेरोंके सिवा कुछ नहीं बचा। आगसे भस्मसात् होकर और पानीसे कटकर वह अब ऐसा लग रहा है मानों शताब्दियोंसे ऐसा ही पड़ा हो। भूकम्प, विस्फोट और बाढ़ तीनोंने मिलकर विज्ञान और कलाकी इस रचनाको अचानक पूरी तरहसे भूरे या लाल चट्टान जैसे टीलों और पहाड़ियोंमें बदल दिया जो धुंएंसे काली पड़ गयी हैं। कहीं घासका पत्ता भी नहीं दिखायी देता। इस विशाल ऊसर भूमिके बीच एक उद्दाम, प्रचण्ड धारा बहती है जो अपनी तीव्र गतिमें सब प्रकारके भग्नावशेषको वहाये लिये जाती है। इस पीड़ादायक दृश्यके ऊपर निरभ्र, स्वच्छ, नील आकाश फैला है जो इस अभागी धरतीपर व्यंग्य करता प्रतीत होता है।

प्रचण्ड जलधाराके पास सूखे किनारोंपर प्रकृतिके प्रकोपके कारण नगरसे भगाये गये हजारों आदमी डेरा डाले हैं। वे निर्जीव निराशामें डूबे हुए हैं, आलस्यमें बांहें फैलाये रिक्त चेहरोंके साथ बैठे हैं या झटकेके साथ आगे-पीछे घूम रहे हैं। उनके लिये यह धक्का असह्य था और ऐसा लगता था कि इसने उनके होश-हवास गायब कर दिये थे।

इसकी तुलनामें वह छोटा दल स्थिर और साहसपूर्ण बना है। गुरु, जलधाराके साथ चल रहा है। उसकी रक्षा करनेवाली बांह युवतीको घेरे हुए है। उसके विश्वासी शिष्य उसके चारों ओर हैं। उन्हें घबराई हुई भीड़के भाग्यके लिये सहानुभूति है और उनकी सहायता न करनेमें अपनी अक्षमतापर वे दुखी हैं। वृद्ध जानता है कि उन्हें यथासंभव तेजीके साथ इस जगहसे चला जाना चाहिए क्योंकि संकटकी जोखिम अभीतक बनी है। नये भूकम्प अवश्यंभावी हैं और शायद सब कुछ बह जायगा। अतः वह भीड़की ओर बढ़ता है और स्पष्ट जोरदार आवाजमें बतलाता है कि जमीनपर इधर-उधर फैली, बहकर आयी हुई लकड़ीसे ऐसा बेड़ा किस तरह बनाया जा सकता है जो उन्हें आसन्न विपदासे बचाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागनेमें सहायता दे सके। फिर समूहसे अंतिम दुखभरी विदाई लेकर वह छोटा-सा दल एक प्रकारके तैरते हुए घरकी ओर बढ़ता है जो उनके लिये एक चट्टानसे बंधा है। ये बारह उस कामचलाऊ नौकापर चढ़ते हैं। उनमेंसे एक, एक बांसकी सहायतासे नावको खिसकाता है और वे उस धारामें बह निकलते हैं जो उन्हें बड़ी तीव्र गतिसे चट्टानों और रास्तेमें फैली, बहती हुई सब तरहकी चीजोंमें से आगे बढ़ाती है।

वे दिमाग चकरानेवाली गतिसे आगे बढ़ते जाते हैं। श्वेत परिधानमें युवती पार्श्वभागपर खड़ी बाहरका दृश्य देखते हुए निगरानी कर रही है। एक युवक कहता है बस, अगर हम समुद्रतक जा पहुंचे तो सब कुछ ठीक होगा।

एक औरने उत्तर दिया, "यह कठिन होगा क्योंकि समुद्रके पास एक समुद्री चट्टान है और वहां हम चट्टानसे टकराकर टुकड़े-टुकड़े हो सकते हैं।" तब गुरुकी गरिमामय गंभीर ध्वनि उठी, "तुम भली-भांति जानते हो कि हमारा घर कभी डूब नहीं सकता। यह शाश्वत सत्यका प्रतीक नहीं है क्या?" कई लोगोंने उस नारीकी ओर जो अबतक खड़ी है इशारा करते हुए एक साथ उत्तर दिया और फिर जबतक यह हमारे बीचमें है, हमें कोई हानि नहीं हो सकती। और वह और भी अधिक एकाग्रताके साथ देखने लगी।

एक लंबी दूरी तय करनेके बाद तैरता हुआ घर अचानक एक ऐसी जगह आया जहां कभी बहुत बड़ा और सुन्दर नगर रहा होगा। अब बस परकोटेके बड़े-बड़े हिस्से और मीनारों, सर्पिल शिखरों और प्रासादोंके खंडहर दिखायी देते हैं जिन्हें आंधी, हवा, पानी और आगने खा लिया है। उनके भयानक श्वेत आकार आकाशकी ओर इशारा करते हैं। धरती चलते पानीसे ढकी हुई है और नगरके केंद्रमें जो कभी किसी नदीका स्थान या लुप्त बन्दरगाह रहा होगा; बड़े-बड़े पोत पड़े हैं जिनके जीर्ण ढांचे ही बच रहे हैं।

दृश्य इतना प्रभावशाली है कि बड़े स्पष्ट तौरसे मनमें एक महान्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नष्ट सभ्यताका चित्र ले आता है। सभी नीरवतामें, गंभीर और दुःखभरी एकाग्रतामें टकटकी लगाये खड़े हैं।

उसी क्षण मेरी आंखोंसे सब कुछ ओझल हो जाता है और जब मैं फिरसे सचेतन होती हूं तो मैं अपने-आपको समुद्रके ऊपर पाती हूं। निर्बन्ध उपद्रवी समुद्रमें बड़ी-बड़ी लहरें उफन रही हैं और जो भी उनके नजदीक आनेका दुःसाहस करे उसे निगल जानेके लिये तैयार हैं। इन लहरोंके बीच मैं अव्यवस्थाकी भयानक सत्ताओंको देखती हूं जो मुंह बना रही हैं, जो अपनी शक्तिसे क्रुद्ध जलोंकी शक्तिको बढ़ा रही हैं। ज्यादा नजदीकसे देखनेपर मुझे पता लगता है कि उनका उन्माद कुछ किरमिजी आकारोंके विरुद्ध है, जिन्हें वे पकड़ लेना चाहती हैं। वे आकार अपनी स्थिरताद्वारा ही उनका सामना कर रहे हैं लेकिन शायद शीघ्र ही उनका बल चुक जायगा।

तब कहीं दूर, वह तैरता हुआ घर दिखलायी देता है जो झागभरे सागरमें बैंगनी पार्श्वचित्र-सा दीख रहा है। वह पानीपर सीधे, अचंचल मार्गपर फिसलता चला जाता है मानों वह पूरी तरह शांत सतहपर चल रहा हो। उसके पास आते ही अचानक शांत हो गयी लहरोंके बीच नौकाके आगे और पीछे एक लंबा, प्रकाशमय निर्विघ्न रजत पथ खुलता जाता है। पथके दोनों ओर मौजें ठीक दीवारोंकी तरह उठती हैं लेकिन एक समर्थ शक्ति उन्हें उस छोटे दलकी शरणस्थलीपर गिरनेसे रोकती हैं। और अब एक-एक करके किरमिजी आकार अपने शत्रुओंके उग्र प्रयासोंको ललकारते हुए जलसे उभरते हैं और बहते हुए गृहमें शरण लेते हैं। जैसे ही सब लोग सुरक्षा पा लेते हैं ये दानवाकार लहरें अपने ऊपर टूट पड़ती हैं और निष्फल विरोध करनेवाली विरोधी शक्तियोंको कुचलती, गिराती और निगलती जाती हैं।

धीरे-धीरे सब कुछ फिरसे शांत हो गया है, पानी जिसकी सतहपर नाममात्र तरंग भी नहीं है नीलमके रंगमें बदल गया है, आकाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्यकी रोशनीसे प्रज्ज्वलित है, और नौका श्वेत प्रकाशके प्रभामण्डल-से युक्त अपने पथपर बढ़ रही है।

अंदर, सब प्रसन्न हैं। उस छोटेसे दलने उन सबका हार्दिक स्वागत किया जिनको उन्होंने बचाया और अपनी गुरु गंभीर, सौम्य वाणीमें कहते हैं, "देर हो या सवेर, इसी तरह प्रकाश अंधकारपर, व्यवस्था अव्यवस्थापर, प्रेम घृणापर विजय पायेगा और सामंजस्य शांतिके विश्वपर शासन करेगा।"

(बुलेटिन अगस्त ८३)

एक तरुण साधकका माताजी और श्रीअरविंदके साथ पत्र-व्यवहार

भागवत चेतनाके प्रति खुलना क्या है?

यह वह उद्घाटन है जब चेतना––भागवत चेतना या शक्ति (या वह जिस किसी चीजके प्रति खुले) को प्राप्त, और उसके प्रभावोंको अनुभव कर सके।

"प्राणिक-प्रकृति" का क्या अर्थ है?

ये ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर आश्रममें कोई भी दे सकता है। यह और "निष्ठाका क्या अर्थ है" इस तरहके प्रश्न। ज्यादा अच्छा हो अगर तुम किसीसे गुजरातीमें समझ सको और जब कभी आवश्यकता हो तो अपनी समझी हुई चीजका उपयोग कर सको। अगर मुझे दार्शनिक रूपमें उत्तर देना हो तो हर प्रश्नके लिये दस पृष्ठ लग जायेंगे और तुम कुछ न समझ पाओगे; अन्यथा मुझे चलता-सा उत्तर देना होगा और ऐसा उत्तर भी तुम्हारे लिये किसी कामका न होगा। तुम अपने अनुभवोंके बारेमें व्याव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हारिक प्रश्न पूछ सकते हो और मैं उनके उत्तर देनेकी कोशिश करूंगा।

(१९ जून, १९३३) —श्रीअरविंद

सच्ची चेतना क्या है?

केवल भागवत चेतना ही पूरी तरह सच्ची है।

(२० जून, १९३३) —श्रीअरविंद

हम उस भागवत चेतनाको कैसे पा सकते हैं?

माताजीकी शक्तिके प्रति खुलकर।

(२१ जून, १९३३) —श्रीअरविंद

माताजीकी शक्ति क्या है और हम उसके प्रति कैसे खुल सकते हैं?

वह भागवत शक्ति है जो स्वभावको बदलती है। अपने-आपको अचंचल बनाओ और केवल माताजीकी ओर मुड़ो।

कल शाम मैंने बागको सींचा यद्यपि मुझे लग रहा था कि पानी बरसेगा। रातको बारिश हुई। हम यह कैसे जान सकते हैं कि इस तरहकी धारणा सच है या नहीं?

इसके लिये कोई नियम नहीं है। तुम्हें तबतक निरीक्षण करते जाना होगा जबतक तुम सहज रूपसे सच्चे अंतर्भास और मात्र धारणाओंके बीच भेद न कर सको।

(२२ जून, १९३३) —श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब कभी कोई गलत क्रिया करता है मुझे कैसा-कैसा लगता है। जब कभी कोई गलत समयपर मजाक करता है उस समय भी मुझे कैसा-कैसा लगता है? क्या इन चीजोंका अनुभव करना अच्छा है?

इसका यह अर्थ है कि इन मामलोंमें तुम्हारी चेतना चैत्य रूपसे संवेदनशील है। ऐसा अनुभव करना बिल्कुल ठीक है—बशर्ते कोई अशांति न हो।

(२३ जून, १९३३) —श्रीअरविंद

"सत्य क्या है", "भगवान् क्या है" आपसे इस तरहके प्रश्न पूछना अच्छा है क्या?

मुझे नहीं लगता यह बहुत लाभदायक है। तुम्हारी अपनी अनुभूतियोंके बारेमें प्रश्न अधिक उपयोगी हैं।

मैं "मां"का अर्थ जानना चाहूंगा।

इसकी जगह मैं स्वयं प्रश्नका अर्थ जानना चाहूंगा।

(२३ जून, १९३३) —श्रीअरविंद

यह कहना बहुत कठिन है कि भागवत मां कौन हैं; व्यक्ति इसकी कल्पना नहीं कर सकता और मुझे यह मालूम नहीं। अगर आप आवश्यक समझें तो कृपया मुझे समझा दें।

भागवत मां भगवान्की चेतना और शक्ति हैं—जो सभी चीजोंकी मां हैं।

कई बार भगवान् और सत्यके बारेमें विचार और प्रश्न आते रहते हैं। क्या यह अच्छा नहीं है कि इन चीजोंके बारेमें आपको लिखूं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्त यह है कि तुम हमेशा मुझसे उत्तरकी अपेक्षा न करो। लोग मानसिक सूचना या प्रश्नके उत्तरके लिये मुझे नहीं लिखते बल्कि मेरे सामने अपने अनुभव और अपनी समस्याएं रखते हैं और मेरी सहायता पाते हैं। जब आवश्यक होता है मैं प्रश्नोंका उत्तर देता हूं, लेकिन मैं हर समय वही नहीं कर सकता।

(२४ जून, १९३३) —श्रीअरविंद

मैं स्वागत कक्षमें श्रीअरविंदका चित्र देख रहा था। मैंने दायीं ओरसे बादलोंको आते देखा जो बायीं ओर विलीन हो गये। जब मैंने आंखें बन्द कीं तो मैंने एक ऐसे मनुष्यको, जिसके शरीरके चारों ओर प्रभामण्डल था, अंधकारमें चलते देखा। क्या इसका कोई अर्थ है?

यह अज्ञानमें चलते हुए साधककी प्रगतिका प्रतीक है लेकिन उसकी सत्ताके चारों ओर ऊपरका कुछ प्रकाश है।

(२४ जून, १९३३) —श्रीअरविंद

आज 'ख'ने 'त्र'के कन्धेपर हाथ रखा। मैं उससे कहना चाहता था, ऐसा करना अच्छा नहीं है। लेकिन मेरे अंदरके एक और भागने मुझसे कहा, "उससे यह कहनेवाले तुम कौन होते हो? माताजी मौजूद हैं, और जो कुछ आवश्यक होगा वही कहेंगी।" मेरे मनके ये दो भाग क्या हैं? और कौन-सा ठीक है?

ये मनके दो भाग हैं। जिसने बोलनेके लिये मना किया वही ठीक था।

(२४ जून, १९३३) —श्रीअरविंद

कल शामको मैं ठीक समयपर दतौन लेना भूल गया। 'ख'ने मुझसे कहा, "जाओ, अब ले आओ।" मैंने कहा, "मुझे अब नहीं जाना चाहिये। समय हो गया है।" क्या यह ठीक है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तरह यह अच्छा अनुशासन है। नियम कामके उचित सामंजस्य और सुविधाके लिये बनाये जाते हैं। अगर तुम उनकी अवहेलना करते हो तो तुम अव्यवस्था, अक्षमता और ढील पैदा करते हो, और तुम अपने-आप भी शिथिल बने रहते हो। अपने अंदर शिथिलता ले आते हो। शिथिल, लापरवाह, अनियंत्रित और अपूर्ण रह जाते हो।

(२५, जून, १९३३) —श्रीअरविंद

नींदमें भी हम भगवान्‌को कैसे याद रख सकते हैं?

यह चेतनाके विकासपर निर्भर है, लेकिन पहले तुम्हें अपनी जाग्रत् अवस्थामें भगवान्‌को सदा याद रख सकना चाहिए।

(२७ जून १९३३) —श्रीअरविंद

—*****—

सारा अध्ययन कम-से-कम, उसका अधिकांश, भूतकालके बारेमें सीखना होता है। उससे आशा यह की जाती है कि उसके सहारे तुम वर्तमानको ज्यादा अच्छी तरह समझ सकोगे। लेकिन अगर तुम इस खतरेसे बचना चाहते हो कि विद्यार्थी कहीं भूतसे ही चिपटे न रह जाएं और भविष्यमें देखनेसे इंकार कर दें तो तुम्हें बड़ी सावधानीके साथ उन्हें यह समझाना चाहिये कि भूतकालमें जो कुछ हुआ है उसका उद्देश्य था, आज जो हो रहा है उसीकी तैयारी करना, और आज जो कुछ हो रहा है वह भविष्यकी ओर ले जानेवाले मार्गकी तैयारीसे बढ़कर कुछ नहीं है। वह भविष्यकी सबसे बढ़-कर महत्त्वपूर्ण चीज है जिसके लिये हमें तैयारी करनी चाहिये।

अंतर्भासको पोषण देकर ही तुम भविष्यमें जीनेकी तैयारी करते हो।

(बुलेटिन फरवरी ८२) —माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंदके साथ बातचीत
स्मृतिके आधारपर :
७-४-२६

संसदीय सरकार

(उन दिनोंकी देसी रियासतोंके बारेमें बात चल रही थी)

श्रीअरविंद—मेरे कहनेका मतलब यह नहीं है कि भारतीय राज्योंको यूरोपकी संसद-प्रणालीको अपना लेना चाहिये। माना यह जाता है कि लोकप्रिय राजतंत्रमें विरोधी दल जरूर होना चाहिये। यह यूरोपीय विचार है परंतु विरोधी दलका होना जरूरी हर्गिज नहीं है।

शिष्य—क्या प्राचीन भारतमें इस तरहकी चीज थी ?

श्रीअरविंद—हां, थी। परंतु आज उसे ही दोहरानेकी जरूरत नहीं है। भारतमें समुदायों और पंचायतोंको बहुत स्वाधीनता रही है। पंचायतोंके हाथमें बहुत शक्ति होती थी और राज्य तानाशाही नहीं कर पाते थे। सामान्यतः राज्य सभी पंचायतोंपर नजर रखता था...

शिष्य—क्या पुराने जमानेमें ग्रामोंको भी ऐसे अधिकार प्राप्त थे ?

श्रीअरविंद—हां, यह यूरोपीय विचार है कि संसदीय व्यवस्था सबसे अच्छी है। हमारे यहां बहुत ज्यादा सामुदायिक स्वाधीनता थी और पंचायतें शक्ति और राष्ट्रीय जीवनका केंद्र थीं। राजा इनके अधिकारमें दखल न दे सकता था।

शिष्य—पंचायतोंको बहुत मजबूत होना चाहिये ताकि वे किसीको अपने अधिकार छीनने न दें।

श्रीअरविंद—हां, ऐसा ही था। राजा नीति-रीतिकी अविच्छिन्नता पीढ़ी-दर-पीढ़ी बनाये रखता था लेकिन वह पंचायतोंके अधिकारमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दखल न देता था। अगर कभी उसने ऐसा किया तो जन-शक्ति अपना प्रभाव दिखा देती थी। भारतीय प्रतिभाने इस रूपको विकसित किया था। तुम्हारा ख्याल है कि संसदीय सरकार सबसे अच्छी है। वस्तुतः यह प्रणाली इंग्लैंडके सिवाय कहीं और सफल नहीं हुई। फ्रांसमें इसका बुरा हाल है। अमरीका अंग्रेजोंका सजातीय है पर वहां भी यह प्रणाली सफल नहीं हुई...

मेरी समझमें नहीं आता कि जैसा संसदीय विधानमें होता है उस तरह हर चीजको केंद्रित क्यों किया जाय। हमारे यहां संस्कृति और शक्तिके विभिन्न केंद्र होने चाहिये जो राष्ट्रीय जीवनसे ओत-प्रोत हों। उन्हें अपने-आपको विकसित करनेके लिये राजनीतिक स्वाधीनता होनी चाहिये।

शिष्य—ग्रामीण संगठन भी इस तरहके केंद्र बनानेमें सहायता कर सकता है।

श्रीअरविंद—हां, लेकिन यह काम गांववालोंको भाषण और उपदेश देनेसे न होगा। जैसा कि आजकल किया जा रहा है। अगर तुम गांवमें काम करना चाहते हो तो तुम्हें कोई स्वाभाविक पेशा अपनाना चाहिये और गांवमें ही जा बसना चाहिये। उनमेंसे एक बन जाना चाहिये। जब वे देखेंगे कि तुम व्यावहारिक आदमी हो तो वे तुम्हारे ऊपर विश्वास करने लगेंगे। अगर तुम वहां जाकर दस-पन्द्रह वर्षतक कड़ी मेहनत करो तो तुम्हारा एक स्थान बन जायगा और तुम कुछ कर सकोगे क्योंकि तब वे तुम्हारी बात सुननेके लिये तैयार होंगे।

हमारे लोगोंके लिये संसदीय व्यवस्था शायद ही सफल हो। हां, यह जरूरी नहीं है कि आज भी उसी पुरानी व्यवस्थाको ही चलाओ लेकिन तुम विकासकी लीकको पकड़कर अपनी प्रतिभाके अनुसार आगे बढ़ा सकते हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चैत्य सत्ताके बारेमें

जब चैत्य पुरुष जागता है तो तुम अपनी अंतरात्माके बारेमें सचेतन होने लगते हो, तुम अपने स्वको जानते हो। फिर तुम अपने-आपको मानसिक या प्राणिक सत्ताके साथ एक करनेकी भूल नहीं करते। तुम उन्हें अंतरात्मा मान बैठनेकी भूल नहीं करते।

चैत्य सत्ता जग जाय तो वह भगवान् या गुरुके लिए सच्ची भक्ति प्रदान करती है। वह भक्ति मानसिक या प्राणिक भक्तिसे एकदम भिन्न होती है।

मनमें गुरुकी बौद्धिक या आध्यात्मिक महानताके लिए बहुत अधिक श्रद्धा और सम्मान हो सकता है—यानी व्यक्ति उनका अनुसरण कर सकता और मानसिक रूपसे उनके आदेशोंको स्वीकार कर सकता है। लेकिन अगर यह केवल मानसिक हो तो तुम्हें बहुत दूर नहीं ले जाता। स्वभावतः, इसके होनेमें कोई नुकसान नहीं है लेकिन यह स्वयं अपने-आपमें समस्त आंतरिक सत्ताको उद्घाटित नहीं करता, केवल एक मानसिक संबंध स्थापित करता है।

प्राणिक भक्ति मांग-ही-मांग करती है। वह अपनी शर्तोंको थोपती है। वह स्वयंको प्रभुके समर्पण करती है लेकिन शर्तके साथ। वह प्रभुसे कहती है, "तुम इतने महान् हो, मैं तुम्हारी पूजा करती हूं, अब तुम्हें मेरी फलां कामना, फलां महत्त्वाकांक्षा पूरी करनी होगी; मुझे महान् बना —मुझे महान् साधक, महान् योगी बना।" इत्यादि।

अप्रबुद्ध मन भी स्वयंको सत्यके समर्पित करता है लेकिन अपनी शर्तें लगाता है। वह सत्यसे कहता है, "मेरे मूल्यांकन और मेरी रायको संतुष्ट करो।" वह सत्यसे इस बातकी अपेक्षा करता है कि वह स्वयंको उसके (मानसिक) रूपोंमें ढाले।

प्राणिक सत्ता भी सत्यसे इस चीजका हठ करती है कि सत्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-आपको सामर्थ्यकी प्राणिक गतिविधिमें डाले। प्राणिक सत्ता उच्चतर शक्तिको खींचती है और गुरुकी प्राणिक सत्ताको अधिकाधिक खींचती रहती है।

दोनोंका (मानसिक और प्राणिक) अपने समर्पणमें मानसिक संकोच और गौण उद्देश्य होता है।

चैत्य भक्ति ऐसी नहीं है। क्योंकि वह पीछे स्थित देवत्वके संपर्कमें रहती है। वह सच्ची भक्तिके समर्थ है। चैत्य भक्ति कोई मांग नहीं करती, वह कोई प्रतिबंध नहीं लगाती। वह स्वयं अपने अस्तित्वसे संतुष्ट रहती है। चैत्य सत्ता जानती है कि सत्यका उचित तरीकेसे पालन कैसे किया जाय? वह स्वयंको वस्तुतः भगवान् या गुरुके अर्पण कर देती है, चूंकि वह स्वयंको ईमानदारीसे दे सकती है इसलिए वह वास्तवमें ग्रहण भी कर सकती है।

जब चैत्य सत्ता सतहपर आये और अगर वह यह देख ले कि मानसिक और प्राणिक सत्ता स्वयं मूर्ख बन रही हैं तो वह उदास हो जाती है। यह उदासी अपमानित पवित्रताकी है।

जब मन अपनी मनमानी करता है या जब प्राणिक सत्ता अपने संवेगोंमें बह जाती है, तो चैत्य सत्ता ही कहती है, "मुझे ये चीजें नहीं चाहिए। आखिर मैं यहां किसलिए हूं? मैं यहां सत्यके लिए हूं, मैं इन चीजोंके लिए यहां नहीं हूं।"

चैत्य उदासी मानसिक असंतोष, प्राणिक अप्रसन्नता या भौतिक अवसादसे एकदम भिन्न है।

अगर चैत्य सत्ता बलवान् हो तो वह मानसिक और प्राणिक सत्तापर अपना प्रभाव डालती है और उन्हें बदलनेके लिए उनपर जोर डालती है। लेकिन अगर वह कमजोर हो तो दूसरे भाग उसका फायदा उठाते हैं और अपने लाभके लिए चैत्यको उपयोगमें लाते हैं।

कइयोंमें यह ऊपर सतहपर आ जाती है और एक नयी और भागवत व्यवस्थाके लिए दबाव डालती हुई, मानसिक और प्राणिक सत्तामें उथल-पुथल मचा देती है, उनकी सभी निर्धारित व्यवस्थाओंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तितर-बितर कर देती है और अभ्यासोंमें अव्यवस्था ले आती है। लेकिन अगर मन या प्राण-सत्ता चैत्यसे अधिक बलवान् हों तो केवल कभी-कदास कोई प्रभाव छोड़ देती है, फिर क्रमशः पीछे चली जाती है। उसकी पुकार अरण्यरुदन होती है और मानसिक या प्राणिक सत्ता अपनी धुरीपर घूमती रहती है।

अंतमें, चैत्य सत्ता आभासोंसे छली जानेसे इंकार करती है। वह मिथ्यात्वके द्वारा बह नहीं जाती। वह मिथ्यात्वसे आक्रांत होनेसे इंकार करती है—न ही वह सत्यको बढ़ा-चढ़ा देती है। उदाहरणके लिए, चाहे चारों तरफके लोग कहें कि भगवान्का अस्तित्व नहीं है फिर भी चैत्य सत्ता उसपर विश्वास करनेसे इंकार करती है। वह कहती है, "मैं जानती हूं, और मैं इसलिए जानती हूं क्योंकि मैं अनुभव करती हूं।"

चूंकि वह पीछे स्थित वस्तुको जानती है इसलिए वह बाहरी रूपोंसे छली नहीं जाती। वह तुरंत शक्तिका अनुभव करती है।

जब चैत्य सत्ता जग जाती है तब वह संवेगशील सत्तासे समस्त कूड़ा-करकट निकाल बाहर फेंक देती है और उसे भावुकता या संवेगशीलताके निम्नतर खेलसे मुक्त कर देती है।

लेकिन वह मनकी शुष्कता या प्राणिक संवेदनोंकी अतिशयोक्ति नहीं होती। वह हर एक संवेगको उचित स्पर्श देती है।

२३ मार्च १९२६ —श्रीअरविंद

(बुलेटिन अगस्त, ८३)

वैश्व भगवान्

वैश्व भगवान्के बारेमें तुम्हारी कठिनाईको मैं अब समझ पाया हूं। पहले यह मेरे मनमें नहीं आयी क्योंकि मैं चीजोंको उस दृष्टिसे देखता हूं जैसी वे हमारी आध्यात्मिक और बाह्य अनुभूतिको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीखती हैं जब कि तुम इस बातपर जोर देते हो कि वे वह नहीं है जो उन्हें होना चाहिये या जैसा मनुष्यका मन, भौतिक भाव या प्राण चाहता है कि वे हों। हम चाहें जिस लक्ष्यपर पहुंचना चाहें हमें यह मानकर ही चलना चाहिये कि यह जगत् अजीब, कुरूप और सामंजस्यहीन चीजोंसे भरा है। यह स्पष्ट और स्वयंसिद्ध है। लेकिन मुख्य प्रश्न तो यही है कि क्या इसके पीछे कुछ है, क्या इसके पीछे कोई ऐसी चीज है जो अधिक अच्छी चीजतक पहुंचनेकी आशाको न्यायसंगत ठहराये। जिस तरह यह भासमान जगत् हमारे लिये स्पष्ट रूपसे अजान, उथल-पुथल, कष्ट, असामंजस्य अव्यवस्था और अंधेरी निश्चेतनाका जगत् है उसी तरह आध्यात्मिक अनुभूतिके लिये पीछेकी चीज भी अकाट्य रूपसे एक तथ्य है। आध्यात्मिक अनुभूतिके लिये यह ऊहापोहका विषय नहीं बल्कि एक तथ्य है कि इस दरारोंवाली दूषित अपूर्ण मानव प्रकृतिके पीछे एक अंतर्यामी देव उपस्थित है और यह प्रकृति कुछ-कुछ उस जैसी बननेकी कोशिश कर सकती है। हमारी अव्यवस्थाभरी वैश्व गतिविधियोंके पीछे एक ऐसी चीज है जो स्थिर शांति, अचंचलता, बल, आनंद और सर्वग्राही सार्वभौमिकतासे भरी है और हमारी चेतनाके लिये उसमें प्रवेश करना और उसमें निवास करना संभव है। यह भी आध्यात्मिक अनुभूतिका एक भाग है कि सबके परे एक दिव्य सत्ता है —तुम उसे जो नाम देना चाहो दे लो। जो निम्न जगत्के विरोधों और अज्ञानसे ऊपर है।

परात्पर इसीको कहते हैं। आध्यात्मिक अनुभूतियोंमें चाहे कितने मतभेद हों, उनकी भाषा चाहे जितनी भिन्न हो पर इतना तो प्रायः सभी मानते हैं। अगर ये निश्चितियां न होतीं तो विश्वासपूर्ण आध्यात्मिक जीवन या प्रयास भी न होता।

—श्रीअरविंद

(आर्काइव्ज दिसंबर ७७के आधारपर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्दकी शिक्षा और साधना-पद्धति

सभी जगहोंपर, सभी स्तरोंपर देवता हैं।

*

यद्यपि देवताओंका रूपांतर नहीं किया जा सकता क्योंकि वे विकसनशील नहीं बल्कि प्रारूपी सत्ताएं हैं फिर भी वे परिवर्तनके लिये आ सकते हैं—यानी, चीजोंके बारेमें अपने विचार और अपनी दृष्टि छोड़कर अपने-आपको उच्चत्तर इच्छा और भगवान्‌के अति-मानसिक सत्यके अनुसार ढाल सकते हैं।

*

भगवान् हैं परंतु भगवान्‌के बारेमें मनुष्यकी धारणाएं उसके मानसमें कई चीजोंके प्रतिबिंब होती हैं। कभी भगवान्‌के, कभी अन्य सत्ताओं और शक्तियोंके वे ऐसे रूप होते हैं जिन्हें उसका मानस, आते हुए संकेतों या सुझावोंसे गढ़ सकता है। वह तबतक बहुत एकांगी और अपूर्ण होते हैं जबतक मनुष्य उच्चत्तर, सत्यतर आध्यात्मिक या गूढ़ तत्त्वज्ञान न पा ले। देवता पहलेसे ही हैं। मनुष्य उनकी रचना नहीं करता यद्यपि यह लगता जरूर है कि वह उनकी अपने ही बिम्ब रूपमें कल्पना करता है। मूलतः मनुष्य उनके बारेमें जो सत्य वैश्व सद्वस्तुसे पाता है उसे अपनी ओरसे अच्छे-से-अच्छा रूप दे लेता है। किसी कलाकार या भक्तको देवोंका अंतर्दर्शन मिल सकता है और वह उस जातिकी चेतनामें व्यापक और स्थायी रूप पा लेता है। इस अर्थमें यह बात ठीक हो सकती है कि मनुष्य देवोंको उनके रूप देता है लेकिन वह इन रूपोंका अन्वेषण नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता। वह जो देखता है उसीको अंकित कर लेता है, वह जो रूप देता है, वे उसे दिये जाते हैं।

*

देवोंके बारेमें, मनुष्य ऐसे रूप बना सकता है जिन्हें वे स्वीकार कर लें। लेकिन ये आकार भी मनुष्यके मनमें उस लोकसे प्रेरणा बनकर आते हैं जिसमें देवता निवास करते हैं। समस्त सृष्टिके दो पक्ष हैं, साकार और निराकार। देवता भी निराकार हैं फिर भी उनका आकार है लेकिन देवता अनेक रूप ले सकते हैं। एक ही देवी यहां महेश्वरी और वहां पालास एथनीके रूपमें होती हैं। स्वयं महेश्वरीकी निचली अभिव्यक्तियोंमें उनके अनेक रूप हैं जैसे दुर्गा, उमा, पार्वती, चण्डी आदि। देवता मानव आकारोंतक ही सीमित नहीं हैं। मनुष्यने भी उन्हें हमेशा मानव आकारमें ही नहीं देखा है।

*

ब्रह्मा, विष्णु और शिव एक ही वैश्व देवकी तीन शक्तियां और तीन व्यक्तित्व हैं।

*

शिव तपसके स्वामी हैं। उनकी शक्ति तपः शक्ति है। देवताके रूपमें कृष्ण आनंद, प्रेम और भक्तिके स्वामी हैं और अवतारके रूपमें वे ज्ञान और कर्मके सम्मिलनको अभिव्यक्त करते हैं और इसके द्वारा धरतीके क्रमविकासको आनंद, प्रेम और भक्तिद्वारा भगवान्के साथ मिलनकी ओर ले जाते हैं।

देवी दिव्य शक्ति हैं। वे भगवान्की चेतना और शक्ति हैं। जगतोंकी मां और ऊर्जा हैं। सभी शक्तियां उन्हींकी हैं। कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवी-शक्तिका अर्थ हो सकता है वैश्व शक्तिकी एक शक्ति, परंतु यह दिव्य शक्तिका एक पहलू ही है।

*

अदृश्य शक्तियां और भागवत शक्ति

कोई भी व्यक्ति जिसमें थोड़ी समझ और अवलोकन शक्ति हो, जो अधिकतर अंतर्मुख चेतनामें रहता हो, हर कदमपर अदृश्य शक्तियोंका खेल देख सकता है जो मनुष्योंपर क्रिया करती हैं और ऐसे परिणाम लाती हैं जिनके माध्यमके बारेमें मनुष्य कुछ नहीं जानता। योग अथवा आंतरिक चेतनासे यह फर्क पड़ता है कि आदमी इन अदृश्य शक्तियोंकी क्रियाके बारेमें सचेतन हो जाता है और सचेतन रूपसे लाभ उठा सकता या उनका उपयोग कर सकता और उन्हें दिशा दे सकता है। सुकरातके जैसे लोग भी होते हैं जिनमें योग किये बिना भी ऐसी आंतरिक चेतना होती या विकसित हो जाती है। बस इतना ही।

*

अगर हमारे चारों ओर ऐसी शक्तियां हमेशा बनी रहती हैं जो अवसाद लाने और हतोत्साह करनेमें लगी रहती हैं तो हमेशा हमारे चारों ओर और हमारे ऊपर ऐसी शक्तियां भी रहती हैं जिनसे हम सहायता पा सकते हैं, जिन्हें हम अपने अंदर खींच सकते हैं ताकि वे हमें फिरसे उस बल, श्रद्धा, आनंद और शक्तिसे भर दें जो अध्यवसाय करती और विजय पाती है। वास्तवमें तुम्हें यह आदत डालनी चाहिये कि इन सहायक शक्तियोंकी ओर खुल सको और या तो निष्क्रिय रूपसे उन्हें ग्रहण करते चलो या सक्रिय रूपसे उनसे सहायता ले सको क्योंकि तुम इन दोनोंमेंसे जो करना चाहो कर सकते हो। अगर तुम्हें यह ख्याल हो कि वे तुम्हारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर और चारों ओर हैं और उन्हें पानेके लिये श्रद्धा और इच्छा हो तो ज्यादा अच्छा रहता है क्योंकि इसीमें अनुभूति और उनका ठोस अनुभव प्राप्त होता है और उन्हें आवश्यकताके समय या इच्छा-नुसार पाया जा सकता है। यह इन सहायक शक्तियोंके साथ चेतनाका संपर्क जोड़ने और बनाये रखनेका अभ्यास करनेका प्रश्न है।

*

जो लोग योगमें काफी दूर पहुंच चुके हैं उनकी अनुभूतिका एक भाग यह है कि मन, प्राण और शरीरकी सामान्य शक्तियों और क्रियाओंके अतिरिक्त ऐसी शक्तियां और ऊर्जाएं भी हैं जो पीछेसे और ऊपरसे कार्य कर सकती हैं और करती हैं। एक सक्रिय आध्यात्मिक शक्ति भी है जिसे ऐसे लोग पा सकते हैं जो आध्यात्मिक चेतनामें आगे बढ़े हुए हैं। लेकिन सभी लोग इस शक्तिको पाने या पाकर उसका उपयोग करनेकी परवाह नहीं करते। यह शक्ति और किसी भी शक्तिसे अधिक समर्थ और लाभदायक होती है।

*

विज्ञानके अनुसार सारा जगत् ऊर्जाकी लीलाके अतिरिक्त कुछ नहीं है। उसे भौतिक ऊर्जा कहना चाहिये लेकिन अब इस बातमें संदेह किया जाने लगा है कि क्या वैज्ञानिक दृष्टिसे भौतिक पदार्थ ऊर्जाके प्रपंचके अतिरिक्त और कुछ है भी। वेदान्तके अनुसार सारा जगत् किसी आध्यात्मिक सत्ताकी शक्तिकी लीला है, वह एक आद्या चेतनाकी शक्ति है चाहे वह माया कहलाये या शक्ति, चाहे उसका परिणाम भ्रांति हो या यथार्थ। जहांतक मनुष्यका संबंध है, हम जगत्में केवल मानसिक ऊर्जा, प्राणिक ऊर्जा और जड़ पदार्थमें ऊर्जाको जानते हैं लेकिन यह माना जाता है कि इनके पीछे आध्यात्मिक ऊर्जा या शक्ति है जिससे वे निकलती हैं। दोनों ही अवस्थाओंमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी चीजें शक्ति या ऊर्जाका परिणाम हैं। ऐसी कोई क्रिया नहीं है जिसमें कोई शक्ति कार्य करके परिणाम न ला रही हो। जो कोई चीज ऐसी हो जिसमें शक्ति नहीं है वह या तो मृत होगी या अवास्तविक या जड़ और परिणामशून्य। अगर आध्यात्मिक चेतनाके जैसी कोई चीज न हो तो योगकी कोई वास्तविकता नहीं हो सकती और अगर कोई योग शक्ति, आध्यात्मिक शक्ति या योग ऊर्जा नहीं है तो योगका कोई प्रभाव नहीं हो सकता। जिस योग-चेतना या आध्यात्मिक चेतनामें शक्ति न हो वह मृत या अवास्तविक भले न हो पर स्पष्ट है कि वह जड़, परिणाम-शून्य और फलहीन होगी। इसी भांति जो आदमी योगी या गुरु होनेका दावा करता है परंतु जिसमें आध्यात्मिक चेतना नहीं है, जिसकी आध्यात्मिक चेतनामें शक्ति, योग शक्ति या आध्यात्मिक शक्ति नहीं है, वह या तो झूठे दावे कर रहा है और ढोंगी है या अपने-आप धोखेमें पड़ा हुआ मूर्ख है। वह इससे भी बढ़कर है यदि आध्यात्मिक शक्तिके बिना ही वह यह दावा करता है कि उसने पथ तैयार किया है और दूसरे उसका अनुसरण कर सकते हैं। अगर योग एक वास्तविकता है, अगर आध्यात्मिकता भ्रांतिसे बढ़कर कुछ है तो योग-शक्ति या आध्यात्मिक शक्ति जैसी कोई वस्तु होनी ही चाहिये।

यह स्पष्ट है कि आध्यात्मिक शक्ति है तो उसे आध्यात्मिक परिणाम ला सकना चाहिये अतः उन साधकोंके दावेमें कोई असंगति नहीं है जो कहते हैं कि वे गुरुकी या भगवान्‌की शक्तिको अपने अंदर काम करते या आध्यात्मिक पूर्णता या अनुभूतिकी ओर ले जाते हुए अनुभव करते हैं। अमुक व्यक्तिके बारेमें यह ठीक है या नहीं, यह एक व्यक्तिगत प्रश्न है लेकिन हम इस वक्तव्यको असंभव कहकर अपने-आपमें अविश्वसनीय या प्रत्यक्ष रूपसे मिथ्या नहीं ठहरा सकते। और फिर अगर यह सच हो कि आध्यात्मिक शक्ति ही मौलिक शक्ति है और बाकी सब उसीसे निकली हैं तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह माननेमें कोई असंगति नहीं है कि आध्यात्मिक शक्ति मानसिक परिणाम, प्राणिक परिणाम, भौतिक परिणाम ला सकती है। वह मानसिक, प्राणिक या भौतिक ऊर्जाओंके द्वारा और उन साधनोंके द्वारा जिनसे यह ऊर्जाएं काम लेती हैं, काम कर सकती है। या वह सीधी मन, प्राण, भौतिकपर अपने कार्य-क्षेत्र या अपने विशेष और तत्कालिक कार्यके रूपमें क्रिया कर सकती है।

एक और बात, इसका यह मतलब नहीं है कि आध्यात्मिक शक्ति को हर मामलेमें सफल होना ही चाहिये और अगर ऐसा न हो तो यह इस बातका प्रमाण है कि उसका अस्तित्व ही नहीं है। यह बात किसी भी शक्तिके बारेमें नहीं कही जा सकती। अग्निकी शक्ति जलाती है लेकिन ऐसी चीजें हैं जिन्हें अग्नि जला नहीं सकती, विशेष अवस्थाओंमें आदमी नंगे पैरों जलते लाल कोयलोंपर चलता है। यह तथ्य भी यह प्रमाणित नहीं करता कि आग जला नहीं सकती, या अग्निशक्तिके जैसी कोई चीज नहीं है।

ऋषिवर बोले :

छुट्टियाँ

आज ऋषिवरके आश्रममें बाहरसे बहुतसे लोग आ गए थे जिसकी वजहसे दैनिक कार्यक्रममें कुछ असुविधा-सी हो रही थी, लेकिन असुविधाको असुविधा मान लें तो वह ऋषिवर ही क्या हुए। विद्यार्थी हर बारकी तरह आ गए और उनमें आपसमें घुसुर-पुसुर शुरू हो गई।

विहगने कहा, "ये सब हमारे पासके विश्वविद्यालयके विद्यार्थी हैं। उनके यहां आज छुट्टी है इसलिए घूमनेके लिए निकल पड़े हैं।"

मारिया बोली, "भई, हमारी तो समझमें नहीं आता। इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगोंके यहां इतनी अधिक छुट्टियां होती रहती हैं। ये लोग काम कब करते होंगे? कोई त्योहार हो तो छुट्टी, कोई बड़ा आदमी आ जाए तो छुट्टी, कोई बड़ा आदमी मर जाय तो छुट्टी, ये कहींसे विजयश्री लेकर आएं तो छुट्टी। बस, छुट्टी, छुट्टी और छुट्टी।"

"हां, मैंने भी कहीं पढ़ा है कि हिन्दुस्तानमें बहुत अधिक छुट्टियां मनाई जाती हैं। और छुट्टियोंका सदुपयोग होता हो तो कोई बात है। अधिकतर लोगोंकी छुट्टियां बीतती हैं आलस्य या निष्क्रियतामें या फिर शक्तिके अपव्ययमें। इस तरहकी छुट्टीसे क्या लाभ?" यह कनिष्ठा थी।

वन्दनाने कहा, "मुझे भी कुछ ऐसा ही विचार आ रहा था। मैं सोच रही थी पण्डित नेहरू जैसे कर्मठ, देशके दीवानेकी पुण्य-तिथि मनानेके लिए छुट्टी की जाए, यानी, उस दिन सारे देशके उत्पादनको बन्द कर दिया जाए, विद्यार्थी पढ़ाई-लिखाईकी जगह इधर-उधर समय नष्ट करते फिरें और लोग अपने अमूल्य जीवनका सबसे अधिक मूल्यवान् समय फालतू मटरगश्ती, गप्पों और इससे भी ज्यादा बुरी और वाहियात चीजोंमें लगाएं तो क्या यह विडम्बना नहीं है?"

विहगने बीचमें ही कहा, "पिछले दिनों मैंने अखबारमें पढ़ा था किसी कारखानेके लोगोंने यह ठीक किया कि वे नेहरूजीके जन्म दिवस और पुण्यतिथिपर दो-दो घण्टे अतिरिक्त काम करेंगे और उससे जो आमदनी होगी उसे अपने-आप न लेकर किसी राष्ट्र-निर्माण कार्यमें लगा देंगे। मुझे तो उनकी यह बात बहुत पसंद आई। फिर भी छुट्टी मनानेके पीछे कोई सत्य अवश्य रहा होगा क्योंकि सत्यके आधारके बिना मिथ्याचारकी दीवार खड़ी नहीं रह सकती।"

वन्दनाने इधर-उधर देखा कि ऋषिवर कहीं आ तो नहीं रहे, फिर बोली, "अभी कुछ दिन पहले मैं ऋषिवरसे इसी विषयपर बात कर रही थी। उन्होंने मुझे अपनी इस विषयपर लिखी हुई एक कहानी दिखाई। मुझे वह बहुत अच्छी लगी और मैंने उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी कापीमें नकल कर लिया। लो सुनो:

ॐ तेजोऽसि तेजो मे दा स्वाहा, बलमसि बलं मे दा स्वाहा...

आचार्य मार्कण्डेयके आश्रमके ब्रह्मचारी अपने नित्य कर्ममें लगे हुए थे। संध्या-वन्दनके बाद उनमें कुछ घुसपुस-सी होने लगी। आचार्य अभी ध्यानमें ही थे और ब्रह्मचारी अपने नये उत्साह और कौतूहलको दबाए, अपनी उत्तेजनाको छिपाए कानाफूसी करते हुए इधर-उधर टहल रहे थे। उनके यहां कुछ अरब देशोंके विद्यार्थी आए हुए थे। बाहरके लोगोंके साथ पहला संपर्क था। भोले बालकोंको उनकी हर बातपर आश्चर्य हो रहा था।

आचार्य मार्कण्डेय जंगलमें रहा करते थे और उनका गुरुकुल उन्हीं-के चारों ओर रहा करता था। आचार्य कभी-कभी एक वनमेंसे दूसरेमें चले जाया करते थे और उनका कुल भी उनके साथ स्थान बदल लेता था। उन लोगोंकी आवश्यकताएं कम थीं। सभी प्रकृतिके बालक थे और उसीकी गोदमें पल रहे थे। मोटा-झोटा खा लेते और एक गाती धोती बांधे अपने काममें लगे रहते। उनके लिए भले आंधी आए, मेह आए, सभी एक समान था। दजला और फिरातके किनारेके रहनेवाले नए विद्यार्थियों और अध्यापकों-को देखकर उनके अंदर कुतूहल जागा। उनका जीवन, उनकी चाल-ढाल, उनके रंग-ढंग इनसे बिल्कुल भिन्न थे। इन्हें शिक्षा दी गयी थी प्राणी मात्रको मित्रकी दृष्टिसे देखनेकी, पर आगन्तुक तो शिकार करते और उसका मांस खाते थे। इन्हें शिक्षा मिली थी दिन-रात नित्य कर्म, आचार्य सेवा और भगवद् भजनमें लगे रहनेकी। वर्षा ऋतुमें जब कुछ काम न कर पाते तो अनध्याय हो जाता। इसके विपरीत नवागन्तुक हर सप्ताह छुट्टी मनाया करते थे और उस दिन खूब हो-हल्ला करते मानों सारा आसमान ही सिरपर उठा लेंगे।

नवागन्तुकोंके साथ परिचय बढ़ा। ब्रह्मचारी पहले तो उनको कुछ आश्चर्यके साथ देखते रहे मानों वे कोई अचम्भेकी चीज हों। उसके बाद उनकी कई चीजोंकी सराहना शुरू हुई। मनमें विकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जागा। सोचा हमारा कठोर जीवन भी कभी-कभी बदल जाया करे तो हमें भी कभी अनध्याय और नित्य कर्मसे अवकाश मिल जाए तो...मजा आ जाए।

पर आचार्यसे यह बात कौन कहे? उनके सुकोमल हृदयको आघात न लगे कहीं। खैर, कुछ दिन यूं ही बीत गए। आपसमें बातचीत तो रोज होती पर वह कानाफूसीकी हदसे बाहर न निकल पाती। पर आखिर एक दिन हिम्मत करके दो-चार ब्रह्मचारी आचार्यके पास जा पहुंचे। आचार्यने बड़े प्रेमसे उन्हें बिठाया और उनके असमय आनेका कारण पूछा। ब्रह्मचारियोंके मनमें खटक रहा था कि शायद उनकी बात आचार्यको पसंद न आए। जी कड़ा करके एकने कहा, "आचार्यपाद, दजला और फिरातके किनारेसे जो विद्यार्थी आए हैं उनके साथ हमारा काफी मेल-जोल हो गया है। वे भी एक बहुत सभ्य और सुसंस्कृत देशके नागरिक मालूम होते हैं।"

आचार्य बीचमें ही बोले, 'हां, ये लोग मुसलमान हैं। उस तरफके देशोंमें आजकल आर्य धर्म नहीं चलता। उसकी जगह यहूदी धर्मने ली थी, फिर ईसा आए और लोग ईसाई बन गए और फिर मुहम्मदके अनुयायियोंने इन सब देशोंको मुसलमान बना डाला। पर इन तीनों धर्मोंमें बहुत समानता है। इन लोगोंने भौतिक विद्याओंमें काफी प्रगति कर ली है।'

'गुरुवर', एक ब्रह्मचारीने कहा, 'उन विद्यार्थियोंका कहना है कि हमारी कार्य-प्रणाली ठीक नहीं है। वे लोग सप्ताहमें छः दिन काम करते हैं और एक दिन अनध्याय रखते हैं जिस दिन वे खूब मौज करते हैं। उनका कहना है कि इस तरह ज्यादा अच्छा काम होता है।'

ब्रह्मचारी कहते-कहते रुक गए। आचार्यकी आंखोंसे स्नेह बरस रहा था। उन्होंने कहा, हां, 'ये सेमेटिक धर्म मानते हैं कि भगवान्‌ने छः दिनों या छः युगोंमें सृष्टि बनाई थी और सातवें दिन या सातवें युगमें विश्राम किया। इस दिनको भगवान्‌का दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह सकते हैं। इस चीजका अनुसरण करते हुए इन धर्मोंके आचार्य इस निष्कर्षपर पहुंचे कि मनुष्योंके लिए भी कुछ इसी प्रकारकी व्यवस्था होनी चाहिए। उन्होंने निश्चय किया कि मनुष्य छः दिन अपना काम-काज करे, अपने व्यक्तिगत कामोंमें लगा रहे और अहंके द्वारा प्रेरित काम करता रहे, परंतु सातवें दिनको भगवान्‌के लिए अलग करके रख दिया जाए। उस दिन अपनी इच्छाओं, कामनाओं और अपने अहंको भूल कर मनुष्य अपने अंदर डुबकी लगाए या अपने ऊपर देखे। उस दिन वह अपने-आपको पूरी तरहसे अपने स्रोतके साथ, अपने बनानेवालोंके साथ एक कर दे, उसकी चेतना प्राप्त करे और उससे नई शक्तिका अर्जन करे। यह था इन छुट्टियोंके आरंभका रहस्य। पर इन लोगोंने अपने धर्मकी सच्ची सीखको भुला दिया है और इन्होंने यही समझ रखा है कि जीवनका उद्देश्य है खाना-पीना और मौज करना। काम भी करते हैं तो इसी उद्देश्यसे और छुट्टी भी मनाते हैं तो इसी उद्देश्यसे। मुझे दीख रहा है कि मानवजाति इसी गर्तमें गिरती जा रही है। वह मौजको, स्वच्छन्दताको ही सब कुछ मान बैठी है। परंतु आर्य लोग जीते हैं तो भगवान्‌के लिए और मरते हैं तो भी उसीके लिए। हमारा एक-एक काम, चाहे वह पढ़ना हो या लकड़ियां बीनना, वेद-पाठ हो या पानी भरना, सभी भगवान्‌की सेवाके लिए किया जाता है। क्या हम जगज्जननी-की सेवाको भार मान सकते हैं? स्वयं भगवान्‌ने कहा है कि जीवन-के रहते कामसे छुट्टी पाना असंभव है। कामसे छुट्टी पानेका एक ही उपाय है और वह है निर्वाण। पर उसे प्राप्त करनेके लिए भी तो सबसे बढ़कर मेहनत करनी पड़ती है। जरा सोचो, भगवान् अगर एक सेकेण्डके लिए छुट्टी ले लें तो!—हम भी तो उन्हींका काम कर रहे हैं।'

सब ब्रह्मचारी चुप थे। एक शांतिका वातावरण छा गया था। अब छुट्टियां कौन मांगता?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंदकी एक अनुभूति

श्रीअरविंद १८९३में भारत लौटे थे। जैसे ही उन्होंने बंबईकी भूमिपर पांव रखा कि उन्हें एक प्रगाढ़ शांतिका अनुभव हुआ, ऐसी शांतिका जो किसी भी विघ्न या बाधासे अछूती रहती है। यह मानों भारत मांका उन्हें पहला उपहार था।

अगले वर्ष यानी १९८४में श्रीअरविंद अपनी घोड़ागाड़ीमें कहीं जा रहे थे। कमेटी बागके पास उन्हें जोरसे लगा कि कोई दुर्घटना होनेवाली है। लेकिन मारनेवालेसे बचानेवाला ज्यादा बलवान होता है। उनके अंदरसे एक महान् दैवी शक्तिका उदय हुआ जिसने दुर्घटनासे बचा लिया। इसके बहुत जमानेके बाद, १९३९में, उन्होंने अपनी एक कवितामें लिखा : कोलाहलपूर्ण मार्गपर जो किसी भविष्य-वादीकी सनक मालूम होती थी, मैं संकटके खुरोंके नाचके पीछे बैठा था। और अचानक मैंने अनुभव किया कि प्रकृतिके खांचोंका अति-क्रमण करता हुआ उनका शरीर मुझे अपनी भुजाओंमें ले रहा है। मेरे सिरके ऊपर एक विराट् सिर दिखायी दे रहा था, उसके चेहरे-पर अमरताकी शांति थी। उसकी सर्वशक्तिमान दृष्टिमें सारे दृश्यको अपने साम्राज्यमें, प्रभुत्वमें रखनेकी शक्ति थी। उसके केश सूर्य और वायुमें लहरा रहे थे। सारा विश्व उसके हृदयमें समाया हुआ था। उसने मेरे अंदर शाश्वत शांतिको, उस एकमेवकी अमर शक्तिको प्रतिष्ठित किया। वह क्षण बीत गया। सब कुछ जैसा का वैसा हो गया। केवल उसकी अजर अमर स्मृति बाकी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीर्वाण वाणी

क: पौष्पिक: कापि च तस्य पत्नी
पुष्पैश्च कैर्देववरस्य पूजा।
कार्या तथा किं गडुकं विधेयं
मंत्रश्च कस्तत्र वद प्रयोज्य: ॥१॥

माली कौन ? और मालिन कौन ? कौनसे कुसुम उसकी पूजामें चढ़ाओगे ? किस जलसे उसका अभिषेक करोगे ? और वह मंत्र कौन-सा है जो स्वात्म-शंकरके लिए प्रयोज्य (अभिमंत्रण योग्य) है ?

इच्छामनोभ्यां ननु पौष्पिकाभ्या-
मादाय पुष्पं दृढ़भावनाख्यम्।
स्वानन्दपूरैर्गडुकं च दत्त्वा
मौनाख्यमंत्रेण समर्चयेशम् ॥२॥

मन माली और जिज्ञासा मालिन। भाव-कुसुमोंसे उसकी पूजा करना। शशिरस (अमृत जल)से उसका अभिषेक करना और तब मौनरूपी मंत्र-जापसे स्वात्म-शंकरकी आराधना करना।

यादृशं कुरुते कर्म तादृशं लभते फलम्
नान्यस्तु फलभागी स्यात् स्वात्मैव फलभुग्भवेत्।
फलकामो न कुर्यान्निःस्पृहः कार्यमाचरेत्
अर्पयित्वात्मने सर्वं कल्याणं लभते परम् ॥३॥

जो जैसा कर्म करेगा उसका वैसा फल उसे भुगतना पड़ेगा। दूसरे उसमें भागीदार नहीं हो सकते। मनुष्यको चाहिए कि वह निःस्पृह होकर कर्मफलको स्वात्म (परमात्मा)के ऊपर छोड़ दे। फिर जहां कहीं भी जाएगा वहां उसका हित होगा।

(भुवनवाणी प्रेस लखनऊसे प्रकाशित 'लल्द्यद' से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

१९८४ का वार्षिक अधिवेशन

हर बारकी तरह इस बार भी पांडिचेरीमें अगस्तके दर्शन दिवससे पहले श्रीअरविंद सोसायटीका वार्षिक अधिवेशन होगा। उसी अवसरपर कार्यकर्ता शिविर भी होगा। सभी सदस्योंका स्वागत है।

अधिवेशनके लिए सिर्फ सोसायटीके उन सदस्योंके लिये जिनके नाम सोसायटीके रजिस्टरमें दर्ज हैं, रेलवे कंसेशन मिलनेकी संभावना है। जो लोग इससे लाभ उठाना चाहें वे हमारे मेम्बरशिप सेक्शनको लिखें। हमारी अतिथिशालाओंमें स्थान बहुत सीमित है। हमें बाहरके होटलों और डार्मिटरीजमें व्यवस्था करनी पड़ती है। जो लोग हमारे द्वारा रहनेकी व्यवस्था करवाना चाहते हैं वे एकोमोडेशन सेक्शन, श्रीअरविंद सोसायटीको निश्चित फार्मपर सूचना भेजें, साथ ही कम-से-कम २० रु. पेशगी भी भेजें। बाहरके चेक नहीं स्वीकार किये जाते, ड्राफ्ट या धनादेश एकोमोडेशन सेक्शनके नाम भेजें जायें।

केंद्रोंके समाचार

पश्चिम बंगालके केंद्र और वहांकी शाखाएं बहुत सक्रिय रहीं। न्यायमूर्ति बासकने पुरुलियामें एक प्रार्थना मंदिरका उद्घाटन किया। मार्चके अंतमें योगासनके प्रशिक्षणकी व्यवस्था थी जिसमें पचास लोगोंने भाग लिया। श्री सुधीर दीवान सिलीगुड़ी गये और वहां पूर्ण योग और जीवनके लक्ष्यके बारेमें भाषण दिये। श्री मजूमदारने ईस्ट कलकत्ता रीजनल कमेटीद्वारा आयोजित स्वाध्याय शिविरका संचालन किया। लगभग ३०० सदस्य उपस्थित थे। झालड़ामें हमारा केंद्र एक नर्सरी और प्राइमरी स्कूल चला रहा है, सिलाई आदि सिखानेकी भी व्यवस्था है। २९ मार्चको बच्चोंकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Courage and love are the only indispensable virtues; even if all the others are eclipsed or fall asleep, these two will save the soul alive.

Sri Aurobindo

★

ASSAM TEA WAREHOUSING CORPORATION

24, Ganesh Chandra Avenue, Calcutta-700 013

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Love in her was wider than the universe,
The whole world could take refuge in her single heart.

Sri Aurobindo

Arvind Exports (P) Ltd.

Exporters of Engg. Goods, Pesticides, Chemicals, Ceramics, Readymade Garments & Handicrafts etc.

Calcutta Head Office :
75c, Park Street,
Calcutta - 700 016
INDIA

Bombay Office :
76, 77 Atlanta, Nariman Point
Bombay - 400 021
INDIA

Phones:

Offi: 240277 • 240367
Resi: 814512
Telex: 011-4104
Gram: "ARVIEXPO"

Offi: 249065 • 248642
Resi: 478368
Telex: 021-7984
Gram: "AUROEXPORT"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

HOUSE OF PRECISION

We manufacture a wide variety of Educational Equipment in addition to Agro-Equipment which include Seed Processing & Testing Equipment.

Our range in Educational Equipment includes Optical, Electronic, Electrical & Engineering Instruments & Several kinds of Mechanical and Electronic Teach-aids for all levels of study.

For details please contact:

The Oriental Science Apparatus Workshops

Jawaharlal Nehru Marg

AMBALA CANTT—133 001

PHONES : 20796, 21472 GRAM : SCIENCE

TELEX : 392-204 OSAW IN

Branch at : **New Delhi**

PHONE : 521145 GRAM : OSAW

TELEX : 31-2304 OSAW IN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

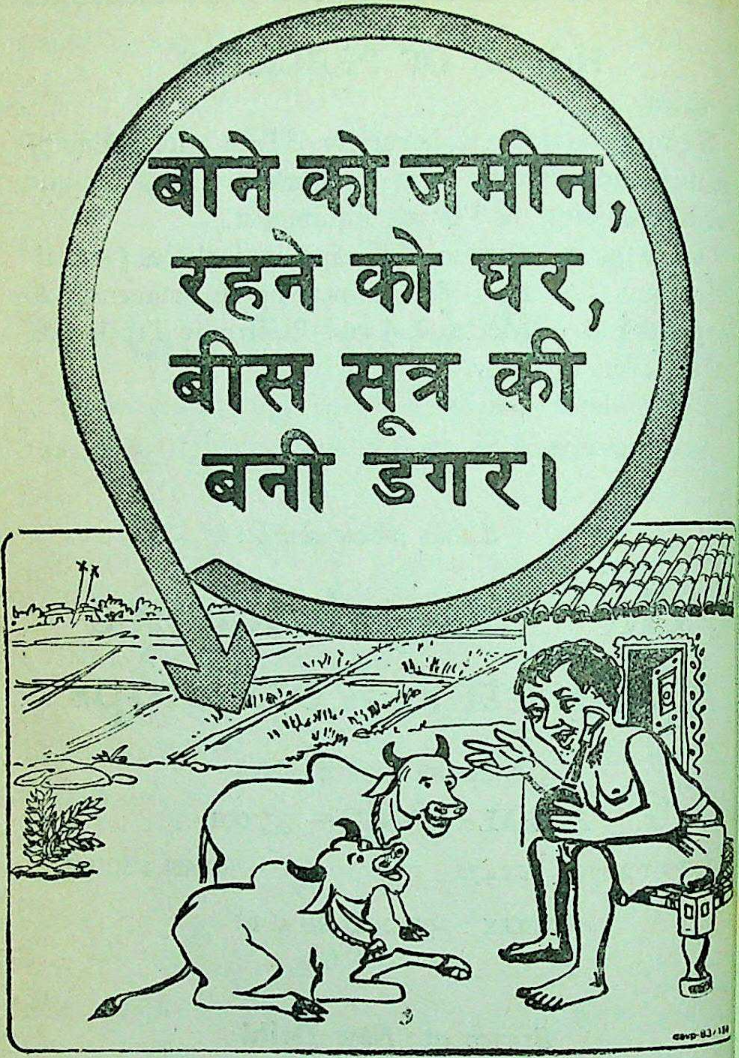

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभामें श्रीमती स्नेह बहलने उच्चतर जीवनके महत्व और माताजीको सदा याद रखनेकी आवश्यकता समझायी।

गुजरातमें भी सोसायटीके केंद्रों और शाखाओंने बहुतसे काम शुरू कर रखे हैं। बड़ौदा शाखाने 'सावित्री'पर एक सुन्दर-सी स्मारिका प्रकाशित की है जिसमें अंग्रेजी और गुजराती तथा एक हिन्दी लेख है।

श्रीअरविंद केंद्र अहमदाबादके डा. थानकीने श्रीअरविंदकी शिक्षाके बारेमें भी लगभग सत्तर स्थानोंपर भाषण दिये। शेराके मणिभाई पटेलने कई केंद्रोंमें विधिवत् एक्यूप्रेशर (कृपाचक्र)के द्वारा रोग निवारणके बारेमें बतलाया। बड़ौदाके बाबूभाई पटेल महसाणाने कई नगरोंमें ओरोफिल्म और चित्रोंकी प्रदर्शनियां दिखानेके साथ-साथ अनेक भाषाओंमें श्रीअरविंद साहित्यका भी प्रदर्शन किया। हैदराबादके डा. नाडकर्णीने भुजमें सावित्रीपर भाषण दिये। जंतरालमें स्थानीय न्यासकी ओरसे 'आदर्श बालक' नामक पुस्तिका जिले भरके बच्चोंको बांटी गयी।

एक निवेदन

जब कभी आप ड्राफ्ट या धनादेश भेजें तो मेहरबानी करके भेजनेवालेका नाम, पता और पैसा भेजनेका उद्देश्य स्पष्ट रूपमें अवश्य लिखें।

प्रगतिकी सूचनाएं नव विहान और आई. ई. आर. टी.

संप्रति यह विभाग शिक्षाके तीन क्षेत्रोंमें काम कर रहा है।

१) **अध्यापकोंके लिये संदर्भ पुस्तकालय** जहां शिक्षाके बारेमें सर्वांगीण प्रयासके अलग-अलग पहलुओंके साथ संबंध रखनेवाले लेखों, पुस्तकों आदिका संकलन किया जाता है।

२) **शिक्षासंबंधी सामग्री और लेखोंका संग्रह** देखनेके लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

आनेवाले अध्यापकों और शिक्षासे संबद्ध व्यक्तियोंको बतलानेके लिये ऐसी चीजें जमा की जाती हैं जिन्हें खरीदा भी जा सकता है और अपने यहां बनाया भी जा सकता है। ऐसी चीजोंपर ज्यादा जोर दिया जाता है जिनमें स्वयं विद्यार्थियोंको सक्रिय रूपसे भाग लेने और शोध करनेका अवसर मिले। कुछ नये विचार भारतके अलग-अलग स्थानोंसे और कुछ विदेशोंसे आते रहते हैं। जब हमारे पास पर्याप्त सामग्री तैयार हो जायगी तो अवस्थाके अनुकूल चीजोंका एक सूची-पत्र तैयार करनेका विचार है।

बालकोंका कक्ष--यहां पांडिचेरी आनेवाले बच्चोंका स्वागत होगा, उनकी रुचियों, कठिनाइयों और आवश्यकताओंका अध्ययन किया जायगा और उनके अनुसार क्रिया-कलाप सुझाये और विकसित किये जायेंगे।

अभी इन दिशाओंमें आरंभ ही हुआ है। हमारे पाठक पुस्तकों, लेखों आदिके बारेमें उपयोगी सूचनाएं रिसर्च कोओरडिनेटर, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी--६०५००२ के पते पर भेज सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

जुलाई १९८४ वर्ष १४, अंक १२, पूर्णांक १६८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

श्रीअरविंद और माताजीके संदेश		
संपादकीय : संघे शक्ति	अनुबेन	
दैनन्दिनी		
श्रीमातृवाणी : प्राणके विकारके बारेमें		
वर्तमानकी यह घड़ी		१
अचूक सहारा		१
धम्मपदसे स्फुट वचन		१
विद्यार्थियोंको दिये गये दो उत्तर		१
कृतज्ञताका पुरस्कार	अनुबेन	२
श्रीअरविंद वाणी : भावी भारत		२
देशके नेता		२
श्रीअरविंदकी शिक्षा और साधना-पद्धति		२
ध्यान		२
कल्पना धरतीपर उतरी	अनुबेन	२
गीर्वाण-वाणी		३
संग्रह और वितरण		३
एक पाठकका पत्र		३
अधीरताके बिना तीव्रता		३
सोसायटी समाचार		आ०

वार्षिक अग्निशिखा १०.००; पुरोधा १४.००; दोनों २२.००
आजीवन अग्निशिखा १७५.००; पुरोधा २२५.०० दोनों ४००.००
दोनोंकी आजीवन सदस्यताके लिए ४०० एक मुश्त या किश्तोंमें

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :
संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र, अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद और माताजीके संदेश

उच्चतर चेतनामें उठो, उसकी ज्योतिको अपनी प्रकृतिपर नियंत्रण रखने और उसे रूपांतरित करने दो।

—श्रीअरविंद

*

दिव्य प्रेम तुम्हारा लक्ष्य हो।
पवित्र प्रेम ही तुम्हारी राह बने।
अपने प्रेमके प्रति सदा सच्चे रहो और सभी कठिनाइयां जीत ली जाएंगी।
अपने प्रिय बालकको प्रेम और आशीर्वाद।

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघे शक्ति

इन दिनों बचपनमें पढ़ी एक कहानी बार-बार स्मृति-पटलपर कौंध उठती है। और फिरसे दोहराये जानेकी इच्छा प्रकट कर रही है।

एक था लकड़हारा। वह बहुत गरीब था, किसी तरह जंगलसे लकड़ी काट लाता और शहरमें बेचकर अपना गुजारा चलाता। बेचारा कभी इतना धन न कमा सका जिससे निश्चिन्त होकर आराम कर पाता। धीरे-धीरे उमर बढ़ती गयी और एक दिन बूढ़ा लकड़हारा बीमार पड़ गया। उसकी बीमारी बढ़ती चली गयी और उसे विश्वास हो गया कि अब वह उठनेसे रहा। वह अपने बेटोंकी आपसी नोंक-झोंकसे खूब परिचित था। एक दिन तीनों बेटोंको एक साथ बुलाकर हर एकसे बोला, जंगलसे कुछ सूखी टहनियां बीन लाओ। यह मेरी आखिरी इच्छा है। जल्दी करो। सठियाये बापकी विचित्र इच्छा सुनकर बेटे चकराए तो बहुत किंतु अंतिम इच्छाका पालन करना अपना कर्तव्य समझकर जंगलकी ओर चल पड़े। थोड़ी देरमें तीनों बापके आगे लकड़ियां लिये उपस्थित हुए। बापने तीनोंकी लकड़ियोंका एक गट्ठर बनवाया और पहले बेटेसे कहा, "लो बेटा, इसे अपने हाथोंसे तोड़ो।" उसने बहुत जोर लगाया लेकिन गट्ठर जैसाका वैसा बना रहा मानों उसका मजाक उड़ा रहा हो। बारी-बारीसे तीनोंने कोशिश की परंतु गट्ठर अपने ठोसपनको छोड़नेके लिए तैयार न हुआ। अब बापने एक टहनी अलग की और एक बेटेको देते हुए कहा—इसे तोड़ो। उसने बिना जोर आजमाये उसके दो टुकड़े कर दिये। बूढ़ा लकड़हारा बोला, "बेटो, देखा, गट्ठरमें बंधी लकड़ियां तुम जोर लगाकर भी न तोड़ पाये लेकिन जब लकड़ियां अलग हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयीं तो तुम आसानीसे तोड़ सके। एकतामें बल है, यह बात याद रखो और मेरे मरनेके बाद एक साथ मिलकर रहना। तुम एक होकर न रह पाओगे तो दुनियामें रहना आसान न होगा। तुम भी इस सूखी टहनीकी तरह टूट जाओगे।"

बूढ़े लकड़हारेका वह उपदेश आजके भारतको देखकर बार-बार दिमाग दोहराता रहता है।

स्वाधीनताके समय या चीनके आक्रमणके समय हमारा जो ऐक्य दीखता था वह कहां लुप्त हो गया? हमारी आपसी तू-तू मैं-मैं के कारण ही पाकिस्तान बना। क्या अब भी हम पाठ नहीं सीखेंगे?

आजकल विभाजनकी शक्ति पूरे जोरसे देशमें चुडैल बनी नाच रही है। किसीने स्वप्नमें भी यह न सोचा होगा कि गो-ब्राह्मण-की रक्षा करने और विदेशियोंसे भिड़नेके लिए जिन सिखोंने जन्म लिया था वही आज देशमें खूनकी होली खेलेंगे। क्या सिख गुरुओंकी आतमा यह देखकर प्रसन्न होती होगी?

यह तो हमारे विभाजनका ही एक पहलू है। हम असमियोंको क्यों अपनापन नहीं दे पाते?

क्या हमारे चरित्रमें कोई कमी है जिसके कारण हम अपनेसे भिन्न रूपको देखकर बौखला उठते हैं और उन्हें मां भारतीके शरीरका अंग न मानकर उनका बहिष्कार करनेपर तुल जाते हैं?

यह कहना कि फलां जाति दगाबाज है, इसलिये उसका बहिष्कार करना चाहिए या फलां लोग आस्तीनके सांप हैं, उनका विश्वास कभी मत करना, चरित्रकी अपरिपक्वता दर्शाता है। इतिहास गवाह है कि हर जातिमें, हर काममें देशद्रोही, दगाबाज पाये जाते हैं। यह केवल भारत ही नहीं, सारे संसारके इतिहासका एक तथ्य है।

परिपक्व मनुष्य समझता है कि यह मानव स्वभावकी कमजोरी है जो यहां-वहां फूट पड़ती है। इसका उपाय घृणा नहीं, वैर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं, चरित्रका उन्नयन है। मानव चरित्रकी गहराईको समझनेवा हमारे आदर्श पुरुषोंकी बानी सुनें और गुनें, तो हम उसका उपाय पायेंगे। बुद्धने कहा है, "वैरसे वैरका शमन नहीं होता, प्रेम वैरको शांत कर सकता है।" श्रीअरविंद कहते हैं कि अगर चरि को बदलना चाहते हो तो भगवान्के समर्पित हो जाओ। उन्हीं शक्तिसे तुम अपने चरित्रको बदल सकते हो। अगर हम सुदू भूतकालकी झांकी लें तो उदात्त वाणीमें सुनते हैं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अगर सारा संसार अपना परिवार बन जाय, अगर पशु पक्षी हमारे परिजन बन सकें, तब तो कहना ही क्या? उस आद अवस्थासे हम बहुत दूर हैं। इतनी दूरकी न सोचकर अग हम भारतको अपना गृह मान लें और भारतवासियोंको एक कुटुम्ब सदस्य, तो यह भी हमारे लिये एक बड़ा कदम होगा।

इस समय हमें अपने राष्ट्रीय गीतको बार-बार दोहराना चाहिए

पंजाब सिन्ध गुजरात मराठा
द्रविड़ उत्कल बंग
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मांगे
गाहे तव जयगाथा
जनगण मंगलदायक जय हे
भारत-भाग्य विधाता
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे॥

—अनुवेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

जुलाई

१. अभी जो नहीं है या दूर है वह सब निकट आ जायगा।
२. सहन कर, अन्ततः तू आनंदकी राह पा लेगा।
३. स्वर्गकी पुकार विरल होती है और विरलतर होता है वह हृदय जो कान दे। अपने हृदयकी धड़कनोंको जीत ले। तेरा हृदय भगवान्में धड़के।
४. हे भगवान्के सैनिक और वीर, यह सब दुःख, लज्जा और कष्ट किसलिए? तेरा जीवन तो एक गौरव है, तेरे कार्य आत्म निवेदन हैं, विजय तेरा देवत्व है और पराजय तेरी जीत है।
५. वर दे कि हमारा मार्ग पूर्णताका मार्ग हो, परित्यागका नहीं, हमारा लक्ष्य युद्धमें विजय हो, समस्त संघर्षसे पलायन नहीं।
६. अपने ऊपर जो भी विजय प्राप्त होती है उसका अर्थ होता है नयी विजयें पानेके लिए बल पाना।
७. अंतरात्माकी आंतरिक शक्तिसे जीवनका चेहरा देखो और परिस्थितियोंके स्वामी बन जाओ।
८. सबसे अधिक सुखी है वह जो श्रद्धापर ऐसे खड़ा हो जैसे चट्टानपर।
९. मनुष्य आशा और साहस इसीलिए करता है क्योंकि तू उसमें है। तू है, इसीलिए मनुष्यकी आत्माएं स्वर्गतक चढ़ सकती हैं।
१०. जैसे-जैसे ज्ञान बढ़ता है, अंदरसे प्रकाश चमकता है।
११. किसी दिन, निश्चय ही प्रेम जगत्को मृत्युसे बचा लेगा।
१२. सुरक्षित वही हैं जो भगवान्को अपने हृदयमें रखें।
१३. उसकी असफलता असफलता नहीं है जिसे भगवान् राह दिखलाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४. हर रेखा और हर गोलाईका कुछ अर्थ है। संयोगके
खेलका कुछ अर्थ होता है।

१५. जब सब कुछ असफल हो जाय तो हम अपने ही अंदर
परिवर्तनकी चाबी छिपी हुई पा सकते हैं।

१६. पीड़ा मनुष्योंको महानतामें गढ़नेवाला प्रकृतिका हाथ है।

१७. असली कठिनाई हमारे परिवेशमें नहीं, सदा-सर्वदा हमा
अंदर होती है।

१८. तीव्रतासे अभीप्सा करो परंतु अधीर हुए बिना।

१९. पलायन, चाहे जितना ऊंचा हो, जीवनका उद्धार नहीं करता

२०. जीवन, जीवन, जीवन—मैं भावावेशोंको चिल्लाते हुए सुनत
हूं। भगवान्, भगवान्, भगवान्—यह रहा अंतरात्माक
उत्तर। जबतक तू जीवनको भगवान्के रूपमें न देखे, उस
प्यार न करे, तबतक स्वयं जीवन तेरे लिए मुहरबंद आनं
रहेगा।

२१. अनंतमें ही हमारे जीवनका विश्राम है।

२२. ऊतकों और कोषाणुओंमें एक दिव्य शक्ति बहेगी और श्वास
वाणी तथा क्रियाको बदल देगी।

२३. भीतर एक चैत्य अग्नि जलानी चाहिए जिसमें भगवान्
नाम लिख लिखकर हर चीज झोंक दी जाय।

२४. सत्य वास्तविक आध्यात्मिकताका आधार है और साहस
उसकी अंतरात्मा।

२५. सभी वस्तुओंको मधुमें बदल दो, दिव्य जीवनका यही गुर है

२६. अंतरात्मा भगवान्की एक चिनगारी है, भगवान्की ओर ज्वाला
के रूपमें बढ़ना उसका सच्चा जीवन और उसके अस्तित्वक
प्रयोजन है।

२७. नीरव हृदय अनुच्चारित शब्दको सुनता है।

२८. यह एक आशा नहीं, निश्चित है कि प्रकृतिका पूर्ण रूपांत
होके रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२९. भागवत स्पर्श हो तो सब कुछ हो सकता है।
३०. सभी विपरीतताएं भगवान्‌के चेहरेके पहलू हैं।
३१. परोपकार, कर्तव्य, परिवार, देश, मानव-जाति जब अंतरात्माके यंत्र न हों तो उसके कारागार होते हैं।

—प्रकीर्ण

प्राणके विकारके बारेमें

क्या एकदम जन्मसे ही प्राण विकृत होता है?

यदि तुम्हारा जन्म आकस्मिक न हो तो तुम भली-भांति यह मान सकते हो कि उसमें कोई विकृति नहीं है, पर जन्मके समय तुम जो कुछ होते हो वह अधिकांश समय लगभग पूर्णतः वही होते हो जो तुम्हारे पिता और माताने तुम्हें बनाया है, और फिर, उनके माध्यमसे, जो कुछ तुम्हारे दादा-दादीने तुम्हें बनाया है। प्रत्येक परिवारमें एक विशेष प्राणिक परंपरा होती है और, उसके अतिरिक्त, चेतनाकी वह स्थिति होती है जिसमें तुम निर्मित होते हो, गर्भस्थ होते हो—वह क्षण जिसमें तुम गर्भमें आये थे—और वह, लाखों बारमें एक बार भी, वह अवस्था सच्ची अभीप्साको पुष्ट नहीं करती; और सच पूछा जाय तो केवल सच्ची अभीप्सा ही तुम्हारे प्राणको सब प्रकारकी मिलावटोंसे शुद्ध रख सकती है, जो प्राणतत्त्व सत्ताका निर्माण करनेके लिये आकर्षित हुआ है उसे सब प्रकारकी छूतसे मुक्ति, एक शुद्ध तत्त्व बना सकती है। मेरा मतलब यह है कि यदि चैत्य पुरुष वहां प्रवेश करता है तो वह अपने विकासके अनुकूल तत्त्वोंको एकत्र कर सकता है। संसार अभी जैसा है, उसमें वस्तुएं इतनी अधिक मिली-जुली हैं, हर प्रकारसे इतनी अधिक मिल-जुल गयी हैं कि पूरी मात्रामें शुद्ध प्राण-तत्त्वोंको प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना प्रायः असंभव है और इसलिये वे अन्य सभी दूषित सत्ताओं छूत ग्रहण कर लेते हैं।

मैं समझती हूं इस विषयमें मैं पहले कह चुकी हूं, मैंने कहा कि बच्चेके जन्मसे पहले माता-पितामें किस प्रकारकी अभीप्सा होनी चाहिये; परंतु जैसा कि मैं कह चुकी हूं, इस तरहकी चीज हजारों लाखों उदाहरणोंमेंसे एकमें भी नहीं होती। किसी बच्चेको इच्छि गर्भाधान अत्यंत विरल है; अधिकांशतः यह एक संयोग होता है असंख्य माता-पिताओंमें बिल्कुल थोड़े-से लोग ही ऐसे होते हैं जो साधारण रूपमें भी यह चिंता करते हैं कि बच्चेको कैसा होना चाहिये; वे यह जानते भी नहीं कि बच्चा कैसा होगा, यह इस बातपर निर्भर है कि वे स्वयं क्या हैं। वास्तवमें बहुत थोड़े विशिष्ट लोग ही ऐसे होते हैं जो इसे जानते हैं। अधिकतर सम तो चीज वैसे ही घटित होती जैसा कि संभव होता है; एकद कोई भी चीज घटित होती है और लोग यह समझतेतक नहीं कि क्या घटित हो रहा है। सो, ऐसी परिस्थितियोंमें तुम कैसे आश करते हो कि तुम एक ऐसी प्राण-सत्ताके साथ जन्म लोगे जो तुम्हें सहायता करनेके लिये पर्याप्त विशुद्ध होगी? सच पूछो तो मनुष्य कीचड़के साथ उत्पन्न होता है जिसे जीना आरंभ करनेसे पहले उसे साफ करना पड़ता है। और एक बार जब तुम आंतरिक रूपांतर पथपर अच्छे ढंगसे पग रख देते हो और सत्ताकी अवचेतन जड़ता भीतर चले जाते हो—जो कुछ ठीक माता-पितासे, पूर्वपुरुषानुकृति आता है—हां, तुम ठीक देखते हो कि वह क्या है! और सभी लगभग सभी कठिनाइयां वहां ही रहती हैं, बहुत थोड़ी-सी चीजें ही जीवनके प्रथम वर्षोंके बाद हमारी सत्तामें आ जुड़ती हैं ऐसा किसी भी अनोखे क्षणमें घटित होता है; यदि तुम बुरी संगत पड़ते हो या बुरी पुस्तकें पढ़ते हो, विष तुम्हारे अंदर घुस सकता है; परंतु सभी संस्कार अवचेतनामें हैं जो गहराईतक जड़ जमा बैठे हैं, सभी गंदी आदतें हैं जो तुममें हैं और जिनके साथ तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघर्ष करते हो। उदाहरणार्थ, ऐसे लोग होते हैं जो कोई झूठ बात बोले बिना अपना मुंह ही नहीं खोल सकते, और वे सर्वदा ऐसा जान-बूझकर नहीं करते (यह सबसे बुरी बात है), अथवा ऐसे लोग होते हैं जो झगड़ा किये बिना, सभी प्रकारकी मूर्खताएं किये बिना दूसरोंके संपर्कमें नहीं आ सकते—ये सब चीजें अवचेतनामें विद्यमान हैं, गहराईतक जड़ जमाये हुए। अब, जब कि तुम्हारे अंदर शुभेच्छा जगती है, बाहरी जीवनमें उन सब चीजोंसे बचनेका, उन्हें सुधारनेका, यदि संभव हो, तुम भरसक प्रयत्न करते हो; तुम इसके लिये कार्य करते हो, संघर्ष करते हो; फिर तुम्हें यह ज्ञात होता है कि यह चीज बराबर उभड़ती रहती है, यह किसी ऐसे भागसे उभड़ती है जो तुम्हारे वशके बाहर है। परंतु तुम यदि इस अवचेतनामें प्रवेश करो, यदि तुम अपनी चेतनाको उसके अंदर छन-छनकर भीतर पैठने दो, और सावधानीके साथ दृष्टि दौड़ाओ तो धीरे-धीरे तुम अपनी सभी कठिनाइयोंके सभी मूल-स्रोतोंका, सभी उद्‌गम स्थानोंका पता पा जाओगे; तब तुम यह समझना आरंभ करोगे कि तुम्हारे माता-पिता, दादा-दादी क्या थे, और यदि किसी विशेष मुहूर्तमें तुम अपनेको वशमें करनेमें असमर्थ होओ तो तुम समझ जाओगे कि "मैं इस प्रकारका इसलिये हूं कि वे ऐसे ही थे।"

यदि तुम्हारे अंदर एक चैत्य पुरुष है जो यथेष्ट जाग्रत् है और तुम्हारे ऊपर निगरानी रख सकता है, तुम्हारा मार्ग तैयार कर सकता है तो वह तुम्हारी ओर उन चीजोंको खींच सकता है जो तुम्हें सहायता दे सकें, लोगोंको, पुस्तकोंको, परिस्थितियोंको खींच सकता है, सब प्रकारके छोटे-छोटे संयोगोंको खींच सकता है जो तुम्हारे पास इस तरह आते हैं मानों कोई हितैषी संकल्प-शक्ति उन्हें ले आयी हो और तुम्हें निर्णय लेनेके लिये एक संकेत, एक सहायता, एक अवलंब प्रदान कर रही हो तथा तुम्हें सही दिशामें मोड़ रही हो। परंतु एक बार जब तुम यह निर्णय ले लेते हो, एक बार तुम अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्ताके सत्यको खोज निकालनका निश्चय कर चुकते हो, एक बार तुम सच्चाईके साथ मार्गपर चलना शुरू कर देते हो, फिर ऐसा लगता है कि सभी चीजें तुम्हें आगे बढ़नेमें सहायता करनेके लिये एकमत हैं, और यदि तुम सावधानीके साथ निरीक्षण करो तो तुम क्रमशः अपनी कठिनाइयोंका मूल देखने लगते हो: "ओह! ठहरो एक मिनट, यह कभी मेरे पितामें थी; आह! यह आदत मेरी मातामें थी; आह! मेरी दादी इस प्रकारकी थी, मेरे दादा इस प्रकारके थे," अथवा ठीक वह धाई हो सकती है जिसने तुम्हारे बचपनमें तुम्हारी देख-भाल की, या भाई और बहनें हो सकती हैं जो तुम्हारे साथ खेले-कूदे, बचपनके मित्र हो सकते हैं जो तुमसे मिले-जुले, और तुम देखोगे कि यह सब इस या उस या अन्य व्यक्तिमें था। परंतु तुम यदि सच्चे बने रहो तो तुम देखोगे कि तुम इस सबको विल्कुल शांतिके साथ पार कर सकते हो, और कुछ दिन बाद उन सभी जंजीरोंको काट सकते हो जिनके साथ तुम पैदा हुए थे, बन्धनोंको तोड़ सकते और स्वतंत्रतापूर्वक पथपर अग्रसर हो सकते हो।

यदि तुम वास्तवमें अपने चरित्रको रूपांतरित करना चाहते हो तो बस यही चीज तुम्हें करनी होगी। सर्वदा ही यह कहा गया है कि अपने स्वभावको बदलना असंभव है; दर्शनके, यहांतक कि योगके सभी ग्रंथोंमें एक ही कहानी कही गयी है: "तुम अपना चरित्र नहीं बदल सकते, तुम वैसे ही पैदा हुए हो, तुम वैसे ही हो।" यह एकदम गलत है, मैं विश्वास दिलाती हूं कि यह मिथ्या है; परंतु एक चीज है जिसे अपने चरित्रके परिवर्तनके लिये करना बहुत कठिन है, क्योंकि वास्तवमें तुम्हें अपने चरित्रको नहीं, बल्कि अपने पूर्ववर्ती पुरुषोंके चरित्रको भी बदलना होगा। उनके अंदर तुम इसे नहीं बदल पाओगे (क्योंकि उनमें ऐसी इच्छा नहीं है), बल्कि स्वयं अपने अंदर ही तुम्हें उसे बदलना होगा। यही चीज उन्होंने तुम्हें दी है, ये ही सब छोटे-छोटे उपहार—सुन्दर उपहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—उन्होंने तुम्हें तुम्हारे जन्मके समय दिये हैं, इन्हीं चीजोंको तुम्हें परिवर्तित करना होगा। परंतु तुम यदि इन चीजोंके सूत्रको, सच्चे सूत्रको पकड़ पानेमें सफल होओ क्योंकि तुमने लगन और सच्चाईके साथ इसके लिये कार्य किया है, तो एक शुभ मुहूर्त्तमें तुम मुक्त हो जाओगे; ये सब चीजें तुमसे झड़ जायंगी और तुम विना किसी बोझके जीवनमें एक नया प्रवेश पा सकोगे। तब तुम एक नवीन मनुष्य हो जाओगे, एक नवीन जीवनयापन करोगे, लगभग एक नवीन स्वभावके साथ। और तुम यदि पीछेकी ओर ताको तो तुम कहोगे, "यह संभव नहीं है, मैं कभी ऐसा नहीं था!"

(श्रीमातृवाणी खंड ४से)

वर्तमानकी यह घड़ी

भारत और सारे संसारके लिये यह एक ऐसी घड़ी है जब उसकी नियतिके भविष्य और एक शताब्दीके लिये उसके चरणोंकी दिशाका सशक्त रूपसे निश्चय किया जा रहा है और वह कोई साधारण शताब्दी नहीं है बल्कि ऐसी शताब्दी है जो अपने-आप मानवजातिके बाहरी और भीतरी इतिहासमें एक बहुत बड़ा मोड़, एक विशाल उलटाव है। हम अभी जैसा कार्य करेंगे, हमें अपने कर्मका वैसा ही फल मिलेगा। ऐसी घड़ीमें इस तरहकी हर पुकार हमारी प्रजाको आत्माद्वारा दिया गया युगपत् एक सुअवसर, एक चुनाव और एक परीक्षा है।

वर दे कि यह कहा जा सके कि वह हर एकको अपनी सत्ताकी पूरी ऊंचाईतक उठाये और अपने पक्षमें नियतिके स्वामीके प्रकट हस्तक्षेपका अधिकारी बनाये।

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचूक सहारा

...एक बात है जिसे तुम्हें सीखना ही चाहिए और वह य[ह] कि भगवान्‌के सिवा किसी व्यक्ति या किसी चीजपर भरोसा [न] करो। अगर तुम किसी व्यक्तिका सहारा लो तो यह सहा[रा] टूट जायगा, इसका विश्वास रखो। तुम जिस क्षण योग कर[ना] शुरू करते हो (मैं हमेशा उन्हींकी बात करती हूं जो योग कर[ते] हैं, मैं सामान्य जीवनके बारेमें नहीं बोलती), जो लोग योग करते [हैं] उनका किसी औरपर भरोसा करना ऐसा है मानों वे उसे भागव[त] शक्तिके प्रतिनिधिमें रूपांतरित करना चाहते हैं। विश्वास क[रो] करोड़ोंमें एक भी नहीं है जो इस बोझको सह सकता हो, वह तु[रंत] टूट जायगा। अतः भगवान्‌के सिवा किसी औरसे सहारा, सहायत[ा] या दिलासा पानेकी आशा न करो। यह पक्की बात है। मैं[ने] ऐसा कोई नहीं देखा, एक भी नहीं, जो सहारा पानेके लिये किसी[के] साथ चिपटा हो (कोई ऐसा व्यक्ति जो योग करता हो या जिस[का] योगके साथ संपर्क हो) और उसे धोखा न हुआ हो। वह टू[ट] जाता है, रुक जाता है और तुम सहारा खो बैठते हो। तब आदम[ी] कहता है जीवन कठोर है। जीवन कठोर नहीं है पर तुम्हें पत[ा] होना चाहिए कि तुम क्या कर रहे हो। भगवान्‌के सिवा कहीं सहारेकी तलाश न करो। भगवान्‌के सिवाय और किसीसे अपन[ी] आवश्यकताओंको संतुष्ट करनेकी आशा न करो, कभी नहीं, किस[ी] चीजके लिये नहीं। तुम्हारी सभी आवश्यकताओंको केवल भगवा[न] ही पूरा कर सकते हैं, वह ही इस योग्य हैं जो तुम्हें सब कुछ [दे] सकते हैं। हमेशा दे सकते हैं। और अगर तुम सन्तोष या सहा[य]-यता या सहारेकी तलाशमें कहीं, न जाने कहां-कहां, कहीं भी जाते [हो] तो निश्चय ही एक दिन तुम मुंहके बल गिरोगे और इससे हमेशा चो[ट] लगती है, कभी कभी जोरकी चोट लगती है। (श्रीमातृवाणीसे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धम्मपदसे स्फुट वचन

अत्ता हि अत्तनो नाथो को हि नाथो परो सिया।
अत्तना'व सुदन्तेन नाथं लभति दुल्लभं॥४॥

(पुरुष) अपने-आप ही अपना मालिक है, दूसरा कौन मालिक हो सकता है? अपने-आपको भली प्रकार दमन कर लेनेपर (वह एक) दुर्लभ मालिकको पाता है।

अत्तना'व कतं पापं अत्तजं अत्तसंभवं।
अभिमन्थति दुम्मेधं वजिरं'व स्ममयं मणिं॥५॥

अपनेसे जात, अपनेसे उत्पन्न, अपने-आपसे किया पाप (करनेवाले) दुर्बुद्धिको पाषाणमय वज्रमणिकी (चोटकी) भांति मन्थन (पीड़ित) करता है।

यस्सच्चन्तदुस्सील्यं मालुवा सालमिवोततं।
करोति सो तथत्तानं यथा'नं इच्छती दिसो॥६॥

मालुवालता[1]से घिरे शाल (वृक्ष) की भांति जिसका दुराचार फैला हुआ है, वह अपनेको वैसा ही कर लेता है जैसा कि उसके शत्रु चाहते हैं।

सुकरानि असाधूनि अत्तनो अहितानि च।
यं वे हितञ्च साधुञ्च तं वे परमदुक्करं॥७॥

अनुचित और अपने लिये अहितकर (कर्मोंको करना) आसान है, (लेकिन) जो हितकर और उचित है उसे करना बड़ा कठिन है।

---

[1]मालुवा एक लता है, जो जिस वृक्षपर चढ़ती है, वर्षामें पानीके भारसे उसे तोड़ डालती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो सासनं अरहतं अरियानं धम्मजीविनं।
पटिक्कोसति दुम्मेधो दिट्ठिं निस्साय पापिकं।
फलानि कट्ठकस्सेव अत्तहञ्ञाय फुल्लति ॥८॥

जो दुर्बुद्धि (पुरुष) धर्मजीवी, आर्य, अर्हन्तोंके शासन (धर्म)को बुरी दृष्टिसे निन्दा करता है वह बांसके फलकी भांति अपनी हत्याके लिये तैयारी करता है।

अत्तना'व कतं पापं अत्तना संकिलिस्सति।
अत्तना अकतं पापं अत्तना'व विसुज्झति॥
सुद्धि असुद्धिपच्चत्तं नाञ्ञो अञ्ञं विसोधये ॥९॥

अपनेसे किया पाप अपनेको ही मलिन करता है, अपने पाप न करे तो अपने-आप ही शुद्ध रहता है। शुद्धि-अशुद्धि प्रत्येक (मनुष्य) की अलग-अलग है, दूसरा (आदमी) दूसरेको शुद्ध नहीं कर सकता।

(श्रीमातृवाणी खंड ३से)

विद्यार्थियोंको दिये गये दो उत्तर

माताजी, ... हम अपने स्कूलकी पढ़ाईमें कभी-कभी बहुत अधिक अरुचि अनुभव करते हैं और अपने-आपसे कहते हैं: इस सबका क्या उपयोग है? अतः, किस मनोभावके साथ हमें अध्ययन करना चाहिये?

मैंने हमेशा कहा है कि अध्ययनका मस्तिष्कपर वहीं प्रभाव पड़ता है जो व्यायामका मांसपेशियोंपर पड़ता है। उदाहरणके लिये अपनी मानसिक क्रियाशीलताको सुनम्य, सशक्त और समृद्ध बनाने तथा उसे समझनेकी एक ऐसी बारीक शक्ति देनेके लिये जिसे वह तुम्हारे इन व्यायामोंको किये बिना प्राप्त न कर पाती,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसिक व्यायाम बहुत आवश्यक हैं। अभी कुछ दिन पहलेसे (निस्संदेह काफी समय पहलेसे ही) मैंने ध्यान दिया है, उदाहरणके लिये, कि यदि दुर्भाग्यवश मुझे दार्शनिक शब्दोंसे भरी कोई चीज तुम्हारे सामने पढ़नी पड़ती है या किंचित् दार्शनिक दृष्टिकोणके बारेमें तुमसे चर्चा करनी पड़ती है तो तुम समझ नहीं पाते। और इसका कारण महज यह है कि तुमने कोई दार्शनिक व्यायाम नहीं किया। इसका कारण यह नहीं है कि तुम बुद्धिमान् नहीं हो, इसका कारण यह नहीं है कि तुम्हारे अंदर समझनेकी योग्यता नहीं है; बल्कि यह है कि तुमने समुचित व्यायाम नहीं किया है। मैं इसी बातको दूसरे ढंगसे कह सकती हूं: तुमने भाषा नहीं सीखी है परंतु वास्तवमें उन्हीं शब्दोंका व्यवहार किया जाता है, केवल उनके बीच थोड़ा-सा भिन्न संबंध होता है, वाक्योंका मोड़ कुछ भिन्न होता है, वस्तुओंके प्रति एक प्रकारका भिन्न मनोभाव होता है। परंतु मनोभावके इस अंतरको तुम तबतक नहीं पकड़ सकते जबतक कि तुम उसके अनुरूप व्यायाम नहीं कर लेते। और इस दृष्टांतको समझना तुम्हारे लिये बहुत आसान है, क्योंकि तुम सब बहुत अच्छी तरह जानते हो कि यदि तुम प्रशिक्षित न होओ तो तुम कभी खेल-कूदकी क्रियाएं नहीं कर सकते। यदि तुम्हारे अंदर विशिष्ट क्षमताएं भी हों, यदि तुम स्वाभाविक रूपसे प्रतिभासंपन्न भी होओ, यदि तुम अभ्यास न करो और प्रशिक्षित न होओ, तो तुम उन्हें नहीं कर सकते। ध्यान दो, अपने सभी द्रुत कलाबाजीके व्यायामों-पर, यदि पहले ही दिन उन्हें करनेके लिये तुमसे कहा गया होता, तुम नहीं कर सकते थे। वह तुम्हारे लिये एकदम असंभव होता, और इसे तुम भली-भांति जानते हो। यदि कोई व्यक्ति सहज भावसे तुमसे कहता: "आह! अब इसे करो।"—मान लो, कोई विशेष प्रकारकी कूद, जिसे एक समय कलाबाजी (फ्लाइंग समरसाल्ट) कहते थे—तुम कहोगे, "यह आदमी वास्तवमें नासमझ है यह असंभव है!" हां, यह वही बात है; यदि मैं अमुक किताबें लूं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और तुम्हारे सामने पढ़ूं तो तुम उन्हें नहीं समझ सकते क्योंकि तुमने पूर्ण रूपसे दार्शनिक मानसिक व्यायामोंकी उपेक्षा की है। यह ठीक-ठीक वही बात है कि जिस व्यक्तिने गणित नहीं किया है, उससे यदि किसी गणित-शास्त्रीय तर्कका अनुसरण करनेको कहा जाय तो ––वह नहीं कर सकेगा . . . । और इसलिये, इसका तात्पर्य यह है कि यदि तुम अपनी सत्ताकी गभीर सद्वस्तुको पूरी तरह सर्वांग रूपमें प्रकट करना चाहते हो तो तुम उसे तभी बहुत अधिक पूर्ण रूपसे, बहुत अधिक विभिन्न रूपमें, बहुत अधिक लाभदायक रूपमें अभिव्यक्त करोगे जब कि तुम्हारी सत्ताके सभी भाग अपने समुचित व्यायामोंके द्वारा इस ढंगसे पूर्णतः विकसित हों।

मैं समझती हूं मैं तुम्हें यह बात एक बार पहले समझा चुकी हूं। यदि प्रश्न उस जीवनका होता जो आजतक सच्चा आध्यात्मिक जीवन माना जाता रहा है, अर्थात् समस्त भौतिक क्रियावलीको पूर्णतः त्याग देनेका होता ताकि परात्पर दिव्य सद्वस्तुके साथ युक्त हुआ जा सके और इस तादात्म्यमें बने रहा जा सके, जीवन तथा सभी बाहरी अभिव्यक्तिको त्यागकर निर्वाणमें चले जाने, ऐसी तादात्म्यस्थितिमें चले जानेका प्रश्न होता जिसे न केवल जगत् अब और अभिव्यक्त नहीं किया जायगा, बल्कि जो तुम्हें पूरी तरह जगत्से बाहर ले जाती है, तब यह स्पष्ट है कि ये सब व्यायाम चाहे भौतिक, प्राणिक, ऐंद्रिय अथवा मानसिक हों, बिल्कुल निरर्थक हैं, और वे लोग इस सबको महज समयका अपव्यय और एकदम बेकार समझते थे। परंतु हम लोगोंके लिये जो लगभग उससे ठीक विपरीत वस्तुको सिद्ध करना चाहते हैं, अर्थात्, जो, परम सद्वस्तुके साथ अपना तादात्म्य प्राप्त कर लेनेके बाद, उसे जगत् का रूपांतर करनेके लिये जीवनके अंदर अवतरित कराना चाहते हैं, हम यदि इस सद्वस्तुको ऐसे यंत्र भेंट करें जो परिमार्जित, क्षमतासंपन्न, सुविकसित और पूर्णतः सचेतन हों तो रूपांतरका कार्य अधिक फलप्रद होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और यही कारण है कि तुमसे, जब कि तुम एक नन्हें बालक हो, यह कहनेके बदले कि तुम वही करो (हंसते हुए) जो कि उन बच्चोंसे करनेके लिये कहा गया है, शांत-स्थिर बैठ जाओ और ध्यानमें डूब जाओ या डूब जानेका दिखावा करो; तुमसे यह कहनेके बदले कि तुम्हें सतत ध्यानावस्थामें बने रहना तथा जगत्की सभी चीजोंके प्रति पूर्णतः उदासीन बने रहना चाहिये, तुम्हें केवल एक ही विचार भागवत कृपाको ग्रहण करनेके लिये अपने-आपको तैयार करनेका विचार रखना चाहिये; यह सब कहनेके बदले तुमसे कहा जाता है: "नहीं, सुविकसित तथा सचेतन व्यक्ति बननेका प्रयास करो, जो वस्तुओंको जानते-समझते हैं तथा जिन्हें स्वस्थ, सबल, चुस्त तथा आसाधारण कार्य करनेमें सक्षम शरीर, पर्याप्त संकल्प-शक्ति, एवं सामर्थ्यवान्, सुनम्य और सक्रिय मन प्राप्त हो; ये सब चीजें भावी सिद्धिके लिये उपयोगी होंगी।"

बल्कि यही कारण है कि जो लोग, यह बिना जाने कि वे किस विषयमें बातें करते हैं, बाहरी रूपोंके आधारपर विचार करनेके आदी हैं, यह कहते हैं कि इस आश्रममें कोई आध्यात्मिक जीवन नहीं है, यह तो एक पूर्णतः भौतिक जीवन है। बस, यही कारण है! परंतु यह उनके लिये कहीं अधिक बुरा है, यह हमारे लिये जरा भी बुरा नहीं है; हमारे लिये, निःसंदेह, यह एक ही बात है।

२१ नवंबर १९५६

*

मां, क्या खेल-कूदकी प्रतियोगिताएं हमारी प्रगतिके लिये आवश्यक हैं?

नैतिक शिक्षाकी दृष्टिसे वे काफी हदतक आवश्यक हैं, क्योंकि यदि तुम उनमें सम्यक् वृत्तिके साथ भाग ले सको तो यह तुम्हारे लिये अपने अहंकारको वशमें करनेका एक बहुत अच्छा अवसर है। पर यदि तुम उसमें भाग तो लो पर अपनी दुर्बलताओं और निम्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवृत्तियोंको जीतनेका कोई प्रयत्न न करो तो स्पष्ट ही तुम उन लाभ उठाना नहीं जानते और तब कोई फायदा नहीं होता लेकिन अगर तुम उचित वृत्तिके साथ खेलनेकी इच्छा रखते हो, कि भी निम्न वृत्तिके बिना, ईर्ष्या या महत्त्वाकांक्षाके बिना ऐसे भाव साथ खेलते हो जिसे "खिलाड़ीका सही भाव" कहते हैं, या अपना पूरा प्रयास करते हुए परिणामकी चिंता नहीं करते औ सफलता न मिलनेपर या चीजें अपने पक्षमें न होनेपर विचलि हुए बिना अपना पूरा-पूरा प्रयास करते हो तो प्रतियोगितामें भा लेना बहुत उपयोगी है। इन सब प्रतियोगिताओंसे तुम्हें महत्त आत्म-नियंत्रण और परिणामके प्रति अनासक्तिके भावकी प्राप्ति हो सकती है जिससे असाधारण चरित्रके गठनमें बड़ी सहायता मिल है। निश्चय ही, यदि तुम इन चीजोंको सामान्य ढंगसे करो, सामा प्रतिक्रियाओं और ओछे व्यवहारको बीचमें आने दो, तो तुम्हें कु भी सहायता नहीं मिलेगी। परंतु यह बात तो, तुम चाहे जो करो, सभीके लिये ठीक है, खेलका क्षेत्र हो या बुद्धिका, जो हो, यदि व्यक्ति सामान्य ढंगसे काम करता है तो वह अपना सम बर्बाद करता है। परंतु यदि तुम खेलते वक्त, साम्मुख्यों और प्रति योगिताओंमें भाग लेते वक्त उचित वृत्ति बनाये रखते हो तो यह ए बहुत अच्छा प्रशिक्षण है, क्योंकि यह तुम्हें विशेष प्रयत्नके लि अपनी सामान्य सीमाओंसे थोड़ा आगे बढ़नेके लिये बाधित करता है निश्चय ही यह एक सुयोग है जिसमें तुम अपनी बहुत-सी गतिवि योंसे सचेतन हो सकते हो, अन्यथा वे सदा अचेतन ही बनी रहतीं।

परंतु स्वभावतः तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिये कि प्रगतिके लि यह एक सुअवसर और साधन होना चाहिये। यदि, तुम, ब अपने-आपको ऐसे ही शिथिल छोड़े रखते हो और बिल्कुल सामा ढंगसे खेलते हो तो तुम अपना समय बर्बाद करते हो; पर य नियम तो प्रत्येक चीजके लिये है; केवल इसीके लिये नहीं: पढ़ाई लिये तथा और सभी चीजोंके लिये, वे चाहे जो भी हों। स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ सदा ही इसपर निर्भर करता है कि कामको किस तरह किया जाता है, इसपर इतना नहीं कि व्यक्ति क्या करता है, बल्कि उस भावपर जिससे वह उसे करता है।

यदि तुम सब योगी होते और जो कुछ तुम करते उस सबको अपने पूरे परिश्रम और सामर्थ्यके साथ करते, और साथ ही जितना अब कर सकते हो हमेशा उससे भी और अधिक अच्छा करनेकी भावनाके साथ करते तो स्पष्ट ही प्रतियोगिताओंकी, पारितोषिक व पुरस्कारकी आवश्यकता न होती, परंतु जैसा कि श्रीअरविंदने लिखा है, छोटे बच्चोंसे योगी होनेकी मांग नहीं की जा सकती। और तैयारीके कालमें बढ़ावा देनेवाली किसी चीजका होना जरूरी है ताकि अत्यधिक भौतिक चेतना प्रगतिके लिये प्रयास कर सके...। और यह बाल्यकाल बहुत वर्षोंतक चल सकता है।

इसमें आदर्श स्थिति वह होगी जो मैंने पिछले 'बुलेटिन'में लिखी है, मुझे मालूम नहीं तुमने उसे पढ़ा है या नहीं, परंतु मैंने कुछ इस प्रकारकी चीज लिखी है:

> कोई महत्त्वाकांक्षा न रखो,
> सबसे बड़ी बात यह है कि दिखावा न करो,
> परंतु प्रति मुहूर्त्त वह होओ जो तुम अधिक-से-अधिक हो सकते हो।

तुम चाहे जो करते हो, सर्वांगीण जीवनकी आदर्श स्थिति यही है। और यदि व्यक्ति इसे साथ लेता है तो निश्चय ही, वह पूर्णताके पथपर बहुत आगे बढ़ जाता है...। परंतु यह स्पष्ट है कि इसे पूर्ण निष्कपटताके साथ करनेके लिये अमुक आंतरिक प्रौढ़ताका होना आवश्यक है।

तुम इसे एक कार्यक्रमके तौरपर सामने रख सकते हो।

यदि तुम चाहो तो आज हम इसीको अपने ध्यानका विषय बनायें।

१ मई, १९५७ —माताजी

(बुलेटिन अगस्त ८३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृतज्ञताका पुरस्कार

अकालने जंगलको कंगाल बना डाला था। सभी वृक्ष और पौधे अपनी नंगी बांहें उठाये इन्द्रदेवको पुकार रहे थे। इतनी व्याकुल प्रार्थनाको इन्द्र कैसे अनसुनी करते। जंगलके छोरपर क्षितिजमें खड़े-खड़े उन्होंने अकालकी तांडव लीला देखी। इतना विशाल वन-प्रांतर सुनसान था, वहां न पक्षी थे, न पशु, केवल भांय भांय करती हुई हवा थी। पुरन्दर चौंके, "यह क्या, बरगदकी शाखापर हल्की-सी आवाज कैसी?"

पास आकर देखा तो एक छोटा-सा शुक दिखायी दिया जो अपनी कमजोर सीटीसे बादलोंको बुला रहा था। उसका कंकाल-सा शरीर बड़ी मुश्किलसे शाखापर टिका हुआ था।

उत्सुकतावश वज्रपाणि बरगदके ऊपर मंडराये, मेघ-गंभीर, फिर भी मृदु स्वरसे पूछा "हे शुक! सब पशु-पक्षी इस वीरान जंगलको छोड़कर चले गये, तुम अभीतक यहां क्यों बने हो?"

शुकने निर्बलतासे मुंदती आंखोंपर जोर डाला, सम्मुख देवराजको देख उसने पंख जोड़ दिये और फुसफुसाकर बोला, "महाराज, बड़ी कृपा की आपने, बस झड़ी लगा दीजिये। मेरा यह प्रिय बरगद फिरसे जी उठे।"

इन्द्र मुस्कराये, "हे पक्षी। तुम्हारी यह कृतज्ञताकी वाणी मेरे कानोंमें अमृत घोल रही है। इस वृक्षपर न जाने कितने पक्षी आश्रय पाते होंगे किन्तु उसके पर्णहीन ठूंठ बनते ही सब उसे छोड़ भाग खड़े हुए। कितनोंने उसके रसीले फल खाये होंगे, कितनोंने सूर्यके प्रखर कोपसे इसकी शीतल छायामें अपनी रक्षा की होगी। तू अकेला ही सच्ची कृतज्ञतासे भरा है जिसने आपदकालमें अपने संरक्षकका त्याग नहीं किया।"

छोटा तोता सोचता हुआ-सा बोला, "पता नहीं क्या बात थी, किन्तु मेरा यह स्वामी मुझे कभी अपने फल न देता था। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औरोंको बुला-बुला कर फल बांटता था, औरोंको अपनी छाया देता था। मुझे उसने कभी नहीं बुलाया, मुझपर खुशी-खुशी छाया नहीं धरी। मेरा तो यह घोंसला भी बड़ी मुश्किलसे बन पाया है। बस, महाराज, मुझे उससे कुछ नहीं चाहिए। मैं तो उसे हरा-भरा देखकर ही प्रसन्न रहूंगा। मैं इसीलिए आपको पुकार रहा था, आप आये, मैं कृतार्थ हो गया।"

पुरन्दरके पुंडरीक-नेत्रोंसे करुणाकी धारा बही। नन्हें शुकके सिरपर वे पुनीत अश्रु अभिषेक करने लगे। देखते-देखते सारा जंगल मूसलाधार वर्षाके शोरसे भर उठा। अपनी कमजोर शाखाओं-से मृतप्राय: वृक्ष जीवनदायिनी वर्षाका स्वागत करने लगे। छोटा-सा तोता चोंच उठा-उठाकर जलका पान करते-करते चिहुक उठा मानों इन्द्रराजको साधुवाद दे रहा हो।

—अनुबेन

भावी भारत

श्रीअरविंदका कहना है कि भगवान्‌ने भारतीय राष्ट्रको आदेश दिया है मिलकर रहो, एक हो, स्वतंत्र हो और महान् हो। आज भारतको भगवान्‌के कार्यके लिये ऊपर उठाया जा रहा है, हर विपदा, हर अशुभ और भ्रांति हर भूलतक ऊपर उठनेमें सहायक है। वे कहते हैं भगवान्‌को अपने कामके लिए लड़खड़ाते हुए पैसेवालों, झिझकनेवाले लोगोंकी या अस्थायी उत्साहियोंकी आवश्यकता नहीं जो स्वयं अपनी शक्तिको भी थामे नहीं रख सकते। उन्हें कोई भी चीज छिछले उत्साहमें आकर न करनी चाहिए, उचित विचारके बिना आगे न बढ़ना चाहिए और न ही एक बार काम शुरू कर देनेके बाद, इस महान् जाति और महान् कार्यके अयोग्य दुर्बलता दिखलानी चाहिए।

भारत जैसे महान् राष्ट्रका पुनरुत्थान किसी एक आदमीका काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है, किसी एक दिशामें बढ़ना काफी नहीं है। श्रीअरविंद कहते हैं कि भारतको राजनीतिक और सैनिक महानता पानी चाहिए, बौद्धिक और सौंदर्यग्राही महानता और क्रियाशीलता पानी चाहिए, नैतिक स्वस्थता और ऊर्जा, व्यापारिक समानता और क्रियाशीलता पानी चाहिए। इनमेंसे किसीमें कमी रह जाय तो देश जीवनसंघर्षमें अयोग्य सिद्ध होगा। भारतका नेतृत्व करनेवालोंको उदारचेता और बहुमुखी होना चाहिए। हमें विश्वास है कि जब अवतार आयेगा तो वह न केवल धार्मिक गुरु होगा बल्कि राजनीतिक नेता, महान् शिक्षाविद्, समाजको पुनरुज्जीवन देनेवाला सहयोगमूलक उद्योगका नायक होगा जिसकी अंतरात्मा कवि विद्वान् और कलाकारकी होगी। संक्षेपमें कहें तो वह संसारमें सिर उठाते हुए, सारे जगत्को नया रूप देनेके लिए उठते हुए भावी भारतीय राष्ट्रका एक महान् प्रारूप होगा।

और धन, आज धन ही सर्वपूज्य है। भावी भारतमें धनका क्या स्थान होगा? श्रीअरविंद कहते हैं, भारत, अगर प्राचीन भारतका नाम लेना है तो वह कभी धनके नेतृत्वको स्वीकार न करेगा। लोग चीथड़ोंको भला-बुरा कहते हैं लेकिन बुद्धि और चरित्रको लपेटनेवाले चीथड़ोंका यहां कभी तिरस्कार न होगा। यहां राजा-महाराजा बुद्धि और चरित्रके आगे झुकते आये हैं, वे आध्यात्मिकताके निर्भ्रान्त पथ-प्रदर्शनमें ही राजकाज संभालते रहे हैं।

श्रीअरविंद कहते हैं जैसे जगाई मधाईने चैतन्यका साथ देनेके लिए अपना सब कुछ त्याग दिया, हमारे अंदर भी उसी तरहकी त्याग भावना होनी चाहिए। हमें स्वतंत्र सशक्त भारत माताके दर्शन करनेकी वही आतुरता होनी चाहिए जो मुमुक्षुमें मोक्ष पानेके लिए होती है। आज भी मां पुकार रही है, देशमें कितने हैं जो उसके लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करनेको तैयार हों, जो उसीके लिए जियें और उसीके लिये मरें।

(श्रीअरविंदकी 'वन्दे मातरम्‌की' टिप्पणियोंपर आधारित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशके नेता

श्रीअरविंदने इस शताब्दीके आरंभमें लिखा था "हमें विश्वास है कि भारतका पुनरुत्थान निश्चित है लेकिन हमें वातावरण तैयार करना होगा, अपने प्रेमभरे कार्योंसे, बल और आत्मबलिदानद्वारा उसे शुद्ध करना होगा। आज शिक्षित वर्ग पुनरुत्थानकी आशाओंका आधार है। उनके अंदर नयी भावना जागी है। जन साधारण नेतृत्वके लिए उनकी ओर आंखें लगाये हुए हैं। उनका कर्तव्य है कि वे इस आदर्शके योग्य बनें। देशमें आशा, बल और प्रकाश-का संचार करके कुचले हुए, दबे हुए देशवासियोंका उद्धार करें। उनका कहना है कि पुनरुत्थान बहुत सावधानी बरतनेवाले, फूंक-फूंककर कदम रखने वाले बूढ़ोंका काम नहीं है।

राष्ट्रीय आन्दोलनके आरंभसे ही, उत्साह, शक्ति और अंदर छिपी महानताके बावजूद एक दोष बहुत स्पष्ट दिखलायी देता रहा है। एक बड़ी भूल हुई है नये और पुरानेके सम्मिश्रणकी। पुनरुत्थानका कार्य ऐसे लोगोंके हाथमें गया जो कदम-कदमपर संभलते थे, जिन्हें नवीनताके साथ सहानुभूति न थी, जो भविष्यकी आवश्यकताओंको पकड़ पानेमें असमर्थ थे, जो ऐसे आमूल परिवर्तनके लिए तैयार न थे जो पुनरुत्थानके लिए जरूरी है। इसके लिए जरूरी है कि समस्त भ्रष्टताको बुहार फेंका जाय और भारतको शुद्ध किया जाय। एक और जगह श्रीअरविंद कहते हैं कि भविष्य युवाओंके हाथमें है। नये युवा जगत्का निर्माण हो रहा है और यह काम युवकोंको करना होगा।

बंगालसे जो स्वदेशी आन्दोलन उठा था उसके बारेमें श्रीअरविंदने कहा कि हमारे लड़के ही इसका प्राण हैं, इसकी आत्मा हैं। नयी राष्ट्रीय भावनाने उनकी हृत्तंत्रियोंको झकझोर दिया है। जहां यह भावना नहीं वहां उन्होंने उसे स्थापित किया है और जहां वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलसायी हुई थी वहां उसमें नयी जान डाली है, उन्होंने उदासीनता, रुढ़िवाद, संदेहवाद और भीरुताके विरुद्ध संघर्ष किया है। उन्हें निन्दा मिली, गालियां मिलीं, सजा मिली, परंतु वे डटे रहे। वे देशके लिए कार्य कर रहे हैं जब कि दूसरे अपने लिए करते हैं। नेता भी वही हैं और अनुयायी भी वही। इस नाजुक समयमें बच्चे ही देशकी आशा हैं। उन्होंने बहुत कुछ किया और इससे बहुत अधिक कर सकते हैं। ये भगवान्के चुने हुए यंत्र हैं।

लोग किसी नेताका अनुसरण क्यों करते हैं? इस विषयपर श्री-अरविंदका कहना है लोग किसी नेताका अनुसरण इसलिए करते हैं कि वही उनके विचारों, लक्ष्यों और भावनाओंको व्यक्त करता है या वह अपने-आपको लोकप्रिय शक्तियोंको संगठित करनेके लिए योग्य सिद्ध करता है और उन्हें आशा होती है कि वह जनता-के आदर्शोंको चरितार्थ करनेमें समर्थ होगा। लोगोंका यह विश्वास घट जाय तो उसका नेतृत्व भी हल्का पड़ जाता है। जन-तंत्रात्मक राजनीतिमें यही तरीका चल सकता है।

नेता कैसा होना चाहिए इस विषयमें श्रीअरविंद कहते हैं कि जो जन साधारणके साथ एक होनेमें आनंद न लेता हो, जो उनके सुख-दुःखमें भाग लेनेको तैयार न हो वह जातिका क्या भला करेगा? संसारके जो महापुरुष सचमुच मानवजातिके विकासके लिए पैदा होते हैं उनमें जनतंत्रात्मक वृत्ति होती है। वे चाहे जितने प्रतिभाशाली हों, उनमें साधारण मनुष्यके लिए तिरस्कार नहीं होता, वे खुलकर उनसे घुलते-मिलते हैं।

अगर काम भली-भांति करना है तो हर एकको अपनी क्षमता और अपने कार्यविशेषको पहचानना चाहिए। संघर्षरत अहंकारों-की मुठभेड़, एकाधिकार करनेकी इच्छा, सफलतापर गर्वकी जगह आत्मबलिका उत्साह, एक उच्चतर शक्तिकी अनुभूति कि वही सब कुछ कर रही है और हम उसके यंत्र हैं। अगर कोई अपने क्षेत्रसे बाहर कदम रखे तो गड़बड़ होगी, सामंजस्य टूटेगा और अस्थायी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असफलता आयेगी। ऐसी स्थितिसे बचनेका एक ही उपाय है। नेताओंको यह अनुभव करना चाहिए कि यह काम उनका अपना नहीं है, उन्हें कामका एक अंश सौंपा गया है, कि कोई भी आदमी अनिवार्य नहीं है। वह तभीतक उपयोगी है जबतक अपने ही क्षेत्रमें रहे और अपनी क्षमताओं, प्रेरणा और परिस्थितियोंद्वारा सौंपे हुए कामको पूरा करे।

(श्रीअरविंदकी 'वन्दे मातरम्'में छपी टिप्पणियोंके आधारपर)

श्रीअरविन्दकी शिक्षा और साधना-पद्धति

यौगिक चेतनाका सारा अर्थ ही है एक ऐसी अदृश्य शक्ति जो ठोस, इन्द्रियगम्य बाहरी और भीतरी परिणाम पैदा करे। अगर हमें इस प्रकारकी हजारों अनुभूतियां न होतीं जो यह दिखाती हैं कि वह आंतरिक शक्ति मनको बदल सकती है, उसकी शक्तियोंको विकसित कर सकती है, नयी शक्तियां जोड़ सकती है, ज्ञानके नये क्षेत्रोंको ला सकती है, प्राणिक गतिविधियोंपर अधिकार कर सकती है, स्वभाव बदल सकती है, मनुष्यों और चीजोंपर प्रभाव डाल सकती है, शरीरकी क्रियाओं और अवस्थाओंपर नियंत्रण कर सकती है, अन्य शक्तियोंपर ठोस, गतिशील शक्तिकी तरह क्रिया कर सकती है, घटनाओंमें हेर-फेर कर सकती है—अगर हमें इसका अनुभव न होता तो हम ऐसी बात न कहते जैसी कहते हैं। और, केवल परिणामोंमें ही नहीं अपनी गतिविधिमें भी वह दिव्य शक्ति ठोस और इन्द्रियगम्य है। जब मैं शक्तिके बलका अनुभव करनेकी बात कहता हूं तो मतलब उसकी एक अस्पष्ट-सी अनुभूतिसे नहीं होता। मेरा मतलब होता है उसे ठोस रूपमें अनुभव कर परिणामस्वरूप दिशा देना, उससे काम लेना, उसकी गतिविधिपर नजर रखना, उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राशि और तीव्रताके बारेमें सचेतन होना और इसी तरह अन्य, शायद विरोधी शक्तियोंको देख सकना। योगके विकाससे यह सब चीजें संभव और साधारण होती हैं।

अतिमानसिक शक्तिके सिवा अन्य कोई शक्ति शर्तों और सीमाओंके बिना काम नहीं करती। जिन शर्तों और सीमाओंमें योग या साधना करनी होती है वे मनमानी और स्वेच्छाचारी नहीं होतीं, वे चीजोंकी प्रकृतिसे उभरती हैं। इनमें साधककी इच्छाशक्ति, ग्रहणशीलता, स्वीकृति, आत्मोद्घाटन और समर्पणकी भी गिनती है और योगशक्तिको इनका मान करना पड़ता है। यदि उस परम पुरुषसे इन सबकी अवहेलना करके कुछ करनेका आदेश मिले तो और बात है पर यह आदेश विरले ही होता है। अगर अतिमानसिक शक्ति पूरी तरह उतर आये, अधिमनके द्वारा उसका प्रभावमात्र न हो तो चीजोंको बहुत मौलिक रूपसे लक्ष्यकी ओर दिशा दी जा सकती है क्योंकि तब आदेश विरल न रहेगा। क्योंकि तब सत्यका विधान काम करेगा, अज्ञानका विधान दूसरे पलड़ेमें न होगा। भागवत शक्ति किसी भी स्तरपर काम कर सकती है। वह अतिमानसिक शक्तितक ही सीमित नहीं है। अतिमानस भगवान्‌की शक्तिका केवल एक रूप है।

*

शक्तिसे मेरा मतलब मन या प्राणकी ऊर्जासे नहीं है, यह ऊपरसे आनेवाली भागवत शक्ति है—जैसे शांति ऊपरसे आती है और विशालता भी, उसी तरह यह शक्ति भी आती है। दिव्य-शक्तिकी क्रियाके बिना कुछ भी नहीं किया जा सकता—सोचना या ध्यान करना भी नहीं। मैं जिस शक्तिकी बात कहता हूं वह ज्योति, रूपांतर, शुद्धि—इन सबके लिये शक्ति है, उन सब चीजोंके लिये जिन्हें योगमें करना है, विरोधी शक्तियों और गलत गतिविधियोंको हटानेके लिये है...और स्वभावतः यह बाह्य कार्यके लिये भी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहे वह देखनेमें महान् हो या छोटा, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता —अगर यही भागवत इच्छाका अंश हो। यहां मेरा मतलब किसी व्यक्तिगत अहंकारी या राजसिक ऊर्जासे नहीं है।

(बुलेटिन फरवरी ८२)

ध्यान

(अपने-आपको जानवर कहनेवाले हमारे एक मित्र गंभीरतासे साधना करना चाहते हैं। यहां उनके कुछ प्रश्नोंका उत्तर दिया जा रहा है।—सं०)

प्रिय मित्र,

वन्दे। आपका पत्र मिला। आपके अंदर जो अभीप्सा जागी है कि आत्म-दर्शन करके ही रहूंगा, वह साधनामें प्रगतिका लक्षण है। कितने हैं जिन्हें ऐसी लगन लगती है। यह बात इसलिए नहीं कही जा रही कि आप सिर फुलाकर बैठ जायें बल्कि इसलिए कि आपके पत्रमें जो विषाद भरा था वह हट जाये। आपने प्रश्न किया है कि ध्यान कैसे किया जाय?

ध्यान करनेके कई तरीके हैं। आप इनमेंसे किसी एकको अपनाकर देखिये।

१) कोई भी समय ध्यानके लिए निश्चित कर लें और उसी समय रोज ध्यानके लिए बैठें।

२) ध्यान करते समय एकांतमें बैठना चाहिए। आरामदेह आसन ग्रहण करके अपने हृदयपर एकाग्र होनेका प्रयास करें। आरंभमें चारों ओरसे तरह-तरहके विचार आपको घेर लेंगे। उनसे परेशान हुए विना आप विचारोंको यह कहकर खदेड़ दें: "ये विचार बाहरसे आये हैं। मैं उनको अपने अंदर घुसनेकी अनुमति नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देता," और आप उनकी ओर ध्यान देना छोड़ दें। कुछ दिनोंके बाद विचारोंका आक्रमण बंद हो जायगा।

३) हृदय, अर्थात् हमारा शारीरिक हृदय नहीं किंतु वक्षके बीचों-बीचके स्थानपर एकाग्र होकर बैठें और जब विचारोंसे मुक्ति मिले तब जितना गहरा जा सकें जाइये, वहां आपको उसकी प्राप्ति होगी जिसे आप खोज रहे हैं।

४) शरीरके जिस भागपर आसानीसे एकाग्र हो सकें वहींसे ध्यान शुरू कीजिये। मन चंचल हो तो किसी मंत्रकी सहायतासे उसे शांत रखिये। एक ऐसा समय आयेगा जब वह मंत्र दिन-रात अनायास चलता रहेगा।

५) किसी मूर्ति या चित्रके सामने बैठकर उसे एकटक देखते रहिये। धीरे-धीरे आंखें मूंद लें। ध्यानमें वही मूर्ति दिखाई देगी।

व्यस्ततामें भी इष्टको याद रखा जा सकता है। जिस तरह प्रेमी सारे समय प्रेमिकाको याद करता रहता है उसी तरह मनुष्य इष्टको सारे समय याद रख सकता है।

ऐसी स्मृति बनाये रखनेके लिए प्रेमी-सा उत्कट प्रेम आपके अंदर जागे तो बहुत आसान हो जाएगा।

आशा है पत्र आपकी सहायता कर पाएगा।

कल्पना धरतीपर उतरी

परम प्रभुके आदेशके अनुसार सृजन करते-करते ब्रह्माने पृथ्वीको रंग, रूप, रस, शब्द और स्पर्शसे भर दिया। धरित्रीपर जीवन-सागर ठाठें मारने लगा। क्षण भर रुककर ब्रह्माने नीचे निहारा। हरे-भरे वृक्ष, चंचल सरिताएं, चिंघाड़ते गजराज, दहाड़ते वनराज, उड़ते, फुदकते, चहचहाते पक्षियोंके बीच एक छोटेसे जीवको देख वे प्रसन्न हो गये। था तो वह देवोंके व्यंग्य चित्र-सा फिर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसमें वह तत्व था जिसके विकाससे वह विशालकाय पशुओं और पर्वतोंपर प्रभुत्व पाएगा; और एक अदृश्य जगत्का सृजन करनेमें समर्थ होगा।

ब्रह्माने ध्यानमग्न हो कर अपने अभिन्न सहायकको पुकारा। क्षण भरमें वायुमण्डल संगीतके मधुर स्वरोंसे परिप्लावित हो गया। सुगन्धके झोकोंने उन्हें सूचना दी। ब्रह्मा उसे सामने देखकर सन्तोषसे मुस्कुराए, "कल्पना बेटी, मैं अभी-अभी वसुधापर बसाए गये मानवको देख रहा था। मैं चाहता हूं उसमें भी सृजन शक्तिका आविर्भाव हो किंतु तेरी सहायताके बिना वह कुछ न कर पाएगा। तुझे मैं पृथ्वीपर भेज दूं तो स्वर्ग और ब्रह्मलोकका सारा कार्य कुंठित हो जाएगा। कोई ऐसा तत्व खोजना होगा जो तेरी पीठ बननेके लिए प्रसन्नतासे तैयार हो।

कल्पनाके होठोंपर गुलाबकी कलियां खिल उठीं। उसने अपनी कोमल लताओं-सी भुजाएं फैलायीं और हौले-हौले वसुन्धराकी ओर झुकी। मातरिश्वा उसके स्वागतको आगे बढ़ा। कल्पनाने पूछा, "हे शक्तिस्वरूप पवन देव, सृष्टिके प्राणियोंतक मेरा संदेश पहुंचा देंगे?" हवाकी सुकुमार लहरी दौड़ती-सी आयी और फुसफुसायी, "क्यों नहीं? कहिये, क्या है वह संदेश?" कल्पना सस्मित बोली, "मैं कल्पना धरित्रीपर अपनी पीठकी स्थापना करना चाहती हूं। जो भी अपना रूप, रंग छोड़कर मुझे अपनानेको उत्सुक हो वही पीठ बन सकेगा।"

आनंदातिरेकसे हवा रुक गयी। फिर, मृदुल, प्यारे-प्यारे हवाके झोंके पृथ्वीपर उतरने लगे। सुनो, पृथ्वीके समस्त वृक्ष, सरिता, पशु और विहगगण! देवी कल्पना धरतीपर निवासके लिये एक पीठकी स्थापना करनी चाहती हैं। वे उसीको अपनाएंगी जो अपना रूप-रंग छोड़नेके लिए तैयार हो। पृथ्वीके वृक्षोंने सिर झुकाकर सुना और पत्तोंसे करतल ध्वनि करके इस वाणीका स्वागत किया। सरिताके जलने नीरव होकर उसे सुना और पशुओंमें खलबली मच गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवी कल्पनाकी पीठ! आह! कितना बड़ा सौभाग्य! किंतु प्रत्येक अपने छोटे-से राज्यको छोड़नेसे कतराता था। गजराजने सोचा, "अपनी शक्ति, बुद्धि और अपने उदार हृदयको छोड़ दूं! न, न, यह मुझसे न होगा! कितने ही प्राणी हैं संसारमें, कोई-न-कोई अवश्य देवीकी पीठ बनेगा।" और मद झराता हुआ अपने दलकी ओर मुड़ गया। केसरीने अयालको उछाला, सोचा, "मैं वनराज अगर राज्य-भार छोड़ दूं तो जंगल हाल-बेहाल हो जायेगा। यह मेरा काम नहीं।" और एक संतुष्ट दहाड़के साथ वह अपनी मांदमें घुस गया।

उत्तुंग वृक्ष अपने हरे-भरे पत्तोंके सौंदर्यको संजोए रखनेका मोह संवरण न कर सके और मौन बने रहे। अश्वत्थ फुसफुसाता हुआ बोला, "मैं तो भगवान् विष्णुका आसन हूं, औरोंसे मुझे क्या काम?"

पक्षीगण गाते, चहकते एक-दूसरेसे कहने लगे, "चलो, हम देवी कल्पनाकी पीठके स्वागतमें गीत रचें।"

उस रात जंगलमें गहरी खामोशी छाई थी। एक अव्यक्त अकुलाहट वातावरणमें बेचैनी फैला रही थी।

सूर्योदयके साथ-साथ एक ताजगी, एक स्फूर्ति आयी। जंगलके वृक्षों, पशुओं और विहगोंने देखा जंगलके आभूषण रूप जो वृक्ष बड़े-बड़े हल्के गुलावी रंगके फूलोंसे आच्छादित रहता था आज उसके पुष्प झरते चले जा रहे हैं।

दिन-पर-दिन बीतते गये। जो वृक्ष प्रत्येक ऋतुमें आकर्षक बना रहता था, वही धीरे-धीरे नंगा होता जा रहा था। उसके पास खड़े वृक्षने पत्ते हिलाकर प्रश्न फुसफुसाया, "क्यों भइया, बीमार हो क्या? तुम कितने सुन्दर हुआ करते थे! हेमन्तमें जब हम सब ठूंठ बन जाते थे तब भी तुम्हारे पत्ते हरे, पीले, भूरे रंगोंकी वहार दिखाते सदावहार रहा करते थे।

वृक्षके सूखते पत्तोंपर क्षीण मुस्कान फैली। वह बोला, "नहीं तो! तुमने वायुकी लहरका संदेश सुना था न! देवी कल्पनाकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीठ बननेके लिए अपना रंग-रूप छोड़ना होगा! मैं सोचता हूं क्यों न मैं प्रयास कर देखूं। कितना बड़ा सौभाग्य होगा मेरा अगर देवी मुझे स्वीकार लें।" जंगलकी महान् हस्तियां इस त्याग, बलिदानको मुग्ध होकर देखती रहीं। कुछ ही महीनोंमें उस वृक्षका केवल ठूंठ ही बच रहा। वह अपनी दुबली-पतली असंख्य बाहें उठाकर देवीका आह्वान कर रहा था।

जंगलमें सब चिन्तित हो उठे। कहीं इस तरह तपस्या करते-करते हमारा साथी देवी कल्पनाकी पीठ बननेकी जगह मृत्यु पीठ न बन जाय।

इधर वृक्ष अनुभव कर रहा था कि उसके जीवनके अब कुछ क्षण बचे हैं। ठीक ऐसे समय ऊपरसे शीतल बूंदोंकी वर्षा हुई। वृक्षने मुंदते नेत्रोंको जोर देकर खोला। आह! यह क्या? नील गगन सौम्य सुनहरी आभासे दीप्त था। कल्पनाके विस्फारित लोचनोंसे करुणाद्रवित अश्रुकण वृक्षपर बरस रहे थे। प्रत्येक अश्रु वृक्षकी शाखापर स्थिर होकर उसका अंग बनता जा रहा था। देखते-न-देखते वृक्ष सुनहरे पुष्पोंकी लड़ियोंसे भर गया। देवी कल्पनाने अपना वरद हस्त वृक्षकी एक-एक शाखापर फेरा और सारा वृक्ष पुनः जीवनसे स्पंदित हो उठा। उसने शाखा झुकाकर इष्ट देवको प्रणिपात किया। देवी कल्पनाका मंजुल स्वर गूंजा, "हे प्रिय वृक्ष, तू आजसे संसारमें मेरी पीठके रूपमें जाना जाएगा। लेकिन जो इस रहस्यसे अनभिज्ञ हैं, वे तुझे अमलतास ही कहते रहेंगे। उस दिनसे मानव संसारमें कला, साहित्य, नृत्य, छंदकी सरिता बहाता रहा है और अबतक बहाता जा रहा है।

—अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीर्वाण वाणी

यथा शिलैकैव स्वजातिभेदात्
पीठादिनानाविधरूपभागिनी
तथैव योऽनन्ततया विभाति
कष्टेन लभ्यं शृणु तं गुरोः शिवम् ॥१॥

जो शिला पीठ (चौकी)में लगी है वही सड़कपर भी है। जो शिला पृथ्वी-तलपर है वही शिला चक्कीमें भी शोभायमान है (मूलतत्व एक है पर स्वरूप भिन्न-भिन्न दिखते हैं) इसी प्रकार शिवत्वका ज्ञान भी कठिन है (रे मनुष्य) इस उपदेशको तू सावधानीपूर्वक समझ ले।

स्थले स्थले स्वैः किरणैर्यथा रविः
पतत्यभेदेन गृहेषु वाऽभ्रियम्।
जलं तथा सर्वजगद्गृहेषु
कष्टेन लभ्यं शृणु तं गुरोः शिवम् ॥२॥

क्या यह संभव है कि रवि थल-थलको अर्थात् प्रत्येक स्थलको तापित (प्रकाशित) न कर, केवल कुछ उत्तम (गिने-चुने) देशों (स्थलों)को ही तापित (प्रकाशित) करे। इसी प्रकार क्या यह संभव है कि वरुण (जलदेव) प्रत्येक घरमें प्रवेश किये बिना रह सके (अर्थात् जिस प्रकार सूर्य और वरुण बिना भेदभावके सभी प्राणियोंके लिए हितकारी हैं उसी प्रकार शिव भी सबका है, सबके लिए है।) बस, उसको समझना जरा कठिन है, यह उपदेश (बात) हे मनुष्य ! तू जान ले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग्रह और वितरण

भौतिक जगत्में संग्रह और वितरणकी वृत्तियां एक दूसरेसे उलटी मालूम होती हैं पर वास्तवमें हैं एक दूसरेकी पूरक। कर्णसे लेकर अब्दुर्रहीम खानखानातक जितने भी बड़े दाता हुए हैं वे सब किसी-न-किसी संग्रहके आधारपर ही दान दे सकते थे। महाराज हर्षवर्धन अपना सब कुछ दान दे दिया करते थे परंतु अगली बार देनेके लिये उन्हें फिरसे संग्रह करना पड़ता था। गणपति ऋद्धिसिद्धि-दायक हैं, वे हमेशा खुले हाथों दिया करते हैं, उनके वाहन मूषकराज का काम है संचय करना, संग्रह करना। भगवान्की सृष्टिमें दोनोंका समान महत्त्व है।

एक आदमी अपनी खुशीके लिये, अपने लोभवश बहुत कंजूसी करता है, खाने-पीनेमें कंजूसी, लेने-देनेमें कंजूसी, बस इकट्ठा करते जाना ही उसका काम होता है। कहा जाता है कि जब ऐसा आदमी मरता है तो वह सांप बनकर अपने धनकी रक्षा करनेके लिये आता है।

दूसरा आदमी देनेमें ही खुशीका अनुभव करता है लेकिन वह देनेके लिये नहीं देता अपने नामके लिये देता है। देनेसे उसका अहं फूलता है। वह सोचता है मैंने दिया, चार आदमी उसके देनेकी प्रशंसा करते हैं, अखबारोंमें उसके फोटो छपते हैं, उसके नामसे संस्थाएं खोली जाती है, मकानोंपर उसके नामके पत्थर लगते हैं, बीमारों और बदनसीबोंका उसके यहां तांता लगा रहता है, वह सोचता है मैंने कितना कुछ किया, लोगोंको मेरा उपकार मानना चाहिये। बस मैं मैं और मैं की रट लगी रहती है और

जबतक थे गिरहमें अहमकों के पैसे
सब कहते थे आप ऐसे वैसे,

उनके प्रशंसकोंकी कमी नहीं रहती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सचमुच देखा जाय तो पहले सूम और दूसरे दानीमें बहुत फ़ नहीं है। पहला पैसेके पीछे पागल है दूसरा नाम और प्रशंसा पीछे। दोनोंके अपने-आपको संतुष्ट करनेके तरीके अलग-अल हैं पर हैं दोनों ही अहंकेंद्रित।

आदर्श स्थिति तो यही है कि जो कुछ किया जाय भगवान् लिये किया जाय, संचय और वितरण दोनों भगवान्के लिये हों भगवान्के लिये दिया गया दान दान नहीं होता, उन्हींकी चीज उ ही अर्पित कर दी जाती है। उसमें अहंके लिये कोई स्थान नहीं रहता इस तरहके दानकी बातें करना तो दूर, उसके बारेमें सोचना भी अहि कर होता है कि मैंने यह दिया। कहते हैं जिह्वामें अग्निका वास है अपने सुकृतोंकी बात जहां जीभपर आयी कि सुकृत जल जाते हैं

एक पाठकका पत्र

प्रिय संपादकजी,

अग्निशिखामें कुछ पशु-पक्षियोंकी बातें पढ़कर मनमें यह विचा आया कि मनुष्य कितनी प्रगति कर रहा है, यह तो भगवान् ही जानें पर पशु अवश्य ऊंचे उठते जा रहे हैं। लीजिये, एक हाथियों कहानी, शायद आपने भी अखबारोंमें पढ़ी हो।

दक्षिणके एक प्रांतरमें पानीका अभाव हो गया। मनुष्य, प पक्षी सभीको पानीकी तकलीफ हो गयी। मनुष्योंने शोर मचाय आन्दोलन किये और उनके लिए पानीकी कुछ व्यवस्था हो गयी लेकिन जंगलके पशु क्या करते?

पशुओंमें हाथी सबसे अधिक बुद्धिमान माना जाता है। हाथियों पशुओंका नेतृत्व संभाला और दल बनाकर मानों जुलूस निकाल हुए, अपने शरीरसे छोटे पर बुद्धिमें बड़े भाईका अनुकरण करने लगे उधरसे जंगल विभागके अफसरोंकी जीपें आ रही थीं। उन्होंने उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारों ओर घेराव कर दिया। कुछ आदमी डर गये पर उनके बड़े अफसरने उन्हें शांत रहनेकी सलाह दी।

हाथियोंका नेता बड़ी शान और दबदबेके साथ आगे बढ़ा। न जाने कहांसे वह एक कागज उठा लाया था। कागज सूंडमें लिए वह अफसरके पास जा पहुंचा, और कागज उसके पास रख दिया और उल्टे पैरों वापिस चल पड़ा। उसके पीछे और सब हाथी जंगलमें गायब हो गये।

जंगलातका अफसर समझ गया कि यह हाथियोंका अर्जदास्त देनेका अपना तरीका है। उसने इधर-उधर हाथ मारे और आखिर पशुओंके लिए पीनेके पानीकी व्यवस्था हो गयी।

दूसरी घटना भी हाथियोंसे संबंध रखती है। बैंगलौरके आस-पास मेरे एक मित्रकी बहुत बड़ी जायदाद है जिसमें और पशुओंके अतिरिक्त हाथी भी आते-जाते रहते हैं।

एक दिनकी बात है एक छोटा-सा कलभ अपनी मांके साथ टहलने निकला। वह शायद अपनेमें ही मस्त था या फिर मांके लाड़में अपने-आपको भूला हुआ था और अपने सामनेके कुंएको न देख पाया। परिणाम वही हुआ जो होना था। बच्चा धड़ामसे कुंएमें जा गिरा और लगा चिंघाड़ने । बेचारी मां अकेली पड़ गयी। वह दौड़ी गयी और कई हाथी स्वयं-सेवकोंको सहायताके लिए बुला लायी।

हाथी तरह-तरहके उपाय करने लगे। कोई मट्टी खोदकर कुंएमें डाल रहा था, कोई गन्नेके खेतसे गन्ने ला-लाकर छोटे बच्चेको दे रहा था, कौन जाने बच्चेकी क्षुधा तृप्त करने लिए या कुंएकी सतहको ऊंचा करनेके लिए।

थोड़ी ही देरमें भौं-भौं करती जंगलातकी मोटर आ गयी। लोग बच्चेको बचानेके लिए आये थे। उन्होंने हाथियोंको खदेड़ दिया। हाथी दूर नहीं गये पर उन्होंने रास्ता साफ कर दिया और मनुष्यके प्रयासको सराहना भावसे निहारने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंएके अंदर रस्सियां फेंकी गयीं और बड़े यत्नके साथ कल कुमारके चारों पैर बांध दिये गये। इस प्रयासमें कुमार उन्हें पू सहयोग दे रहे थे। बड़ी-सी गिर्रीकी सहायतासे उन्हें ऊपर उ लिया गया। आदमियोंने शांतिकी सांस ली और लग गये पसी पोंछनेमें।

उधर कलभ कुमारने देखा कि अब तो वे संकटसे बाहर आ ग हैं और उनके पैरोंतले ठोस जमीन है। अब डर उनसे कोसों दू हो गया। उन्होंने जरा अंगड़ाई ली और उनको बांधनेवा रस्सियां टूटकर दूर जा गिरीं और वे स्वयं वहांसे यह जा वह जा

क्या हाथियोंने भी 'मानव कृतज्ञता'का पाठ सीख लिया है?

लीजिये यह दो तो हुई सच्ची घटनाएं। अब एक स्वप्नकी बा भी सुन लीजिए। एक रात मैंने देखा मैं भगवान्के साथ समुद्रतट टहल रही थी। मेरे जीवनकी पुरानी घटनाएं आकाश-पटल दिखायी देने लगीं। मैं देख रही थी कि मेरे पग-चिह्नोंके सा ही-साथ मेरे प्रभुके पद-चिह्न भी दिखलायी दे रहे हैं।

लेकिन यह क्या? मैंने देखा जब कभी मेरे जीवनपर विप आयी, रेतपर दो की जगह एकके चरण-चिह्न रह गये। तो क मेरे प्रभु विपदाके समय मुझे बिसरा कर चले जाते थे?

मैं खिन्न होकर यही सोचती चली जा रही थी कि पार्श्वसे ए मधुर पर ओजभरी वाणी सुनायी दी, "नहीं, मैंने तुम्हें बिसरा नहीं, जब-जब तुम चलनेमें अशक्त हुई, जब-जब तुम्हारे ऊपर मुसी बत आयी मैंने तुम्हें गोदमें उठा लिया। इसीलिए ऐसे स्थलों तुम्हें केवल मेरे ही पदचिह्न दिखायी देते हैं।"

मैं गद्-गद् होकर प्रभुके चरण-चिह्नोंपर गिर पड़ी।

आपकी अदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधीरताके बिना तीव्रता

योग-साधनामें सफलताके लिए जो चीजें सबसे अधिक जरूरी हैं उनमेंसे एक है उत्साह। जिज्ञासुको साधनाकी मांगको सबसे ऊंचा स्थान देना चाहिए। वह उसकी कई रुचियोंमें से एक न हो। आध्यात्मिकता ही उसकी सबसे महत्त्वपूर्ण दिलचस्पी हो, और सब चीजें अगर उसमें सहायता न दें तो कम-से-कम गौण स्थान तो लें ही। केंद्रीय अभीप्सा धीरे-धीरे सत्ताके सभी भागोंमें फैल जाये और मन, प्राण, शरीर सभी इस प्रयासमें भाग लेने लगें।

प्रयास तीव्र तो होना चाहिए परंतु थकानेवाला नहीं। किसी तरहकी कोई अधीरता न हो। व्यवहार और भावमें तीव्रताका संबंध व्यक्तिके निजी पक्षके साथ है। अधीरता परिणामके लिए होती है, ऐसे फलके बारेमें जो व्यक्तिके हाथमें नहीं होता। यह किसी ऐसी चीजके पीछे पड़ना है जिसका अपना समय होता है। अधीरताके सामान्य अंग—बेचैनी, तनाव, निराशा आदि परिस्थितिमें जरा भी सहायता नहीं करते बल्कि आधारको डांवाडोल करके काममें बाधा देते हैं।

इसका यह अर्थ नहीं है कि तुम्हें चीजोंको यूं ही अपनी मरजीके मुताबिक चलते रहने देना चाहिए। प्रयासमें एक हदतक एकाग्रता, दृष्टिकोण और अंतर्दृष्टिमें एकाग्रता अनिवार्य है; हां, प्रत्युत्तरके लिए ज्वरयुक्त विह्वलता न होनी चाहिए, अपने प्रयासके लिए फलका दावा न होना चाहिए। भगवान्‌पर विश्वासकी वृत्तिके साथ उनकी इच्छाका इन्तजार करो। माताजीने कहा है कि सत्ताके अंदर प्रयासकी तीव्रता और भगवान्‌पर शांत निर्भरतामें संतुलन होना चाहिए।

उपनिषद्‌ने बतलाया है कि आत्माको केवल प्रयासद्वारा ही नहीं जीता जा सकता, स्वयं आत्माका चुनाव ही निर्णय करता है। आत्मा जिसे चुन लेती है उसीके आगे अपने आपको अनावृत करती है। तुम्हें धीरजके साथ भागवत इच्छा और उचित मुहूर्तकी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसे भगवान्‌के साथ ऐक्य प्राप्त है उसके लिये हर जगह भग-
वान्‌का पूर्ण सुख और आनंद है। वह हर जगह और हर प-
स्थितिमें हमारे साथ रहता है।

—श्री

चादर, शाल, दोशाले थोक खरीदनेके लिये पत्रव्यवहार करें:

यूनिक स्टोर्स

घास मंडी; लुधियाना

दूरभाष : २५४४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेजीसे पग आगे बढ़ा, क्योंकि लक्ष्य बहुत दूर है; असमय विश्राम न कर, क्योंकि तेरा मालिक तेरी यात्राके अंतिम छोरपर तेरी प्रतीक्षा कर रहा है।

—— श्रीअरविंद

Space donated by

Kooverji Devshi & Co., Pvt. Ltd.

FIREX LEADS TO SAFETY
SAFETY LEADS TO PROSPERITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Love in her was wider than the universe,
The whole world could take refuge in her single heart.

Sri Aurobindo

Arvind Exports (P) Ltd.

Exporters of Engg. Goods, Pesticides, Chemicals,
Ceramics, Readymade Garments & Handicrafts etc.

Calcutta Head Office :
75c, Park Street,
Calcutta - 700 016
INDIA

Bombay Offic
76, 77 Atlanta, Nariman Poi
Bombay - 4000
INDI

Phones:

Offi : 240277 • 240367
Resi : 814512
Telex : 011-4104
Gram : "ARVIEXPO"

Offi : 249065 • 2486
Resi : 478368
Telex : 021-7984
Gram : "AUROEXPORT"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

सोसायटीका १९८४का वार्षिक अधिवेशन पांडिचेरीमें १३, १४ अगस्तको होगा। उससे पहले ११, १२ को कार्यकर्ता और पदाधिकारी शिविर होगा। अन्य विषयोंके साथ-साथ इस अधिवेशनमें सोसायटीकी रजत जयन्तीके बारेमें विचार-विनिमय भी होगा। आप सस्नेह निमंत्रित हैं।

मद्रासमें 'शिक्षामें प्रभावकारी शिक्षणका अनुभव'के विषयपर एक कार्यक्रम हुआ जिसमें ६५ शिक्षाविदोंने भाग लिया। अंतमें उसमें भाग लेनेवाले अध्यापकों और प्राचार्योंने बतलाया कि वे अपनी संस्थाओंमें इन आदर्शोंको कार्यान्वित करनेके लिये प्रयत्न करेंगे।

गुलबर्गा (कर्णाटक)में मई १९८४में श्रीअरविंद केंद्रकी रजत जयन्ती मनायी गयी। आश्रमसे श्री चम्पकलाल और माहेश्वरी आये थे।

अप्रैलके अंतमें बंगलोरके श्रीअरविंद मेमोरियल स्कूलने सात दिनोंका विद्यार्थी शिविर आयोजित किया जिसका विषय था 'सृजनात्मक अभिव्यक्ति'।

आसनसोल शाखाने एक दो दिनके कार्यक्रमकी व्यवस्था की। न्यायमूर्ति बासक, सर्वश्री हरेन्द्र नाथ मजूमदार, अमिय मजूदारने भाग लिया।

हमारे अम्बाला केंद्रमें हर रोज साढ़े छहसे साढ़े साततक श्रीअरविंद की कृतियोंका पाठ होता है और बादमें ध्यान। हर रविवारको सावित्री-पठन होता है।

शक्ति केंद्रमें रोज तीनसे चारतक माताजी और श्रीअरविंदकी पुस्तकोंमेंसे पठन-पाठन भजन और ध्यान होता है। शनिवारको ६-१४ वर्षके बच्चोंके लिये कुछ मजेदार कार्यक्रम होता है।

कोरापुटा (उड़ीसा)में सोसायटी केंद्रोंकी सभा हुई जिसमें लगभग २७ लोगोंने भाग लिया।

अन्य बहुत-से स्थानोंपर भी उत्सव मनाये गये। सबका विवरण देना कठिन है। वाराणसीमें नारायण नगरके सूरज भवनमें डा०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for Ind
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 873

मंजरी मुद्गलके यहां श्रीअरविंद दर्शन और ध्यान केंद्र खोला गया

अपील—माताजीने श्रीअरविंद सोसायटीका पहला उद्देश्य बता है साधारण जनताको माताजी और श्रीअरविंदके बतलाये आ पूर्णयोगका परिचय देना और श्रीअरविंदद्वारा बतलाये गये आध्या त्मिक समाजको लानेका प्रयास करना।

सोसायटीका खर्च चलानेके लिये एक निधिकी स्थापना की ग है। इसके लिये आप अपना अनुदान चेक, ड्राफ्ट, धनादेशद्वा चेयरमैन, श्रीअरविंद सोसायटी पांडिचेरी–६०५००२के नाम भे सकते हैं।

नव विहान—सभी बच्चे कहानियां पढ़ना सुनना चाहते हैं। अपने-आपको कहानियोंके पात्रोंके साथ एक कर लेते हैं और उ बहुत प्रभावित होते हैं। पंचतंत्रके कालसे शिक्षामें कहानीका मह सब मानते आये हैं। आज साक्षरता बढ़ रही है इसलिये कहानियों जरूरत और भी बढ़ गयी है, परंतु उनमें उपदेशका लहजा न हो चाहिये।

नव विहान १०–१५की आयुके बच्चोंके लिये कहानीकी किता का संकलन करनेकी कोशिश कर रहा है। हर एक पुस्तकमें आद बालकमें बतलाये गये गुणों (साहस, सचाई, उदारता आदि)से संब कहानियां होंगी। परपम्परासे चली आयी भारतीय कहानियोंका संकलन तैयार करना है, अगर आपकी दृष्टिमें ऐसी कुछ कहानि हैं जिन्हें इन संकलनोंमें स्थान मिलना चाहिये तो श्री विजय, रिस कोआर्डिनेटर, श्रीअरविंद सोसायटी पांडिचेरी–६०५००२ के साथ पत्र चार करें। अगर पिछले दो-तीन महीनोंमें लिखे गये पत्रों आपको कोई उत्तर नहीं मिला है तो इसका अर्थ यह है कि आपक पत्र पहुंचा ही नहीं। कृपया फिरसे पत्र लिखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

44
2/9/84

उद्‌बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

सितंबर १९८४ वर्ष १५, अंक २, पूर्णांक १७०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

दो संदेश

संपादकीय : हमारा मंत्र — अनुबेन

दैनन्दिनी

श्रीमातृवाणी : एक अंतर्दर्शन

माताजीसे बातचीत

प्रश्नोत्तर

द्वितीय महायुद्धमें श्रीअरविंदकी आध्यात्मिक सहायता

श्रीअरविंद-वाणी : श्रीअरविंदकी शिक्षा और साधन-पद्धति

राक्षसगण — अनु० अमृता

गीर्वाण वाणी

तरुण साधकका माताजी और श्रीअरविंदके साथ पत्र-व्यवहार

ऋषिवर बोले : शरीरकी प्रगति

वेन्दातका विकास

मानसिक या किसी और प्रकारकी कसरतका मूल्य

'आइकिडो' — अनुबेन

सोसायटी समाचार — आ

वार्षिक अग्निशिखा १०.००; पुरोधा १४.००; दोनों २२.००
आजीवन अग्निशिखा १७५.००; पुरोधा २२५.०० दोनों ४००.००
दोनोंकी आजीवन सदस्यताके लिए ४०० एक मुश्त या किश्तों

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :
संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र, अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो संदेश

सच्ची बुद्धि प्राप्त करनेके लिए अपने मनसे बाहर निकल जाओ। सच्ची भावनाएं प्राप्त करनेके लिये अपने संवेदनोंसे बाहर निकल जाओ।

सच्ची क्रियाशीलता प्राप्त करनेके लिये अतिसंवेदनशीलतासे बाहर निकल जाओ।

मेरे प्रेम और आशीर्वादके साथ

—माताजी

५-३-५२

*

शब्दोंसे परे, विचारोंसे भी ऊपर, तीव्र अभीप्साकी ज्वाला हमेशा जलती रहनी चाहिए, स्थिर और देदीप्यमान।

मेरे प्रेम और आशीर्वाद तुम्हारे साथ हैं।

५-३-५५

—माताजी

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय :

हमारा मंत्र

वर्षों पहले लिखा श्रीअरविंदका एक लेख (वन्दे मातरम्) अभी पढ़ा तो ऐसा लगा मानों वह अब भी उतना ही सामयिक जितना उस समय था। आज भारत कालके एक निश्चया कगारपर खड़ा है जहांसे वह पतनकी अतल गहराईमें जाकर सकता है या अपनी गरिमाके हिमालयकी ओर डग बढ़ा सकता राष्ट्रके हर नागरिकका क्या कर्तव्य है, आइये यह श्रीअरवि ओजस्वी वाणीमें सुनें :

देशके इतिहासमें ऐसे समय आते हैं जब विधाता उसके एक काम रखता है, एक लक्ष्य रखता है जिसपर हर चीज, वह कितनी भी महान् क्यों न हो, न्यौछावर करनी पड़ती हमारी मातृभूमिके लिए वैसा समय आ गया है जब उसकी सेवासे अ प्रिय कुछ नहीं, हर चीजको उसकी ओर अभिमुख करना चाहि

देशकी इस विकट परिस्थितिको समझनेके लिए हमें पहले अर्थमें 'भारतीय' होना होगा। आजका हमारा जो रूप है देखते हुए हम भारतीय होनेका दावा नहीं कर सकते। आज का भारतीय आर्थिक लाभ और व्यक्तिगत स्वार्थको प्रथम स्थ देता है; इसीके फलस्वरूप भारतीय प्रतिभा अमरीकामें जा बसती यूरोपमें डेरा डालती है। अगर गृहस्वामी अपना घर छोड़ बसेरा अन्यत्र बनाये तो क्या घर कभी समृद्ध, स्वच्छ और जीव उत्फुल्ल हो सकता है ?

इस समस्यापर लिखते हुए श्रीअरविंदने कहा है कि जबतक भारतीय संस्कृतिमें गहरे नहीं पैठेंगे, जबतक शिक्षा-दीक्षा भार दृष्टिको महत्त्व नहीं देगी तबतक सच्चा भारतीय नागरिक आका कुसुम-सा विरल प्राणी होगा। अभीतक हम हर क्षेत्रमें पश्चिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुंह ताकते रहते हैं जो इतना ही हास्यास्पद है जितना किसी हरे-भरे प्रदेशका किसी रेगिस्तानकी जीवनचर्याका अनुकरण करना।

भारतके इतने अथक प्रयत्नोंकी असफलताके पीछे यह एक बड़ा कारण है। हमारा मंत्र हो भारतीय बनना। उस संकुचित अर्थमें नहीं जिसमें मनुष्य कूप मण्डूक बन जाता है जैसा कि आज पंजाबमें हो रहा है किंतु उस विशाल अर्थमें जिसमें नील गगनके आंगनमें प्रत्येक नक्षत्र अपने साथियोंके साथ मिलकर अपनी व्यक्तिगत शोभा और प्रकाशसे उसे अधिक सुन्दर बना देता है।

हमारा नारा, हमारा मंत्र हो, भारतीय बनना, भारतीय संस्कृतिको जानना, उसे अधिक समृद्ध बनाना।

—अनुवेन

दैनन्दिनी

१. कुछ लोग जीते हुए भी मर चुके हैं और कुछ मरकर भी जीते हैं।
२. प्रकृतिका तर्क मानव तर्क नहीं है।
३. प्रेम ही अंतिम विजेता होगा।
४. तुम्हारी अंतरात्मा अमर है और शाश्वत प्रेममें निवास करती है।
५. मैं जब प्रेमकी बात करती हूं तो वह परम प्रभुके प्रेमकी बात होती है जो केवल सत्यमें अभिव्यक्त होता है।
६. प्रभुका प्रेम सभीको सुखी बनानेके लिए हमेशा उपस्थित रहता है परंतु विरले ही उसकी परवाह करते हैं।
७. भगवान्का प्रेम हमेशा तुम्हारे साथ रहेगा, भले तुम अपने-आपको उसे अनुभव करनेके अयोग्य बना लो।
८. तुम प्रेम तब कर सकते हो जब तुम प्रेम किये बिना रह ही न सको।
९. तुम प्रेम करते हो क्योंकि तुम प्रेम करते हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०. सच्चा प्रेम वस्तुतः सदा ही धीरज-वाला होता है। के
कामना ही अधीर होती है।

११. प्रेम कृपाके बिना रह सकता है और कृपा प्रेमके बिना
सकती है। लेकिन मानव चेतनाके लिए कृपाकी अभिव्य
अनिवार्य रूपसे प्रेमकी अभिव्यक्ति होती है।

१२. ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जो अपने-आपमें कुछ हो।

१३. मनुष्य देवताओंके पशु हैं, लेकिन तभी जब वे पशु है
स्वीकार करें।

१४. मनुष्य प्रगतिके लिए अपना पूरा बल तब पाता है जब
अनुभव करे कि वह अब प्रकृतिसे बंधा हुआ नहीं है, उ
विधानोंसे सीमित नहीं है।

१५. अभिव्यक्तिकी संभावना सीमाभावकी स्वीकृतिके साथ आ

१६. ब्यौरेमें चेतनाकी अभिव्यक्तिका कोई अंत नहीं। वह क
समाप्त नहीं हो सकती।

१७. वह दुर्बलता है जो हिसाब करती है और औरोंसे ऐसे गुणों
मांग करती है जो स्वयं उसके अंदर नहीं हैं।

१८. क्रियाशील ध्यान रूपांतरका ध्यान है।

१९. मन वर्णन करता और समझाता है, चैत्य देखता और समझता है

२०. उपहास बौद्धिक श्रेष्ठताका चिह्न है, वह अज्ञानी मान
हेकड़ीका चिह्न है। चैत्य कभी उपहास नहीं करता।

२१. सचमुच धन किसीका नहीं है।

२२. धनके स्वामित्वके विचारने सब कुछ मिथ्या कर दिया है

२३. धन सामूहिक संपत्ति है जिसका उपयोग केवल वही कर स
हैं जिनमें पूर्ण, व्यापक, वैश्व दृष्टि हो।

२४. अपना धन भागवत कार्यके लिए दो। तुम उसे रखने
अपेक्षा देनेसे अधिक धनवान् बनोगे।

२५. नैतिकता एक ढाल है जिसका साधारण आदमी सत्यसे अ
रक्षा करनेके लिए उपयोग करते हैं।

सितंबर १
२६. वह
है अ
दूर
२७. भार
चार
के
२८. निर
में क
२९. अचं
कर
कर
३०. अप

(१९५
प्रेम और
उसने अप
धीरे-धीरे
अंतर्दर्शनका
यह पत्रिक
छह और
लेकिन यह
लिखे गये
प्रायः सिद्ध
इस अं
हैं—सं०)
2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२६. वह सब जो चेतनाको नीचा करता है, कामनाओंको बढ़ाता है और आवेगोंको जगाता है वह संगीतके सच्चे लक्ष्यसे बहुत दूर रहता है। उससे बचना चाहिए।

२७. भारत स्वाधीन और अखंड होगा। मां अपने बच्चोंको अपने चारों ओर इकट्ठा करके उन्हें एक महान् और संगठित जाति-के जीवनमें, एक राष्ट्र-शक्तिके रूपमें गढ़ देंगी।

२८. निरर्थक बिताया हुआ वर्ष वह है जिसमें कोई प्रगति नहीं हुई, चेतना-में कोई वृद्धि नहीं हुई, पूर्णताकी ओर एक भी कदम नहीं उठाया गया।

२९. अचंचल रहना और एकाग्र होना, ऊपरसे शक्तिको अपना काम करने देना, यह किसी भी बीमारी और हर बीमारीको ठीक करनेका सबसे निश्चित तरीका है।

३०. अपने जीवनको उपयोगी बनाओ।

एक अंतर्दर्शन

(१९५८में माताजीने अपने एक अंतर्दर्शनकी बात कही थी जिसमें प्रेम और चेतनाकी एक अद्भुत सत्ता परम स्रोतसे निकली और उसने अपने-आपको सीधा निश्चेतनामें प्रक्षिप्त किया ताकि सृष्टि धीरे-धीरे अतिमानसिक चेतनाकी ओर जागे। माताजीके इस अंतर्दर्शनका हाल नवंबर १९०६के 'रेव्यू कोस्मिक'में छपा था। यह पत्रिका पैरिससे प्रकाशित हुई थी। १९०६ और १९०७में छह और अंतर्दर्शन छपे थे। यद्यपि इनपर किसीका नाम नहीं है लेकिन यह तथ्य कि वे एकसे शब्दोंसे शुरू होते हैं, एक ही शैलीमें लिखे गये हैं और अनुभूतिकी एक ही दिशामें चलते हैं, इस बातको प्रायः सिद्ध कर देता है कि वे माताजीके लिखे हुए हैं।

इस अंकमें हम इन सात अंतर्दर्शनोंमेंसे पांचवां प्रकाशित कर रहे हैं—सं०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं सो गयी थी और मैं अब जाग उठी हूं।

मैं सुन्दर अतीतमें एक ऐसे तालाबके पास जागी जिसका ज गहरे नील मणि जैसा था, जो दर्पणकी तरह शांत था।

तालाबकी पूर्व दिशामें मैं विरल जातियोंके पेड़-पौधोंका उपवन देखती हूं जिनकी लंबी, बाहरकी ओर घुमावदार शा शांत, स्वच्छ जलोंकी सतहपर खेलती हैं। इस जलमें वि चटकीले रंगोंके फूल प्रतिबिंबित हो रहे हैं। इस स्वाभाविक मो आश्रय-कुंजमें भव्य श्वेत कमल खिले हैं।

सारा आश्रय-स्थल इन्द्रधनुषके प्रकाशसे प्रदीप्त हो रहा है इस प्रदीप्त केंद्रमें है एक सुनहरे बालोंवाली माध्यम[1]—ना जो अपने ललित सौंदर्यमें सो रही है। वह चौड़े समतल प पर लेटी है, उसका सिर एक सुन्दर पांच पंखुड़ियोंवाले फू सहारा लिये हुए है। उसके विस्तृत शुभ्र वसनपर सुनहरी मेख बंधी।

उसकी बांई ओर जागरूक संतरीकी तरह, एक सीधा गर्वी श्वेत आइबिस[2] अपने मूंगे जैसे एक पैरपर खड़ा है। सो बालोंके ऊपर गहरा जम्बुमणिके रंगका रक्षक वितान तना है सारे दृश्यमें एक शांत और स्वच्छ आनंद भरा है। ऐसा ल है कि माध्यम किसी सम्मोहक स्वप्नमें विश्राम कर रही है।

शीतल मंद सुगंधित बयार पत्तोंको सरसराती और पानीमें ल रियां उठाती जा रही है। ऐसा लगता है कि वह अपनी दुला सांसके साथ धीमे-धीमे कहती जा रही हो "गहरे जलोंके टापू रानी" अथाह नील गहराइयोंसे उठती हुई सुरीली आवाज उठी: "गहरे जालोंके टापूकी रानी।"

---

[1]यहां माध्यमका अर्थ है ऐसा व्यक्ति जो सूक्ष्म उच्चतर स्तरों ओर खुला हो।

[2]एक प्रकारका सुन्दर पक्षी जो बगुलेकी जातिका होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके बाद मैं फिरसे सो गयी। मैं किसी महलके एक विशाल कक्षमें जागी।

स्तम्भोंके आकार और साजसज्जासे, दीवारोंको बड़ी प्रचुरता और साथ ही संयमके साथ सजानेवाले चित्रोंसे मैंने जाना कि मैं प्राचीन मिस्रमें मम्फीस या थीबीसके शानदार महलोंमेंसे किसीमें हूं।

सारा कक्ष नयनाभिराम भीड़से भरा है। लोग भड़कीले रंगके अधोवस्त्र, पंखोंवाले शिरस्त्राण गहने, लटकन पहने हैं जिनसे एक विचित्र और भरपूर सामंजस्य बन रहा है। सभीकी नजरें कक्षके उत्तरकी ओर मुड़ी हैं—वहां बीचोंबीच बारह सोपानोंपर उठा एक सिंहासन है जिसके ऊपर मखमली चंदोवा है। सीढ़ियोंके नीचे, बलवान्, शांत रखवालोंकी तरह दो युवा सिंह बैठे हैं। सिंहासनके बांई ओर गुलाबी पैरोंवाला श्वेत आइबिस खड़ा है। स्वयं सिंहासन चौंधियाते हुए प्रकाशसे मंडित है। इस प्रकाशके केंद्रमें मैं उस सुनहरे बालोंवाली माध्यम नारीको देखती हूं जिसके बायें हाथमें एक श्वेत कमल है।

वहां जो लोग इकट्ठे हैं उनमेंसे हर एक सीढ़ियोंके सामने नमन करता है और स्वामिभक्तिकी शपथ लेता है।

मैं फिर एक बार सो जाती हूं और जब मैं जागती हूं तो अपने-आपको विचित्र, भव्य, हिंदू शैलीके एक मंदिरके आगे पाती हूं। चतुष्कोण द्वारके सामने, घुटनोंके बल बैठे हुए पत्थरके हाथी स्तंभों-को सहारा दिये हुए हैं। द्वार खुला हुआ है। सफेद, नीले, जामनी या लाल वस्त्र पहने लोग अकेले या दलोंमें अंदर जा रहे हैं। मैं उनके पीछे-पीछे जाती हूं। कई डचोढ़ियोंको पार करके मैं एक छोटे चतुष्कोण कक्षमें पहुंचती हूं जहां एक गहरा जामनी मेहराब है जिसे छत्तीस जबर्दस्त खम्भे सहारा दे रहे हैं। लोग अपने पद और कार्यके अनुसार इकट्ठे होते हैं। सब मौन हैं। वे किसीकी प्रतीक्षामें हैं। अचानक कक्षके एक तरफका पर्दा उठता है और उज्ज्वल प्रकाशकी एक अवगुंठित आकृति प्रकट होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकृति आगे बढ़ती है और अनुक्रमके चक्रोंके केंद्रमें अपना स्थान लेती है। मैं उस युवक माध्यमको पहचान लेती हूं। वह एक ही आभूषण पहने है और वह है लंबे सुनहरे बालोंमें एक कमल। वह सुनहरी मेखलावाला एक लंबा, श्वेत परिधान पहने

फिरसे सब कुछ मेरी दृष्टिसे ओझल हो जाता है। जागने मैं अपने-आपको बलूतके विशाल घने वनमें पाती हूं। कहीं ऊंचे-ऊंचे वृक्षोंके तनोंके बीच हरे समुद्रमें डूबते हुए सूर्यका हुआ तांबा दिखायी देता है। मुझे लगता है कि मैं किसी टापूमें हूं।

गुल्मोंके बीचमेंसे मैं श्वेत परिधानवाली कुमारियोंको पंक्तिमें हुए देखती हूं। जो पंक्तिमें आगे हैं उनके हाथोंमें वाद्य यंत्र वे वीणा और डफलीकी ध्वनिके साथ गाती हुई आगे बढ़ रही कुमारियां एक-दूसरेके हाथ पकड़कर नाचना शुरू करती हैं। बीचमें स्थित सबसे अधिक ऊंचे और मोटे बलूतके चारों ओर चक्कर लगाती हुई चली जाती हैं।

अपनी चार सहचरियोंके साथ अब सुनहरे बालोंवाली माध्यम है। उसके हाथमें सुनहरी दरांती है। वह गंभीर और ध्यान कदमोंसे आगे बढ़ रही है। पुराने बलूतके तले वह रुककर दरांती उस किशोरको देती है जो उसके संग आया है। फुर्तीसे पेड़पर चढ़ता है, एक ही बारमें पेड़पर लगे पराश्रयी लटो पौधेके गोल पिंडको काट देता है। जो युवा लड़कीके हुए चोगेमें जा गिरता है।

उसके बाद अपने सुरीले गानेको जारी रखते हुए कुमारियां रास्तेसे वापिस चली जाती हैं जिससे आयी थीं।

मैं चौथी बार सो जाती हूं, जागनेपर मैं एडरिऐटिककी (वेनिस)के राजत्वके भव्यमय मुहूर्तमें उसके दरबारकी बेजोड़ अद्‌भुत सज्जा देखती हूं।

वेनिस अनोखा और अनियंत्रित वेनिस, कला और उता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवेशोंका नगर वेनिस जिसकी दीवारोंसे अपराध रिस रहा है और जिसकी नहरोंसे नाटकीयता बह रही है . . . ये रहे वे वैभवशाली प्रासाद जो अपने खिलते हुए यौवनकी पूरी भव्यताके साथ खड़े हैं; ये रहे सुन्दर बजरे जो सुन्दर परिधानवाली तन्वंगियों और महान् शासकोंको लिये जा रहे हैं।

लेकिन मैं एक सशक्त आंतरिक संवेदना[1] द्वारा ड्यूकके प्रासादकी ओर आकर्षित हो रही हूं, मैं जानती हूं कि वहां मैं उन्हें देखूंगी जिन्हें मैंने अभी-अभी सदियोंके गलियारेमें देखा है।

मैं विशाल प्रांगणमें प्रवेश करती हूं, और 'दानवोंकी सीढ़ी'के पास, एक स्तम्भके पीछे, आधी छिपी हुई श्वेत परिधानमें, सुनहरे बालोंवाली युवा माध्यमको देखती हूं। वह एक सुदर्शन वृद्धके कंधेसे सटकर खड़ी है, वृद्धकी बांहें उसे यूं घेरे हैं मानों उसकी रक्षा कर रही हों। उनके चेहरे शोकसन्तप्त हैं, उनकी भंगिमा गंभीर है। इस तरह एक-दूसरेको कसकर पकड़े हुए, वे उस शानदार जुलूसको देख रहे हैं जो प्रासादमें ले जानेवाली सीढ़ियोंपर धीरे-धीरे चढ़ रहा है। मैंने यह स्पष्ट रूपसे जान लिया कि इन दोनोंका भविष्य उन मनुष्योंके हाथोंमें है जो इनके घातक शत्रु हैं।

तब वृद्ध सामने झुककर बालिकाके ललाटका चुम्बन ले, गंभीर वाणीमें कहते हैं, "हमने कई युगोंतक विभिन्न प्रदेशों और बदलती हुई परिस्थितियोंमें मानवताकी मुक्ति और पवित्र कारणके लिये संघर्ष किया और दुःख झेला है।

"एक बार फिर हमने अपने उच्च और महान् आदर्शको चरितार्थ करनेका प्रयास किया और यह प्रयास विफल नहीं हो सकता। मनुष्यके शत्रु अभी अधिक शक्तिशाली हो सकते हैं लेकिन हमारा समय अपरिहार्य रूपसे आयेगा। वे विभाजन और मिथ्यात्वके

---

[1]यहां संवेदनाका अर्थ सूक्ष्म और भौतिक सभी इन्द्रियोंद्वारा एक साथ सचेतन होना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये काम करते हैं, हम उन लोगोंके पक्षमें हैं जो संघर्ष करते जिन्होंने परम सत्य और सामंजस्यके लिये हमेशा संघर्ष कि केवल ये ही अमर हैं। युद्ध जितना अधिक दुष्कर होगा वि उतनी अधिक उज्ज्वल होगी। परिणामके निश्चित हो जाने प्रयासका अधिक मूल्य नहीं रहता।"

बालिकाने सौम्य वाणीमें उत्तर दिया, "वस्तुतः बात ऐसी ही और मुझे पूरा विश्वास है कि धरतीपर अपने अगले आगमनपर विजयके साक्षी होंगे।"

माताजीसे बातचीत

व्यावहारिक सलाह

जहां चार बरतन इकट्ठे हों वे आपसमें टकराते जरूर इस तरहकी समस्याएं आश्रममें भी आती रहती हैं। ऐसी स्थितिसे परेशान होकर एक विभागाध्यक्षने माताजीसे कहा, जानता हूं कि इस समय हमारे लिए मिलकर काम करना जरूरी है। मैं अपनी ओरसे पूरा प्रयास करता हूं परंतु हम बुरी तरह असफल रहता हूं। शायद यह मेरी ही नहीं, हम सब कहानी है। मैं इसके लिए क्या कर सकता हूं?

माताजीने उसे सान्त्वना देते हुए कहा, इसे एक व्यक्ति समस्याके रूपमें न लो। असामंजस्य और अव्यवस्था सारे संसा है क्योंकि मिथ्यात्व सत्यकी क्रियाके विरुद्ध डट रहा है। आश्रममें, चूंकि सत्यकी क्रिया अधिक सचेतन और केंद्रित है लिए प्रतिरोध भी भड़क उठा है। और इस महान् उथल-पुथ में अधिकतर लोग संघर्षमें लगी शक्तियोंकी कठपुतली बने हुए

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी भी मानव समाजमें अच्छे कार्यकर्ता पाना बहुत कठिन होता है। इसी विषयपर बात करते हुए माताजीने कहा 'ईमानदार लोग तो हैं पर उनमें काम करनेकी क्षमता नहीं है, अच्छी क्षमता-वाले लोग हैं पर वे अपने काममें ईमानदार नहीं। जब मुझे कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाय जो सक्षम होनेके साथ ईमानदार भी हो तो वह बहुत महत्त्वपूर्ण हो उठता है।

*

श्रीअरविंदाश्रम माताजी और श्रीअरविंदकी प्रयोगशाला है जहां पूरे मानव जीवनको बदलनेकी कोशिश की जा रही है। माताजीने यहां सब तरहके लोगोंको प्रवेश दिया है और इसी तरह संसारके कार्यकलापके साथ संबद्ध सभी प्रकारके कार्य करनेके लिए अलग-अलग विभाग हैं। एक बार कोई नया विभाग शुरू करनेकी बात हो रही थी। माताजीने कहा, 'यहां हर काम विश्वकी किसी-न-किसी चीजका प्रतिनिधित्व करता है। यहां जब कोई नया काम शुरू किया जाता है तो संसारकी नयी समस्याएं भी आ जाती हैं। इसीलिये मैं नयी समस्याओंको निमंत्रण नहीं देती लेकिन अगर वे आ ही जाएं तो मैं उनसे कतराती भी नहीं। मुझे उच्चतम चेतनाको नीचे उतारना है। मुझे नीचे सब कुछ व्यवस्थित करना होगा और सभी समस्याओंको हल करना होगा।

*

आश्रममें अनुशासनके बारेमें काफी समस्याएं उठ खड़ी होती हैं। माताजीने हर व्यक्तिको जितनी स्वाधीनता दी है, वैसी स्वाधीनता शायद ही कहीं मिले फिर भी वे अनुशासनको बहुत महत्त्व देती थीं। हां, अनुशासन बाहरसे लादा हुआ नहीं हो सकता, अंदरसे आना चाहिए। वे कहती हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुशासनके विना समुचित कार्य संभव नहीं है।

अनुशासन विना समुचित जीवन संभव नहीं है।

और सबसे बढ़कर अनुशासन बिना कोई साधना नहीं हो सकती

हर विभागका अनिवार्य रूपसे अपना अनुशासन होता है अ तुम्हें अपने विभागका अनुशासन मानकर चलना चाहिए।

व्यक्तिगत संवेग, कुढ़न और गलफहमियोंको कभी उस काम बाधा न डालनी चाहिए जो मनुष्यके हितोंके लिये नहीं भगवान् सेवाके लिये किये गये हों।

तुम्हें भगवान्‌की सेवा पूरी इमानदारीके साथ करनी चाहि वह अनासक्त और निःस्वार्थ सेवा न हो तो उसका कोई मूल्य नहीं

प्रश्नोत्तर

मुझे आपके सामने कुछ बातें स्वीकार करनी हैं किंतु मैं अ निश्चय नहीं कर सका हूं। मुझे क्या करना चाहिये? उन्हें स्वीक करूं या बीती बातें भुलाकर उन्हें समाप्त कर दूं?

यदि तुम सचमुच उन्हें समाप्त कर सकते हो, अपनी स्मृतिसे मिटा सकते हो, तो यह अधिक अच्छा रहेगा।

(३-९-१९६

*

आपने हमसे कहा था: "हर एक जीवनको बड़े हल्के रूपमें ले है, प्रत्येक क्षण अपना ही मनोरंजन करता है तथा इतना स्वकेंद्रि रहता है!" यह सत्य है कि हम जीवनको हल्के रूपमें ले रहे और हमारे लिये इतना स्वाभाविक हो गया है कि हम इसी सच्ची मनोवृत्ति समझने लगे हैं। हम आत्म-केंद्रित भी हैं। इ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जालसे हम कैसे छुटकारा पा सकते हैं? जो भी हो, आज प्रातः जो "डांट पिलाई गई" उससे सचमुच बहुत प्रसन्नता हुई। मुझे बहुत खुशी हो रही है।

पहली बात यह है: अपने-आपको कभी विचार, भावना या कर्ममें विश्वके केंद्रमें इस प्रकार मत रखो मानो वह तुम्हारे लिये ही अस्तित्व रखता हो—व्यक्ति विश्वका एक अंगमात्र है। वह उसके साथ एक हो सकता है, पर उसका केंद्र केवल परम प्रभु ही हैं, क्योंकि वे ही उसके परे स्थित हैं और उसे अपने अंदर धारण किये हुए हैं।

(१९-९-१९६१)

*

९५वें सूत्रमें श्रीअरविंद कहते हैं कि व्यक्तिको भगवान्‌की पूर्ण अनुभूति या तो इच्छाके त्यागसे हो सकती है या उसकी पूर्ण तुष्टि से[1]। किंतु यह दूसरी विधि (इच्छाकी पूर्ण तुष्टि) क्या बहुत संकट-पूर्ण नहीं है, क्योंकि क्या मनुष्यकी इच्छाको तुष्ट करना संभव भी है?

कहीं और वे बड़े स्पष्ट रूपमें यह भी कहते हैं कि इच्छाको तुष्ट करनेका प्रयत्न व्यर्थ है, क्योंकि इच्छाकी प्यास कभी नहीं बुझती, उसे कभी तुष्ट नहीं किया जा सकता।

वे जो कुछ लिखते हैं उसे अलग करके नहीं लिया जा सकता,

---

[1] "इच्छाके पूर्ण त्याग या पूर्ण तुष्टिसे ही भगवान्‌के साथ पूर्ण मिलनकी अनुभूति प्राप्त हो सकती है; कारण, इन दोनों विधियों-से ही इसकी पहली आवश्यक शर्त पूरी होती है, अर्थात् इच्छाका नाश।"

3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह सदा समग्रका एक भाग होता है, उस समग्रका जो सभी विरो बातोंका समन्वय है।

(२७-९-१९६१

*

हम अंतरात्मा और आत्माकी प्रायः चर्चा करते हैं, किंतु इनके विषयमें कुछ भी नहीं समझता। ये दोनों वस्तुएं क्या और इनकी अनुभूति कैसे प्राप्त की जा सकती है?

श्रीअरविंदने इस विषयपर (अपने पत्रोंमें) काफी कुछ लिखा और मैंने भी अपनी 'शिक्षा' पुस्तकमें इसकी पूरी व्याख्या की है। तुम्हें इस विषयको पढ़ना, अध्ययन करना चाहिये और **सबसे बढ़कर इसे व्यवहारमें लाना चाहिये।**

(४-१०-१९६१

*

मैंने एक बात देखी है: जब मैं सोनेसे पहले कुछ मिनट बैठकर एकाग्र होनेका प्रयत्न करता हूं तो अगले दिन शीघ्र ही जाग जाता हूं और ताजा अनुभव करता हूं। मैं अगरबत्तीके जलते हुए बिंदुपर अपने-आपको एकाग्र करता हूं। किंतु इस कारण मैं जल्दी कैसे जाग जाता हूं। इन दोनोंमें तो कोई संबंध नहीं है!

बात उल्टी है, बड़ा ठोस संबंध है। जब तुम सोनेसे पहले एकाग्र होते हो तो नींदमें भागवत शक्तिके संपर्कमें रहते हो, किंतु जब तुम बिना एकाग्रता लाये तन्द्रालु अवस्थामें नींदमें चले जाते हो तो निश्चेतनामें जा गिरते हो जिसके फलस्वरूप नींद विश्रामदायक न होकर थकावट पैदा करनेवाली हो जाती है और इस तन्द्रावस्थासे निकलना कठिन हो जाता है।

(८-१०-१९६१

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं चाहती हूं कि तुम अपने अंदर ध्यानपूर्वक देखो और मुझे यह बतानेका यत्न करो कि जासूसी कहानियोंमें कौन-सी बात है जिसमें तुम्हें रस आता है।

(१६-१०-१९६१)

*

मैं इन्हें मनबहलावके लिये पढ़ता हूं। जासूसी कहानियोंमें (विशेषतया 'पेरी मेसन'की कहानियोंमें) सदा एक अदालतका दृश्य होता है जिसमें वकील पेरी मेसन निश्चित रूपसे मुकदमा हारता प्रतीत होता है, उसके मुवक्किलको हत्याका अपराधी घोषित कर दिया जाता है, सभी सबूत उसके विरुद्ध पड़ते हैं, किंतु वकील पेरी मेसनकी एक ही चोट स्थितिको बदल देती है। पूरी कहानी-में ही रहस्यपर रहस्य खुलते रहते हैं और सारा मुकदमा किसी उच्च कोटिके बड़े पहलवानकी मानसिक कसरतके समान प्रतीत होता है। किंतु हर बार पुस्तकको समाप्त करनेके बाद मुझे ऐसा लगता है कि मुझे प्राप्ति कुछ भी नहीं हुई, मैंने कुछ भी नया नहीं सीखा, केवल समय ही नष्ट किया है।

यह बिल्कुल ही निरर्थक तो नहीं है। तुम्हारे मनमें निःसंदेह तमस् बहुत अधिक है और लेखककी ये मानसिक कलाबाजी इस तमसको थोड़ा-सा झकझोर कर तुम्हारे मनको जगा देती है। किंतु ऐसा अधिक देरतक नहीं टिक सकता, तुम्हें उच्चतर वस्तुओंकी ओर मुड़ना होगा।

(१६-१०-१९६१)

*

(दर्शनके बाद लक्ष्मीपूजाके दिन) मैं उस दिनकी प्रतीक्षा कर रहा हूं जब यह हर्ष, यह आनंदातिरेक मेरे अंदर सदाके लिये स्थापित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जायगा। अभी तो यह आजके समान ही एक स्वप्न और अस्था अनुभूति मात्र है। किंतु मैं आपकी सहायतासे इसे सदाके लि प्राप्त करने की आशा करता हूं।

अपनी अभीप्सामें डटे रहो और तुम्हारा स्वप्न पूरा हो जायग

(२३-१०-१९६

(श्रीमातृवाणी खंड ३

द्वितीय महायुद्धमें श्रीअरविंदकी आध्यात्मिक सहायता

युद्ध समितिकी जन संपर्क उपसमितिके सचिवने २८ दिसं १९४०को माताजीको एक पत्र लिखा था जिसमें पूछा था कि श्रीअरविंद कलकता जाकर हिटलरके विरुद्ध भारतके प्रयासका सम करनेके लिये एक सार्वजनिक भाषण दे सकेंगे या कोई संदेश सकेंगे। इस पत्रका एक अंश यहां दिया जा रहा है: "श्रीअरविं युद्धनिधिमें उदारतापूर्वक अनुदान देकर भारतके युद्धप्रयासके स जो सहानुभूति दिखलायी है उससे बंगालकी जनता बहुत अधि प्रभावित हुई है। उसीने मेरी समितिको और भी अधिक सहाय पानेकी आशा करनेका साहस दिया है। इस अवसरपर उनके बो हुए शब्द बंगालके स्त्री-पुरुषोंको प्रेरणा देनेके लिये अमूल्य होंगे चूंकि श्रीअरविंद आजकल मौन धारण किये हुए हैं इसलिये आपसे बड़ी गंभीरताके साथ प्रार्थना कर रहा हूं कि जब समय आ तो आप उनसे वह वाणी प्राप्त कर लीजिये जो करोड़ोंको प्रेर देगी।"

माताजीने उत्तर दिया:

"श्रीअरविंदने एकांतवास और पूरे मौनका जीवन अपनाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिये उनके लिये किसी सार्वजनिक या राजनीतिक कार्यमें लगना संभव नहीं है।

जैसा कि आपने समझा है, मानव जातिके आध्यात्मिक जीवन और उसके उच्च आदर्शोंपर जो भयानक आक्रमण हो रहे हैं उनसे रक्षा करनेके लिये उनकी पूरी सहानुभूति है और जो इस प्रयोजनके लिये काम कर रहे हैं उन्हें वे पूरी आध्यात्मिक सहायता प्रदान कर रहे हैं।"

दिसंबर १९४० —माताजी

श्रीअरविंदकी शिक्षा और साधना-पद्धति

(उनके पत्रोंसे संकलित)

योगके लिये पुकार

योगके लक्ष्यतक पहुंचना हमेशा कठिन होता है परंतु यह योग औरोंकी अपेक्षा ज्यादा कठिन है। यह केवल उन्हींके लिये है जिनके लिये पुकार हुई है, जिनमें क्षमता हो, हर चीजका, हर प्रकारके संकटका यहांतक कि असफलताका भी सामना करनेकी तत्परता हो और पूर्ण निःस्वार्थता, निष्काम भाव और समर्पणकी ओर प्रगति करनेका संकल्प हो।

*

केवल सामान्य जीवनसे बेचैनीभरा असंतोष ही इस योगके लिये काफी तैयारी नहीं है। एक निश्चित आंतरिक पुकार, प्रबल इच्छा और बहुत स्थिरता आध्यात्मिक जीवनमें सफलताके लिये जरूरी है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर सभी कठिनाइयोंका सामना करने और आगे बढ़े चलने लिये तुम्हारे अंदर संकल्प है तो चाहे कितना भी समय क्यों न तुम पथ ग्रहण कर सकते हो।

*

पथका ज्ञान काफी नहीं है——तुम्हें उसपर चलना होगा अगर यह न कर सको तो अपने-आपको उसपर चलाये जाने मानव प्राण और भौतिक बाह्य-प्रकृति अंततक प्रतिरोध करती हैं लेकिन अगर अंतरात्माने एक बार पुकार सुन ली है तो दे हो या जल्दी, वह पहुंच जाती है।

*

जिनके अंदर भगवान्‌के लिये सच्ची निष्कपट पुकार है उ मन और प्राण चाहे जितनी कठिनाइयां खड़ी करें या आक्र आयें, प्रगति धीमी और कष्टदायक हो——वे चाहे कुछ समयके लि पथसे गिर जाएं या बहक जाएं फिर भी चैत्य पुरुष अंतमें विज होता है और भागवत कृपा प्रभावकारी सिद्ध होती है। इस विश्वास रखो और डटे रहो तो लक्ष्य निश्चित है।

(बुलेटिन अगस्त १९८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राक्षसगण

(कविता)

"महिमा और महानता और जीवन का हर्ष
ताकत, अभिमान, विजेता शक्ति, जो भी मनुष्य
इच्छा करता है, जिसका भी वहशी नरपशु आनंद उठाता है,
स्त्रियोंके शरीर और मनुष्योंके जीवन —
मैं अपना राज्य होनेका दावा करता हूं, मुझमें शक्ति है
अपने पदको प्रमाणित करनेकी, मैं चाहता नहीं
कोई ताज अन-अर्जित, कोई स्वामित्व अनधिकृत,
मांगो कौन सा तप तुम चाहते हो, मानवके निर्माता
कौन-सा शुल्क रक्तका या श्रम या लंबे वरस
घनघोर ध्यानमें व्यतीत, जीवन
तुम्हारी वेदीपर आहूत पशुओं या मनुष्योंके;
या सुवर्णसे तुम्हारा अनुग्रह विक्रय योग्य हो;
मैं बहुमूल्य भेंटोंसे अघा सकता हूं
तुम्हारी विजयों और तुम्हारे पुरोहितोंको। मेरे पास हृदय है,
एक हाथ किसी भी बलवान् बलिदानके लिए,
एक आग्नेय धैर्य अपने प्रचंड मनोभाव में;
मैं समर्पित करूंगा। पर मुझसे नहीं मांगना,
कातर खामोशी और निस्तेज कैदी आत्मा
विवर्ण बना दी गयी अपनी मनुष्यता से,
वह हृदय नहीं मांगना जो कंपित होता है, वह हाथ जो छोड़ देता है,
वह मांगो, जो शक्ति दे सकती है, दुर्बलता नहीं,
ओ रुद्र! ओ शाश्वत महादेव!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम भी उग्र हो और शक्तिशाली, क्रुद्ध, साहसी,
सांय सांय करते अपनी हवाओंमें बलिदानके रक्तके लिए
और कुपित शासन करते साष्टांग प्रणत इस जगतका।
ओ राक्षस सर्वशक्तिशाली, मेरी तरफ देखो,
रावण, तुम्हारे सारे राक्षसोंका अधिपति,
मुझे अपनी आला कमान दो कि तुम्हारे शत्रुओंको कुचल दूं,
पर अधिक मैं आक्रांत करूंगा, पीछा करूंगा और नष्ट करूंगा, ज
जो तुम्हारे भक्त तुम्हें मिथ्या रूपमें प्रस्तुत करते हैं, बनाकर तु
प्रेमका ईश्वर, एक ऐसा ईश्वर अत्यंत सौम्य शासन में।
मुझमें ज्ञान है, तुम क्या हो मैं जानता हूं
और जानता हूं स्वयंको, क्योंकि तुम और मैं एक हैं":
लंकाके अधिपतिने यह प्रार्थना की, और स्वर्गमें
श्रीकृष्ण मुस्कराये, सारी मानवजातिके 'मित्र',
और पूछा, "ओ ज्ञानके गुरुओ, ऋषियो
तुम अपने विचारोंसे मेरी मदद करते हो कि मैं मानवजाति
मदद कर सकूं।
सुनो नक्षत्रोंके विरुद्ध रावण क्या बोलता है
दायके रूपमें पृथ्वीको मांग रहा, सलाह दो,
तब क्या यह इसकी हो?" और एक पुकार उठी,
"वह पृथ्वीसे ब्राह्मणको निर्मूल कर देगा,
मानवजाति पर अपना भयानक 'योग' थोपेगा।
और हिंसक हृदय, लौह हस्तको
सबका प्रभु बना देगा।" श्रीकृष्णने उत्तर दिया,
"मुझसे ही निकल वह मेरी इच्छा पूरी करने गया।
उसने असत्य नहीं कहा, उसके पास ज्ञान है, वह
और मैं एक हैं। तब मैं कैसे इनकार करूं?
क्या नहीं कहता है, वेद जो तुम जानते हो,
'जब कोई 'उसे' जानता है, तब वह जो भी इच्छा करता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह उसका होता है?' " और अत्रि मुनिने उत्तर दिया,
"तब एक अवधि तक वह शासन करे और खत्म कर दिया जाये"
और 'वह' जो शासन करते हैं, "कुछ तो तुम जानते हो, ऋषियों
पर मेरा संपूर्ण प्रयोजन नहीं। पहले यह नियत हुआ था,
राक्षस जनाकीर्ण पृथ्वीका राज्य करेगा।
वह मनुष्यके स्थानपर अपने अंदर पशुको धारण करता है
उसे भेंटें चढ़ाते हुए, जब कि भव्य विचारों
और उग्र अभीप्साओंसे वह नियंत्रण करता है;
वह जातिमें दानवका पवित्रीकरण करता है
क्रोधमें विनाश करते हुए, अत्याचारमें नहीं। साथ ही
वह वानरको जगत्से बाहर कर देता है,
समस्त मानव जातिको वैभवका अभ्यस्त करते हुए;
ईर्फितका वह बहिष्कार करता है। अगर उसकी अवधिको
अस्वीकार कर दिया जाये, मनुष्य प्रगति नहीं कर सकता।
लेकिन क्योंकि
वह स्वयंको मेरे सदृश देखता है, स्वयंमें मुझे नहीं,
और जीवन और शरीरको ही सब कुछ मानता है,
वह कायम नहीं रह सकता। इसलिए अत्रिका वचन
स्वीकार है।" और राक्षसके सम्मुख
यज्ञ की भयावहतामेंसे निकल,
नग्न और काली, रक्त टपकाती तलवारके साथ
और भयंकर आंखें लिये मानो जगत् को ही जला देंगी
काली वह राक्षसी ज्वालाओंमें प्रकट हुई।
"वर मांगो," वह गरजी, और सारे देवता
कांपने लगे। "मेरे आनंदके लिए मुझे यह पृथ्वी दो,
इसके देवगण मेरे दास हों," राक्षस चिल्लाया;
"शक्ति और अभिमानके"। "ऐसा ही हो",
उसने उत्तर दिया। "तो क्या यह शाश्वत होगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रावणने मांग की और वह गरजी, "नहीं,
क्योंकि न तुम और न मैं सर्वोत्तम या अंतिम हैं।
आसुरी मेरा स्थान भरनेके लिए उदित होगी,
असुर तेरी संतान अपदस्थ होंगे।
विकासके लिए तूने एक कल्प लिया है,
एक कल्पतक तू शासन करेगा। पर क्योंकि तेरी इच्छा
मैंने अस्वीकार की है, तो कोई और एक वर मांग।"
"तब मेरे लिए स्वीकार हो, जब अंत में मैं गिरने लगूं,
न तो पशु, न दानव, न मनुष्य, न दैत्यका हाथ
न कोई और लघुतर प्राणी समाप्त करे
किंतु केवल ईश्वर ही स्वयं मेरे विनाशका कारण हो"।
और कालीने उत्तर दिया, भयावह स्मितसे
"यह नियत है" और अट्टहास करते हुए वह गायब हो गयी
तब रावण अपनी यज्ञभूमिसे उठा।

गीर्वाण वाणी

असूचयं करुणस्वरेण जीवान्
क्रेयं वृथा नश्वर-विश्व-पण्यम्।
चेत्क्रीणने प्रीणनमात्मनस्ते
क्रेयाणि भो! मानव-मानसानि ।।१।।

लाचार और बेचारा होकर मैंने आर्त पुकार की कि यह सं
अस्थिर है, इसे खरीदनेकी कोशिश मत करना। (अर्थात् इ
मत फंसना)। साथ ही यह भी पुकारा कि खरीदना है तो प्राणि
के प्राण (दिलों)को खरीद लो!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवं जपन्तो हृदि हंसगत्या
दिवानिशं ये परियापयन्ति।
कुर्वन्त आसक्ति-विहीन-स्वान्तं
तेषु प्रसन्नः सुरनाथ-शंकरः ॥२॥

शिव-शिव करते (जपते) तथा हंस गति (सोऽहम्) का ध्यान करते हुए जो दिन-रात व्यवहारी (गृहस्थ, संसारी) बना रहे और जो अपने मनको लागरहित व द्वैत-शून्य बनाये, उसीपर सुरगुरु-नाथ (परम शिव) नित्य प्रसन्न रहते हैं।

चिदानन्दो ज्ञानरूपः प्रकाशाख्यो निरामयः।
यैर्लब्धो देहवन्तोऽपि मुक्तास्तेऽन्येन्यथा स्थिताः ॥३॥

जिनको चिदानन्द और ज्ञानके प्रकाशकी अनुभूति हो गई वे जी कर भी मुक्त हैं। (किंतु जिनको यह अनुभूति नहीं हुई) वे अबोध (मूर्ख) संसारके विषम पाशमें सौ-सौ गांठोंके समान उलझते जाते हैं।

(भुवनवाणी प्रेस लखनऊसे प्रकाशित 'लल्द्यद'से साभार)

तरुण साधकका श्रीअरविंद और माताजीके साथ पत्र-व्यवहार

लोग क्यों मरते हैं?

शरीर घिस जाता है।

संवेग और कामनाएं कहांसे आती हैं—अंदरसे या बाहरसे?

पहले बाहरसे आती है, फिर वे अंदर रूप लेकर ऊपर उठती हैं।

२५ सितंबर १९३३ —श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सपनेमें मैंने किसी घरके सामने एक सांप देखा, वह गोल-गो घूम रहा था।

सांप किसी तरहका कोई गलत सुझाव है, जो हमेशा आ आपको दोहराता रहता है।

आज मैं एक तरहकी व्याकुलता, और उदासी महसूस कर र हूं। क्यों कैसे और किसके द्वारा यह उदासी भेजी गयी है?

हो सकता है सांपको देखनेका परिणाम हो।

२५ दिसंबर १९३३ ——श्रीअरवि

आज मैं थकान महसूस कर रहा हूं, शायद मैंने काफी आरा नहीं किया——लेकिन मैं क्या करूं? मुझे समय नहीं मिलता!

अगर तुम अपने दिनको ज्यादा समझदारीसे व्यवस्थित करो व्यर्थके आने-जानेसे बचो तो निश्चय ही तुम्हें आराम करने समय मिल जायगा।

३० सितंबर १९३३ ——माताजी

आजकल मुझे एकदमसे भूख नहीं लगती। रोटीके एक छोटे टुकड़े और जरा-सी सब्जीसे ही मेरा पेट भर जाता है।

यह केवल प्राणकी कोई सनक होगी——तुम्हें इससे ज्यादा खा चाहिये, खासकर तुम्हारी उम्रमें अच्छी तरह न खाना शरीरके लि खराब है।

६ अक्तूबर १९३३ ——श्रीअरवि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सपना: चार पांच लोग माताजीके दर्शनके लिये इन्तजार कर रहे थे। मेरी बारी 'ग'के बाद थी। चूंकि मुझे कुछ देर हो गयी इसलिये कोई और माताजीके पास चला गया। कुछ देर बाद माताजी सीढ़ियोंसे नीचे उतरीं। मैं 'घ'से बातें करने लगा। जब मैं सीढ़ियोंतक गया तो माताजी अंदर जा चुकी थीं। इसका क्या मतलब है?

और कुछ नहीं बस यही कि तुम अपना अवसर बार-बार खो रहे थे क्योंकि तुम और चीजोंमें लगे थे।

आज सुबह मैंने बहुत उदासी महसूस की: मैं साधनामें कोई प्रगति नहीं कर रहा, उल्टे "मैं पीछे गिरता जा रहा हूं।"

यह निम्न प्राण और भौतिक प्रकृतिमें तमस्‌की क्रिया है।

१५ अक्तूबर १९३३ —श्रीअरविंद

एक सपना: मैं समुद्र तटपर गया जहां मेरा घर था। पानी बहुत ऊपर उठ गया था। एक बड़ी लहर प्रचंड रूपसे मेरे पास आ रही थी। मैं पीछे दौड़ा। मैंने ध्यानके कमरेका दरवाजा खुला देखा, मैं अंदर चला गया और 'क्ष'ने दरवाजा बन्द कर दिया। कुछ देर बाद मैं बाहर आया और मैंने देखा कि वहां पानीका नाम निशान तक न था: समुद्र सूख गया था। क्या इसका कोई अर्थ है?

समुद्र प्राणिक शक्ति है जो तुम्हारे बसके बाहर है। जब तुम वातावरणमें शरण लेते हो तो वह पीछे हटती और सूख जाती है।

१९ अक्तूबर १९३३ —श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम यह कैसे जान सकते हैं कि हमारे विचार वैश्व प्रकृतिसे आ रहे हैं या अंदरसे ?

तुम अनुभव कर सकते हो, और अगर तुम अनुभव न करो तो तुम उनके स्वरूपसे जान सकते हो।

२८ अक्तूबर १९३३ —श्रीअरविंद

ऐसे कितने जगत् हैं जिनमें मनुष्य सपनोंमें जा सकता है ?

असंख्य जगत् हैं—लेकिन हम उन्हें सूक्ष्म, भौतिक, प्राणिक, मानसिक, चैत्य और उच्चतर जगतोंमें बांट देते हैं।

२९ अक्तूबर १९३३ —श्रीअरविंद

क्या यह सच है कि अगर कोई किसी चीजको खो डाले या तोड़ दे तो उसे बेचैनी और दुःखका अनुभव करना चाहिये। क्यों ?

मेरी समझमें नहीं आता कि बेचैनी या दुःखका अनुभव किस तरह उस खोयी हुई चीजको ढूंढ़ सकता है या टूटी हुई चीजको जोड़ सकता है . . .

१ नवंबर १९३३ —माताजी

लोगोंके साथ हुई बातचीतको अपनी रिपोर्टमें लिखनेके बाद मैंने एक तरहकी खुशी, छुटकारेका अनुभव किया। क्यों ?

बिल्कुल स्वाभाविक है, क्योंकि तुमने सब कुछ माताजीके सामने रख दिया।

२ नवंबर १९३३ —श्रीअरविंद

सहज रूपसे मैंने निम्नलिखित शब्द कहे : "मेरा छोटा-सा बगीचा भागवत चेतनाकी ओर खुल रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेड़-पौधे भी भगवान्‌के प्रति खुल सकते हैं।

५ नवंबर १९३३ —माताजी

कीड़ोंको मारनेके लिये क्या मुझे थोड़ा-सा मिट्टीका तेल और थोड़ा साबुन मिल सकता है?

हां, लेकिन पौधेके लिये मिट्टीका तेल खतरनाक है—सावधान रहना कि कीड़ोंके साथ-साथ तुम कहीं पौधोंको भी न मार डालो।

७ नवंबर १९३३ —माताजी

अगर कोई बचपनसे यहीं रहा हो तो क्या यह सच है कि उसके अंदर सेक्सकी कठिनाइयां न होंगी?

यह अपने-आप सच नहीं है—यह केवल संभव है लेकिन इस शर्तपर कि व्यक्ति पूरी तरह से माताजीके प्रभावमें रहे, दूसरे साधकोंके वातावरणके प्रति ज्यादा न खुले जिनके अंदर यह है, नाजुक उम्रमें विचलित न हो और न शृंगारपूर्ण साहित्य पढ़कर अपने-आपको विचलित करे। ऐसा कोई नहीं है जो अवतक यह सब कर सकनेमें समर्थ हुआ हो।

—श्रीअरविंद

जब उदासी आये, तो हो हमें क्या करना चाहिये?

उसे उसी तरह झाड़ दो जिस तरह तुम अपने पैरोंसे धूल झाड़ देते हो।

८ नवंबर १९३३ —माताजी

क्या यह सच है कि किसी शक्ति, प्रकाश, शांति या आनंदके अवतरणके ठीक पहले विरोधी, शक्तियां हमारे ऊपर कोई रचना, उदासी या अवांछित चीज फेंकती हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमेशा नहीं—वे कभी-कभी ऐसा करती जरूर हैं या अवतरणके बाद प्रहार करती हैं ताकि उसमें बाधा दें। लेकिन अगर तुम उनके साथ संपर्क रखना अस्वीकार कर दो तो वे कुछ नहीं कर सकतीं।

९ नवंबर १९३३ —श्रीअरविंद

(माताजीकी लिखी हुई प्रार्थना)

मैं सर्वांगीण और पूर्ण रूपसे सच्चा और निष्कपट बननेकी अभीप्सा करता हूं।

११ नवंबर १९३३ —माताजी

यहां आश्रममें, क्या साधक और साधिकाएं आपसमें भाई-बहन हैं? या केवल मित्र हैं?

वे केवल साथी साधक हैं।

१४ नवंबर १९३३ —श्रीअरविंद

आज दोपहरको जब मैं सोकर उठा तो मुझे ऐसा महसूस हुआ मानों मेरे ऊपर कोई उदासी आ गिरी। मुझे इसका कोई कारण नहीं दीखता।

नींदमें मनुष्य बहुत बार अवांछनीय शक्तियों और चीजोंके संपर्कमें आता है जो तुम्हारी प्राणिक ऊर्जाको खींच लेती हैं जिससे जब तुम उठते हो तो अपने-आपको कमजोर और उदासीसे भरा हुआ अनुभव करते हो।

१५ नवंबर १९३३ —माताजी

(बुलेटिन अगस्त ८२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषिवर बोले :

शरीरकी प्रगति

"ऋषिवर !" वंदनाने अपनी खुशीको छिपानेका सफल प्रयास करते हुए कहा, "आज मुझे अपने दलमें (सबसे अच्छे खिलाड़ीका पदक) मिला है। कई प्रकारकी कसरतोंमें और खेल-कूदमें मेरी प्रशंसाकी गयी है . . ."

"अरे, तो यह कोई सुनानेकी बातें हैं ? पहले मुंह मीठा करवाओ, वंदना, फिर आगे की बातें करना," कमल महाशय अपने स्वभाव-के अनुसार वंदनाको तंग करनेके लिये बोल पड़े।

"तुम्हें हमेशा मिठाईकी ही सूझती है, कमल। तुम पिछले जन्ममें जरूर चींटे रहे होंगे। सच कहती हूं, पदक और प्रशंसा-पत्र पाकर, प्रशंसा सुनकर मेरा तो मन खट्टा हो गया।"

"अरे, क्यों, दादीजी, यह बेवक्तकी भैरवी कैसी ? अभी तो तुम्हारे अंदर यौवन पहली अंगड़ाइयां लेता हुआ उठनेकी कोशिश कर रहा है और इधर तुम दादियोंके-से गाने अलाप रही हो।" दो-तीनने एक साथ कहा।

"नहीं, मैं उदास, निराश या हताश नहीं हूं। आजका पुरस्कार लेते समय मुझे ख्याल आया कि कोई पच्चीस वर्ष पहले मेरे पिता बहुत अच्छे व्यायामी और खिलाड़ी माने जाते थे। उनका स्वास्थ्य देखकर लोगोंको ईर्ष्या होती थी। बहुत-सी स्त्रियां मेरी मांके भाग्यसे जलती थीं।

"परंतु आज मेरे पिता कई रोगोंके शिकार हैं, खेल-कूदका नाम भी नहीं ले सकते। मैं सोच रही थी ऐसा क्यों होता है ? यौवन क्या है और कहां चला जाता है ? क्या उसे टिकाये रखनेका कोई उपाय नहीं है ?"

"हमारे बीच बुढ्ढने जन्म लिया है, भाग्यवान् हैं हम"। कमलने कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषिवरने कहा, वंदना, यौवन वर्षोंकी गिनतीपर निर्भर नहीं होता। यौवन है बढ़नेकी, प्रगति करनेकी क्षमता। बढ़नेका मतलब लंबाई-चौड़ाईमें बढ़ना नहीं है बल्कि अपनी क्षमताओं, योग्यताओं, शक्यताओंकी दृष्टिसे बढ़ना। हमने अभीतक जो पाया है उससे आगे, और आगे बढ़ते जाना ही यौवनका लक्षण है।

बुढ़ापा भी वर्षोंकी गिनतीसे नहीं आता। बढ़ने और प्रगति करनेसे इन्कार करना या उसमें असमर्थ होना ही बुढ़ापा है। बीस वर्षके भी बूढ़े हो सकते हैं और सत्तर वर्षके भी युवक हो सकते हैं। महाभारतमें सत्तरसे ऊपरके अर्जुन आदि युवक माने जाते थे।

जहां आदमी यह सोचता है कि उसने कुछ पा लिया, जो प्राप्त करना था वह प्राप्त कर लिया है, वहीं उसकी प्रगति रुक जाती है। जहां पूर्णताकी प्यास कम हुई वहीं बुढ़ापा आया।

सारी दुनियामें यह विचार फैला हुआ है कि बुढ़ापा अनिवार्य है लेकिन अगर हम प्रगति जारी रख सकें तो यह अनिवार्य न रहेगा। प्रगति करते जाना कोई असंभव काम नहीं है। ओलिम्पिकके विवरण पढ़ जाओ। दौड़नेमें, कूदनेमें, भार उठानेमें, तैरनेमें हमेशा नये-नये कीर्तिमान बनते जाते हैं। पचास वर्ष पहले जो गति मानव क्षमता-के बाहर मानी जाती थी आज मनुष्य उससे बहुत अधिक आगे निकल चुका है।

कई चीजोंके बारेमें कहा जाता था कि मानव शरीरके लिये इससे ज्यादा कर सकना या इससे ज्यादा सह सकना असंभव है परंतु असंभव बातें संभव बन चुकी हैं और असंभवकी सीमाको कई बार पार किया जा चुका है।

इससे हमें यह प्रमाण मिलता है कि सचमुच असंभवके जैसी कोई चीज है नहीं। आज जो असंभव है वह कलकी संभावना और परसोंकी उपलब्धि हो सकती है। तो हम यह क्यों मान बैठें कि अमुक वर्षोंके बाद मानव शरीरका जरा-जीर्ण होना जरूरी है?

कुछ ही समय पहलेतक चंद्रमातक पहुंचना केवल कवियोंके लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संभव था। अब वहां अबादी बसानेकी बात सोची जा सकती है, मंगलपर पहुंचना असंभव नहीं माना जाता। मंगलपर लिये गये चित्रोंको हम दूसरे दिनके अखबारोंमें देख सकते हैं।

विश्वमें सूक्ष्म-शक्तिका एक अक्षय भंडार है। यह शक्ति नीचेसे नहीं, ऊपरसे आती है। अगर हम सचाईके साथ इसके साथ संबंध स्थापित कर सकें तो थकान आदि भूतकालकी चीजें बन सकती हैं।

छोटे-मोटे रोगोंपर विजय पाना, साधारणसे बहुत अधिक श्रम कर सकना आदि ऐसे अनुभव हैं जिन्हें हर एक आसानीसे प्राप्त कर सकता है। लेकिन यहां हम ज्यादा विस्तारमें नहीं जा सकते। हर एकके लिये अपना ही तरीका होगा।

हां तो, वंदना, तुम्हारी बातका संक्षिप्त-सा उत्तर देनेकी कोशिश की है मैंने। स्वभावतः तुम पूछोगी कि हमें इस दिशामें बढ़ने लिये क्या करना चाहिये? मैं फिरसे इस बातपर जोर देता हूं कि इन चीजोंके लिए कोई बंधा हुआ नियम नहीं बनाया जा सकता।

उचित मात्रामें, खाना-पीना, जीभके स्वादके लिये खाना-पीना नहीं, शरीरके स्वास्थ्यके लिये खाना-पीना जरूरी है — न बहुत अधिक और न बहुत कम। इसी तरह उचित मात्रामें अच्छी नींद और व्यायाम, विश्राम आदि भी जरूरी है, परंतु इनसे भी अधिक जरूरी है संकल्प।

पृथ्वीपर हजारों, लाखों वर्षसे जरामरणकी परिपाटी चली आ रही है। हमें यह न मान लेना चाहिये कि यह अनंत कालतक चलती रहेगी। सबसे पहले यह जरूरी है कि हमें यह विश्वास हो कि रोग, शोक, दुःख आदिकी तरह जरासे भी पिंड छुड़ाया जा सकता है लेकिन उसके लिये कीमत चुकानी पड़ेगी।

तुम्हें ऊंचा उठना होगा। तुम यह आशा नहीं कर सकते कि तुम जीवनको जैसे मरजी चलाते रहो, दिन भर जो मरजी ऊटपटांग चीजें करते रहो, फिर भी जरासे मुक्ति पा जाओगे।

विषय बहुत गहन है। जो इस विषयमें अधिक जानकारी चाहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह मुझसे अलग मिल सकता है। तब भी मैं अनुभवकी नहीं आप्तोपदेशकी बात बता सकूंगा। अभीके लिये इतना काफी है कि सतत प्रगति करते रहनेका संकल्प बनाये रखो।

और उस संकल्पके साथ यथाशक्ति अपना प्रयास जोड़ते चलो। शक्तिका दुरुपयोग न करो। विचार, भावना, शरीर, किसीमें किसी ऐसी चीजको न आने दो जो तुम्हारी प्रगतिमें बाधक हो और सबसे बढ़कर भगवान्‌की सहायता मांगा करो।

यह पहला कदम है।

श्रीअरविंदके आधारपर :

वेदांतका विकास

द्वापर युगमें कुरुवंशका बहुत महत्त्व था और कुरु लोग बहुत व्यावहारिक, योद्धा, कर्मकाण्डी और न्यायिक थे। वे पूर्वीय कोसल, विदेह, काशी या चेदी प्रजाओं की तरह चिंतनशील और नैतिक उत्साह भरे लोग न थे। भारतका पश्चिमी भाग हमेशा व्यावहारिक, सिपाहियाना और व्यापारी स्वभावके लिये प्रसिद्ध रहा है। उसकी तुलनामें पूर्वीय जातियां ज्यादा कल्पनाशील और आदर्शवादी रही हैं जब कि दक्षिणके लोग विद्यानुरागी, तर्कप्रधान और तात्विक रहे हैं। हिंदुओंके युगोंके सिद्धांतके अनुसार द्वापरमें हर चीजमें संहिता, विधिविधान और कर्मकाण्डका महत्त्व बढ़ता है। सत्ययुगमें विष्णु मनुष्योंके बीच यज्ञके रूपमें उतरते हैं। सत्ययुगमें यज्ञका ही बोलबाला होता है। यज्ञ आराधना और समर्पणका प्रतीक है। और वह मनुष्योंके हृदयमें राज्य करता है और बाहरी विधि-विधानकी, पूजा अर्चना की, विस्तृत कानून और प्रशासनकी जातियों वर्गों और मतवादोंकी जरूरत नहीं होती। मनुष्य अपनी शुद्ध प्रकृति और पूर्ण ज्ञानका अनुसरण करते हैं। भगवान्‌का राज्य और उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद मनुष्योंके हृदयमें होता है। त्रेतामें पुरातन पूर्ण अवस्था टूटने लगती है और विष्णु चक्रवर्ती राजाके रूपमें आते हैं। सैनिक और शासक बनकर कार्तवीर्य, परशुराम और राम जन्म लेते हैं। मनुष्योंपर शासन करनेके लिये तलवार, कानून और लिखित वेदकी जरूरत होती है। लेकिन अब भी काफी नमनीयता और स्वाधीनता बनी रहती है। कुछ सीमाओंमें रहते हुए मनुष्य अपनी प्रकृतिकी स्वस्थ प्रेरणाओंका अनुसरण करते हैं, पूर्ण शुद्धिसे पहले उतारके कारण जरा-सा स्खलन दिखायी देता है। द्वापरमें धर्म, नैतिकता और समाजपर, विचार और भावनाकी जगह विधि-विधानका शासन होता है। विष्णु व्यासके रूपमें ज्ञानके संहिताकार और व्यवस्थापकके रूपमें उतरते हैं।

द्वापरके अंतमें जब श्रीकृष्णने जन्म लिया, यह वृत्ति अपने चरम उत्कर्षपर थी। केवल बाहरी जीवनमें ही नहीं, मनुष्योंके हृदयमें भी उपचारोंने विचारका और विधि-विधानने भावनाका स्थान ले लिया। लेकिन इसके विपरीत वृत्ति भी चल पड़ी। स्वयं धृतराष्ट्र चीजोंके आंतरिक अर्थकी खोजमें रहते थे। बड़े-बड़े वेदांतके पण्डित धरतीपर मौजूद थे जो औरोंको शिक्षा देते रहते थे। घोर जैसे ऋषि भी थे जिनसे स्वयं श्रीकृष्ण बोध लेने गये थे। श्रीकृष्ण उस जमानेकी बौद्धिक शक्ति थे जिन्होंने इधर-उधर फैली वृत्तियोंको एकत्र किया, द्वापरके प्रबल रूढ़िवादको तोड़कर कलिके क्रमका आरंभ किया। उन्होंने गीतामें उन लोगोंकी निन्दा की है जो वेदोंकी चारदीवारीके बाहर जानेको तैयार नहीं हैं, वे यज्ञ प्रथाको एक दार्शनिक रूप देते हैं, वे तिरस्कारके साथ रूढ़िवादी नैतिक आचार-व्यवहारकी पद्धतियोंको अस्वीकार करते हैं और एक आंतरिक, आध्यात्मिक आचार-शास्त्रकी बेल बोते हैं। उस समय वे बहुत-से लोगोंको विषैले और विनाशकारी शकुन मालूम होते थे। सभी क्रांतिकारी परिवर्तन लानेवालोंकी तरह उन्हें भी बुरा-भला सुनना पड़ा। भूरिश्रवाने उन्हें मनुष्योंको बहकाने वाला और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचारको भ्रष्ट करनेवाला बतलाया। कलियुगका काम है हर बातपर शंका करके, प्रश्न करके हर चीजको नष्ट कर देना ताकि शुद्धि और अशुद्धिकी शक्तियोंके बीच संघर्ष कराकर नये सत्य युग में वह जीवन और ज्ञानका एक नया सामंजस्य स्थापित कर सके।

रूढ़िवादी कौरवों और पांचालोंके कुरुक्षेत्रमें समाप्त हो जानेपर वेदान्तका विकास शुरू हुआ और वह बुद्ध तथा शंकरकी शिक्षामें अपनी पराकाष्ठा तक जा पहुंचा।

(आर्काइव्ज दिसंबर ७९में छपे 'वैदिक इंटरप्रेटेशन्स'पर आधारित)

मानसिक या किसी और प्रकारकी कसरतका मूल्य

बौद्धिक क्रिया-कलाप एक प्रकारकी कसरत है। शारीरिक कसरतका क्या मूल्य है? वह मांसपेशियोंको विकसित करती है, शक्तिशाली, लचीला और फुर्तीला बनाती है। लेकिन केवल उन्हें विकसित करना, यथासंभव बढ़ाना या केवल शरीरको मांसपेशियोंसे कस देनेमें रस लेना आदर्श नहीं है। इसके विपरीत, वह कसरतके उद्देश्यको ही व्यर्थ कर देता है। उद्देश्य है शरीरके सभी अंगोंको विकसित करना, शक्तिशाली बनाना और आकार देना, और उन्हें एक सुन्दर और समर्थ इकाईमें सुव्यवस्थित और समन्वित करना। किसी कसरतको उसके आनंदके लिये ही नहीं करना चाहिये। शरीरकी सारी शक्ति और सारे ध्यानको एक ही चीजपर केंद्रित नहीं होना चाहिये। किसी एक शारीरिक करतबपर की गयी ऐकांतिक एकाग्रता शरीरकी पूरी क्षमताको नहीं निखार पाती। इस उद्देश्यके लिये यानी, शारीरिक क्षमताकी पूर्णताको मनमें रखकर शारीरिक अंगोंके प्रशिक्षणका निर्देशन करना चाहिये। इसी प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसिक प्रशिक्षणका——सोचने, तर्क और वाद-विवाद करनेकी शक्तिका, मन और चेतनाके पूरे शिक्षणके अनुपातमें अपना मूल्य होता है। बुद्धिकी पहुंचसे परे चेतनाके उच्चतर स्तर होते हैं। वहां पहुंचनेकी आशा करनेसे पहले तुम्हें हर प्रकारके मानसिक क्रियाकलापको बंद करना होगा, अपने मनको पूरी तरह शून्य करना होगा। और तुम तथाकथित उच्चतर और दार्शनिक चिंतन मनन भी करो तो वह सच्ची चेतना और ज्ञानमें बाधा बन सकता है। फिर भी, इस बहाने कि तुम्हें किसी उच्चतर चीजकी जरूरत है तुम बौद्धिक क्षमताओंको उपेक्षित और अविकसित नहीं छोड़ सकते। हो सकता है कि भौतिक शरीरकी दृष्टिसे हट्टा-कट्टा बनना तुम्हारा आदर्श न हो, लेकिन तुम एक कमजोर, अविकसित और दुबला-पतला विकृत शरीर भी पसंद न करोगे। तुम्हारे मानसिक शरीरके बारेमें भी यही बात है। ऐसा मन बेकार है जो सबल, निश्चायक और ध्यानपूर्वक रूपसे नहीं सोच सकता। जब तुम मानसिक कसरतोंको केवल कसरतकी दृष्टिसे ही करते हो तो उससे हानि हो सकती है। यानी, जब तुम वाद-विवाद, वितंडा और वाक्छलमें भाग लेते हो तो उसके परिणामस्वरूप अनुपातहीन विकास हो सकता है। परंतु, मनका विकास, तार्किक मनका विकास भी, समग्र विकासका एक अंग बनाया जा सकता है और बनाया जाना चाहिये। उसे अपना सच्चा रूप, सच्ची महत्ता और बल प्राप्त करना चाहिये जो पहले तो मनुष्यके अंदर स्थित उच्चतम और समृद्धतम चेतनाकी ओर बढ़नेमें सहायक हो और अंतमें अपने देवत्वके क्षेत्रमें उसकी अभिव्यक्ति हो। इसी प्रकार शरीरको भी संपूर्ण सत्ताके परम सौंदर्य और तेजको प्रकट करना और मूर्त रूप देना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आइकिडो'

मुझे जापानमें रहते तीन वर्ष बीत चुके थे। सचमुच विलक्षण है यह जाति, उसे जितना देखता उतना ही मुग्ध होता जा रहा था।

एक दिन ऊंघती दोपहरीमें रेलसे कहीं जा रहा था। हमारे डिब्बेमें दो-तीन युवतियां नन्हें मुन्नोंको लिये चुपचाप बैठी थीं, तीन बूढ़े सज्जन, और कुछ बूढ़े दंपति झपकियां लेते-लेते गठरी बने, गाड़ीके साथ-साथ हिचकोले ले रहे थे। बड़ा आरामदेह वातावरण था। अभी इस शांतिका आस्वाद कर ही रहा था कि झटकेके साथ रेल एक छोटेसे स्टेशनपर रुकी। रेलका रुकना था कि मैले-कुचैले वस्त्रोंमें, शराबकी बदबू फैलाता, गालियोंकी फुल-झड़ी बरसाता एक आदमी बगूलेकी भांति अंदर आ घुसा और आते ही दरवाजेके पास बैठी महिलाको जोरदार झापड़ लगाया जिसने उसे सीधा सामने बैठे बूढ़ेकी गोदमें जा गिराया। उसकी गोदका बच्चा ज्योंका त्यों बना रहा। उसने जोरदार आवाजमें अपना विरोध घोषित कर दिया।

अब शराबीकी दृष्टि एक कोनेमें दुबके भय-विह्वल दंपतिपर पड़ी। कई चुने हुए स्वस्ति वचनोंका उच्चारण करता हुआ वह उनकी ओर बढ़ा। उसे अपनी ओर अग्रसर होते देख, दोनों क्षण भर एक दूसरेको हताशासे देखते रहे, फिर डिब्बेके दूसरे छोरकी ओर भागे। शराबी शिकारको हाथसे निकलते देख आगबबूला हो गया। उसने दौड़कर स्त्रीको लात मारी। यह तमाशा देखते-देखते मेरा खून खौलने लगा।

तीन वर्षसे 'आइकिडो' सीख रहा था। यह भी जूडो और जुजुत्सुके जैसी आत्मरक्षा करनेवाली कसरतकी विधि है। मेरे आइकिडो-गुरु सिखाते समय बार-बार कहते थे कि आइकिडो सामर्थ्य दिखानेके लिये नहीं, किसीको बल प्रयोगसे दबोचनेके लिये नहीं वरन् समस्वरता लानेके लिये है। उनके उपदेशका असर यह हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि मैं चौराहे पर सांडसे बेमतलब झटकते और गाली-गलौज करते गुण्डे 'शिकों'के साथ मुठभेड़से बचनेके लिये पुलसे होकर स्टेशन आता था। और अपने-आपको ताकतवर होनेके साथ-साथ साधु पुरुष मानकर फूल उठता था। किंतु मन-ही-मन मनाता रहता कि शक्ति आजमानेका कोई अच्छा बहाना मिल जाय।

आज अवसर आया देखकर मैं बांहें चढ़ाता हुआ आगे बढ़ा। गुरुजीका एक वाक्य कहींसे कानोंमें फुसफुसाने आया, "तुम्हारा काम है सामंजस्यको स्थापित करना। 'आइकिडो'की कला सीखनेका अर्थ है विश्वके छंद-लयके साथ एक होना।" मैं सुनी अनसुनी करके आगे बढ़ा। शराबीने स्तब्ध डिब्बेमें हरकत देखी तो लाल-लाल आंखें चमकाता मेरी ओर बढ़ा। मेरे कान फिरसे बज उठे, "जिस क्षण तुम किसीको मारनेके लिये हाथ उठाते हो उसी क्षण तुम्हारा वैश्व समस्वरतासे नाता हट जाता है। तुम विश्व संगीतसे कट जाते हो। हाथ उठाते ही तुम हार चुके हो।" शराबी और मैं एक दूसरे-की ओर बढ़ रहे थे कि एक पतली ऊंची 'अरे'ने हमें चौंका दिया। हम दोनों मुड़े। 'अरे' कहता हुआ एक बूढ़ा शराबीकी ओर छोटी-छोटी चमकीली आंखोंसे देख रहा था मानों कई वर्षोंका खोया मित्र मिल गया हो। पतली महीन आवाजमें वह बोला, "आओ, मेरे पास बैठो, कुछ बातचीत करें।" शराबी गुर्राया, "क्यों खूसट, मैं किस लिये तेरे साथ बातें करूं?" बूढ़ा मुस्कुराया मानों गाली सुनी ही न हो। फिर चहकती आवाजमें पूछने लगा, "क्यों भई, कौन-सी शराब पी है?" शराबीने मानों चुनौती देते हुए कहा, "साके" (चावलसे बनी शराब)। बूढ़ा सोचता हुआ-सा बोला, "साके अच्छी शराब है। मेरी स्त्री और मैं रोज बगीचेमें बैठकर साके पीते हैं। सूर्यास्तके समय वह उसे थोड़ा गरम कर लेती है। हम (परसीमन) काकूके पेड़ोंको देखते रहते हैं। हमें उसकी बड़ी चिंता रहती है। तुम्हें काफी अच्छे लगते हैं?" शराबीकी कसी

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Courage and love are the only indispensable virtues; even if all the others are eclipsed or fall asleep, these two will save the soul alive.

Sri Aurobindo

★

ASSAM TEA WAREHOUSING CORPORATION

24, Ganesh Chandra Avenue, Calcutta-700 013

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Love in her was wider than the universe,
The whole world could take refuge in her single heart.

Sri Aurobindo

Arvind Exports (P) Ltd.

Exporters of Engg. Goods, Pesticides, Chemicals, Ceramics, Readymade Garments & Handicrafts etc.

Calcutta Head Office :
75c, Park Street,
Calcutta - 700 016
INDIA

Bombay Office :
76, 77 Atlanta, Nariman Point
Bombay - 400 021
INDIA

Phones:

Offi: 240277 • 240367
Resi: 814512
Telex: 011-4104
Gram: "ARVIEXPO"

Offi: 249065 • 248642
Resi: 478368
Telex: 021-7984
Gram: "AUROEXPORT"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाधीनता
एक वरदान और एक सौभाग्य

आज से 37 साल पहले हमने अपनी पराधीनता की बेड़ियां तोड़ डाली और हमारी गिनती स्वाधीन देशों में हुई।

तब से जीवन के हर क्षेत्र में हमने तीव्रता से प्रगति की है।

•आज देश की आवश्यकताओं के लिए हमारे किसान भरपूर अनाज उगाते हैं।

•आज दुनिया के औद्योगिक देशों में हमारा गौरवपूर्ण स्थान है।

देश के बच्चे-बच्चे को सामाजिक और आर्थिक न्याय दिलाने के लिए बीस सूत्री कार्यक्रम एक वरदान बनकर आया है।

इस सौभाग्यशाली लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमें प्रगति का क्रम जारी रखना है और आंतरिक या बाहरी खतरों से अपनी स्वाधीनता और अखण्डता की रक्षा करनी है।

आइए! अपनी स्वाधीनता के 38 वें साल हम कड़ी मेहनत और एकजुट होकर काम करने का प्रण लें। इसीके माध्यम से हम अपने घोषित लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

हुई मुट्
आवाजमें
बूढ़ेने हं
पिताजीने
पेड़-पौधे
सारे सम
हालांकि
ढंगकी न
बूढ़ेने मज
सत्तर।
हैं और
भी तो
बने कट
नीचे उत
गयी। म
उस बड़े
मेरे म
दिखानेके
फिर अपने
दृष्टिपात
बूढ़ेकी
उलझे ची
अपनी आ
मेरा स्
शराबीके
सोचता-
हारिक प्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई मुट्ठियां अब तक कुछ ढीली पड़ गयी थीं। वह स्वाभाविक आवाजमें बोला, "हां, अच्छी तरह पके हों तो बहुत अच्छे लगते हैं।" बूढ़ेने हंसकर कहा, "लेकिन ये पेड़ हमने नहीं लगाये। मेरे पिताजीने भी नहीं, ये मेरे बाबाने लगाये थे। आदमीकी तरह पेड़-पौधे भी तो बुढ़ाते हैं न। हम उनकी देखभाल करते हैं और सारे समय उन्हींकी बातें करते हैं। इस साल फसल अच्छी रही, हालांकि हमारी जमीन इतनी उपजाऊ नहीं है। हम खाद भी ढंगकी नहीं दे पाते।" शराबी पता नहीं कब बेंचपर बैठ गया। बूढ़ेने मजा लेते हुए बात जारी रखी, "हां, मेरी पत्नीकी उम्र है सत्तर। तो हम दोनों रोज सूर्यास्तका आनंद लेते हुए साके पीते हैं और काकूको निहराते हैं। मेरी पत्नी अद्‌भुत है। तुम्हारी भी तो ऐसी ही अद्‌भुत पत्नी होगी।" शराबीका चेहरा रेतसे बने कटोरेकी तरह ढहने लगा। रेखाएं आड़ी-तिरछी होकर नीचे उतरने लगीं। भर्राए स्वरमें वह फूट पड़ा, "मेरी बहू मर गयी। मैं बेकार हूं, न मेरा घर है, न द्वार।" आंसुओंसे भीगे उस बड़े बच्चेका मुख देखकर मैं अपने ऊपर खीज उठा।

मेरे मनने फटकार सुनाई, "मुसीबतके मारेको तू अपनी बहादुरी दिखानेके लिये पीटने चला था।" मैंने शराबीकी ओर देखा, फिर अपने चुस्त फैशनेबल कपड़ोंपर नजर डाली। वस्त्रोंकी ओर दृष्टिपात किया और मेरी इच्छा हुई कि मैं जमीनमें धंस जाऊं।

बूढ़ेकी गोदमें सिर रखे शराबी बुड़बुड़ा रहा था। बूढ़ेने उसके उलझे चीकट गंदे बालोंपर हाथ फेरते हुए कहा, "बेटे, सुना लो अपनी आपबीती। दिल हलका हो जायगा।"

मेरा स्टेशन आ चुका था। उतरते-उतरते मैंने पीछे ताका। शराबीके मुखपर बालककी निर्दोषता छाई थी।

सोचता-सोचता घरकी ओर बढ़ा कि आज "आइकिडो"का व्यावहारिक प्रदर्शन देखा। कितना सरल लगता था। किंतु....

अनुबेन (एक सुनी हुई कहानी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

सोसायटी समाचार

१५ अगस्त श्रीअरविंदका जन्म दिन है, उस दिनका मुख्य कार्यक्रम होता है श्रीअरविंदके कमरेका दर्शन और समाधिके चारों ओर बैठकर ध्यान। अगस्त दर्शनसे पहले सोसायटीका वार्षिक अधिवेशन होता है।

शिक्षा शिविर सोसायटीने २८ मईसे ८ जूनतक पांडिचेरीमें शिक्षा-शिविरकी व्यवस्था की थी जिसमें ४५ व्यक्तियोंने भाग लिया। शिक्षाके बारेमें माताजी और श्रीअरविंदके विचारोंपर आश्रम विद्यालयके अध्यापकोंने अपने विचार प्रकट किये और इस संबंधमें प्रश्नोंके उत्तर दिये। सभीने आश्रमके मुख्य विभागोंको देखा।

केंद्रोंके समाचार—पूर्व कलकत्ताकी प्रादेशिक सोसायटीने पूर्ण योगपर एक सेमिनार किया। हमारी बंगलौर शाखाने तीन भाषणोंकी व्यवस्था की १—संगठनके बारेमें वेदांतका दृष्टिकोण—स्क्वाड्रन लीडर गोपीनाथ २—क्या हिप्नाटिज्म विज्ञान है?—डाक्टर बजाज ३—स्वदेशी विज्ञान आन्दोलनकी आवश्यकता—डा० बासु। गुजरातमें हमारी ओमपुरी शाखाने मई १९८४में एक पांच दिनके शिविरकी व्यवस्था की। देहरादूनमें हमारी राजपुर शाखाने श्री ओ. पी. वाहीके सभापतित्वमें श्रीअरविंदके बारेमें कई भाषण करवाये।

जिन लोगोंने अभीतक अग्निशिखा और पुरोधाका चंदा नहीं भेजा है उनसे निवेदन है कि जल्दी भेजनेकी कृपा करें। ४०० एक साथ या किस्तोंमें दे दें तो और भी अच्छा।

हिन्दीके शुरूके अखबारोंमें एक था 'ब्राह्मण समाचार', उसमें चंदा न आनेपर छपता था :

पांच मास बीते जिजमान,
अब तो करो दक्षिणा दान॥ हरिगंगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
... कांगड़ी
114
2/10/84

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

अक्तूबर १९८४ वर्ष १५, अंक ३, पूर्णांक १७१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

दो संदेश

'संपादकीय' : भगीरथ कार्य —अनुबेन

दैनन्दिनी

श्रीमातृवाणी : सृष्टिका लक्ष्य, बुद्धिका व्यापार

मांके उत्तर कक्षाके मुखियाको

माताजीके साथ बातचीत

चीज कठिन है

गीर्वाण-वाणी

धम्मपदसे

श्रीअरविंदवाणी : चेतनाका बाहर जाना और ऊपर उठना

श्रीअरविंदके साथ बातचीत

ऋषिवर बोले : न्याय

गुह्य इतिहासका एक पृष्ठ

किसके हाथमें ?

सोसायटी समाचार

हमारे प्रकाशन आ०

वार्षिक अग्निशिखा १०.००; पुरोधा १४.००; दोनों २२.००

आजीवन अग्निशिखा १७५.००; पुरोधा २२५.०० दोनों ४००.००

दोनोंकी आजीवन सदस्यताके लिए ४०० एक मुश्त या किश्तोंमें

अग्निशिखा महीना शुरू होनेसे पहले २५ को भेजी जाती है और

पुरोधा महीनेकी १० तारीखको

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :

संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो सन्देश

श्रद्धा, अधिक श्रद्धा ! तुम्हारी अपनी संभावनाओंमें श्रद्धा, परदेके पीछे कार्य करती हुई दिव्य शक्तिमें श्रद्धा, जो कार्य करना है उस-पर और जो मार्ग-दर्शन मिल रहा है, उसपर श्रद्धा।

—श्रीअरविंद

*

बुद्धिके अत्यधिक वर्चस्वके कारण प्रायः मुरझाये हुए, दुःखभरे हमारे इस युगमें, दिव्य प्रेमसे अधिक आवश्यक और साथ ही अधिक मूल्यवान वस्तु कोई नहीं है।

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय :

भगीरथ कार्य

पंजाबकी घटनाओंसे हर विचारशील भारतीयका चिंतित हो स्वाभाविक है। सिक्खोंके घावपर मरहम लगानेका काम न सरक कर पाएगी, न जनता। वह काम करनेके लिए सिक्खोंमेंसे कोई आदर्शवादी, जातिका शुभचिंतक उठ खड़ा होना चाहि जिस कौमने भगतसिंह जैसे सिरफिरे देशभक्तको जन्म दिया व भारतके इस संकट कालमें ऐसा नेता उभारेगी जो सिक्खोंको फि भारतीय जीवनकी मुख्य धारामें लौटा लाएगा। इस समय स अधिक आवश्यकता है सुलझे विचारोंके सिक्ख नेताकी जो यह भ रथ कार्य कर सके।

वैसे भी देश भरमें फैली अराजकता संतुष्ट बने रहनेकी हमें देशकी स्थितिकी गहराईमें पैठनेको बाधित करती है।

महाभारत कालसे वर्तमानतक मनुष्य आंतरिक, मनोवैज्ञा दृष्टिसे अधिक बदला हुआ नहीं दीखता। अगर हम गीता प्रबं लिखे श्रीअरविंदके इन वाक्योंको आजके परिवेशमें देखें तो पा कि कुरुक्षेत्रमें कही गयी ये बातें आज भी उतनी ही सच हैं जि तब थीं।

वे कहते हैं:

"जबतक मनुष्यका हृदय शांतिका अधिकारी नहीं होता, तब सच्ची शांति नहीं आ सकती। जबतक रुद्रका ऋण चुकाया जाता विष्णुका विधान विजयी नहीं हो सकता। तब फिर उस ओरसे मुंह फेरकर अभीतक अविकसित मानवजातिको और ऐक्यके विधानका उपदेश देना चाहिये? प्रेम और ऐ विधानके आचार्य तो होने ही चाहिये क्योंकि अंतिम मुक्ति मार्गसे प्राप्त होगी। किंतु जबतक मनुष्यमें काल पुरुष तं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है, तबतक आंतरिक और परम तत्त्वकी बाह्य और तात्कालिक वास्तविकतापर विजय नहीं होगी। ईसा और बुद्ध आये और चले चले गये किंतु संसार अभीतक रुद्रकी हथेलीमें है। तबतक अहम् भावकी शक्तिसे लाभ उठानेवाली शक्तियों और उनके दासोंद्वारा उत्पीड़ित और आतंकित मानवजातिका आगे बढ़नेका उग्र श्रम अपने संघर्षके वीर नेताकी तलवार और अपने पैगंबरकी वाणीको पुकार रहा है।"

इन वाक्योंसे एक बात स्पष्ट उभर आती है, मार-काट, द्वेषसे नहीं, पावन प्रेमकी धारा ही मनुष्यका उद्धार कर सकती है, किंतु वह प्रेम पवित्र, स्वार्थरहित होना चाहिये। ऐसा कि आवश्यकता आनेपर चांटा मार सके, प्रियकी भलाईके लिये सब कुछ न्यौछावर कर सके।

ऐसा प्रेमको जगाना हर एकके बसकी बात नहीं है किंतु हर व्यक्ति अपने अंदर शांतिको स्थापित करनेकी कोशिश कर सकता है। अगर हम हर अवस्थामें शांति बनाये रखें तो उसकी तरंगें हमारे परिवेशको बदलेंगी। हमारा पहला काम है अपने अंदर शांतिकी स्थापना करना। इस महीनेमें प्रत्येक दिन हमें बार-बार शांतिको नीचे उतारनेका प्रयास करना चाहिये।

लखनऊसे श्री नरेन्द्र सेनका पत्र आया है जिसमें उनका भारत प्रेम झलक रहा है और देशकी वर्तमान स्थितिपर उनका आक्रोश भी कम नहीं है। विशेषकर उनके लिये और उन जैसे अन्य देश-प्रेमियोंके लिये १९६५में दिया गया श्रीमांका संदेश उद्धृत किया जा रहा है। आशा है इससे उन्हें सान्त्वना और उचित चिंतन-दिशा मिलेगी।

"भारत सत्यके लिये, सत्यकी विजयके लिये युद्ध कर रहा है और जबतक भारत और पाकिस्तान 'एक' न हो जायं, करता रहेगा, क्योंकि यही उन दोनोंकी सत्ताका सत्य है।"

—अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

अक्तूबर

१. जबतक हम शरीरमें हैं, चाहे उसकी कितनी उमर और कठिनाइयां क्यों न हों, यह निश्चित है कि हमें इसमें कुछ करना या सीखना है।

२. धीर, दृढ़ और स्थिर रहो, जीवनकी कठिनाइयोंका शांतिके साथ सामना करो।

३. अगर तुम नीरोग रहना चाहते हो तो दो शर्तें हैं। पहली, तुम्हें भयरहित होना चाहिये, एकदमसे भय रहित, और दूसरी तुम्हें भागवत सुरक्षामें पूर्ण विश्वास होना चाहिये।

४. अपने अंदर जीतनेका संकल्प जगाओ।

५. हम जिस उत्साहके साथ मिथ्यात्वका त्याग करते हैं उसी उत्साहके साथ हमें बीमारीको त्यागना चाहिये।

६. भोजनके लालचपर विजय: अच्छे स्वास्थ्यकी प्रतिज्ञा।

७. सबसे अच्छा उपाय है सत्य और सामंजस्यको पुकारना ताकि वह अव्यवस्था और अस्तव्यस्तताको बदल दे।

८. हे प्रभु! हमारे अंदर जो कुछ बनावटी और मिथ्या है, जो कुछ ऊपरी दिखावा और अनुकरण करनेवाला है, वह सब कुछ आज हम तुझे समर्पित कर रहे हैं।

९. सब विघ्नोंपर विजय पानेवाले नाथ!, तेरी जय हो! ऐसी कृपा कर कि हमारे अंदर कोई भी चीज तेरे कार्यमें बाधक न हो।

१०. भगवन्! एकमात्र तेरी कृपामें हम पूरा-पूरा सहारा पायें।

११. बढ़ते चलो, निरंतर बढ़ते चलो!
सुरंगके अंतमें है ज्योति।
युद्धके अंतमें है विजय!

१२. हार न मानो, डटे रहो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३. जब सब कुछ डूबता हुआ लगता है तभी सब कुछ बचा लिया जाता है।

१४. हमेशा नौजवान बने रहो, पूर्णता प्राप्त करनेका प्रयास कभी बन्द मत करो।

१५. बहरहाल, जो भी हो, तुम जो भी करो, भयको आक्रमण न करने दो। उसके जरा-से स्पर्शपर भी सक्रिय हो जाओ और सहायताके लिये पुकारो।

१६. शरीरके साथ एक छोटे बच्चेका-सा व्यवहार करो जिसे यह विश्वास दिलानेकी जरूरत है कि उसे डरना न चाहिये।

१७. हे मां, भगवती! वर दे कि आजका दिन हमारे अंदर तेरे संकल्पके प्रति और भी पूर्ण आत्मनिवेदन, तेरे कर्ममें और भी सर्वांगीण आत्मदान, और भी ऐकांतिक आत्म-विस्मृति, एक महत्तर ज्योति, एक शुद्धतर प्रेम ले आये।

१८. हमारे समस्त अहंकारको दूर कर, समस्त तुच्छ मिथ्याभिमान, लोभ, लालसा और अंधकारको निर्मूल कर।

१९. हम सब तेरे दिव्य प्रेमसे प्रज्ज्वलित हो उठें, जगत्में तेरी ज्योतिशिखाएं बन जायं।

२०. तुम केवल तभी आजाद हो सकोगे जब पूरी तरह भगवान्के हो जाओगे।

२१. समुचित रूपमें प्रयत्न करो और तुम प्राप्त कर लोगे।

२२. विश्वास रखो और तुम्हारा विश्वास अंतमें सच्चा सिद्ध होगा।

२३. सच्चा इलाज यह है कि प्राणमय सत्ताको भगवान्की सेवामें उत्सर्ग किया जाय और उस परम सत्यके प्रति एकनिष्ठ समर्पण किया जाय। उसमें मांगों और दावोंका प्रवेशतक नहीं हो सकता क्योंकि परम सत्यकी प्रकृति है ज्योतिर्मय और आनंदमय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४. चैत्य-पुरुषकी हमेशा यही पुकार होती है, "सत्यकी जय हो भगवन्, मेरी नहीं, तेरी इच्छा पूरी हो।"

२५. आजकल सचमुच एक व्यापक सड़ान्ध और विघटनका काल है। ऐसे कालमें निरुत्साह हुए बिना जीवन बितानेके लिये हमारे अंदर एक शांत-स्थिर हृदय, एक सुनिश्चित संकल्प और संपूर्ण आत्मत्यागका भाव होना चाहिये। हमारी आंखें निरंतर परात्परकी ओर लगी रहनी चाहियें।

२६. सर्वोत्तम पथ है भागवत कृपाको अपने अंदर कार्य करने देना, कभी उसका विरोध न करना, कभी उसके प्रति अकृतज्ञ न होना तथा कभी उससे मुंह न मोड़ना।

२७. परम सत्यको जानना और उसके साथ समस्वर होना ही यथार्थ सत्ताकी प्राप्तिकी शर्त है।

२८. सबसे अधिक आवश्यक बात है ज्योतिकी ओर मुड़नेका निरंतर प्रयास करना।

२९. एकमात्र वही जीवन जीने योग्य है जो भगवान्के साथ एकात्मताके लिये निवेदित हो।

३०. हमें कहना चाहिये, "मैं जो कुछ होना चाहता हूं वह नहीं, बल्कि जो भगवान् चाहते हैं, वही बननेके लिये तैयार हूं।"

३१. हे प्रभु! हम तेरी शांति चाहते हैं, शांतिका व्यर्थ आभास नहीं, तेरी स्वतंत्रता चाहते हैं स्वतंत्रताका दिखावा नहीं, तेरी एकता चाहते हैं, एकताकी छायामूर्ति नहीं। एकमात्र तेरी शांति, तेरी स्वतंत्रता और तेरी एकता ही उस अंधी हिंसा, छल-कपट और मिथ्यात्वको जीत सकती है जो अभीतक पृथ्वीपर राज्य कर रहे हैं।

(श्रीमातृवाणी खंड १५से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सृष्टिका लक्ष्य, बुद्धिका व्यापार

क्या सृष्टिका कोई निश्चित लक्ष्य है? क्या इसका कोई अंतिम ध्येय है जिसकी ओर यह अग्रसर हो रही है?

नहीं, यह विश्व एक गति है जो शाश्वत रूपसे अपने-आपको फैलाती जा रही है। ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे इति कहा जा सके, जो अंतिम लक्ष्य हो। परंतु कार्य-संचालनके लिये हमें इस गतिके—जो स्वयं अनंत है—खंड करने पड़ते हैं और यह कहना पड़ता है कि हमारा अमुक उद्देश्य है, क्योंकि कार्य करनेके लिये हमें किसी ऐसी चीजकी आवश्यकता पड़ती है जिसपर हम अपना लक्ष्य बांध सकें। एक चित्र आंकनेमें तुम्हें उसकी रचना और रंगोंकी निश्चित आयोजना करनी पड़ती है, एक सीमा बांधनी होती है ताकि जो कुछ चित्रित करना है वह सब एक नियत ढांचेमें आ जाय, किंतु वह सीमा मिथ्या होती है, वह ढांचा केवल औपचारिक होता है। असलमें चित्रका एक सतत प्रवाह होता है जो किसी भी विशिष्ट ढांचेका अतिक्रमण करता है और उसकी प्रत्येक धारा उसी प्रकार एक-एक ढांचेमें उतारी जा सकती है और इस प्रकार अनगिनत ढांचोंका कभी न समाप्त होनेवाला क्रम बन सकता है। हम कहते हैं कि हमारा लक्ष्य अमुक है, किंतु हम जानते हैं कि यह इससे परेके लक्ष्यका प्रारंभमात्र है और फिर वह अगले लक्ष्यकी ओर ले जाता है और यह श्रृंखला सदा बढ़ती रहती है, कभी बंद नहीं होती।

बुद्धिका यथार्थ व्यापार क्या है? यह साधनामें सहायक है या बाधक?

साधनामें बुद्धिका सहायक या बाधक होना इसके उपयोग करने-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले व्यक्तिपर और उपयोगके ढंगपर निर्भर है? बुद्धिकी क्रिया सही होती है और गलत भी। एक सहायक होती है और दूसरी बाधक। जो बुद्धि अपने-आपको बहुत अधिक महत्त्व देती है और अपनी संतुष्टि चाहती है, वह उच्चतर सिद्धिमें बाधक होती है।

परंतु यह बात किसी विशेष अर्थमें ही सत्य नहीं है और केवल बुद्धिपर ही लागू नहीं होती, यह सर्वसाधारण है और मनुष्यकी अन्य शक्तियोंपर भी उसी प्रकार लागू होती है। उदाहरणार्थ, प्राणकी वासनाओं अथवा पाशविक तृष्णाओंकी तृप्तिमें ही लीन रहनेकी वृत्तिको लोग सद्गुण नहीं मानते। इस संबंधमें वे नैतिक धारणाको एक परामर्शदाताके तौरपर स्वीकार करते हैं जो उन्हें वह सीमा दिखाता है जिसका उल्लंघन करना अनुचित है। केवल बुद्धिकी क्रियाओंके संबंधमें ही आदमी समझता है कि वह किसी नियंत्रण या अंकुशके बिना रह सकता है।

सत्ताका हर भाग जो अपने उचित स्थानपर रहता और अपने नियत धर्मका पालन करता है, सहायक होता है, किंतु जैसे ही वह अपनी सीमाके बाहर निकला कि वह आकुंठित, विकृत और इस कारण मिथ्या बन जाता है। किसी भी शक्तिका प्रयोग जब भागवत प्रयोजनकी पूर्तिके लिये किया जाता है तब वह उचित होती है किंतु वही शक्ति जब अपने ही संतोषके लिये प्रयोगमें लायी जाती है तो उसकी गति अनुचित होती है।

बुद्धि, अपने सत्य स्वरूपमें, अभिव्यक्ति और कर्मका उपकरण है। मनके ऊपर, उच्चतर भूमिकाओंमें स्थित जो सच्चा ज्ञान है और यहां पार्थिव भूमिकापर उसकी जो उपलब्धि होती है—बुद्धि इन दोनोंके बीच मध्यवर्तीकी न्याई है। बुद्धि, और साधारण रूपमें कहा जाय तो मन, आकार प्रदान करता है, प्राण इसमें गतिशीलता लाता है और जीवन-शक्तिका संचार करता है, और सबसे अंतमें जड़-तत्त्व आता है जो इसे स्थूल रूप देता है।

(श्रीमातृवाणी, खंड ३से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांके उत्तर कक्षाके मुखियाको

"जो होता है तुम्हारे हितके लिये होता है और भागवत कृपासे होता है।" क्या ऐसा सोचनेकी वृत्ति ठीक और स्वस्थ है?

यह विचार केवल सत्य, अच्छा और स्वस्थ ही नहीं है बल्कि यदि व्यक्ति आध्यात्मिक मार्गपर बढ़ना चाहे तो उसके लिये वह वृत्ति पूर्णतया अनिवार्य भी है। वस्तुतः यही वह पहला पग है जिसे रखे बिना वह आगे बढ़ ही नहीं सकता। इसीलिये मैं सदा यही कहती हूं: "जो भी तुम करो, उसे अपनी ओरसे **अधिक-से-अधिक अच्छा** करो, और फिर उसका फल प्रभुपर छोड़ दो; इस प्रकार तुम्हारा हृदय भी शांत रहेगा।"

(१३-५-१९६३)

मधुर मां,
क्या हमारी हस्तरेखाएं भूत, भविष्य और वर्तमान जीवनके विषयमें बता सकती हैं?

हां, निश्चय ही, पर वही व्यक्ति बता सकता है जो इन्हें देखना जानता है, और 'क'में इस विषयकी प्रतिभा है।

(१५-५-१९६३)

मैंने प्रायः देखा है कि हमारे द्वारा किया हुआ काम मजदूरोंके कामकी अपेक्षा अधिक अच्छी तरह और अधिक शीघ्रतासे होता है। न जाने क्यों?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि तुम अधिक सचेतन हो, या यूं कहें, कम अचेतन हो।

(२३-५-१९६३)

लड़कियां सदा ही नुकसानमें रहती हैं: वे लड़कोंकी तरह जो चाहे नहीं कर सकतीं।

क्यों नहीं?

तुम्हारे कथनके विरोधमें सैंकड़ों प्रमाण हैं।

(३१-५-१९६३)

मधुर मां,

दो मानवोंके बीच कौन-सा संबंध सबसे अच्छा होता है? मां-बेटे का, भाई, मित्र या प्रेमी आदिका?

"सिद्धांत रूपमें," सभी संबंध अच्छे हैं और प्रत्येक संबंध सनातन सत्ताका एक-न-एक रूप दर्शाता है। किंतु प्रत्येक विकृत हो सकता है और मानव प्रकृतिमें स्वार्थपूर्ण मिथ्यात्वके कारण बिगड़ भी सकता है, क्योंकि यह मिथ्यात्व ही प्रेमके स्पदनोंको अपने विशुद्ध रूपमें अभिव्यक्त होनेसे रोकता है।

(४-६-१९६३)

'आसमानतक' (रीच फॉर द स्काई) फिल्म और उसके नायक के संबंधमें मैंने कहा था कि उसे कोई भी वस्तु निरुत्साहित नहीं कर सकती थी। उसकी दोनों टांगें दुर्घटनामें नष्ट हो चुकी थीं, तो भी उसने यह दृढ़ निश्चय कर लिया था कि वह अपना विमान-चालकका काम कभी न छोड़ेगा। उस व्यक्तिमें आश्चर्यजनक प्राण-शक्ति थी, अदम्य बल और साहस था...।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वांगीण पूर्णताके योगका अभ्यास करनेके लिये तुम्हारे अंदर ठीक इसी प्रकारका दृढ़ संकल्प होना चाहिये।

(७-६-१९६३)

कुछ ऐसे क्षण आते हैं जब मुझे ऐसा आभास होता है कि पढ़ने या कुछ और कार्य करनेके स्थानपर नीरव होकर बैठा रहूं, लेकिन मैं समय नष्ट करनेसे डरता हूं। मुझे क्या करना चाहिये?

यह नीरवताके प्रकारपर निर्भर है—यदि यह नीरवता प्रकाशपूर्ण है, शक्तिसे ओतप्रोत है और उसमें चेतन एकाग्रता है, तो यह अच्छी है। किंतु यदि वह तामसिक और अचेतन नीरवता है तो हानिकारक है।

(१०-६-१९६३)

बहुत दिनके बाद मुझे एक सुन्दर स्वप्न आया है जिसमें मैंने माताजीको देखा और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

यह स्वप्न नहीं, बल्कि इससे पहलेके ध्यान और तुम्हारी अभीप्साका परिणाम है।

(१२-६-१९६३)

मेरे मस्तिष्कमें काफी "कूड़ा-कर्कट" भरा है जो मुझे स्पष्टतया सोचने और नये विचारोंको शीघ्रतापूर्वक ग्रहण करनेसे रोकता है। मैं इससे कैसे मुक्त हो सकता हूं?

अधिक अध्ययन करनेसे, अधिक सोचने-विचारनेसे तथा बौद्धिक व्यायामसे। उदाहरणार्थ, किसी भी सामान्य विचारका निरूपण करो और फिर उसके विरोधी विचारका, और तब इन दोनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारोंमें समन्वय खोजो, दूसरे शब्दोंमें, एक ऐसा तीसरा विचार ढूंढो जो इन दोनोंमें समन्वय स्थापित कर दे।

(२५-६-१९६३)

तुम उपन्यास क्यों पढ़ते हो? यह एक मूर्खतापूर्ण कार्य है और इसमें समय भी नष्ट होता है। यह भी एक कारण है जिससे तुम्हारे मस्तिष्कमें स्पष्टता नहीं है, और वह अब भी अस्तव्यस्त है।

(२७-६-१९६३)

मनुष्य इतना दुर्बल है कि वह अपने आसपासकी हवासे, किसी किताबके पढ़ने अथवा किसी तस्वीरको देखनेसे ही प्रभावित हो जाता है। वह बहुत आसानीसे चोट खा जाता है।

यह इसलिये है क्योंकि उसने अपनी चेतन सत्ताको आंतरात्मिक केंद्रके, जो कि उसकी सत्ताका सत्य है, चारों और संगठित करनेकी सावधानी नहीं बरती है।

(२८-६-१९६३)

यहां बहुत-से लोग अपनी सुविधाके लिये माताजीको उद्धृत करते हैं (सचमुच ऐसे कई उदाहरण हैं)।

दूसरोंकी आलोचना करनेसे पहले व्यक्तिको यह निश्चित रूपसे जान लेना चाहिये कि वह स्वयं पूर्णतया सच्चा है या नहीं।

(३०-६-१९६३)

स्नेहमयी मां,

कुछ दिन पहले मैंने ए-२ दलके बच्चोंमें एक बड़ी अनोखी बात देखी: लड़के लड़कियोंके साथ काम करना नहीं चाहते, यहांतक कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके पास उनके साथ खड़ा होना भी पसंद नहीं करते। यह भेदभाव इन छोटे बच्चोंमें, जो अभी मुश्किलसे ११ वर्षके ही हुए हैं, कैसे आ गया! बड़ी विचित्र बात है यह।

यह पूर्वजोंसे आयी हुई चीज है जो अवचेतनसे उठी है।

माताजीके साथ बातचीत

[लोग समय-समयपर माताजीसे भिन्न-भिन्न प्रकारके प्रश्न पूछा करते थे। प्रश्न कभी गंभीर होते थे और कभी हल्के-फुल्के पर माताजीके उत्तर हमेशा विषयपर—सुननेवालेकी सीमामें रहते हुए —अच्छा प्रकाश डालते थे। हम यहां इस तरहके कुछ प्रश्न दे रहे हैं। प्रश्नकर्ताने माताजीके उत्तर लिखकर उनको दिखा लिये थे। यहां उन्हींका अनुवाद प्रस्तुत है। जो उत्तर माताजीको नहीं दिखलाए गये उनपर *चिह्न लगा है। हो सकता है इनमें कोई मानव बुद्धिकी भूलें घुस पड़ी हों।—सं०]

प्रश्न—माताजी, एक संन्यासी आपसे दीक्षा लेना चाहता है। जब मैंने उससे कहा कि यहां दीक्षा देनेका रिवाज नहीं है तो उसने पूछा तो फिर यहां किसको और कैसे लिया जाता है?

माताजी—प्राचीन कालमें शिष्यको दीक्षा पानेके लिए, अपनी पात्रता सिद्ध करनेके लिए कड़ी परीक्षामेंसे गुजरना पड़ता था। यहां आश्रममें हम उस परिपाटीके अनुसार नहीं चलते। दीखता तो यही है कि यहां कोई परीक्षा नहीं होती, किसीको परखा नहीं जाता। लेकिन अगर तुम सच्ची बात देखो तो तुम्हें पता लगेगा कि यहांकी परख बहुत ज्यादा कठिन है। वहां शिष्य जानता था कि वह परीक्षामेंसे गुजर रहा है और कुछ बाहरी परीक्षाओंके बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे स्वीकार कर लिया जाता था। लेकिन यहां तुम्हें जीवनका सामना करना पड़ता है और क्षण-क्षण तुम्हारा निरीक्षण होता है। तुम्हारे बाहरी कामोंकी ही गिनती नहीं होती। तुम्हारे हर विचार और आंतरिक गतिविधिको भी देखा, परखा जाता है, हर प्रतिक्रिया-पर ध्यान दिया जाता है। केवल उस चीजका महत्व नहीं है जो तुम जंगलके एकांतमें करते हो, उसका भी उतना ही महत्व है जो तुम जीवनके घमासान युद्धमें करते हो। क्या तुम इस तरहकी परीक्षाएं देनेके लिए तैयार हो? क्या तुम अपने-आपको पूरी तरह बदलनेको तैयार हो? तुम्हें अपने विचारों, मूल्यों, हितों और मतों-को फेंक देना होगा, हर चीजको एक नये रूपमें सीखना होगा। अगर तुम इस सबके लिए तैयार हो तो लगाओ डुबकी अन्यथा कदम बढ़ानेकी कोशिश न करो।

*

आश्रमका कठोर जीवन कुछ नरम पड़ा। जहां यह नियम था कि बारह वर्षसे कम उम्रके बच्चे आश्रममें नहीं घुस सकते वहां छोटे-छोटे बच्चोंके लिए भी द्वार खुल गए। बच्चोंका प्रवेश हुआ तो विद्यालय, खेलके मैदान, छात्रावास, प्रयोगशाला आदि भिन्न-भिन्न चीजोंके आते देर न लगी।

आश्रम विद्यालयके शुरूके दिनोंकी बात है। माताजीने एक प्रदर्शनीका आयोजन किया जिसमें खनिज, वनस्पति, पशु और मानव जगत्से बढ़कर आगे अतिमानसतकके क्रम-विकासका चित्रण था। हर एक प्रश्नका उत्तर माताजीसे मिल सकता था। किसीने पूछा, 'और सब चीजें तो समझमें आती हैं पर भगवान्ने मच्छर, मक्खी बिच्छू आदिको क्यों बनाया?'

माताजीने कहा 'मच्छर, मक्खी आदि कीट-पतंग भगवान्की सृष्टि नहीं असुरकी रचनाएं हैं। असुर सृजन नहीं करता वह केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप देता है। प्राणमय जगत्‌में बहुत ही कुरूप और भयानक दानवाकार प्राणी होते हैं। भौतिक जगत्‌में ये अनगिनत प्राणी उनका प्रतिनिधित्व करते हैं। इनमेंसे कुछ सचमुच छोटे-मोटे दानवोंसे दीखते हैं और कुछ अच्छी शक्ल बनाकर आते हैं। स्वयं असुर कभी-कभी बहुत ही चमकदार रूपमें प्रकट हो सकता है। अगर तुम्हारे अंदर बाहरी रूप-रंगके पीछे जाकर सच्ची चीजको देखने-की क्षमता हो तो तुम उसे भागवत ज्योति समझ सकते हो।'

इसी प्रसंगमें एक और समय उन्होंने कहा, "सृष्टिका विकास क्रम मनतक आ पहुंचा है, मनके लिए यह उच्चतम पद है। एक असुरोंकी सृष्टि भी है जिसमें कीट पतंग आदि हैं जो प्राणमय जगत्‌के प्राणियोंकी प्रतिमूर्ति है ।एक तीसरी सृष्टि है देवों और फरिश्तोंकी, बहुतसे पक्षी इसमें आते हैं।

यहां एक विचित्र घटनाका उल्लेख करना विषयांतर न होगा। दूसरे महायुद्धके दिनोंमें आश्रममें एक छोटा-सा कीड़ा मिला था। जिस किसीने हिटलरका चित्र देखा हो वह उस कीड़ेको देखकर कह सकता था कि किसी चतुर चितेरेने एक साधारण-सा कीड़ा लेकर उसपर हिटलरका चित्र बना दिया है। चित्रमें कोई भूल न थी। हिटलरका चेहरा-मोहरा। यहांतक कि मूंछेंतक बहुत स्पष्ट थीं। कीड़ा माताजीने भी देखा था लेकिन शायद उसके बारेमें कुछ कहा नहीं।

बीमारियोंके बारेमें बात हो रही थी। माताजीने कहा दुनियामें ऐसी कोई बीमारी नहीं है जिसे मैंने अपने शरीरपर न लिया हो। अनुभवद्वारा उनका ज्ञान प्राप्त करनेके लिए और उनपर क्रिया कर सकनेके लिए ही मैंने ऐसा किया था। मेरे शरीरमें भयके जैसी कोई चीज नहीं है। वह उनसे पिंड छुड़ानेके लिए उच्चतर दबावको प्रत्युत्तर देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीज कठिन है

(माताजीने कहा है)

हर चीज कठिन है, उसमें मेहनत पड़ती है, तकलीफ होती है क्योंकि हर चीज भगवान्‌की चेतनाके बाहर की जाती है। परंतु जब भगवान् फिरसे अपने राज्यपर अधिकार कर लें और जब चीजें उनकी चेतनामें की जाती हैं, उनकी चेतनासे की जाती हैं तो सब कुछ अनिर्वचनीय आनंदमें सरल हो जाता है, अद्‌भुत और महिमा-मय हो जाता है।

*

(श्रीअरविंद-वाणी)

मैं यहां चमत्कार दिखाने नहीं आया हूं। मैं आया हूं मानव चेतनाको महान् आंतरिक परिवर्तनका मार्ग दिखाने, उसपर सहायता करनेके लिए। संसारमें बाहरी परिवर्तन तभी संभव है जब भीतरी रूपांतर सिद्ध हो जाय और अपना विस्तार करे। तुम्हें एकदम, एक ही छलांगमें पूर्ण संघ स्थापित करनेकी आशा न करनी चाहिए।

*

शांतिसे, दृढ़तासे आगे चलो। सफलतासे आसक्त न रहो, असफलतासे घबराओ मत। तब मेरी दिव्य सहायता तुम्हें कभी निराश न करेगी।

*

बाहरी काममें कठिनाइयां जरूर गड़बड़ पैदा करेंगी। अपने सर्वोत्तम रूपमें यह एक आवश्यक तैयारी है जबतक कि हम भीतरसे और आध्यात्मिक रीतिसे तैयार न हो जाएं।

लेकिन यह कोई कारण नहीं कि उसे न किया जाय। उचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावनासे किया गया काम अपने-आप आंतरिक सिद्धिका साधन होगा।

*

विशेषरूपसे अहं कर्ता भावको निकाल फेंको जो प्राय: इस विचार-के पीछे छिपा रहता है कि मैं चुना हुआ यंत्र हूं। किसीसे घृणा न करो। सभीके अंदर भगवान्‌को देखो और अनुभव करो। तब तुम्हारे अंदरकी शक्ति तुम्हारी सामग्री और तुम्हारे वातावरणपर ज्यादा अच्छी तरह काम करेगी।

गीर्वाण-वाणी

यस्यास्ति श्रद्धा गुरुप्रोक्त-शब्दे
ज्ञानस्य वल्गा हय-चित्त-रोधे।
वशे खजातं मुद् यस्य चित्ते,
न तस्य मृत्युर्न च तस्य मारकः ॥१॥

जो गुरु-शब्दपर आस्था और श्रद्धा रखे, ज्ञानरूपी लगामसे अपने चित्तरूपी तुरंगको काबूमें रखे, जो इन्द्रियोंको वशमें करके आनंदभोग करे, वह भला कैसे मर सकता है और उसे भला कौन मार सकता है?

नामानि रूपाणि बहूनि सन्ति।
विश्वस्य मंचे जगदीश्वरस्य।
द्वन्द्वं सहिष्ये न करिष्यसे घृणाम्,
तदाहि ते शंकर-दर्शन भवेत् ॥२॥

इस संसाररूपी रंगशालामें मुझे उस (ईश्वर)के विभिन्न नाम-रूप मिलेंगे। (इस वैभिन्यमें उसे पा लेना ही बड़ी बात है) इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए जब तू सुख-दुःख सह लेगा, घृणा, वैर, क्रोध आदिको मनसे गला देगा तब तुझे शिवमुखके दर्शन होंगे।

प्रेमाग्निक्रोडे तमलालयं यदा,
तदा मृताऽहं मरणात्पूर्वम्।
जन्मक्षणे मे नहि जाति-रूप-
महंविलीनेति नवीन-रूपम्॥३॥

प्रेमकी अग्निरूपी गोदीमें मैंने उसे (परम-तत्वको) डुलाया जिससे मरनेसे पूर्व ही मर गई। जन्मके समय तो मेरा न कोई रंग था और न कोई जाति किंतु अब मेरे कई रंग हो गये हैं। 'मैं' कहना छूट गया, यह सबसे बड़ा रंग है।

(भुवनवाणी प्रेस लखनऊसे प्रकाशित 'लल्द्यद'से साभार)

धम्मपदसे

अकोच्छि मं अवधि मं अजिनि मं अहासि मे।
ये च तं उपनय्हन्ति वेरं तेसं न सम्मति॥३॥

"मेरी निंदा की", "मुझे मारा," "मुझे पराजित किया", "मुझे लूट लिया"—जो ऐसे (विचारोंको मनमें) पालते हैं उनका बैर कभी शांत नहीं होता।

'धम्मपद'ने सबसे पहले यह कहा है कि बुरे विचार दुःख लाते हैं और अच्छे विचार सुख। अब वह बुरे विचारोंके उदाहरण देता है और कहता है कि दुःखसे कैसे बचा जा सकता है। यह है पहला उदाहरण, मैं दुहराती हूं: "मेरी निन्दा की, मुझे मारा, मुझे हराया, मुझे लूट लिया"; और फिर वह कहता है: "जो लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे विचारोंका पोषण करते हैं उनका बैर कभी शांत नहीं हो सकता।"

हमने अपनी मानसिक साधनाका आरंभ किया है और इसके लिये मानसिक विकासके क्रमबद्ध स्तरोंको अपना आधार बनाया है: हमने यह देखा है कि इस साधनामें एकके बाद एक यदि तुम्हें भली-भांति याद हो, क्रमसे आनेवाली चार क्रियाएं हैं जिनका हमने इस प्रकार वर्णन किया है: निरीक्षण करना, चौकसी करना, संयमित करना और प्रभुत्व स्थापित करना। और अपने पिछले पाठमें—मुझे ऐसी आशा है—हमने यह सीखा है कि अपने विचारोंसे अपने-आपको कैसे पृथक् करें ताकि हम उन्हें एक सतर्क द्रष्टाकी तरह देख सकें।

आज हम लोग यह सीखेंगे कि इन विचारोंपर चौकसी कैसे रखी जाय। सबसे पहले तुम उनकी ओर ताको और फिर उनकी निगरानी करो। हम एक ज्ञानवान् जजकी तरह उनको ध्यानपूर्वक देखना सीखते हैं ताकि हम अच्छे और बुरे विचारोंके बीच, लाभदायी और हानिकारक विचारोंके बीच, 'विजय'की ओर ले जानेवाले रचनात्मक विचारों और 'विजय'से दूर ले जानेवाले पराजयवादी विचारोंके बीच विभेद कर सकें। यही वह विवेक-शक्ति है जिसे हमें अब अवश्य प्राप्त करना चाहिये, यही हमारे आज रातके ध्यानका विषय होगा।

जैसा कि मैं तुमसे कह चुकी हूं, 'धम्मपद' हमें उदाहरण देगा, पर उदाहरण तो उदाहरण ही है। हमें स्वयं यह सीखना होगा कि अच्छे विचारोंको हम बुरे विचारोंसे अलग कैसे कर सकते हैं, और इसके लिये, जैसा कि मैं कह चुकी हूं, तुम्हें एक ज्ञानवान् जजकी तरह ध्यानपूर्वक देखना होगा—अर्थात्, जितना अधिक संभव हो उतना अधिक पक्षपातशून्य होकर देखना होगा। यह उन शर्तोंमेंसे एक अनिवार्य शर्त है।

१३-९-१९५७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकोच्छि मं अवाध मं अजनी मं अहासि मे।
ये तं न उपनय्हन्ति वेरं तेसूपसम्मति ॥४॥

"मेरी निन्दा की", "मुझे मारा", "मुझे हरा दिया," "मुझे लूट लिया"–जो (लोग ऐसे विचार मनमें) नहीं रखते उनका वैर शांत हो जाता है।

हमने उस दिन जो पढ़ा था उसीका यह परिपूरक अंश है। यहां प्रश्न केवल उन विचारोंका ही नहीं है जो घृणा उत्पन्न करते हैं। क्योंकि, ईर्ष्याके साथ-साथ, घृणा भी मानवी दुःखके अत्यंत व्यापक कारणोंमेंसे एक है।

परंतु घृणा कैसे न रखी जाय? एक विशाल और उदार हृदय ही वास्तवमें इसका सबसे अच्छा साधन है, परंतु इसे प्राप्त करना सबकी पहुंचके भीतर नहीं है। अपने विचारोंको संयमित करना संभवतः कहीं अधिक व्यवहार्य हो सकता है।

विचारोंको संयमित करना हमारी मानसिक साधनाका तीसरा पग है: एक बार जब हमारी चेतनाके ज्ञानी न्यायाधीशने उपयोगी और हानिकारक विचारोंके बीच विभेद कर दिया तो हमारा आंतरिक पहरेदार सामने आ जायगा और केवल स्वीकृत विचारोंको ही गुजरने देगा और बड़ी कड़ाईके साथ सभी अवांछनीय तत्वोंका प्रवेश निषिद्ध कर देगा।

खूब शानदार अदासे हमारा पहरेदार प्रत्येक बुरे विचारका प्रवेश बन्द कर देगा और उसे यथासंभव अधिक-से-अधिक दूर धकेल देगा।

स्वीकार करने या अस्वीकार करनेकी इस क्रियाको ही हम विचारोंका संयम कहते हैं और आज रातके लिये हमारे ध्यानका यही विषय होगा।

२०-९-५७

(श्रीमातृवाणी खंड ३से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेतनाका बाहर जाना और ऊपर उठना

तुम्हारे वर्णनसे मालूम होता है कि दो अलग--अलग अनुभूतियां एक साथ हुई थीं।

(१) चेतनाका शरीरके बाहर जाना। मानसिक, प्राणिक या सूक्ष्म भौतिक चेतनाका कोई भाग या तीनों मिलकर शरीरके बाहर जाते हैं और उसे नींद या समाधिमें बंद छोड़कर अपने-आप अन्य लोकोंमें या वहीं कमरेमें या धरतीपर कहीं और घूमते हैं। ऐसी दशामें शरीर नीचे या कमरेमें पड़ा हुआ उसी तरह स्पष्ट दीखता है जैसे भौतिक आंखोंसे अलग चीजें दिखायी देती हैं। जैसा तुम्हारे साथ हुआ इस बीच भय आकर चेतनाको तेजीसे इस शरीरमें वापिस ला सकता है।

(२) ऊपर उठनेकी अवस्था, इसमें चेतना शरीरसे ऊपर उठ जाती है! इस तरह चेतना यह जानते हुए कि वह शरीरकी साधारण चेतनासे ऊपर जा रही है, ऊपर उठती है। पहले-पहल यह वहुत दूर नहीं जाती लेकिन बार-बार अनुभूति होनेसे उसके अंदर ज्यादा-ज्यादा ऊंचा उठनेकी क्षमता आ जाती है। अनुभूति-के बाद वह शरीरमें लौट आती है। लेकिन ऐसा भी होता है कि चेतना निश्चित रूपसे ऊपर उठ जाय और निश्चित रूपसे वहीं ऊपर ही रहे। तब वह शरीरके अंदर या उससे सीमित नहीं रहती। वह अपने-आपको केवल शरीरके ऊपर ही नहीं अनुभव करती बल्कि आकाशमें विस्तृत भी होती है। शरीर उस ऊंचे स्थानसे नीचे, और विस्तृत चेतनामें लिपटा रहता है। कभी-कभी उसका प्रसार केवल ऊपर ही अनुभव होता है और कुछ अनुभवके बाद ही नीचे-तक लपेटनेवाली चेतनाका अनुभव आता है। लेकिन उसका निर्णायक प्रभाव होता है, यह केवल एक अनुभूति या उपलब्धि नहीं, निश्चित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थायी परिवर्तन होता है। इसके साथ ही शरीरको तादात्म्यसे छुटकारा मिल जाता है। शरीर केवल सत्ताके विस्तारमें एक स्थिति, उसका यंत्र भाग रह जाता है। उसका अनुभव होता भी है तो एक बहुत छोटी नगण्य-सी चीजके रूपमें। साधककी चेतना, एक विस्तृत, लगभग अनंत चेतनाके रूपमें रहती है, अगर एकदम अनंत नहीं तो असीम सीमित रूपमें।

यह नयी चेतना ऊपरके समस्त ज्ञानके प्रति खुली रहती है। लेकिन वह साधारण आदमीकी तरह दिमागसे नहीं सोचता। उसके पास जाननेके और ही साधन होते हैं। केंद्रोंके ठीक नियमके अनुसार खुलनेकी जरूरत नहीं, केंद्र वैसे ही खुले होते हैं वरना चेतनाका ऊपर उठना संभव ही न होता। इस योगमें वे अपने-आप खुल जाते हैं। जिसे हम खुलना कहते हैं वह स्वयं चेतनाका अलग-अलग स्तरोंपर ऊपरकी चेतनाको ग्रहण कर सकना है। ऊपर उठनेके द्वारा तुम ज्ञानको ऊपरसे ला सकते हो लेकिन बड़ी गति तो यह है कि उसे ऊपरसे प्राप्त करो और निचले मन आदि स्तरोंमें बहने दो। मैं यहां यह भी कह दूं कि इन सभी स्तरोंपर, मन और प्राणमें तथा उसके भी नीचे भौतिक सीमाओंसे मुक्ति मिल जाती है। एक ऐसा विस्तार आता है जो शरीरके साथ तादात्म्य नहीं होने देता।

तुम्हें जिस भयका अनुभव हुआ वह साधारणतः नहीं हुआ करता। शारीरिक चेतना नयी गतिविधिसे अपरिचित होती है इसलिये उसे डर लगता है कि उसे छोड़ या फेंक न दिया जाय, लेकिन ऐसा कम ही होता है औरं बार-बार नहीं होता इसलिये हो सकता है कि उस समय चेतना बाहर भी निकली होगी। तुम अपनी मरजीके मुताबिक शरीर छोड़ने और उसमें लौट आनेकी बात कहते हो, यह क्षमता केवल शरीरसे बाहर जानेमें दिखायी देती है, ऊपर उठनेमें तो चढ़ना-उतरना स्वाभाविक और सरल होता है और ऊपरकी निश्चित उपलब्धिमें फिर उतरनेकी वात ही नहीं रहती। चेतनाका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक भाग नीचे उतर सकता है, शरीरमें तथा निचले भागोंमें काम कर सकता है जब कि सत्ताका वह भाग जो स्थायी रूपमें ऊपर पहुंच गया है और वहीं रहता है वह उन सब चीजोंका अधिष्ठाता होता है जो की जाती और अनुभवमें आती हैं।

(श्रीअरविंद सर्कल ९से)

श्रीअरविंदके साथ बातचीत

(अतिमानसिक शक्ति, योगी इत्यादिके बारेमें)

श्रीअरविंद—संन्यासका एक अपना सौंदर्य होता है—उसके पीछे आध्यात्मिक जीवन होता है, उसमें उच्चतर जीवनके लिये निम्नतर जीवनको त्यागा जाता है। लेकिन जैसे सुखका दमन करनेसे पीड़ा होती है उसी तरह सुन्दरताको दबाया जाय तो कुरूपता आ जाती है।

१३-७-१९२६

शिष्य—क्या अतिमानसिक शक्ति दिव्य प्रकृतिकी शक्ति है?

श्रीअरविंद—हां।

शिष्य—गीता उच्चतर और निम्नतर प्रकृतिमें भेद करती है। क्या अतिमानसिक शक्ति उच्चतर प्रकृति है?

श्रीअरविंद—वह केवल उच्चतर प्रकृतिका एक भाग है। यह उच्चतर प्रकृतिका वह भाग है जो मनुष्यमें उतरनेके लिए तैयार है। अतिमानसके ऊपर आनंद और सच्चिदानन्द हैं।

शिष्य—क्या अतिमनमें आनंद नहीं है?

श्रीअरविंद—हां, आनंद तो मनमें भी है लेकिन उच्चतम आनंद अभीतक मनुष्यके भागमें नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—क्या अतिमानसिक शक्ति जीवमें होती है?

श्रीअरविंद—अतिमानसिक शक्ति ज्यादा ऊंची है, जीव उसका यंत्र है, अन्यथा उस शक्तिके प्रति समर्पणका कोई अर्थ ही न होता।

*

शिष्य—अतिमानस योगके मार्गपर साधकपर बाहर और भीतरसे जो कठिनाइयां आती हैं, उसका कारण क्या है? उनके प्रति हमारी मनोवृत्ति कैसी होनी चाहिए?

श्रीअरविंद—पहले तो कुछ ऐसी शक्तियां नीचे दबाव डालती हैं जो अतिमानसिक नहीं हैं और उनसे कठिनाइयां पैदा होती हैं। जब अतिमानस उस क्षेत्रमें काम करना शुरू करता है तो सारी कठिनाइयां गायब हो जाती हैं, शांति और सामंजस्य, ज्ञान और शक्ति आती है परंतु, जबतक आधार सीधा अतिमानसिक शक्तिके कामके लिए तैयार न हो जाय तबतक दो प्रकारकी कठिनाइयां आती हैं— १) विरोधी शक्तियां सब प्रकारकी कठिनाइयां पैदा करती हैं, २) उच्चतर शक्ति साधककी परख करती है, उसका बल और उसकी दुर्बलताएं दिखाती है, उसके चारों ओर जो शक्तियां खेलती हैं उनका परिचय कराती है और इस तरह उसे ऊपरकी ओरके अभियानके लिये तैयार करती है।

इन कठिनाइयोंका सामना करनेके दो तरीके हैं, तात्कालिक और स्थायी। तात्कालिक उपाय यह है कि अगर उच्चतर शक्तिकी ओर तुम जरा भी खुले हुए हो तो इन कठिनाइयोंको उसके हवाले कर दो, वहांसे समाधान पाओ और उसका अनुसरण करो, सभी कठिनाइयोंका अनासक्त भावसे सामना करो। स्थायी उपचार तब आ जायगा जब अतिमानव तुम्हारे आधारको व्यवस्थित कर देगा और तुम अपने-आपको और बाहरी परिस्थितियोंको वशमें कर सकोगे।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगी किसीको अपना उपकरण बनाकर अपना प्रभाव डाल सकता है और कोई प्रयोजन सिद्ध कर सकता है। बशर्ते उच्चतर शक्तिकी स्वीकृति हो।

शिष्य—क्या योगी संसारकी प्रगतिमें सहायता या बाधा देनेवाली वैश्व शक्तिपर अधिकार पा सकता है?

श्रीअरविंद—योगी इस प्रकारका कठोर वर्गीकरण नहीं करता। ऐसी शक्तियां हैं जो कभी, जिसे तुम प्रगति कहते हो उसमें सहायता करती हैं और कभी बाधा देती हैं। ये शक्तियां केवल अपना खेल करना चाहती हैं।

शिष्य—तो क्या योगी इन शक्तियोंका नियंत्रण कर सकता है?

श्रीअरविंद—उच्चतर शक्तिके तत्वावधानमें योगी इन शक्तियोंका किसी भागवत उद्देश्यके लिए उपयोग कर सकता है लेकिन अगर योगीमें अहंकार बचा हुआ है तो उसका काम उस हदतक अपूर्ण होगा।

शिष्य—आपने कहा कि योगी किसी व्यक्तिको अपना उपकरण बनाकर उसके द्वारा काम कर सकता है। क्या उसका काम उप-करणकी कमजोरियोंके कारण सीमित रहेगा?

श्रीअरविंद—हां, कुछ सीमा तो होती ही है लेकिन योगी त्रुटिपूर्ण उपकरणसे भी अपना काम पूरा कर सकता है। हां, उपकरणके दोषोंकी वजहसे कठिनाइयां निश्चय ही पैदा होंगी।

१४-७-१९२६

शिष्य—क्या इस धारणामें कुछ सचाई है कि अलग-अलग जातियों-की क्षमतामें भेद होता है?

श्रीअरविंद—दुनियाकी सभी चीजोंकी तरह यह सच भी है और झूठ भी। कोई व्यापक नियम नहीं बनाया जा सकता। उच्च जातिमें पैदा होनेवालोंको घरद्वार और वातावरणके कारण अधिक अवसर मिलता है। यद्यपि राजेन्द्रलाल मित्रमें अधिक क्षमता थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर एक ब्राह्मण उनकी अपेक्षा अधिक आसानीसे वेदांतकी गुत्थियोंको सुलझा सकता था। लेकिन निचली जातियोंमें ऐसी कोई अक्षमता नहीं है जिसे दूर न किया जा सके। इस विषयमें एकदम ठीक बात कहना बहुत मुश्किल है। उदाहरणके लिये अमरीकाके नीग्रो लोगों-को ले लो। गोरोंके साथ समान शिक्षा पानेपर भी अभीतक उनमें कोई प्रथम कोटिका आदमी नहीं पैदा हुआ।....

फ्रेंच क्रांतिमें पहले सभी जनरल अभिजात कुलोंके थे क्योंकि उन दिनों यह मान्यता थी कि अच्छे जनरल केवल अभिजात कुलमें ही जन्म लेते हैं लेकिन जब प्रतिबंध हटा दिये गये तो सामान्य लोगोंमें-से भी बड़े अच्छे जनरल मिल गये।

ऋषिवर बोले:

न्याय

पिछली दो बैठकोंमें विद्यार्थियोंने जो कहानियां सुनायी थीं वे ऋषिवरको पसंद आयीं और आजकी बैठकके लिये उन्होंने कह दिया कि जो भी बोले न्यायके बारेमें बोले और बोले कहानियोंमें। हां, कहानियां किसी भी देशकी हो सकती हैं।

मारियाने कहा, "चलिये, मैं यूरोपकी एक कहानीसे शुरू करती हूं। एक समय यूरोपमें जादू-टोनेका बहुत चलन था। लोग जिससे नाराज होते उसे जादूगर कह कर जला देते थे। जिस किसीसे डाह होती उसे जादूगर प्रमाणित करते देर न लगती थी।

"यह घटना इटलीकी है। क्रेसिन नामक किसानके यहां बहुत अच्छी फसल हुई। यह देखकर आस-पास के किसान डाहसे जलने लगे। उन्होंने सोचा, 'हो न हो, यह जादूके कारण ही है।' उन्होंने झट जाकर हाकिमसे शिकायत कर दी कि क्रेसिन जादूगर है, तभी उसके यहां असाधारण रूपसे अच्छी फसल हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्रेसिनको अदालतमें हाजिर होनेका हुकुम दिया गया। वह आया और बड़ी गंभीरताके साथ अपने विरुद्ध लगाये गये अभियोग सुनता रहा। वादीकी बात समाप्त होनेपर उसने न्यायाधीशसे निवेदन किया 'जादू तो मैंने अवश्य किया है और न्यायाधीशकी अनुमति हो तो मैं अपने साथियोंको भी बुला आऊं। सबकी सुनाई एक बारमें ही हो जाय।'

"न्यायाधीशने अनुमति दे दी और थोड़ी देरमें क्रेसिन अपनी जवान हृष्ट-पुष्ट लड़की, अपने खेतीके औजार, एक बोरीमें बीज और एक जोड़ी बैलोंको लेकर आ गया।

"उसने कहा, 'महाशय, मैं खेत जोतता हूं, मेरे उन औजारोंको देख लीजिये। इनमें कोई टूटा-फूटा या रद्दी नहीं है, मेरी यह मजबूत बेटी बीज बोती और नियमित रूपसे सिंचाई करती है और यह रहे बैल जो सारे प्रदेशमें अपने जोड़ नहीं रखते। यही मेरे जादू हैं और यही टोने। अब आप जो दंड देना चाहें दे लें।"

"न्यायाधीश प्रसन्न हो गये। उन्होंने कहा, 'तुम सचमुच जादूगर हो। मैं तुम्हें यही दंड देता हूं कि अपना जादू औरोंको भी सिखाते चलो ताकि देश समृद्ध हो सके।'

चौबेको जब शरारत सूझती है तो उसके ओठ फड़कने लगते हैं। उसने मारियाकी कहानी खतम होते ही कहा, "यह क्या कहानी हुई! लो, अच्छी कहानी मैं सुनाता हूं। तुमने इटलीकी कहानी चुनी तो मैं इंग्लैंडकी बात सुनाता हूं।

"इंग्लैंडके राजाओंमें पंचम हेनरीका काफी ऊंचा स्थान है। वह जैसा बुद्धिमान था वैसा ही वीर भी था। लेकिन लड़कपनमें बुरी संगतमें रहनेके कारण वह बहुत ही उद्धत, धृष्ट और जंगली था। चोर, उचक्के, नामी बदमाश उसके दोस्त थे।

"एक बार उसके किसी साथीको न्यायाधीशने कैदकी सजा दी। राजकुमारका पित्ता उछलने लगा। उसने तुरंत न्यायाधीशके सामने खड़े होकर कहा, 'मेरे मित्रको आप कोई दंड नहीं दे सकते। इसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुरंत छोड़नेकी आज्ञा दे दीजिये—यह युवराजका हुकुम है।'

"न्यायाधीश कागजका फूल न था। उसने कहा, 'मैंने न्याय करनेकी शपथ ली है। मेरे सामने सब बराबर हैं। युवराजकी बातका यहां कोई मूल्य नहीं। आप न्यायमें बाधा न डालें।' पर राजकुमारने एक न सुनी। वह अपने साथीको छुड़ानेके लिये आगे बढ़ा। न्यायाधीशने फिर चेतावनी दी, 'युवराजको इस मामलेमें पड़नेका कोई अधिकार नहीं है। आप चुपचाप चले जाएं नहीं तो न्यायको अपना पंजा फैलाना पड़ेगा।'

'युवराजका क्रोध और भी भभक उठा। उसने आव देखा न ताव चटसे एक थप्पड़ न्यायाधीशके गालपर जड़ दिया। न्यायाधीशने बड़े शांत भावसे कहा, 'यह मेरा नहीं न्यायाधीशका अपमान है और इसे नहीं सहा जा सकता।' साथ ही उसने युवराजको पकड़कर जेलमें डाल देनेका हुक्म दे दिया।"

"न्यायाधीशने युवराजसे कहा, 'आज नहीं, कल आप राजा बनेंगे। अगर आप इस तरह राजाके कानूनकी अवहेलना करेंगे तो आपके कानूनोंको कोई क्यों मानेगा?" राजकुमारकी आंखें खुल गयीं। उसने सिर झुकाया और तुरंत जानेके लिये तैयार हो गया। राजाको इस बातका पता चला तो उसने कहा, 'ऐसे न्यायाधीश पाकर मैं धन्य हूं। न्याय हो तो ऐसा हो।"

"यह युवराज जब राजा बना तो उसने न्यायाधीशसे कहा, 'मैंने आपके साथ धृष्टताकी थी और आपने मुझे इतना अच्छा पाठ पढ़ाया। मेरी प्रार्थना है कि मुझे ऐसे ही सच्चे और निर्भीक न्यायाधीश मिलें जो समय आनेपर इसी तरह मेरे पुत्रको भी सन्मार्ग दिखा सकें।"

"अच्छी बात है, तो लो नहलेपर दहला," कनिष्ठा बोली। "तुमने इंग्लैंडकी बात सुनायी तो मैं अमरीकाकी सुनाऊँगी। हममेंसे शायद ही कोई ऐसा हो जिसने अब्राहाम लिंकनका नाम न सुना हो। वे अमरीकाके प्रसिद्ध राष्ट्रपति और इस नाते प्रधान सेनापति भी थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्हें मृत्युदंडके आज्ञा-पत्रपर हस्ताक्षर करते हुए बहुत संकोच होता था। "उनके मनमें यही विचार काम किया करता था कि जो किसी-को जीवन दे नहीं सकता उसे जीवन हरनेका क्या अधिकार है। भूलसे अगर किसीको कोई दंड दे दिया जाय तो भूलका पता लगने-पर उसे ठीक किया जा सकता है लेकिन प्राण दंड दिया सो दिया, उसे ठीक करनेका कोई उपाय नहीं है।

"एक सैनिकके बारेमें शिकायत थी कि वह रातको पहरा देते-देते सो गया। युद्धके दिनोंमें यह अपराध अक्षम्य है। उसका कोर्ट मार्शल हुआ और उसे गोली मार देनेका हुकुम हो गया। वे अपने-आप उससे मिलनेके लिये जा पहुंचे। उसने बतलाया कि उसका कोई साथी बीमार था। उसकी देख-रेखके साथ-ही-साथ रातका पहरा भी देना पड़ा। कई दिन दोगुनी मेहनत करनेके कारण उसकी आंख लग गयी थी।

"राष्ट्रपतिने कहा, 'अगर मैं प्राण दंडकी जगह तुमपर जुरमाना कर दूं तो उसे चुका सकोगे?' अभियुक्तने कहा, 'महाराज, बहुत राशि न हो तो कुछ मैं दूंगा, कुछ मेरे साथी देंगे। हम सब मिल-कर चुका ही देंगे।' राष्ट्रपति बोले, 'नहीं, दोष तुम्हारा है। मैं तुम्हारे साथियोंको बीचमें नहीं लाना चाहता। 'जाओ, तुम्हें मुक्त किया जाता है। तुम फिरसे अपने सेवाके पदपर वापिस जाओ और यह याद रखना कि यह जीवन तुम्हें देश-सेवाके लिये उधार दिया गया है। देशका उधार चुकानेके लिये तैयार रहना।'

"सिपाहीने सलाम किया और अपने कामपर चला गया। युद्ध-में बड़ी बहादुरीके साथ लड़ते-लड़ते उसने वीरगति पायी और मरने-से पहले राष्ट्रपतिको धन्यवादका संदेश भेजा कि उन्होंने उसे देश-का ऋण चुकानेका अवसर दिया।"

वन्दना अभीतक चुपचाप बैठी थी। सैनिककी कहानी समाप्त होने-पर उसने कहा, "सच है, न्याय केवल दंड ही नहीं देता क्षमा करना भी जानता है। न्यायका उद्देश्य अपराधीको दंड देना नहीं, उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधार करना है। लीजिये, मैं भी एक कहानी सुनाये देती हूं। यह न इंग्लैंडकी है, न अमरीकाकी। यह हमारे अपने देशकी है।

"कहते हैं महारानी लक्ष्मीबाईमें सुन्दरता, सुकुमारता, बल, साहस, उदारता आदिका अद्‌भुत सम्मिश्रण था। एक दिन उन्हें बताया गया कि झांसीका कुख्यात डाकू किसी तरह काबू नहीं आता। वह कितने ही सैनिकोंकी प्रतिष्ठा मिट्टीमें मिला चुका है। अब सैनिक उस ओर जानेका नाम भी नहीं लेना चाहते।

"लक्ष्मीबाईने बात सुन ली और चुप रहीं। अवकाश मिलते ही उन्होंने अपने साथ दो सुन्दर बालिकाओंको लिया जो उनकी बचपनकी सहेलियां भी थीं और पराक्रमोंमें साझीदार भी। तीनों घोड़ोंपर सवार होकर चलीं जंगलकी ओर। काफी दूर जानेपर उन्होंने देखा वही डाकू घोड़ा सरपट दौड़ाये चला आ रहा है। तीनों सावधान हो गयीं और छितरकर उसे रास्ता दे दिया।

"डाकूको क्या पता था कि ये घुड़सवार कौन हैं। वह आरामसे आगे बढ़ता गया। जैसे ही इनके बीचमेंसे निकल रहा था कि लक्ष्मी बाई और एक सुन्दरीने मिलकर उसे अचानक घोड़ेपरसे उठा लिया। वह इसके लिये बिल्कुल तैयार न था। हवामें अधर लटक गया।

"भारी-भरकम डाकूको उसी तरह उठाये हुए रानी अपने महलमें जा पहुंची। डाकू इनकी करनी देखकर ही समझ गया था कि ये लक्ष्मी बाईके सिवा और कोई हो ही नहीं सकतीं और इससे उसके आधे प्राण रह गये थे। उसे जैसे ही जमीनपर उतारा गया वह रानीके पैरोंपर गिर गया। उसने कहा, 'आप जो दंड देना चाहें दें। मैं जरा भी प्रतिरोध न करूंगा।'

"रानीका तेज बोल उठा," सरदार, तुम्हें शरम आनी चाहिये ऐसे काम करते हुए। तुम जानते हो झांसी विपत्तिमें फंसी हुई है। तुम वीर हो, बलवान् हो और जानपर खेलना जानते हो। ये सब गुण डाके डालने और लोगोंको डरानेके लिये दिये हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान्ने ? आओ, आजसे तुम मेरे एक सरदार बनो और हर क्षण झांसीकी रक्षाके लिये अपने प्राण न्यौछावर करनेके लिये तैयार रहना।'

"सरदारकी आंखें छलछला आयीं। वह रानीके पैरोंपर गिर गया। उसके बाद जबतक जिया रानीका अत्यंत विश्वासपात्र सेवक रहा।

"मैं इसे सबसे बड़ा न्याय कहती हूं।"

गुह्य इतिहासका एक पृष्ठ

सृष्टिके आरंभमें चार व्यक्तिगत रचनाएं या पहले व्यक्तित्व प्रकट हुए। वे थे : १) प्रकाश या चेतनाकी सत्ता, २) सत्य या सद्वस्तुकी सत्ता, ३) प्रेम या आनंदकी सत्ता, ४) जीवनकी सत्ता। और सृष्टिका पहला विधान था, निर्णयकी स्वतंत्रता। ये सत्ताएं भगवान्की स्वतंत्र गतिविधियोंकी अभिव्यक्तियां थीं। अपने व्यष्टि रूप सचेतन संकल्पके अनुसार वे स्वतंत्र रूपसे गति करती थीं। भागवत अस्तित्वकी पृष्ठभूमिपर वे उभारकी तरह उठ खड़ी हुईं। क्योंकि मूलतः, यद्यपि वे अपने-आपको एक-दूसरेसे और भगवान्से अलग मानती थीं फिर भी, वे सामंजस्यपूर्ण इकाई रचती थीं और एक ही दिव्य शरीरके अलग-अलग अंगोंकी तरह रहती और घूमती थीं। शुरूमें वे अलग डटी रहीं, लेकिन मूलतः और बाहरी तौरसे अपने स्रोत और मूलसे जुड़ी रहीं। कुछ ही समय बाद, भगवान्से लगे रहनेकी जगह वे उनसे अलग हो गयीं। उन्होंने अपने व्यष्टि रूप संकल्प और नियतिको पूरा करनेकी कोशिश की। भगवान्ने इन व्यक्तित्वोंपर अपना संकल्प नहीं थोपा, न ही उनसे वापिस आनेके लिये कहा। अगर ऐसा होता तो सृष्टिका उद्देश्य ही विफल हो जाता। यद्यपि इन स्वतंत्र सत्ताओंने उनसे ही जन्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया था, और वे उनके ही अंग थीं, फिर भी, उन्होंने उनको अपनी पूरी स्वतंत्रताका मजा लेने दिया। ये सत्ताएं साहसिक यात्रापर चल पड़ीं और हर एकने विकास और पूर्णताकी अपनी अलग रेखा बना ली। पहला फल, स्वतंत्रताकी अनिवार्य प्रतिक्रिया थी—भगवान्से अलगाव। हर एक सत्ता अपने अहंमें सीमित, अपनी शक्तिसे बंधी हुई थी। व्यष्टिवादका मतलब है सीमाबंधन। अब एक बार अलग हो जानेपर, एक बार स्रोतके साथ संपर्क टूट जानेपर, (बाहरी तौरसे, मूल सत्तामें नहीं), वे चार स्वतंत्र सत्ताएं अपने विपरीत तत्वोंमें बदल गयीं। प्रकाश अंधकारमें बदल गया, यानी, चेतना निश्चेतनामें बदल गयी, सत्य मिथ्यात्व बन गया, आनंद कष्ट और दुःखमें बदल गया और जीवन मृत्युमें। इसी तरह चार अदिव्य सिद्धांतोंने, असुरकी शक्तियोंने भौतिक सृष्टिपर राज्य करना शुरू किया।

अंधकार, मिथ्यात्व, दुःख और मृत्युके हृदयमें एक बीज बोया गया, एक कण जो भौतिक सृष्टिका सारांश और प्रतीक बनेगा और जिसके द्वारा भगवान् सभी भटके हुए तत्वोंको वापस ले लेंगे, उन अपव्ययी तत्वोंको जो भगवान्को पहचानने और पूरा करनेके लिये वापस आएंगे। वह थी पृथ्वी। और पृथ्वीने, अपनी बारीमें भागवत पूर्तिके प्रति अपने प्रयासमें, अपने हृदयसे एक ऐसी सत्ताको जन्म दिया जो पृथ्वी और भौतिक सृष्टिका प्रतीक और सारांश बनेगी। वह है मनुष्य क्योंकि मनुष्य अपने अंदर आत्माको; चैत्य पुरुषको, भागवत ज्वालाको लेकर आया है। वैश्व निश्चेतनामें चेतनाकी उस चिनगारीको, मौलिक भागवत प्रकाश, सत्य, प्रेम और जीवनके छोटे रूपको लेकर आया है। इसी बीच, क्रमविकासकी सहायता करनेके लिये, मनुष्यमें अभीप्सा करती हुई आत्माके हाथमें हाथ डालकर चलनेके लिये, पहले आसुरिक दलके कर्तव्य-त्यागके कारण एक दूसरी ज्योतिर्मय सत्ताओंकी क्रमपरम्परा बनायी गयी, वे हैं देव। (जगत्के इस आंतरिक इतिहासका कुछ आभास टाइटन्स और औलिम्पियन्सके संघर्षकी यूनानी दन्तकथामें मिलता है।) जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी हो, ये देव, चूंकि वे पिछली सृष्टि थे और शायद इसलिये भी कि वे जवान थे और उन्हें अनुभव नहीं था, अपने शक्तिशाली अंग्रेजी-का सामना नहीं कर पाये। इसलिये कई बार दन्तकथाओंमें हम देखते हैं कि देवता असुरोंसे हार जाते हैं। इन्द्र समुद्रमें जा छिपे थे, जियस कई बार संकटमें होते थे। अन्तमें परम प्रभुके हस्तक्षेप-के कारण (यूनानी उसे विधि मानते थे) उनकी रक्षा हुई और संतुलन फिरसे स्थापित किया गया।

फिर भी, असुरोंने लीलाके बारेमें पुनर्विचार किया और अपनी स्वतंत्रताका उपयोग भगवान्‌के पक्षमें, भागवत परिपूर्तिके उद्देश्यसे करनेके लिये सहमत हो गये। यानी, वे परिवर्तनके लिये राजी हो गये। इस तरह उन्होंने मनुष्यका रूप धारण किया या मनुष्योंमें उतरे ताकि चैत्य पुरुषके संपर्कमें आ सकें। चैत्य पुरुष ही इस भौतिक जगत्‌में भगवान्‌की ओर ले जानेवाला एकमात्र मार्ग है। लेकिन काम आसान नहीं था, रास्ता सीधा नहीं था। क्योंकि परिवर्तित होनेके लिये राजी होते हुए भी, मानवी चैत्यकी धूप खाते हुए भी ये असुवार्य अग्रज अपनी पुरानी आदत और अपने स्वभावको पूरी तरह न छोड़ सके। अब वे भागवत पूर्तिके लिये काम करना चाहते थे ताकि उसके द्वारा वे महान् बन सकें। वे भागवत सेवाके लिये इसलिये तैयार हुए ताकि वे भगवान्‌से अपनी सेवा करा सकें, भागवत लक्ष्यको अपने काममें ला सकें। वे नई सृष्टिको अपनी इच्छाके अनुसार देखना चाहते थे।

इसलिये पृथ्वीपर चीजें कठिन हो गयी हैं और उस अंतिम पूर्णता-में देर लगा रही हैं जो निश्चित रूपसे तब आएगी जब काल या विधिका चक्र एक बार पूरा चक्कर लगा लेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसके हाथमें ?

हमारा काफिला रेगिस्तानमेंसे गुजर रहा था। हम सब ऊंटों-पर सवार थे और हर एकके पास सफरके लिये काफी रसद थी।

न जाने कहांसे आकर एक नंगे सिर नंगे पैर दरवेश काफिलेके साथ हो लिया। वह अपने मधुर कर्कश स्वरमें गा रहा था।

"न मैं किसी ऊंटके लिये भार बना हूं और न मैं ही एक ऊंटका भार ढो रहा हूं। न मैं किसीपर हुकुम चलाता हूं और न कोई और मेरे ऊपर हुकुम चला सकता है। मैं भूत, भविष्य, वर्तमानकी चिंताओं-से मुक्त जीवनमें मुक्त श्वास लेता हुआ आगे बढ़ता चला जाता हूं।"

एक व्यापारीने उसकी इस खुराफातपर कान दिया। अपने ऊंटसे उतरकर वह उसके पास गया और बोला, "भाईसाहब, आप कौन हैं और कहांसे आ रहे हैं? यह रेगिस्तान बड़ा खतरनाक है। हमारे आपके जैसे न जाने कितनोंको लील चुका है।"

"धूप बढ़ती जा रही है। आपके पास तन ढकनेके लिये, लूसे बचनेके लिये कोई साधन नहीं है। आप क्यों यहां भुनकर मरना चाहते हैं? चलिये आपको वापिस पहुंचा दूं। ठीक और पूरी-पूरी व्यवस्था करके फिर कभी आईयेगा।"

मस्त-मौलाने उसकी एक न सुनी। उसकी बातका जवाबतक न दिया और आगे बढ़ता गया।

हमारा करवां अगले पड़ावपर पहुंचा ही था कि व्यापारीकी तबीयत बिगड़ने लगी और हमारे देखते-देखते पंछी उड़ गया और रह गया सिर्फ पिंजरा, पिंजरके साज-सामान। हम सब उसे घेरे खड़े थे। अचानक दरवेशके मुंहसे शेर फूटे : "मेरे पास जूते न थे, ऊंट न था, लूसे बचनेके लिये कोई साधन न था। अगर था तो परवर्दिगारपर भरोसा। लेकिन तुम मेरे दोस्त, मुझे उपदेश देने आये, मुझे बचानेकी फिक्र की, और नतीजा क्या हुआ?"

तुम्हारे पास सब साज-सामान था। न था तो बस एक पर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्दिगार पर भरोसा। मेरा जीना-मरना उसके हाथमें है और तुम्हारा सब कुछ अपने हाथोंमें था। अच्छा खुदा हाफिज।

(एक सूफी आख्यान)

सोसायटी समाचार

अगस्तका महीना सोसायटीके सदस्यके लिए महत्वपूर्ण होता है। हम अपने वार्षिक अधिवेशनके अवसरपर मिलते हैं और एक दूसरेके कामके अनुभव और आनंदसे लाभ उठाते हैं। इस कामको माताजी और श्रीअरविंदकी शिक्षाके अनुसार, अहंकारको एक तरफ रखकर करनेकी कोशिश की जाती है। हम अपने भावी कार्यक्रमके बारेमें भी सोच विचार करते हैं। हमें आश्रमके पुराने लोगोंसे माताजी और श्रीअरविंदके बारेमें कुछ सुननेको मिलता है। उसके बाद आता है १५ अगस्त श्रीअरविंदका जन्मदिवस। यहां हमें सावित्रीकी उन पंक्तियोंकी याद आती है जिसमें कहा गया है "काल तेरे चरणोंमें पड़ा है और समस्त संसार तेरा एक अंश मालूम होता है।" इस दिन श्रीअरविंदके कमरेके दर्शन, ध्यान और शामको मार्चपास्टका कार्यक्रम होता है। आश्रमके अनेक विभागोंकी प्रदर्शनियां होती हैं।

हमें लगता है कि जिन लोगोंने सोसायटीके इस अगस्तके कार्यक्रममें भाग लिया वे यहांसे कुछ भागवत प्रेम, कुछ हृदयकी जाग्रति लेकर गये होंगे।

इस वर्ष ११, १२ अगस्तको 'केंद्रोंमें कार्य' पर उपयोगी बातचीत हुई। डा. माहेश्वरीने कार्यक्रमका संचालन किया और श्री विजयने १९८५के समारोहके बारेमें बतलाया। व्यक्तिगत स्तरपर और केंद्रों तथा शाखाओंके स्तरपर जो काम हो सकते हैं उनका कुछ परिचय साइक्लोस्टाइल करके बांटा गया। दोपहरको योग और जीवनपर सर्व श्री जुगलकिशोर मुखर्जी, शिवा भाई अमीन और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशोरी लालके भाषाण हुए। शामको भजनोंका कार्यक्रम रहा।

अगस्त १३, १४को माताजीकी ध्वन्यांकित आवाजमें श्रीअरविंदकी पुस्तक 'द मदर'का कुछ भाग सुनाया गया। उसके बाद सदस्योंके नाम नवजातजीका एक ध्वन्यांक्ति संदेश सुनाया गया। हमारे प्रधान सचिव श्री गुरु प्रसादने उपस्थित लोगोंका स्वागत किया और किशोरी लालजीने श्री नलिनीकांत गुप्तको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके बाद कार्य-सत्र शुरू हुआ जिसका संचालन किशोरी लालजीने किया। डा. माहेश्वरीने बतलाया कि हमारा कार्य भविष्य गढ़नेके लिए है, विजयने रजत जयन्ती वर्षके कार्यक्रम और कार्यके बारेमें हमारी मनोवृत्ति पर प्रकाश डाला, गोपाल भट्टाचार्यने अपने विदेशोंके अनुभव सुनाये, सिंगापुर केंद्रकी श्रीमती आदेन बुश और मौंट्रियलके लुई लप्वे आदिके भी भाषण हुए। सभापति महोदयने कई व्यावहारिक सुझाव दिये। श्री मनोज दासके भाषणका विषय था 'क्या हम श्रीअरविंदके बारेमें बोल सकते हैं', नीरदवरणने 'सावित्री के लिपिकारके अनुभव', मोना सरकारने 'माताजीके साथ' और श्रीनिवास अयंगारने माताजीके कार्यके बारेमें भाषण दिये। इन भाषणोंका सार देना संभव नहीं है। अंतमें मोहन भाईके साथ सम्मिलित मंत्र पाठ हुआ। अधिवेशनके स्मारक रूप एक फोल्डर दिया गया जिसपर माताजीके चित्रके साथ यह संदेश छपा था "मैं जितना आगे बढ़ती हूं उतना ही यह जानती जाती हूं कि श्रीअरविंदका पूर्णयोग कामके द्वारा ही हो सकता है।"

सोसायटीके सभापति श्री. पी. पी. नारायणनने आकाशवाणीपर 'मानवजातिके प्रकाश स्तम्भ श्रीअरविंद' पर भाषण दिया।

सोसायटीके संयुक्त-सचिव श्री गोपाल भट्टाचार्य जो सोसायटीके अंतर्राष्ट्रीय विभागकी देखभाल करते हैं, पैरिसकी एक गैर सरकारी सभामें भाग लेकर यरुशलम, तेलआवीव, एथेन्स, रोम, मैड्रिड, लन्दन, न्यूयार्क, शिकागो, सानफ्रांसिस्को, लास एंजेलेस, होनोलूलू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टोकियो, सियोल, हांगकांग, कोलालम्पुर और सिंगापुर आदिका चक्कर लगाने गये थे। उन्होंने वहां सार्वजनिक सभाओं, रेडियो, दूरदर्शन आदि पर भाषण दिये और सोसायटीके सौसे ऊपर सदस्य बनाये।

घोषणा—

उत्तर प्रदेशकी प्रादेशिक सोसायटीका वार्षिक अधिवेशन २, ३, ४ नवंबरको ललितपुरमें होगा। उत्तर प्रदेश और आसपासके स्थानोंसे जो लोग इसमें 'स्वाध्याय, साधना समागम'के भावसे भाग लेना चाहें उनका स्वागत है। अधिक जानकारीके लिए श्री अशोक कुमार जैन, श्रीअरविंद सोसायटी केंद्र, सरस्वती मंदिर, तालाबपुरा, ललितपुर—२८४४०३को पत्र लिखें।

पांडिचेरीमें सोसायटीका मुख्यालय परिसर — आजकल जहां मुख्यालय है उसी स्थानपर एक नया कार्यालय बन रहा है। श्री पी.पी. नारायणनने अधिवेशनके सामने उसका नमूना दिखलाया। उसमें सोसायटीके विभिन्न विभागों और कार्योंके लिए जगह होगी। सभापतिने लोगोंसे अपील की कि वे अपनी सामर्थ्यके अनुसार अधिक-से-अधिक आर्थिक सहायता करें ताकि काम रजत जयन्ती वर्षमें ही शुरू हो जाये। धन पेयी चेक या ड्राफ्ट द्वारा श्रीअरविंद सोसायटी-को भेजा जा सकता है।

शांति और सामंजस्यके लिए बच्चोंकी मोमबत्तियां

१९८४के नववर्ष दिवसपर लन्दनके श्रीअरविंद केंद्रने बच्चोंके एक सुन्दर कार्यक्रमका आयोजन किया। भारत, इटली स्विटजरलेंड फ्रांस इत्यादि दस विभिन्न देशोंके बच्चोंने सुबह मोमबत्तियां जलायीं साथमें विश्वमें शांति और प्रकाशके उतरनेकी प्रार्थना की। इस तरहके कार्यक्रम करनेके लिए अगर दूसरे केंत्र सहायता चाहें तो वे मिसेज स्मिथह्वाइट, श्रीअरविंद सेंटर, ८२ वेल स्ट्रीट लन्दन या श्री विजय, श्रीअरविंद सोसायटी पांडिचेरी, ६०५००२से पत्र व्यव-हार कर सकते हैं।

(शेष आवरण ४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Love in her was wider than the universe,
The whole world could take refuge in her single heart.

Sri Aurobindo

Arvind Exports (P) Ltd.

Exporters of Engg. Goods, Pesticides, Chemicals, Ceramics, Readymade Garments & Handicrafts etc.

Calcutta Head Office :
75c, Park Street,
Calcutta - 700 016
INDIA

Bombay Office :
76, 77 Atlanta, Nariman Point
Bombay - 400 021
INDIA

Phones:

Offi: 240277 ● 240367
Resi: 814512
Telex: 011-4104
Gram: "ARVIEXPO"

Offi: 249065 ● 248642
Resi: 478368
Telex: 021-7984
Gram: "AUROEXPORT"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसे भगवान्के साथ ऐक्य प्राप्त है उसके लिये हर जगह भगवान्का पूर्ण सुख और आनंद है। वह हर जगह और हर परिस्थितिमें हमारे साथ रहता है।

—श्रीमां

चादर, शाल, दोशाले थोक खरीदनेके लिये पत्रव्यवहार करें:

यूनिक स्टोर्स

घास मंडी; लुधियाना

दूरभाष : २५४४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेजीसे पग आगे बढ़ा, क्योंकि लक्ष्य बहुत दूर है; असमय विश्राम न कर, क्योंकि तेरा मालिक तेरी यात्राके अंतिम छोरपर तेरी प्रतीक्षा कर रहा है।

— श्रीअरविंद

Space donated by

Kooverji Devshi & Co., Pvt. Ltd.

FIREX LEADS TO SAFETY

SAFETY LEADS TO PROSPERITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

१. बच्चों
२. हमारी
३. राजकु
४. शिक्षा
५. शिक्षा
६. मंत्र
७. युवकों
८. नर-ना
९. समयक
१०. योगके
११. श्रीअर
१२. माताजी
१३. श्रीअर
१४. श्वेत
१५. लाल
१६. माताजी
१७. जगन्मा
१८. माताजी
१९. माताजी
२०. मृत्यु
२१. गीताकी
२२. प्रकृति
२३. माताजी
२४. भारत
२५. धन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे प्रकाशन

१. बच्चोंके श्रीअरविंद	...	रु.	१.००
२. हमारी मां	...	रु.	२.००
३. राजकुमार—एक प्रतीकात्मक नाटक	...	रु.	२.००
४. शिक्षाके आयाम	...	रु.	२.००
५. शिक्षाके आधार	...	रु.	२.००
६. मंत्र वचन	...	रु.	२.००
७. युवकोंसे	...	रु.	२.००
८. नर-नारी	...	रु.	५.००
९. समयकी आवश्यकता	...	रु.	२.००
१०. योगके तत्त्व	...	रु.	५.००
११. श्रीअरविंद और उनका आश्रम	...	रु.	२.००
१२. माताजी : एक झलक	...	रु.	५.००
१३. श्रीअरविंद : जीवन और दर्शन	...	रु.	६.००
१४. श्वेत कमल	प्लास्टिक आवरणके साथ	रु.	२२.००
	अजिल्द	रु.	२०.००
१५. लाल कमल	सजिल्द	रु.	३५.००
	अजिल्द	रु.	३०.००
१६. माताजी और श्रीअरविंद	...	रु.	२५.००
१७. जगन्माता	...	रु.	४.००
१८. माताजी और भारत	...	रु.	२.००
१९. माताजीकी चित्रावली	...	रु.	४.००
२०. मृत्यु	...	रु.	३.००
२१. गीताकी भूमिका	...	रु.	४.००
२२. प्रकृतिकी कानाफूसी	...	रु.	३.००
२३. माताजी और श्रीअरविंद अपने बारेमें	...	रु.	३.००
२४. भारत	...	रु.	२.००
२५. धन	...	रु.	२.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

केंद्रोंके समाचार

पुरुलिआ (प. बं.)में केंद्रकी तरफसे चल रहे 'हेल्थ सेंटर'में दो नये डाक्टर आये। यह शाखा प्राथमिक स्कूल, सिलाईकी कक्षाएं भी चला रही है, इसके साथ महीनेमें एक दिन ये मिलकर शहरकी सफाईका काम भी करते हैं।

कलकत्तेकी पूर्वी क्षेत्रीय समितिने सी. आई. ढी. रोडपर एक शिक्षाचक्र खोला है जिसमें महीनेके हर तीसरे शनिवारकी बैठकमें श्रीअरविंदकी "एसेज ऑन द गीता"का पठन-पाठन होगा।

मद्रास शाखाने हमें १९८३-८४के क्रिया-कलापोंका ब्यौरा भेजा है। पठन-पाठनकी बैठकोंके अतिरिक्त इस शाखाने शैक्षिक कार्यक्रमोंका आयोजन किया। यह शाखा तमिलमें श्रीअरविंदके साहित्यको प्रकाशित करनेकी दिशामें भी काम कर रही है।

बड़ौदा (गुजरात)में मीराम्बा ट्रस्टने एक विद्यालयका आरंभ किया। २३ जूनको कवि सुन्दरम्‌ने इसका उद्घाटन किया। उसी दिन श्री चम्पकलालने स्कूलकी नयी इमारतकी नींव रखी।

रतलाम (म. प्र.) शाखाने १२ जूनको एक नर्सरी स्कूल खोला। इसमें श्रीअरविंद तथा माताजीके शिक्षा सिद्धोंतोंको ध्यानमें रखा जायेगा। डा. वासुदेव शर्माने इसका उद्घाटन किया। श्री एस. पी. उपाध्यायने इसके लक्ष्य तथा उद्देश्यकी चर्चा की।

अमरावती (महाराष्ट्र) शाखाने १५ अगस्त '८४को "श्रीअरविंद विद्या भवन" स्कूलका उद्घाटन किया।

गुजरातमें सोसायटीके दो नये केंद्र खुले—

१) द्वारा श्री हरगोविन्द वेवाड़ा, पो. आ. मदनगढ़, जिला बनासकांठा ३८५५१९ २)द्वारा श्री रजनीकांत चौकसी, हंसा स्कूल आफ फोटोग्राफी, १२-३-११७, रानी तालाब, मेन रोड, सूरत ३९५००३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पन्दे से प्राप्त संख्या 114
प्राप्ति दिनांक 5-1-85

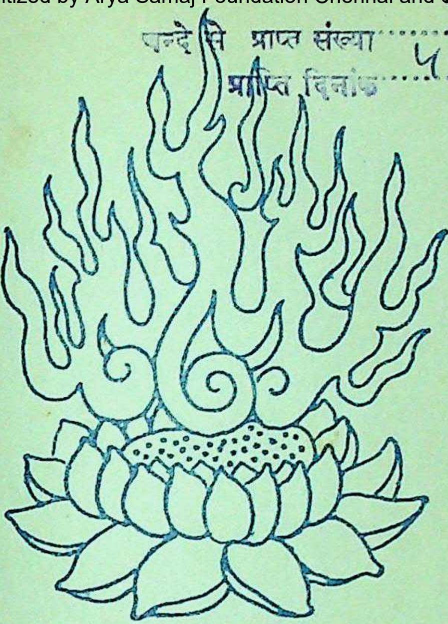

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

जनवरी १९८५

वर्ष १५, अंक ६, पूर्णांक १७४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

संदेश ... १
संपादकीय : जपमाला — अनुबेन ... २
दैनन्दिनी ... ३
श्रीअरविंद-वाणी : 'पराक्रमकी मां'की आवाज ... ७
  भागवत मुहूर्त ... ८
  संदेशवाहक ... १०
  श्रीअरविंदकी शिक्षा और साधना पद्धति ... ११
  विचारमाला और सूत्रावली ... १४
गीर्वाण-वाणी ... १६
तरुण साधकका श्रीअरविंद और माताजीके साथ पत्र-व्यवहार ... १७
समाधि वृक्ष — सुरेशचन्द्र त्यागी ... २०
आस्तिक और नास्तिक ... २१
ऋषिवर बोले : एक अजूबा मैंने देखा ... २२
पुरुष और प्रकृति ... २६
आगे बढ़ो ... २८
कुछ देवी देवता ... ३०
दिलासा — अनुबेन ... ३२
श्रीमातृवाणी : धम्मपदसे ... ३५
हुदहुद और कौआ ... ३६
सोसायटी समाचार ... आ० ३

वार्षिक अग्निशिखा १०.००; पुरोधा १४.००; दोनों २२.००
आजीवन अग्निशिखा १७५.००; पुरोधा २२५.०० दोनों ४००.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :
संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र, अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदेश

Let the Dawn of the New Year be for us also the Dawn of a new and better life.

वर दे, नव वर्षकी उषा हमारे लिये भी एक नये और अधिक अच्छे जीवनकी उषा हो।

—श्रीमां

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय :

जपमाला

प्रत्येक वर्ष महा-कालको चढ़ाया हुआ वह पुष्प होता है जिसके द्वारा मानव-जाति अपनी अभीप्सा, कामना और उपलब्धि उन्हें अर्पित करती है। और युग वह जप-माला है, जिसमें वर्ष गुरियोंके स्थानपर हैं जिनके द्वारा मानव-समाज काल पुरुषकी आराधना करता रहता है।

शुभ और अशुभ मानव मनकी संकरी गलीके दो छोर हैं जिनका विराट्की विश्वव्यापी व्यवस्थामें कोई महत्व नहीं रहता। भला-बुरा, सब कुछ उनके कार्यमें सहायक होता आया है और तबतक होता रहेगा जबतक मनुष्य उनसे ऊपर उठकर उस धाराका परि-त्याग नहीं करता।

मानवको भगवान्ने वह गौरव प्रदान किया है जो अन्य किसी प्राणीको प्राप्त नहीं। वह चाहे तो उनका सहायक हो सकता है एक सचेतन सहायक जो उनकी योजनाको तीव्र गति दे सकता है। किंतु भगवान्ने मानवको पूरी स्वाधीनता दी है कि चाहे तो सहकार दे और चाहे तो प्रकृतिसे चालित अंधकारमें टटोलता हुआ यंत्र बना रहे। जबतक प्रकृतिके बंधनसे मुक्त न हो जाय तबतक उसकी नियति ठोकरें खाती, लड़खड़ाती, गिरती पड़ती आगे बढ़ती रहेगी।

चुनाव हमारे अपने हाथोंमें है। नव वर्षके आरंभमें ही हम सचेतन सहायक बननेका निश्चय करें तो वर्षके अन्ततक हम पायेंगे कि हमने बहुत बड़ी दूरी तय कर ली है। भगवान्की सहायतासे हमारा पथ कुछ अधिक सुगम, सरल और आह्लादक बन चुका है।

—अनुवे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

जनवरी

१. हे मां भगवती ! वर दे कि आजका दिन हमारे अंदर तेरे संकल्पके प्रति और भी पूर्ण आत्मनिवेदन, तेरे कर्ममें और भी सर्वांगीण आत्मदान, और भी ऐकांतिक आत्म-विस्मृति, एक महत्तर ज्योति, एक शुद्धत्तर प्रेम ले आये। (श्रीअरविंद)

२. हमारे समस्त अहंकारको दूर कर, समस्त तुच्छ मिथ्याभिमान, लोभ, लालसा और अहंकारको निर्मूल कर। हम सब तेरे दिव्य प्रेमसे प्रज्वलित हो उठें; जगत्में तेरी ज्योतिशिखाएं बन जायें। (श्रीअरविंद)

३. दिव्य ज्योति निरंतर बढ़ती ही जा रही है।
और छाया ? वह तो बस छाया है,
ज्योतिके बढ़नेसे विलीन हो जायगी। (श्रीअरविंद)

४. आंतरिक संबंधका अर्थ यह है कि साधक मांकी उपस्थितिको अनुभव करे, सदा-सर्वदा उनकी ओर मुड़ा रहे, उसे यह बोध बना रहे कि उनकी शक्ति ही उसे चलाती, पथ दिखाती और उसकी सहायता करती है।

५. निरंतर आंतरिक विकास होते रहनेपर ही मनुष्य जीवनमें सतत नवीनता और अक्षय रस पा सकता है, और कोई संतोषजनक उपाय नहीं है। (श्रीअरविंद)

६. सर्वांगपूर्ण आत्मसमर्पण, भागवत प्रभावके प्रति ऐकांतिक आत्मोद्घाटन, सतत और संपूर्ण रूपसे दिव्य सत्यका वरण तथा मिथ्यात्वका परित्याग—बस, ये ही शर्तें रखी गयी हैं। (श्रीअरविंद)

७. अपने धार्मिक चिंतन और अनुभवमेंसे निकाल फेंको समस्त नीचता, संकीर्णता और स्थूलदर्शिता। विशालतम क्षितिजोंसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी अधिक विशाल बनो, उच्चतम कांचनजंगासे भी अधिक उच्च, गभीरतम समुद्रसे भी अधिक गभीर बनो। (श्रीअरविंद)

८. जब अंधकार धरतीके वक्षको दबोचता हुआ घना होता जाता है और मनुष्यका पार्थिव मन ही एकमात्र दीपक होता है तब अपने घरमें लुक-छिपकर घुस आनेवालेके दबे कदम चोरकी तरह प्रवेश करते हैं। तब एक अनसुनी-सी वाणी बोलेगी और अंतरात्मा उसका हुकुम मानेगी।

९. सत्यको जीतना बड़ा कठिन और दुःसाध्य है। इस जीतके लिए मनुष्यको सच्चा योद्धा होना होगा—ऐसा योद्धा जो किसी चीजसे भय नहीं करता, न तो शत्रुओंसे न मृत्यु ही से।

१०. हम मार्गपर जितना आगे बढ़ें, भागवत उपस्थितिकी आवश्यकता उतनी ही अधिक अनिवार्य और अपरिहार्य बन जाती है।

११. मेरी प्रार्थना है कि मेरे अंदरसे हठधर्मिता और स्वाग्रहको धो दिया जाय और मैं मांके प्रति विनीत और आज्ञापरायण बन जाऊं।

१२. मैं मांको कामके लिए समर्पित उपयुक्त यंत्र बन जाऊं। मैं जो कुछ भी करूं उसमें उनकी कृपा ही मुझे राह दिखाये।

१३. अगर मेरे अंदर पूरी सचाई है तो यह जरूरी नहीं है कि मैं अच्छा दिखायी दूं। दिखायी देनेसे होना अधिक अच्छा है।

१४ अपनी प्राण-सत्ताके दरवाजेपर अब यह नोटिस लगा दो "कोई मिथ्यात्व यहां कभी प्रवेश न करे।" और वहां एक संतरी तैनात कर दो जो यह निगरानी रखे कि उसका पालन किया जा रहा है। (श्रीअरविंद)

१५. माताजीकी ओर अपनेको खोले रखो और उनके साथ पूर्ण एकत्व बनाये रखो। उनके स्पर्शके प्रति अपनेको संपूर्ण रूपमें नमनशील बनाओ ताकि वे तुम्हें शीघ्रतासे बढ़ती हुई परिपूर्णताकी ओर ले जायें। (श्रीअरविंद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६. कविगण मृत्यु और वाहरी कष्टोंका वर्णन बहुत बढ़ा-चढ़ा कर करते हैं; पर सच कहा जाय तो एकमात्र दुःखांत नाटक है अंतरात्माकी असफलता और एकमात्र महाकाव्य है मनुष्यका अपने देवत्वकी ओर विजयपूर्ण आरोहण। (श्रीअरविंद)

१७. हमें चाहे जो रूप-रंग अपनाना पड़े, हमारे भीषण दुःख-दर्द, और वर्तमान भाग्य चाहे कैसे भी हों, जब हमें बहाव और उलीचनके सिवा कुछ न दिखलायी देता हो तब भी एक महान् पथ-प्रदर्शक हमें पार लगाता है।

१८. प्रसन्नता अंतरात्माकी संतुष्टिके कारण आती है, प्राण या शरीरकी संतुष्टिके कारण नहीं। प्राण कभी संतुष्ट नहीं होता; शरीर भी जो कुछ आसानीसे या सदा मिलता है उससे आकर्षित होना एकदम बन्द कर देता है। एकमात्र चैत्य पुरुष ही सच्ची प्रसन्नता और आनंद लाता है। (श्रीअरविंद)

१९. भारतको अपने लक्ष्यकी ऊंचाईतक उठकर जगत्के आगे सत्यकी घोषणा करनी चाहिए।

२०. तुम जो कुछ हो और तुम्हारे पास जो कुछ है, सब दे दो, तुमसे इससे ज्यादाकी मांग बिल्कुल नहीं की जाती, लेकिन इससे कम की भी नहीं।

२१. वर दे कि नयी ज्योति धरतीपर फैल जाय और मानव जीवनकी परिस्थितियोंको बदल दे।

२२. अपने हृदयसे अहंकी छाप मिटा दो और उसका स्थान माताजी-के लिए प्रेमको लेने दो। व्यक्तिगत विचारों और निर्णयोंके प्रति होनेवाले समस्त आग्रहको अपने मनसे निकाल फेंको, तभी मांको समझने योग्य ज्ञान तुम्हें प्राप्त होगा।

२३. जो शाश्वत कालसे अखिल जगत्की सृष्टि करनेवाली तथा परमात्माकी सर्वशक्तिमत्तासे सुसज्जित चैतन्यमयी शक्ति एवं विश्वमयी महादेवी हैं, उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं है। (श्रीअरविंद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४. वीरमार्गप्रदर्शिनी आओ! अब तुम्हारा विसर्जन न करेंगे। हमारा सारा जीवन अविच्छिन्न दुर्गापूजा हो, हमारा कार्य अविरत पवित्र, प्रेममय, शक्तिमय मातृसेवाव्रत हो, यही प्रार्थना हैं, हे मातः भारतवर्षमें प्रकट होओ, प्रकाशमान होओ। (श्रीअरविंद)

२५. तुम्हें अपने अंदर उस शांतिको बढ़ाना चाहिए जो विजयकी निश्चितिसे पैदा होती है। (श्रीअरविंद)

२६. भारत स्वाधीन और अखंड होगा। मां अपने बच्चोंको अपने चारों ओर इकट्ठा करके उन्हें एक महान् और संगठित जातिके जीवनमें एक राष्ट्रीय शक्तिके रूपमें गढ़ देंगी। (श्री-अरविंद)

२७. पार्थिव जीवन एक महान् देवका स्वनिर्वाचित निवास-स्थल हैं और उन देवताका शाश्वत संकल्प यह है कि पार्थिव जीवन एक अंध कारागार बने रहनेके बदले उनके परम मनोहर प्रासाद तथा उच्च स्वर्गस्पर्शी मंदिरमें परिवर्तित हो जाय। (श्रीअरविंद)

२८. हे प्रभो, हे शाश्वत सत्य! वर दे कि हम केवल तेरी आज्ञाका पालन करें और सत्यके अनुसार ही जियें।

२९. अगर तुम धरतीपर शांति चाहते हो तो पहले अपने हृदयमें शांति स्थापित करो।

३०. अगर तुम संसारमें ऐक्य चाहते हो तो पहले अपनी सत्ताके विभिन्न भागोंको एक करो।

३१. यह वर्ष प्रगति और रूपांतरका वर्ष हो—भागवत सिद्धिकी ओर ले जानेवाला एक और कदम हो।

(श्रीमातृवाणी खंड १५से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पराक्रमकी मां' की आवाज

मुझे भगवान्ने अपना महान् कार्य सौंपा है। मैं कोई परवाह किये बिना उसकी इच्छा पूरी करती हूं जिसने मुझे भेजा है। मुझे संकटों या पार्थिव परिणामोंकी परवाह नहीं। मैं पाप-पुण्यका तर्क नहीं करती, बस वही कार्य किये जाती हूं जो उसने मेरे हृदयमें बसा दिया है। मैं दैवकी क्रोध-कुटिल त्यौरीसे भयभीत नहीं होती और न ही नरकके रक्त आक्रमणोंसे हिचकिचाती हूं। मैं देवोंके विरोधको कुचल देती हूं और करोड़ों पैशाचिक बाधाओंको रौंद डालती हूं। मैं मनुष्यको भगवान्के पथकी ओर ले जाती हूं और लाल भेड़िये तथा सर्पसे उसकी रक्षा करती हूं। मैं उसके मर्त्य हाथमें अपनी दैवी तलवार थमा देती हूं और उसे देवोंका कवच पहनाती हूं।

मैं मानव मनके घमंडको चूर-चूर कर देती हूं और विचारको दिव्य सत्यके विस्तारकी ओर ले जाती हूं। मैं मनुष्यके संकीर्ण किंतु सफल जीवनको फाड़कर उसकी दुःखभरी आंखोंको सूर्यकी ओर निहारनेके लिए बाधित करती हूं ताकि वह धरतीकी ओरसे मर-कर अपनी अंतरात्मामें जी सके।

मैं लक्ष्य जानती हूं, मुझे गुप्त मार्गका पता है। मैंने अदृश्य लोकोंके मानचित्रका अध्ययन किया है। मैं ही युद्धका शीर्ष और यात्राका तारा हूं लेकिन यह विशाल आग्रही जगत् मेरे शब्दका प्रतिरोध करता है और मनुष्यके हृदयमें स्थित अशुभ और कुटिलता उसकी तर्क-बुद्धिसे अधिक शक्तिशाली और रसातलसे अधिक गहरी है और विरोधी शक्तियोंकी सांघातिकता धूर्तताके साथ नियतिकी घड़ीको पीछे कर देती है और वह शाश्वत इच्छासे भी अधिक बल-वान् प्रतीत होती है।

वैश्व अशुभकी जड़ें खोदना बड़ा कठिन है, वैश्व दुःखका उपचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असंभव-सा है। मैं कुछको रास्ता दिखाती हूं जो मेरे पाससे होकर ज्योतिकी ओर चले जाते हैं। कुछको मैं बचा लेती हूं लेकिन अधिकतर अरक्षित ही पीछे जा गिरते हैं। कुछकी मैं सहायता करती हूं लेकिन बहुत-से प्रयास करके असफल रहते हैं। लेकिन मैंने अपना जी कड़ा कर लिया है और मैं अपना काम किये जाती हूं। धीरे-धीरे पूर्वमें प्रकाश बढ़ता जाता है, धीरे-धीरे संसार भगवान्के मार्गपर अग्रसर होता है। मेरे कार्यपर उनकी मुहर लगी है। वह असफल नहीं हो सकता। जब भगवान् जगत्की आत्मासे मिलनेके लिए बाहर आयेंगे, मैं स्वर्गके द्वारोंकी रजत-लय सुनूंगी।
(सावित्री) —श्रीअरविंद

भागवत मुहूर्त

ऐसी घड़ियां आती हैं जब देव मनुष्योंके बीच विचरण करते हैं और हमारे जीवन-सलिलपर भगवान्का श्वास फैल जाता है। और फिर ऐसा भी समय आता है जब वे पीछे हट जाते हैं और मनुष्य अपने अहंकारकी ही सामर्थ्य या निर्बलतासे काम करनेके लिए छोड़ दिया जाता है। प्रथम कालमें थोड़ा-सा भी प्रयत्न करनेपर बड़े परिणाम पैदा होते हैं और भाग्य बदल जाता है और दूसरे कालमें जरा-से परिणामके लिए बहुत प्रयत्न करना पड़ता है। यह सत्य है कि दूसरा पहलेके लिए तैयारी कर सकता है और यज्ञका थोड़ा-सा धुंआ बनकर स्वर्गमें जा सकता और वहांसे भगवान्की देनका आवाहन कर सकता है।

अभागा है वह मनुष्य या राष्ट्र जो भागवत मुहूर्तके आनेपर सोया रहे या उसके उपयोगके लिए तैयार न हो, जो उसके स्वागतके लिए दीया संजोकर न रखे और उसकी पुकारकी ओरसे कान बन्द कर ले। पर कहीं अधिक अभागे हैं वे जो सशक्त और तैयार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हुए भी उस शक्तिका अपव्यय करते हैं और उस मुहूर्तका दुरुपयोग करते हैं। उनके भाग्यमें होती है पूरी न हो सकनेवाली क्षति या महान् विनाश।

भागवत मुहूर्तमें धो डालो अपनी अंतरात्मासे अपने-आपको धोखा देनेकी वृत्ति, ढोंगबाजी और झूठी आत्मप्रशंसा ताकि तुम सीधे अन्तः-पुरुषको देख सको और उसकी पुकारको सुन सको। तुम्हारी प्रकृतिका कपट, जो पहले तुम्हें प्रभुकी दृष्टिसे तथा आदर्शकी ज्योति-से बचाए हुए था, तुम्हारे कवचमें एक छेद बन जायगा और ऊपरसे प्रहारोंको निमंत्रण देगा और यदि क्षण-भरके लिए तुम जीत भी गये तो तुम्हारे लिए और भी बुरा है क्योंकि प्रहार तो बादमें आयेगा ही और तुम्हारी विजयके समय भी तुम्हें पटक देगा। शुद्ध होकर झाड़ फेंको समस्त भयको। यह घड़ी प्राय भयंकर होती है, यह आग, बवण्डर और तूफानकी न्याई है और है रुद्रका ताण्डव नृत्य। परंतु जो इसमें अपने उद्देश्यकी सच्चाईके बलपर खड़ा रह सकता है वही खड़ा रहेगा, चाहे वह गिर भी क्यों न जाय, फिर भी वह उठ खड़ा होगा और चाहे वह वायुके पंखोंपर उड़ भी क्यों न जाय फिर भी वह जरूर वापिस आ जायगा। सांसारिक बुद्धिमत्ता तुमसे अधिक कानाफूसी न कर पाये। क्योंकि यह अप्रत्याशितकी, गणनातीतकी, अपरि-मेयकी घड़ी है। भागवत श्वासकी शक्तिको अपने क्षुद्र यंत्रोंसे न नापो लेकिन विश्वास रखो और आगे बढ़ते चलो।

लेकिन सबसे बढ़कर चाहे क्षण-भरके लिए ही क्यों न हो, अपनी अंतरात्माको अहंके कोलाहलसे मुक्त रखो। तब रात्रिमें तुम्हारे सम्मुख एक अग्नि जलेगी और तूफान तुम्हारा सहायक होगा और तुम्हारी पताका, जिस महानताको तुम्हें जीतना है, उसके सबसे ऊंचे शिखर-पर फहरायेगी।

(इसे जितनी बार पढ़ा जाय कम है। —सं०)

(श्रीमातृवाणी खंड १५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्देशवाहक

अग्निराज—सात आकाशोंकी नीरवतामें धरतीसे आनेवाले अग्नि-वेष्टित आत्मा, क्या तू आध्यात्मिक जन्मका अधिकारी है? क्योंकि तू स्वर्गका पुराना अतिथि है?

संदेशवाहक — मैं मानवजातिका संदेशवाहक हूं। मैं मृत्यु और रात्रिसे आनेवाला हरावल हूं। मैं सौंदर्यके चेहरेका मतवाला और शाश्वत ज्योतिका आखेटक हूं।

अग्निराज — यह कौन-सी आग है जो तुझे अपनी शक्तिमें लपेटे है, जो मार्गके संरक्षकोंके भालोंको मोड़ देती है? शाश्वत घड़ीसे उत्पन्न यह कौन घुमक्कड़ है? कल्पनातीत किरणका कौन-सा अंश है?

संदेशवाहक — यह जाग्रत आत्माकी अग्नि है जो मृत्युसे शाश्वत-तक पहुंचनेकी अभीप्सा कर रही है। यह यज्ञके पंखोंपर अपने लक्ष्यकी ओर बढ़ रही है। यह मानवताका प्रज्वलित देवत्व है।

अग्निराज — अनित्य, नश्वर मार्गोंके बालक, तू यहां क्या चाहता है? क्या तू अमर शांतिमें भी स्वाधीन रहना चाहता है? या अनिर्वचनीय मोक्षकी नीरवतामें चिरकालतक शाश्वतके मुखकी ओर ताकता रहना चाहता है?

संदेशवाहक — मैं मनुष्योंके लिये ऐसी शांतिकी मांग करता हूं जो कभी भंग नहीं हो सकती, मैं धरतीके लिये दुखविहीन शाश्वत आनंदकी मांग करता हूं, मैं नरकमें यातनाएं भोगनेवाली आत्माओंके लिये भागवत शक्तिकी खोजमें हूं और अज्ञानके रसातलके लिये भागवत ज्योतिकी खोज कर रहा हूं।

— श्रीअरविन्द

(श्रीमातृवाणी खंड १५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद्की शिक्षा और साधना पद्धति

आध्यात्मिक नियति हमेशा अटल रहती है,—उसमें देर लग सकती है, कुछ समयके लिये खो-सी जाती है, लेकिन वह कभी समाप्त नहीं होती।

पूर्णयोग कोई निश्चित पद्धति नहीं है

योगकी, या यूं कहें जगत्को बदलनेवाले, प्रकृतिको बदलनेवाले योगकी पूर्ण प्रक्रिया क्या है? वह नहीं जो मनुष्यको कहींसे पकड़ लेती है। उसमें कांटा लगाकर गिर्रीसे निर्वाण या स्वर्गमें खींच लेती है। संसारको बदलनेवाले योगकी पद्धति बहुविध, चक्करदार, धैर्यपूर्ण और स्वयं जगत्की तरह अपने अंदर सभीको समानेवाली होनी चाहिये। अगर वह सभी कठिनाइयों या संभावनाओंके साथ न निबटे और हर आवश्यक तत्त्वके साथ सावधानीसे व्यवहार न करे तो क्या उसकी सफलताकी कोई संभावना होगी? और क्या कोई पूर्ण पद्धति जिसे हर एक समझ सके, यह कर सकती है? यह सीमित आरोह-अवरोहके साथ निश्चित छन्दमें एक छोटी-सी कविता लिखनेकी तरह नहीं है। अगर तुम कविताकी उपमाको आगे बढ़ाओ तो यह महाभारत लिखना होगा और यूनानी सीमित पूर्णताकी तुलनामें महाभारतका शिल्प क्या है?

*

योग मार्गको जीवित वस्तु होना चाहिये, न कि मानसिक नियम या एक ऐसी निश्चित पद्धति जो सभी आवश्यक विभिन्नताओंके विरुद्ध हो।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस योगमें आत्मसमर्पण और आत्मदानका सामान्य सिद्धांत सबके लिये एक है लेकिन हर एकका समर्पण और आत्मदानका अपना तरीका होता है। 'क' जिस मार्गको अपनाता है वह 'क' के लिये अच्छा है जैसे जो मार्ग तुम अपनाते हो वह तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि वह तुम्हारी प्रकृतिके साथ मेल खाता है। अगर यह लचीलापन न होता, यह विविधता न होती, अगर सभीको एक ही नमूनेके अनुसार चलाया जाता तो योग एक जीवित शक्ति न होकर मानसिक मशीन बन जाता।

उद्घाटन

इस योगका साधक किसी बंधी हुई मानसिक शिक्षा या निश्चित किये गये ध्यान, मंत्र आदिकी पद्धतिसे नहीं चलता। वह अभीप्सा, भीतरकी ओर या ऊपरकी ओर आत्म-एकाग्रता, अपने-आपको भागवत प्रभावकी ओर, ऊपर भागवत शक्ति और उसकी क्रिया और हृदयमें भागवत उपस्थितिकी ओर खुलकर और उन सब चीजोंका त्याग करके आगे बढ़ता है, जो इनके लिये विदेशी है। यह आत्मोद्घाटन केवल श्रद्धा, अभीप्सा और समर्पणद्वारा ही किया जा सकता है।

आत्मोद्घाटनका लक्ष्य है भगवान्‌की शक्तिको अपने अंदर प्रकाश, शांति आनंद आदि लेकर प्रवाहित होने और रूपांतरका काम करने देना। जब सत्ता इस तरह भागवत शक्तिको ग्रहण करती है, और वह उसके अंदर कार्य करती है, अपने परिणाम लाती है (वह भले उसकी प्रक्रियाके बारेमें पूरी तरह सचेतन हो या न हो) तब कहा जाता है कि मनुष्य खुला हुआ है।

*

खुले होनेका अर्थ बस यही है कि तुम माताजीकी ओर मुड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहो ताकि उनकी शक्ति तुम्हारे अंदर काम कर सके, तुम्हारे अंदर कोई भी चीज उसे अस्वीकार न करे और बाधा भी न दे। अगर मन अपने ही विचारोंमें बन्द हो और उसमें प्रकाश और सत्यको न आने दे, अगर प्राण अपनी कामनाओंसे चिपका रहे और माताजी-की शक्ति जिन सच्ची प्रवृत्तियों और प्रेरणाओंको लाती है उन्हें घुसने न दे, अगर भौतिक शरीर अपनी कामनाओं, आदतों और जड़तामें बन्द रहे और प्रकाश और शक्तिको अपने अंदर घुसने और कार्य करने न दे तब आदमी खुला नहीं होता। एक साथ सभी गतिविधियोंमें पूरी तरह खुलना संभव नहीं होता, लेकिन हर भागमें केंद्रीय उद्घाटन या संकल्प होना चाहिये। और हर भागमें (न केवल मनमें) केवल माताजीकी क्रियाको ही प्रवेश करने देनेकी प्रबल अभीप्सा होनी चाहिये, बाकी सब उत्तरोत्तर कर दिया जायगा।

*

सतत स्मरणद्वारा सत्ता पूर्ण उद्घाटनके लिये तैयार होती है। हृदयके उद्घाटनसे वहांपर माताजीकी उपस्थितिका अनुभव होना शुरू होता है। और ऊपर उनकी शक्तिके प्रति खुलनेसे उच्चतर चेतनाकी शक्ति नीचे शरीरमें आती है और वहां सारी प्रकृतिको बदलनेके लिये कार्य करती है।

*

इस योगका सारा सिद्धांत ही है अपने-आपको भागवत प्रभावकी ओर खोलना। वह तुम्हारे ऊपर उपस्थित है और एक बार तुम उसके बारेमें सचेतन हो जाओ तो फिर तुम्हें उसे नीचे अपने अंदर बुलाना होगा। वह मन और शरीरमें शांतिके रूपमें, प्रकाशके रूपमें, कार्य करनेवाली शक्तिके रूपमें, साकार या निराकार भागवत उपस्थिति या आनंदके रूपमें उतरता है। यह चेतना पानेसे पहले तुम्हारे अंदर श्रद्धा होनी चाहिये और तुम्हें उद्घाटनके लिये अभीप्सा करनी चाहिये। अभीप्सा, पुकार, प्रार्थना एक और

3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिन्न चीजके रूप हैं और सभी प्रभावकारी होते हैं। जो रूप तुम्हारे अंदर आता है, या तुम्हारे लिये सबसे सरल है, तुम उसीको अपना सकते हो। दूसरा तरीका है एकाग्रता, तुम अपनी चेतनाको हृदयमें एकाग्र करो (जैसे कुछ लोग सिरमें या सिरके ऊपर करते हैं) और हृदयमें माताजीका ध्यान करो और उन्हें वहां बुलाओ। तुम अलग-अलग समय दोनों या इनमेंसे कोई एक कर सकते हो—जो कुछ तुम्हारे अंदर स्वाभाविक रूपसे आये या उस समय करनेकी प्रेरणा हो।

(बुलेटिन अगस्त ८२)

विचारमाला और सूत्रावली

हमारे प्राचीन महाकाव्यके रचयिता वाल्मीकि एक न्यायपरायण और प्रबुद्ध सामाजिक स्थितिके लक्षणोंमें केवल सार्वजनीन शिक्षा, नैतिकता तथा आध्यात्मिकताको ही नहीं वरन् इस बातको भी अंतर्गत करते हैं कि ऐसा एक भी आदमी नहीं रह जाना चाहिये जो मोटा अन्न खानेके लिये बाध्य हो, ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं होना चाहिये जो मुकुटहीन और राजतिलकविहीन हो, अथवा जो भोग-विलासका एक तुच्छ और हीन दास बनकर जीवन यापन करता हो।

*

श्रेणीगत या व्यक्तिगत रूपसे दरिद्रताका वरण करना महान् और उपकारी कार्य है पर इसे यदि विकृत रूपसे सर्वसामान्य या राष्ट्रीय आदर्शके रूपमें स्थापित किया जाय तो यह संहारक बन जाता है तथा जीवनसे उसकी समृद्धि और प्रसारताको छीनकर उसे निःस्व बना देता है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैसर्गिक शरीरके लिये जैसे रोग आवश्यक नहीं हैं वैसे ही सामाजिक जीवनके लिये दरिद्रताकी कोई आवश्यकता नहीं है; जीवनके अनुचित अभ्यास तथा समाजसंबंधी समुचित संगठनके विषयमें हमारा अज्ञान ही इन दोनों क्षेत्रोंमें परिहार्य विश्रृंखलाका भ्रमपूर्ण कारण हैं।

*

स्पार्टा[1] नहीं, एथेन्स[2] मानवजातिका प्रगतिशील नमूना है। जब प्राचीन भारतका आदर्श था विशाल वैभव और अपार अर्थव्यय तब वह सबसे महान् राष्ट्र था। आधुनिक भारत सर्वसामान्य रूपसे वैराग्यकी ओर प्रवृत्त होनेके कारण जीवनमें पूर्णतः दरिद्र बन गया है तथा दुर्बलता एवं पतनके गर्त्तमें डूब गया है।

*

यह स्वप्न मत देखो कि जब तुम भौतिक दरिद्रतासे मुक्त हो जाओगे तो सभी मनुष्य सर्वदा प्रसन्न और संतुष्ट रहेंगे अथवा मनुष्य समाज अपनी बुराइयों, विपदाओं, तथा समस्याओंसे छुट्टी पा जायगा। यह तो केवल प्रथम और निम्नतम आवश्यकता है। जबतक भारतकी आत्मा अपूर्ण रूपसे संगठित रहेगी तबतक बाहर निरंतर अशांति, अव्यवस्था और विद्रोह बने रहेंगे।

*

यदि मनुष्यकी आत्मा दोषपूर्ण हो तो रोग शरीरमें निरंतर वापस आता रहेगा; क्योंकि मनके पाप शरीरके पापोंके गुप्त कारण होते हैं। उसी तरह जबतक किसी जातिका मन अहंकारके अधीन रहेगा तबतक समाजके अंदर रहनेवाले मनुष्यपर दारिद्र्य तथा संकट हमेशा वापस आते रहेंगे। —श्रीअरविंद

[1]यूनानका एक प्राचीन नगर। यहांके लोग शारीरिक बलको ही बहुत प्रधानता देते थे।

[2]प्राचीन युगमें अत्यंत प्रसिद्ध यूनानकी राजधानी। यह अपने युगमें कला और विद्याका महान् केंद्र थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीर्वाण-वाणी

रे चित्त ! चिन्तां न विधेहि स्वस्मिन्
चिन्तां त्वदीयां कुरुते महेश्वरः।
ज्ञानं न ते शं स कदा विधास्यति
त्वं केवलं नाम गृहाण तस्य ॥१॥

रे चंचल चित्त ! तू हृदयमें भयको न भर (ला)। तेरी चिंता तो स्वयं अनादि कर रहे हैं। तुझे क्या मालूम कि कब वे तेरी क्षुधा (इच्छा) पूरी करेंगे। तू तो केवल उसके नाद (नाम) का जाप करता जा।

चित्ताभिधः सर्वगतिस्तुरंगः क्षणान्तरे योजनलक्षगामी।
धार्यो बुधेन्द्रेण विवेकवल्गा नोदेन वायुद्वयपक्षरोधात् ॥२॥

चित्त-रूपी तुरंग गगनमें भ्रमण करनेका आदी है (ऊंची-ऊंची कल्पनाएं व इच्छाएं करता है) तथा एक निमिषमें लाखों योजन घूम आता है। जिसने बुद्धि और चेतनता (विवेक) रूपी लगामसे उसको वशमें करना सीख लिया वही प्राण-अपानके चक्रद्वयको नियंत्रित करनेमें सफल होता है।

नियन्त्रितः खलीनेन मया चित्त-तुरंगमः।
बद्धो नाडिकायुक्तश्वास-प्रश्वास-रज्जुभिः ॥
तदा शशिकला सम्यक्जाता पीयूषवर्षिणी।
एवं शून्येऽमिलच्छून्यमभेदो जीव-ब्रह्मणोः ॥३॥

मैंने चित्तरूपी तुरंगको लगाम देकर थाम लिया। फिर दशनाड़ियोंके श्वासोच्छ्वासके साथ उसको बांध दिया। तब कहीं शशिकला पिघली और शून्यमें शून्य मिल गया।

(भुवनवाणी प्रेस लखनऊसे प्रकाशित 'लल्द्यद'से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरुण साधकका श्रीअरविंद और माताजीके साथ पत्र-व्यवहार

क्या यह सच है कि विवाहित लोगोंकी कठिनाइयां अविवाहितों-से ज्यादा होती हैं?

यह चरित्रपर निर्भर है, विवाहपर नहीं।

३ दिसंबर १९३३ — श्रीअरविन्द

मैंने कहा, "ग, हमें लोगोंका खराब पहलू नहीं, हमेशा अच्छा पहलू देखना चाहिये। उसने जवाब दिया, "नहीं, हमें दोनों पहलू देखने चाहिये और फिर उनमें भेद करना चाहिये।

दूसरोंके दोषोंके बारेमें बोलना निस्संदेह बहुत बुरा है। सबके अपने दोष होते हैं और अपने विचारोंमें उनपर जोर देना निश्चय ही उन्हें ठीक करनेमें सहायता नहीं देता।

४ दिसंबर १९३३ — माताजी

'ज्ञ'ने मुझसे कहा कि अगर मेरे पास अखबार पढ़नेको समय न हो तो मुझे कम-से-कम उसपर एक सरसरी नजर डाल लेनी चाहिये। मैंने पूछा, "क्या ऐसा कोई नियम है कि अखबार पढ़ना ही चाहिये?" उसने जवाबमें कहा, "संसारमें जो कुछ हो रहा है उसका पता होना चाहिये, तुम संन्यासी तो नहीं हो।

मैं संन्यासी नहीं हूं और मैं कभी अखबार नहीं पढ़ती। मेरे पास उसके लिये समय नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेतनाके एकदम सामान्य स्तरपर गिरे बिना अखबार पढ़ना बहुत कठिन है। जब चेतना दृढ़तासे भगवान्के साथ ऐक्यमें प्रतिष्ठित हो गयी हो केवल तभी निम्न चेतनामें गिरनेके जोखिमके बिना अखबार पढ़ना संभव होता है।

५ दिसंबर १९३३ — माताजी

शरीरपर बहुत-से आक्रमण हो रहे हैं। क्या आप बता सकेंगी क्यों ?

क्योंकि तुम बहुत अधिक शारीरिक चेतनामें रह रहे हो इसलिये वे शरीरपर आते हैं।

शारीरिक चेतनामें रहनेका अर्थ क्या है ?

इसका अर्थ है चीजोंको केवल उसी तरह देखना जैसी वे बाहरी मन और इन्द्रियोंको दीखती हैं, अपनी आंतरिक सत्ता या ऊपरकी चीजोंके बारेमें अभिज्ञ हुए बिना केवल यही जानना कि तुम शरीरमें जी रहे हो। यह तब होता है जब तुम केवल शारीरिक चेतनामें रहते हो।

५ दिसंबर १९३३ — श्रीअरविंद

लेकिन आक्रमणोंको आनेसे रोकनेके लिये मुझे क्या करना चाहिये ताकि मैं उच्चतर चेतनामें उठ सकूं ?

अधिक विशाल चेतनाके लिये अभीप्सा करो—निम्न प्रकृतिके सुझावोंका त्याग करो,—या अधिक पूरी तरहसे माताजीकी शक्तिके प्रति खुलो।

—श्रीअरविंद

६ दिसंबर १९३३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुब्बू हाउसमें दो लड़के थे। मैंने एक लड़केसे पूछा, "यह क्या है?" उसने जवाब दिया, "हमारी गेंद।" उसके साथ बातें करनेके बाद, मैं कांप रहा था। क्या आप बतायेंगी क्यों?

शायद इसलिये कि वह संपर्क नया और बहुत सुखद नहीं था।

६ दिसंबर १९३३ —माताजी

इसका क्या अर्थ है: "प्रभुके लिये मेरे उत्साहने मुझे खा लिया है?" (आर्य)

इसका अर्थ है कि उसने उसकी समस्त चेतनाको भर दिया है और दूसरी चीजों और व्यक्तित्वकी सामान्य क्रियाओंके लिये कोई स्थान नहीं छोड़ा।

किसी साधककी इच्छा और बलका भागवत इच्छा और बलमें घुल-मिल जाना और उच्चतर शक्तिके साथ एक होना कब संभव होता है?

भागवत इच्छा और बलकी सहायता और स्वीकृतिके बिना नहीं।

७ दिसंबर, १९३३ —श्रीअरविंद

मजाक करना अच्छा है क्या? क्या इससे हमें सहायता मिलती है?

यह साधनामें सहायता नहीं देता—यह केवल मन या प्राणका खेल है।

८ दिसंबर, १९३३ —श्रीअरविंद

ऐसा लगता है कि 'क' हमेशा मुझसे बात करनेका संयोग ढूंढ़ती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहती है। क्या आप बता सकेंगी कि वह मुझसे क्या चाहती है?

संभवत: अपनी प्राणिक भूखको शांत करनेके लिये तुम्हारी शक्तियों के कुछ अंशको खाना चाहती हो।

९ दिसंबर १९३३

—माताजी

(बुलेटिन अगस्त ८२)

समाधि वृक्ष (सर्विस ट्री)

चिर समाधिमें जाग्रत जीवित
दोनों गुरु करते विश्राम।
छाता ताने खड़ा हुआ यह
महावृक्ष पल-पल अभिराम।।

झेल रहा अपने सीनेपर
ऋतुचक्रोंके वार निरंतर।
कठिन वज्र-सा है इसका तन
कुसुम कली-सा है अभ्यंतर।।

समाधिस्थ ऋषिके समान यह
करुणा ममताका है निर्झर।
कितने जन्मोंके पुण्योंका
तुमने यह फल पाया तरुवर!

अनुपम जिज्ञासा अभीप्सा
अनुपम त्याग तुम्हारा, अर्पण।
त्रिविध तापसे मुक्ति दिलाती
छाया है या है सम्मोहन!

—सुरेशचन्द्र त्यागी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्तिक और नास्तिक

खलील जिब्रानकी एक प्रसिद्ध कहानी है। एक नास्तिक और एक आस्तिक रास्ता चलते हुए भगवान्के बारेमें बातें करने लगे। दोनों अपनी-अपनी बातपर डटे हुए थे।

बहस इतनी बढ़ी कि दोनों चलना भूल गये और रास्तेमें ही खड़े होकर बहस करने लगे। आने-जानेवालोंको तमाशा मिल गया, उनके चारों ओर भीड़ लगने लगी। सूरज सिरपर चढ़ आया। तमाशबीनोंमेंसे किसीको दया आयी और वह दोनोंको पानी पिला गया लेकिन बहसमें अल्पविराम भी न लगा।

सांझ हुई। दोनों थककर चूर हो गये और हारकर अपने-अपने घरकी ओर चल पड़े। आस्तिकने पोथी-पत्रा आगमें झोंक दिये, मूर्तियां फेंक दीं, नास्तिक माला जपता हुआ तिलक छापकी तलाशमें लगा।

लेकिन आस्तिक और नास्तिक कहते किसे हैं और इनमें सच्चा कौन है ?

श्रीअरविंदने तो कहा है कि जगत्में भगवान् स्वयं अपने साथ लुकाछिपी खेलते हैं। किसीने माताजीसे पूछा, इस लुकाछिपीका मतलब क्या है ? माताजीने उत्तर दिया :

"लुकाछिपीके खेलमें एक आदमी छिप जाता है और दूसरा उसे खोजता है। तो भगवान् उस नास्तिकसे अपने-आपको छिपा लेते हैं जो कहता है, 'भगवान्, मैं उसे नहीं जानता, मुझे पता नहीं वह कहां है इसलिए उसका अस्तित्व ही नहीं है।' लेकिन नास्तिक यह नहीं जानता कि भगवान् स्वयं उसके अंदर भी हैं और इस तरहसे स्वयं भगवान् ही भगवान्के अस्तित्वसे इंकार करते हैं। तो यह खेल न हुआ ? फिर भी एक दिन आयेगा जब भगवान्को भगवान्के आगे लाकर खड़ा किया जायगा और उन्हें यह स्वीकार करना होगा कि उनका अस्तित्व है।

"आस्तिक अपने-आपको नास्तिकसे बहुत ऊंचा और श्रेष्ठ समझता है लेकिन वह जो कुछ पकड़ पाया है वह केवल भगवान्की छाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। वह इस छायाको ही भगवान् मानकर उससे चिपका रहता है। अगर वह सचमुच भगवान्‌को जानता तो उसे पता होता कि भगवान् सब जगह, हर चीजमें हैं। तब वह अपने-आपको किसीसे भी श्रेष्ठ मानना छोड़ देगा।"

ऋषिवर बोले :

एक अजूबा मैंने देखा

ऋषिवरके यहां सभी लोग प्रतीक्षामें गंभीर मुद्रा बनाये बैठे थे कि अचानक पूर्वकी ओरका दरवाजा धड़ामसे खुला और साधारणतः बहुत ही गंभीर मुख, सदा नीचेकी ओर किये रहनेवाली उर्मिलाने तेज आंधीकी तरह प्रवेश किया। वह हंसीके मारे दोहरी हुई जा रही थी। बड़ी मुश्किलसे उसके मुंहसे शब्द निकले, ऋषिवर कहां हैं ?

इतनेमें ऋषिवर भी आ गये और वातावरण फिरसे गंभीर हो गया। उर्मिलाने बड़े शालीन ढंगसे पसीना पोंछते-पोंछते कहा, "ऋषिवर एक अजूवा मैंने देखा। आज्ञा हो तो सुनाकर अपने-आपको हल्का कर लूं।" ऋषिवरने कहा, अरे हमारे यहां इतनी अधिक सभ्यता दिखानेकी जरूरत कबसे पड़ने लगी ? चलो श्री-गणेश।"

उर्मिलाने पेट पकड़कर हंसीको रोकते हुए कहना शुरू किया, "मैं न जानती थी कि मृत्यु भी हास्य और विनोदका विषय बन सकती है। आज ऐसी ही घटना सुनकर आ रही हूं जिसमें मृत्यु बहुरूपियेका वेश बनाकर हंसने-हंसाने आयी थी। आप सब जानकी मंगल नामक सज्जनसे तो परिचित ही होंगे। बड़े भले आदमी थे बेचारे। उन्हें देख, हास्य और क्रोधकी त्रिवेणी कहा जा सकता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले साल दो सालसे उनकी तबीयत कुछ ज्यादा ही खराब रहने लगी थी और लोग सोचते थे कि उनके जानेकी घड़ी आ गयी है। लेकिन यमदूत भी अगर मानवकी बात सुनने लगें तो फिर वे यमदूत ही कैसे? उनका शरीर घुलता जाता था और पहलेका वह हट्टा-कट्टा शरीर कंकाल बन गया था, सिर्फ हंसीने उनके ओठोंको और आंसुओंने उनकी आंखोंको न छोड़ा था।

एक दिनकी बात है उन्हींके जिलेके रहनेवाले कुछ लोग एक साथ बैठे खाना खा रहे थे। प्यारेलालने कहा, सुना आप लोगोंने, जानकी मंगलजी नहीं रहे। चाहते तो सभी थे कि उन्हें इस दुःखसे छुटकारा मिल जाय पर अब जब मृत्यु जननी उन्हें अपने साथ ले गयी तो सभीको एक धक्का लगा और सबने निश्चय किया कि भोजन समाप्त करके उनके घर जायेंगे।

सभीका ध्यान जानकी मंगलजीकी ओर था। हर एक अपनी-अपनी स्मृतियोंकी जुगाली कर रहा था। विनोदने कहा, मुझे मालूम है कि उन्हें हम सब आलसी, प्रमादी आदि कहा करते थे। वे जानकी बाबू एक बार सत्यकी खोजमें निकले तो दूसरे शंकराचार्य बन गये, सारे देशका पूरबसे पश्चिमतक और उत्तरसे दक्खिनतक पैदल चक्कर लगा मारा। परिणाम क्या हुआ यह तो वही जाने पर इतना भ्रमण कर सकना और वह भी एक उद्देश्य सामने रखकर, कोई आसान काम नहीं है।

तीनोंने वही बात पकड़ते हुए कहा, हां, तुम्हारी बात तो ठीक है विनोद लेकिन इसके आधारपर यह प्रमाणित नहीं किया जा सकता कि हमारे जानकी बाबू आलसी नहीं थे। मेरा उनके साथ अच्छा संबंध था। मैं अपने साथ संबंध रखनेवाली एक घटना सुनाती हूं। जानकी बाबू अभी भरपूर जवानीमें थे। हर जगह अपनी धौंस जमाते थे और हर एकको सीधा कर देनेकी धमकी देते रहते थे।

उन्हें भोजन करनेके लिए अपने घरसे दो फरलांग दूर एक भोजनालयमें जाना पड़ता था। भोजनालयमें समयपर पहुंच जायें तो वे जानकी बाबू कैसे। तीनों वेला मिलाकर बस ढाई तीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घंटे की ही देर हुआ करती थी रोज और अगर कहीं इन्हें दो मिनटकी भी प्रतीक्षा करनी पड़ जाय तो बस सारा घर सिरपर उठा लेते और परोसनेवाले को तो बस साड़ साती ही लग जाती। उन्हें समझाने-बुझाने या शांत करनेके प्रयास आगमें घी नहीं आगमें गैस छोड़ते थे।

एक दिन सबने मिलकर तय किया चलो हम सब बारी-बारीसे इनके घर जाकर खाना पहुंचा आया करें। इन्हें भी आराम हो जायगा और हम लोग भी रोज-रोजकी मुसीबतसे छुटकारा पा लेंगे। बात सबको जंच गयी और जानकी मंगल बाबूको भी रुची। अब यह कार्यक्रम शुरू हो गया। लोग कहते हैं, जाको राखे साइयां मेट सके कब कोय, मैं कहती हूं जाको मारे भाग्य निज राखि सकै कहा कोय। लोगोंने देखा कि उनके घर खाना जाता तो है नियमित रूपसे लेकिन कई बार जैसाका वैसा वापिस आ जाता है, उसे हाथतक नहीं लगाया जाता। लोगोंको उत्सुकता हुई कि माजरा क्या है। एक शिष्ट मण्डल उनसे पूछने गया। उन्होंने बड़े आदर-सत्कारके साथ उसका स्वागत करते हुए कहा, आप लोग मेरे यहां तक आकर खाना पहुंचा तो जाते हैं परंतु वह रखा जाता है मेरी खाटके नीचे और मैं बैठा होता हूं खाटके ऊपर। अब बतलाइये दिनमें तीन-तीन बार इतना कष्ट कौन करे कि उसे उठाये, खोले, खाये और फिर बरतन वापिस रखे। सच मानिये, मैं कई बार सोचता हूं, अब उठाता हूं, अब उठाता हूं, और इतनेमें दूसरे समयके खानेका वक्त हो जाता है और आपका आदमी पहलेके बरतन उठा ले जाता है और दूसरे रख जाता है और मेरे लिये फिर वही चक्र नये सिरेसे चलने लगता है। देखिये हंसिये मत, मैं बावन तोले पाव रत्ती सच्ची बात बता रहा हूं।

देखिये इधर इतना आलस्य और उधर उतना उद्यम, एक ही आदमीमें।

इतनेमें सबका खाना समाप्त हो गया और पांच सात लोगोंका यह दल प्यारेलालजीकी कमानमें दांये-बांये करता हुआ जानकी निवासके दरवाजेपर जा पहुंचा। दरवाजा खटखटाया तो उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भानजे माण्डवी प्रसादने दरवाजा खोला। हाथोंमें सना हुआ दाल भात लगा हुआ था। इस मण्डलीको देखकर जरा सकपकाये।

प्यारेलालजीने नेताओंके लहजेमें कहा, ठीक है माण्डवी, दुःख करनेकी कोई बात नहीं है। हानि लाभ, जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ। अब जो हो गया सो हो गया। तुम झपटकर अपना खाना समाप्त कर लो, फिर हम सब तुम्हारे मामाजीके शरीर को लेने चलेंगे।

इतना सुनते ही माण्डवी प्रसाद तो ऐसे उछलने लगे जैसे भाड़में अकेला चना। लोगोंने उनको जरा शांत करनेकी कोशिश की, उन्हें कुड़ता उड़ता पहनाया और फिर सबके सब चले हस्पतालकी ओर जानकी बाबूका शरीर लानेके लिए। दलमें जितने लोग थे उतने ही मनोभाव। माण्डवी प्रसाद पुरानी प्रथा पूरी करनेके लिए धाड़ मार रहा था। प्यारेलालजी मृत्युके बारेमें अनेक महापुरुषोंके वचन उद्धृत कर रहे थे, उन्हें इसकी परवाह नहीं थी कि कोई सुन रहा है या नहीं। वरुणा अपनी बहनके कानमें खुसफुसाती हुई पूछ रही थी इनकी तेरहीपर लड्डू कचौरी मिलेंगे न!

खैर, इस तरह बड़ी तेजीके साथ, धीमी चालसे जुलूस रातके दस बजे हस्पतालके दरवाजेपर पहुंचा। अजीब असभ्य थे ये हस्पताल वाले! इतना बड़ा दल आ रहा है और उसके सामने किवाड़ बन्द हैं। खैर नेताजीने आगे बढ़कर किवाड़ खुलवाये। माण्डवी प्रसाद अपने प्रेमका प्रदर्शन करनेके लिए उछलकर चीखें मारते हुए जानकी बाबूके वार्डकी तरफ लपके और अगले ही क्षण दूने वेगके साथ, चौगुनी आवाजमें चिल्लाते हुए वापिस लौटे। इस बार चेहरेपर सचमुच हवाइयां उड़ रही थीं। उसकी घबराहट संक्रामक थी। सबमें भगदड़ मच गयी। हस्पतालवाले बाहर निकल आये कि आखिर मामला क्या है।

इतनेमें प्यारेलालजीने देखा कि जानकी मंगल जी अपनी बाड़में से बड़ी कठिनाईके साथ झांक रहे हैं। उन्हें समझते देर न लगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि जानकी बाबू अभी मरे नहीं हैं। माण्डवीने उन्हें आशाके विरुद्ध जीवित पाया तो घबरा गया कि उनकी खाटपर भूत बैठा है और बाकी कहानी तो आप समझ ही सकते हैं।

उर्मिलाने सांस लेकर कहा यह कोई बनायी हुई कहानी नहीं है ऋषिवर, यह सच्ची घटना है। इसके दूसरे ही दिन जानकी बाबू संसारको छोड़कर सचमुच चल बसे। जो सारे जीवन लोगोंको अपनी ऊटपटांग बातोंसे खिझाता और हंसाता रहा वह अंतमें भी पहले डराकर फिर हंसाकर चलता बना।

कमरेमें एकदम मौन था। कुछ क्षणोंके बाद ऋषिवरकी आवाज सुनायी दी। "उर्मिलाने बड़ी मजेदार चीज सुनायी। इसमें हास्य और गंभीरताका अच्छा मिश्रण है। अब आज तो समय हो गया, अगली बार मैं जानना चाहूंगा कि तुम लोगोंने इसे किस अर्थमें लिया है।

[टिप्पणी : यदि अग्निशिखाके पाठक इस विषयपर कुछ कहना चाहें तो संपादकके नाम लिख भेजें। हम उसे भी प्रकाशित करनेकी कोशिश करेंगे। —सं०]

पुरुष और प्रकृति

(श्रीअरविंदके पत्रोंके आधारपर)

योगकी अनुभूतिमें आत्मा या सत्ता तत्त्वत: भगवान्‌के साथ एक होती है या कम-से-कम वह भगवान्‌का एक अंश है जिसमें भगवान्‌की सभी संभावनाएं और अन्त:शक्तियां उपस्थित रहती हैं लेकिन अभिव्यक्त होते समय वह दो रूप ले लेती है, पुरुष और प्रकृति। पुरुष सचेतन सत्ता है।

प्रकृतिमें भागवत सत्ता छिपी हुई, परदेके पीछे रहती है और व्यष्टिगत सत्ता प्रकृतिके अधीन रहती है। यहां प्रकृति अपने निम्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपमें, अविद्याकी शक्ति बनकर काम करती है। अन्तरात्मा या चैत्य तत्त्व पुरुषका ही वह रूप है जो विकासक्रममें प्रवेश करता है और उसे सहारा देता है। उसके अंदर सभी दिव्य संभावनाएं और संभाव्यताएं रहती हैं। वह चैत्य तत्त्व प्रकृतिकी अपूर्णताओंको धारण कर लेता है और उसे लेकर उसके साथ विकसित होता है। यहांतक कि वह ऊपर उठता-उठता सिरसे ऊपरकी आत्माके साथ जा मिलता है। योगकी अनुभूतियोंको अच्छी तरह समझ सकनेके पहले इन दो गतियोंको ठीक तरह समझ सकना जरूरी है।

*

पुरुष सभी लोकों और स्तरोंपर विद्यमान है। एक मनोमय पुरुष होता है जो जीवन और शरीरका मार्गदर्शन करता है। एक प्राणमय पुरुष और एक अन्नमय पुरुष होता है। हम कह सकते हैं कि ये प्रकृतिके विभिन्न स्तरोंपर उसे सहारा देनेके लिये जीवात्माके प्रक्षेपण हैं। उपनिषद्में विज्ञानमय और आनंदमय पुरुषोंकी भी बात कही गयी है और अगर ये दोनों भी धरतीके विकासमें प्रतिष्ठित हो जाएं तो हम उनकी गतिविधियोंसे भी परिचित हो सकेंगे।

रही बात चैत्य पुरुषकी तो वह जन्मके समय क्रम-विकासमें प्रवेश करता है और मृत्युके समय उसमेंसे निकल जाता है। जैसा कि मैं जानता हूं जीवात्मा अजर अमर है यद्यपि वह अभिव्यक्तिको ऊपरसे संभाले रखता है। हम चाहें तो चैत्यको जन्म लेनेवाली आत्मा कह सकते हैं।

आत्मा शब्दका उपयोग नानाविध अर्थोंमें किया जाता है और इसकी वजहसे बहुत गड़बड़ होती है। दर्शन और तत्त्वज्ञानके लिये यथार्थ अर्थोंको याद रखना जरूरी है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधानामें चैत्य पुरुष निम्नलिखित चीजोंका योगदान देता है: (१) प्रेम और भक्ति, प्राणिक प्रेम नहीं जो भोग करता और अहंकार-पूर्ण होता है बल्कि, बिना शर्त, बिना मांगवाला स्वयंभू प्रेम। (२) माताजीकी उपस्थितिके साथ संपर्क। (३) अन्दरसे ऐसा पथ-प्रदर्शन जिसमें भूल नहीं हो सकती। (४) चैत्य प्रभाव और मार्गदर्शन-द्वारा मन, प्राण और शरीरको शांत और शुद्ध बनाना। (५) सारी निम्न चेतनाको उच्चतर चेतनाकी ओर खोलना और उसके अंदर पूर्ण ग्रहणशक्ति लाना ताकि वह ऊपरसे उतरती हुई चेतनाको भली-भांति ग्रहण कर सके। चैत्य पुरुष समुचित विचार, समुचित बोध, समुचित संवेदन और समुचित वृत्ति लाता है।

*

योग करनेसे पहले प्रत्येक अंतरात्मा विकसित और सक्रिय नहीं होती और हर अंतरात्मा भगवान्‌की ओर अभिमुख नहीं होती। लंबे समयतक वह सीधे भगवान्‌के पास जानेकी जगह उन्हें मनुष्यों और वस्तुओंद्वारा खोजती है।

(श्रीअरविंदकृत सिंथेसिस आफ योगके आधारपर)

आगे बढ़ो

हमें मार्गपर सब कुछ पीछे छोड़ देनेके लिए तैयार रहना चाहिए, केवल उसीको नहीं जिसपर हम बुराईकी छाप लगा देते हैं बल्कि उसे भी जो भलाई कहलाती है पर सच्ची भलाई नहीं है। ऐसी चीजें हैं जो एक बार बहुत लाभदायक थीं, शायद एकमात्र वांछनीय चीजें थीं, लेकिन जैसे ही उनका काम पूरा हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया, जैसे ही आदमीने उन्हें पा लिया वे खड़े पानीकी तरह सड़ने लगीं, वे हमारे मार्गके रोड़े बन गयीं, बल्कि विरोधी शक्तियोंके रूपमें सामने आ गयीं।

अंतरात्माकी ऐसी अवस्थाएं हैं जिन्हें प्राप्त करना जरूरी है लेकिन एक बार पा लेने पर उनसे आगे बढ़ना और भी जरूरी है। हम उन्हींसे चिपके रहें तो आगे बढ़कर भगवान्‌के राज्यतक पहुंचना संभव नहीं रहता।

सामान्य भागवत उपलब्धियोंको भी पकड़कर नहीं बैठ जाना चाहिए। हमें सर्वको, परात्परको पानेसे पहले दम न लेना चाहिए, अगर हम सचमुच आत्मामें मुक्त हो सकें तो हम भगवान्‌के कार्यके अद्‌भुत रूप देख सकेंगे। हम देखेंगे कि भीतरसे सब कुछ त्याग कर हमने कुछ भी नहीं खोया क्योंकि हमने जो कुछ त्यागा है वह-भगवान्‌के सर्व-सुन्दर, सर्वशुभमें, सर्वप्रकाश और सर्वआनंदमें परिवर्तित होकर हमारे नजदीक है। सब कुछ त्यागकर ही सब कुछ पाया जाता है।

*

(श्रीअरविंदके पत्रके आधारपर)

तुमने अपनी वृत्तिको बहुत ज्यादा व्यक्तिगत रूप दे लिया है। तुम निजी बल और दुर्बलताके आधारपर निर्णय करना चाहते हो। आखिर हम सबमें, छोटेसे छोटेसे लेकर बड़े-से-बड़े तकमें, बल हमारा अपना नहीं है। हमें यहां खेलमें जो भाग लेना है, हमें जो कार्य करना है उसीके योग्य बल हमें दिया गया है।

बलने भले हमारे अंदर ही रूप लिया हो पर वह उसका सच्चा और अंतिम रूप नहीं है, न तो बल न दुर्बलता अपने अंतिम रूपमें है। किसी भी क्षण यह रूप बदल सकता है। योगके दबावसे दुर्बलता शक्तिमें, अक्षमता क्षमतामें बदल सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचानक या धीरे-धीरे हमारी यंत्रीय चेतना एक नये स्तरतक उठ सकती है, उसमेंसे छिपी हुई शक्तियां बाहर निकल सकती हैं।

हमारे ऊपर, हमारे भीतर, हमारे चारों ओर सर्वसमर्थ बल उपस्थित है और हमें अपने काममें, अपने विकासमें, अपने परिवर्तनमें उसीपर निर्भर रहना सीखना चाहिए।

अगर हम कार्यपर, कार्यके लिए अपने यंत्र होनेपर, उस शक्तिपर जो हमारा उपयोग कर रही है, उसपर श्रद्धा रखें तो हर कठिनाई, हर अग्नि परीक्षा, हर असफलतासे शक्ति आयेगी और हम अपने अंदर सर्वशक्तिका उतना अंश पायेंगे जितनेका हम उपयोग कर सकते हैं। हम उसके अधिकाधिक सचेतन वाहक बन सकेंगे।

कुछ देवी-देवता

प्रश्न—कल जब मैं प्रार्थनाके लिए बैठा तो पहले मैंने ब्रह्माके दर्शन पाये और उसके बाद मैंने लेटे हुए नारायणका सुन्दर रूप देखा। लक्ष्मी नारायणके चरणोंके पास बैठी थीं। उनके पीछे एक फणिधर अपना फण फलाये हुए था। नारायणकी नाभिसे लाल कमल आकाशमें उठ रहा था, उसपर ब्रह्मा विराजमान थे। ब्रह्माका रंग लाल था, उनके तीन चेहरे थे। नारायणका रंग नीला था। मुझे लक्ष्मीका रंग याद नहीं है। वे या तो सफेद थीं या सुनहरी। मैं इस अंतर्दर्शनके बारेमें कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूं।

१) क्या नारायण परात्पर भगवान् हैं या यह विष्णुका ही दूसरा नाम है जो देव त्रयीमेंसे एक हैं? क्या वे, जैसा कि वैष्णव मानते हैं, देवाधिदेव हैं या अधिमानस स्तरके एक देवता मात्र हैं?

२) लक्ष्मीका सच्चा रंग क्या है? सफेद या सुनहरा?

३) मैंने जिस सांपको देखा उसके इतने सारे फण क्यों थे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४) नारायणकी नाभिसे कमल क्यों उठ रहा था और उसपर ब्रह्मा क्यों विराजमान थे ?

श्रीअरविंद--नारायण विष्णुका ही एक दूसरा नाम है। वे वैष्णवोंके उसी तरहसे परम देव हैं जैसे शिव शैवोंके। दोनों भगवान्‌की वैश्व सत्ताएं हैं। ब्रह्माकी तरह इन दोनोंका मौलिक स्थान अधिमानसमें है यद्यपि मानव चेतनाके आगे वे मन, प्राण और सूक्ष्म भौतिक स्तरपर अलग-अलग रूप धारण करते हैं।

२) लक्ष्मी साधारणतः सुनहरी होती हैं, श्वेत नहीं। सरस्वती श्वेत हैं।

३) सांप ऊर्जा या शक्तिका प्रतीक है। तुम्हारे अंतर्दर्शनमें स्पष्ट है कि नारायण विष्णु हैं, यह लक्ष्मी और अनेक फणोंवाले सांपसे विदित होता है।

४) सामान्य पौराणिक बिम्बके अनुसार विष्णु या नारायण जल, आकाश और कालके स्वामीका बिम्ब हैं जो विश्वके तत्वकी रक्षा करते हैं। वे उसे देव सृष्टियोंके बीचके कालमें अपने अंदर बीज रूपसे आरक्षित रखते हैं। उस बीजमेंसे, उनकी नाभिसे, जो नाभि प्राणका या जीवन तत्वका केंद्रीय स्थान है, कमल नालपर (विश्व चेतनापर) जन्म लेते हैं। जब विष्णु कल्पोंके बीजकी निद्रासे जागते हैं तब यह कमल ऊपर उठता है। सर्प, अनंत काल और देशमें अनंत शक्तिका प्रतीक है।

५-२-१९३४

(२)

प्रश्न--आज प्रार्थना करते समय मुझे मां कालीके दर्शन हुए। वह काली और नग्न थीं, जैसा कि पौराणिक परंपरामें कहा जाता है वे अपना पैर शिवपर रखे हुए थीं। काली इस रूपमें क्यों दिखलायी देती हैं और वह किस स्तरपर ऐसी हैं?

श्रीअरविंद--यह प्राणिक स्तरपर है। यहां काली एक विनाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति है। यह कठिनाइयोंसे घिरे हुए अज्ञानके बीच प्रकृतिकी शक्ति है जो एक अंध संघर्षमें तबतक तोड़ती-फोड़ती चली जाती है, जबतक कि वह अपने-आपको स्वयं भगवान्के आधारपर खड़ा न पाये। इसके बाद ही वह अपने-आपको अपने-आपमें पाती है और संघर्ष तथा विनाश समाप्त हो जाते हैं।

इस प्रतीकका यही अर्थ है।

९-२-१९३४ (श्रीअरविंदके दो पत्रोंके आधारपर)

दिलासा

मैं चर्चगेटसे घरकी ओर जा ही रहा था कि एक सिनेमाके रंगीन इश्तहारोंने मेरा ध्यान खींचा। हीरो, हीरोइन वगैरहका नाम पढ़ते-पढ़ते आगे बढ़ता गया और वही हुआ जो बम्बईकी भीड़में आम बात है। एक सज्जनसे जा टकराया, मैं हड़बड़ाया और औपचारिक 'सॉरी' कह आगे बढ़ ही रहा था कि हठात् रुककर उसे देखने लगा। वह भी किंकर्तव्यविमूढ़-सा मुझे घूरने लगा। फिर दोनों ओरसे प्रायः चीख-सी निकली, "अहमद, अनिल" और दोनोंने एक दूसरेको बांहोंमें भर लिया। मैं अहमदके शरीरको तूफानमें कांपते पत्ते-सा सिहरता महसूस कर रहा था और इधर मेरा भी यही हाल था। कुछ समय बाद जब हम अलग हुए तो भीगी आंखें मिलनेसे कतरा रही थीं। स्वरको संयत करते हुए मैंने सड़ककी ओर देखकर पूछा, "अहमद तू यहां?" अहमद भी ऊपर आकाशको निहारता हुआ बोला, 'क्या करता? एक बार चौपाटी और हमारा पुराना घर देखनेको मन इतना तरस रहा था कि जब फूफाके यहांसे निकाहमें शामिल होनेका न्योता आया तो झपट पड़ा। सपनेमें भी न सोचा था कि तू इस तरह मिलेगा।" मैंने उसका हाथ पकड़कर कहा "चल, कहीं बैठ जायं।" सामने ईरानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होटल दिखाई दिया और हम दोनों उधर चल दिये। एक कोनेमें बैठे हम एक दूसरेको निहारते रहे, फिर ठहाका मारकर हंस पड़े, किंतु उस हंसीके पीछेसे सिसकियां झांक रही थीं। मैंने पूछा "क्यों अहमद, तुम्हारी अम्मा...?" मेरा वाक्य पूरा हो उससे पहले अहमदने तर्जनी आकाशकी ओर उठा दी। अपनी भर्राई वाणीपर उसे विश्वास न था।

देखते ही मैं दस सालका नटखट बच्चा बन गया। मैं और ग्यारह वर्षका अहमद पता नहीं कबसे गुल्ली-डंडा खेल रहे थे। अंतमें उसका नौकर आकर बोला "छोटे बाबू, बीबीजी बुला रही हैं।" अहमदने उसे वापस भेज दिया, फिर कहने लगा, "क्यों अनिल, मेरे घर चलेगा? मेरी अम्मीको तो तूने नहीं देखा है न? पता है अब्बा उनको चुपके-चुपके हूर कहते हैं, कभी चांदका टुकड़ा कहते हैं; हां, मेरे सामने नहीं। लेकिन मैं कभी-कभी सुन लेता हूं। चल, तुझे शरबत पिलाऊंगा।" और मैं अहमदके घर पहली बार गया था। सचमुच उसकी मां कितनी प्यारी थी। उनकी बादामी, चमकीली आंखोंसे प्रेम और हंसीके फव्वारे उठते थे, और कैसा सौम्य चांदनी-सा था उनका रंग। कितनी शीतलता थी।

मैं झटकेसे वर्तमानमें आ गिरा। दंगोंके समय हम सब कितने भयभीत थे। दिन दहाड़े कोई बाहर निकल न पाता था। ऐसे आतंकके दिनोंमें हम अभिन्न मित्र बिछुड़ गये।

आज उसी अहमदका युवा चेहरा देखकर बड़ा आश्चर्य हो रहा था। अहमद कह रहा था, "अनिल, वतनको आदमी भूल सकता है? जिसकी गोदमें हम खेले कूदे, रोये और हंसे, जिसकी मिट्टीने हमारा जिस्म बनाया, उस मिट्टीको कैसे भुलाया जाय? चौपाटी पर देखा वही नजारा था। काश, हम यहीं बने रहते।"

अपने साथीके दुःखको हल्का करनेके लिए मैं शब्द ढूंढ़ रहा था कि मेरे सामने वह भव्य मुख और उनके अमर वाक्य कौंध गये। मैं बोला, "अहमद, हमारे एक ऋषिने कहा है...।" अहमदके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेहरेपर असमंजस देखकर मुझे ख्याल आया अब अहमद पाकिस्तानी है, भारतकी सांस्कृतिक देनको भुला चुका है। मैंने समझाते हुए कहा, "ऋषि मतबल औलिया या यूं कहें औलियासे भी बढ़कर वह पैगंबर हैं। उन्होंने हम नाउम्मीदोंको बड़ा ढाढ़स बंधाया है। पता नहीं कितनी किताबें लिखी हैं। उन्हें भी वतनसे बड़ा लगाव था। पैगंबर थे न, उनके सामने तो आनेवाला कल खुली किताब-सा स्पष्ट हो जाता है।" अहमद बीचमें बोल उठा, "अरे यार, तू जरा नहीं बदला। अरे उनका नाम तो बता।"

मैं कुछ लज्जित हुआ और बोला, "हां यार। मैं वैसा ही भुलक्कड़ हूं। उनका नाम है श्रीअरविंद।"

अहमद चौंका, "इनका नाम तो सुना है मैंने, अब्बा उनकी बड़ी तारीफ किया करते थे। वही न जो जेलमें गये, बड़ा मुकद्दमा चला, फिर सब छोड़-छाड़कर अल्ला वाले हो गये?"

मैं खुश हुआ। "हां, लेकिन उन्होंने वतनकी चिंता हमेशा की। भई, उन्होंने ऐसी बात कही है कि सुनकर तू बल्लियों उछलने लगेगा। सबसे पहले उन्होंने कहा था कि इस देशको उठना है, अपने स्वार्थके लिए नहीं, दुनियाकी सहायता करने, सब मुल्कोंको एक धागेमें बांध कर उनमें एका जगानेके लिए। तब जमीनपर जन्नत उतर आयेगी। यह सब करनेके लिए यह देश जीनेका नया तरीका ढूंढ़ेगा। असलमें उन्होंने उसे ढूंढ़ लिया है। वे कहते हैं कि हर आदमी पहले अपनी रूहको पहचाने और उसके हुकुमसे सब काम करे तो झगड़े, फसाद मिट जाएंगे।

जब हमारे देशके टुकड़े हुए तब उनसे कुछ संदेश मांगा गया। उन्होंने देशोंके मेल-मिलापकी बात कही और सबसे अच्छी बात यह कही कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान एक होकर रहेंगे। उनको एक होना ही पड़ेगा क्योंकि दोनोंकी रूह एक है।" मैंने जोड़ा, "जबतक यह नहीं होता तब तक दोनोंको तकलीफ ही तकलीफ झेलनी पड़ेगी।"

—अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धम्मपद्से

अचरित्वा ब्रह्मचरियं अलद्धा योब्बने धनं।
जिण्णकोंचा'व क्खायन्ति खीणमच्छे'व पल्लले ॥१०॥

जिन्होंने ब्रह्मचर्यका पालन नहीं किया है और जिन्होंने अपने यौवन कालमें सच्ची समृद्धि नहीं पायी है, वे मछलियोंसे रहित सरोवरके पास बूढ़े क्रौंच पक्षीकी तरह जान पड़ते हैं।

अचरित्वा ब्रह्मचरियं अलद्धा योब्बणे धनं।
सेन्ति चापातिखीणा'व पुराणानि अनुत्थनं ॥११॥

जिन्होंने ब्रह्मचर्यका जीवन नहीं विताया है और जिन्होंने अपने यौवन-कालमें सच्ची समृद्धिको नहीं पाया है, वे टूटे चापकी भांति हैं; वे अपनी खोयी हुई शक्तिपर रोते हैं।

यहां एक निश्चित बात है जो स्पष्टतासे नहीं कही गयी है, फिर भी बाकी सबसे कम महत्त्वपूर्ण नहीं है, वह यह है कि एक ऐसा बुढ़ापा भी है जो वर्षोंके संग्रहसे भी कहीं अधिक खतरनाक और कहीं अधिक वास्तविक है: वह है विकसित होने और प्रगति करनेकी अक्षमता।

जैसे ही तुम बढ़ना बंद कर देते हो, जैसे ही तुम प्रगति करना बंद कर देते हो, जैसे ही तुम ज्यादा अच्छा होना बंद कर देते हो, बढ़ना और विकसित होना बंद कर देते हो, अपने-आपको बदलना बंद कर देते हो, वैसे ही तुम सचमुच बूढ़े हो जाते हो, यानी, तुम विलयकी ओर गिरने लगते हो।

ऐसे युवक हैं जो बूढ़े हैं और ऐसे बूढ़े हैं जो युवक हैं। अगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे अंदर प्रगति और रूपांतरके लिये ज्वाला उठती है, अगर तुम सावधानीके साथ आगे बढ़नेके लिये, सब कुछ पीछे छोड़नेके लिये तैयार हो, अगर तुम नयी प्रगतिके लिये, नयी उन्नति, नये रूपांतरके लिये हमेशा खुले रहते हो तो तुम चिरयुवा हो। लेकिन अगर तुम जो पा चुके हो उसीसे संतुष्ट होकर बैठे रहो; अगर तुम्हें लगता है कि तुम अपने लक्ष्यतक पहुंच चुके हो और अब अपनी कमाईका फल खानेके सिवाय और कुछ करना-धरना नहीं है तो तुम्हारा आधेसे अधिक शरीर कब्रमें जा चुका है, यही जरा और सच्ची मृत्यु है।

जो कुछ किया जा चुका है वह उसकी तुलनामें कुछ भी नहीं है जो करनेके लिये बाकी है।

पीछे न देखो, सामने देखो, आगे, और आगे, हमेशा आगे।

(श्रीमातृवाणी खंड ३से)

हुदहुद और कौआ

हजरत सुलैमान बहुत बड़े पैगम्बर थे। वे जानवरों और परिन्दोंकी बोली समझ सकते और उनसे बातचीत भी कर सकते थे। सभी पक्षी उनकी सेवामें रहना गौरवकी बात समझते थे।

एक बार हुदहुदने कहा, "भगवान्, मेरी दृष्टि अपार है। मैं दूरसे उड़ते-उड़ते जमीनकी चीजोंको पहचान लेता हूं, पानीका और उसकी गहराईका पता लगा सकता हूं और यह बता सकता हूं कि उसका रंग, उसकी गंध और उसका स्वाद कैसा है।"

हजरत सुलैमानने कहा, "तब तो तुम हमारी सेनाके लिये बहुत उपयोगी हो सकते हो, तुम्हारी मददसे हमें कभी पानीकी कठिनाई न हो पायेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौएने ये बातें सुनीं तो ईर्ष्यासे जल उठा। दौड़ा-दौड़ा गया हजरत सुलैमानके पास और बोला, "हजरत, इसने आपको धोखा दिया है। अगर इसकी दृष्टि इतनी अच्छी होती तो यह बहेलियेके फंदेमें कैसे फंसता ?"

हजरत सुलैमानने हुदहुदको यही प्रश्न किया। उसने जवाब दिया "मेरी बातमें रत्तीभर कोर-कसर नहीं है लेकिन जब मौत आती है तो कुछ नहीं सूझता। तब सूरज भी काला दीखने लगता है।"

सुलैमान संतुष्ट हो गये और हुदहुद अपने नये पदपर बना रहा।

इसके साथ ही एक और कहानी सुन लीजिये। इजराईल मौतके फरिश्ते हैं। एक बार वह हजरत सुलैमानके दरबारमें आये और वहां बैठे हुए एक आदमीकी तरफ घूरकर देखा। आदमीने उन्हें पहचाना तो नहीं पर उनकी नजरसे ही उसके पेटमें पानी हो गया।

इजराईलके जानेपर उसने हजरत सुलैमानसे पूछा कि यह कौन था। उन्होंने परिचय दिया। आदमीने निवेदन किया, हजरत, मुझे बड़ा डर लग रहा है उसका, आप मुझे दूर देश हिन्दुस्तान भेज दीजिये। हजरतके लिये यह कोई मुश्किल काम न था। उन्होंने इच्छा की और वह हिंदुस्तान जा पहुंचा। अगली बार जब इजराईल मिलने आये तो हजरतने इस आदमीका जिक्र किया। वे बोले, मैं उसे घूर घूरकर देख रहा था क्योंकि इसकी मौत हिंदुस्तानमें लिखो थी और वह यहां आपकी शरणमें बैठा था। आपने उसे हिंदुस्तान भेजकर अच्छा ही किया। उसकी कर्मगति पूरी हो गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसे भगवान्के साथ ऐक्य प्राप्त है उसके लिये हर जगह भग-वान्का पूर्ण सुख और आनंद है। वह हर जगह और हर परि-स्थितिमें हमारे साथ रहता है।

—श्रीमां

चादर, शाल, दोशाले थोक खरीदनेके लिये पत्रव्यवहार करें।

यूनिक स्टोर्स

घास मंडी; लुधियाना

दूरभाष : २५४४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Love in her was wider than the universe,
The whole world could take refuge in her single heart.

Sri Aurobindo

Arvind Exports (P) Ltd.

Exporters of Engg. Goods, Pesticides, Chemicals, Ceramics, Readymade Garments & Handicrafts etc.

Calcutta Head Office :

75c, Park Street,
Calcutta - 700 016
INDIA

Bombay Office :

76, 77 Atlanta, Nariman Point
Bombay - 400 021
INDIA

Phones:

Offi: 240277 ● 240367
Resi: 814512
Telex: 011-4104
Gram: "ARVIEXPO"

Offi: 249065 ● 248642
Resi: 478368
Telex: 021-7984
Gram: "AUROEXPORT"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अगर मैं देश की सेवा करते हुए मर भी जाऊं तो भी मुझे इस बात का गर्व होगा। मुझे उम्मीद है कि मेरे खून की हर बूंद इस देश की प्रगति के काम आएगी और इसे मजबूती तथा गति प्रदान करेगी।"

30 अक्तूबर 1984 — श्रीमती इंदिरा गांधी

डि 84/170

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

१९८५ सोसायटीका रजत-जयंती वर्ष है। यह अपने-आपको फिरसे भगवान्के कार्यके लिए समर्पित करनेका अवसर है। हम पिछले अंकमें रजत जयन्तीके अवसरपर प्रस्तावित कार्योंके बारेमें एक पुस्तिका भेज चुके हैं, आशा है आपने उससे कुछ लाभ उठाकर इस वर्षके लिए कुछ कार्यक्रम बना लिया होगा। सोसायटीके सभापति कहते हैं :

"श्रीअरविंद सोसायटी अपनी रजत-जयन्ती मना रही है, इस अवसरपर सोसायटीद्वारा माताजी और श्रीअरविंदका काम करनेका अवसर पाकर मैं कृतकृत्य हो गया।

माताजीने कहा है कि धन्य है वह दिन जब अंततः धरती जाग्रत् होकर तुझे पहचानेगी और तेरे लिए ही जियेगी।

हम इसी सिद्धिके लिए कार्य करते हैं और इस शुभ अवसरपर अपने-आपको फिरसे इस कार्यके लिए समर्पित करते हैं।"

—पी. पी. नारायण

३ जनवरी नवजातजीका जन्म दिन है। हम इस अवसरपर कृतज्ञताके साथ उनका स्मरण करते हैं। वे सोसायटीके आरंभ १९६०से ही माताजीकी अध्यक्षतामें इसके लिए कार्य करते रहे, और अपने अंततक इसीमें लगे रहे।

सिंगापुरकी श्रीअरविंद सोसायटीने डा. नडकर्णीके सावित्री तथा गीता प्रबंधके बारेमें अनेक व्याख्यानोंकी व्यवस्था की।

डा. महेश्वरीने भारतके बहुतसे इलाकोंका दौरा करके माताजी और श्रीअरविंदकी शिक्षाके बारेमें भाषण दिये और स्वाध्याय शिविरोंकी व्यवस्था की।

सूरतमें श्रीअरविंद अध्ययन चक्र (द्वारा हंस फोटोग्राफी स्कूल, १२/३-११७ रानी तालाब, मेन रोड, सूरत—३९५००३)ने 'पूर्ण-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

योग [redacted]' नामक पुस्तक गुजराती और मराठीमें छापी है। जो [redacted]ाना चाहें वे डाक व्ययके लिए ३० पैसेके टिकट भेजकर उनसे मंगा लें। ये केंद्र निःस्वार्थ भावसे आसपासके गावोंमें भी काम करता है।

पिछले दो महीनोंमें सोसायटीके बहुतसे केंद्रोंमें विशेष कार्यक्रम हुए थे। यहां उन सबका वर्णन देना असंभव है।

घोषणा—पांडिचेरीमें डा. माहेश्वरीके तत्वावधानमें एक स्वाध्याय शिविर होगा जिसमें १५से २५ फरवरी १९८५तक श्रीअरविंदकी किसी पुस्तकका अध्ययन किया जायगा, उसपर मनन और प्रश्नोत्तर होंगे। जो लोग इसमें भाग लेना चाहें वे डा. महेश्वरी, श्रीअरविंद सोसायटी पांडिचेरी ६०५००२को लिखकर अपने नाम अंकित करवा लें।

अग्निशिखा और पुरोधा—सोसायटीके रजत जयन्ती वर्षमें माताजी और श्रीअरविंदके साहित्यका प्रचार प्रसार करना तो आप अवश्य चाहेंगे। अग्निशिखा और पुरोधा इस काममें आपकी सहायता कर सकती हैं। एक साथ या किस्तोंमें ४०० देकर आप उनके आजीवन सदस्य बन जाइये और औरोंकी भी बनाइये। नव वर्ष, तीज त्यौहार, ब्याह आदिके उपलक्ष्यमें अपने मित्रोंको, अपने यहांके विद्यालयों और पुस्तकालयोंको आजीवन सदस्य बनाइये। जो इतना न दे सकते हों वे २२ रु. वार्षिक देकर दोनोंके एक वर्षके लिए ग्राहक बन सकते हैं। हमारे अन्य प्रकाशनोंसे भी आप परिचित होंगे, उनके प्रचारमें भी सहायता कीजिये।

संपर्क सूत्र : संपादक अग्निशिखा एवं पुरोधा, पांडिचेरी ६०५००२।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

मई १९८५ वर्ष १५, अंक १०, पूर्णांक १७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

श्रीमाताजीकी प्रार्थना		१
संपादकीय : अग्नि हवामहे	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		४
त्रिकाल दृष्टि : प्रार्थना और ध्यान		८
छोटे बच्चोंके साथ व्यवहार		९
श्रीअरविंदकी शिक्षा और साधना-पद्धति		११
ऋषिवर बोले : साहस		१७
श्रीअरविंद-वाणी : त्रिकालदृष्टि		२०
अष्टसिद्धि		२१
शरीर-चतुष्टय		२५
कर्म-चतुष्टय या लीला -चतुष्टय		२६
योग-चतुष्टय या संसिद्धि-चतुष्टय		२६
शांति		३०
सकारात्मक समता		३१
कठिनाइयोंका सामना		३२
गीर्वाण-वाणी		आ० ३
सोसायटी समाचार		आ० ४

वार्षिक अग्निशिखा १०.००; पुरोधा १४.००; दोनों २२.००

आजीवन अग्निशिखा १७५.००; पुरोधा २२५.०० दोनों ४००.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :

संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजीकी प्रार्थना

"अपने प्रस्थानके समयसे सदा अधिकाधिक ही, हम समस्त वस्तुओं-में तेरा दिव्य हस्तक्षेप देख रहे हैं, सर्वत्र ही तेरा विधान अभि-व्यक्त हो रहा है और मुझे इस बातका आंतरिक विश्वास हो जाना चाहिये कि यह सहज और स्वाभाविक है, जिससे कि मैं आश्चर्य-पर-आश्चर्य न अनुभव करती रहूं ।

किसी भी क्षण मुझे ऐसा नहीं प्रतीत होता कि मैं तुझसे बाहर रहती हूं, और क्षितिज मुझे इतने विशाल और गहराइयां इतनी आलोकित और साथ ही इतनी अथाह पहले कभी प्रतीत नहीं हुईं। ओ दिव्य गुरु! वर दे कि हम पृथ्वीपर अपने कार्यको अधिकाधिक जान जायं और अधिक-से-अधिक अच्छी तरह संपन्न कर सकें, हम अपने अंदरकी समस्त शक्तिका पूर्णतया उपयोग करें, और तेरी सर्वोच्च उपस्थिति हमारी आत्माकी नीरव गहराइयोंमें, हमारे समस्त विचारों, भावों तथा कर्मोंमें उत्तरोत्तर पूर्ण रूपसे व्यक्त हो ।

तुझे इस प्रकार संबोधन करना मुझे कुछ विचित्र-सा लगता है, क्योंकि तू ही तो मेरे अंदर निवास करता है, विचार करता है और प्रेम करता है।"

मार्च २८, १९१४

('प्रार्थना और ध्यान'से)

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय :

अग्निं हवामहे

आज पाठकोंसे अंतरंग मित्रोंकी तरह गुफ्तगू करनेको जी चाहता है।

हो सकता है कि जो बात कहने जा रही हूं, वह कइयोंको परी-कथा या शेखचिल्लीकी उड़ान भर लगे किंतु जो लोग उस अदृश्य, मानवको आकर्षण और विकर्षणके झूलेमें डालनेवाले गुह्य जगत्के ज्ञाता हैं, उनका कहना है कि उस विशाल अज्ञात जगत्में यह बात उतनी ही सच है, जितना हमारे जगत्का सूर्योदय।

सृष्टिके आरंभसे पहले परम पुरुषने सृजन करनेकी कामना की। कामनाके साथ-ही-साथ भागवत करुणा उनके अंदरसे निकलकर सामने आ खड़ी हुई। परम पुरुषने उसे सृजन करनेकी प्रेरणा दी और करुणाने अपने अंदरसे चार सत्ताओंको रूप दिया। वे थीं, प्रकाश, जीवन, चेतना और प्रेमकी सत्ताएं। करुणाने उन्हें पूर्ण स्वतंत्र होकर रचना करनेका आदेश दिया। प्रारंभमें वे करुणाकी ओर अभिमुख होकर, उससे मिलकर काम करने लगीं किंतु बादमें प्रत्येकके अंदर गर्व जागा। वे सोचने लगीं सचमुच निर्माता तो हम ही हैं और करुणासे मुंह मोड़कर उन्होंने अपनी-अपनी अलग रचना शुरू की। परिणाम भयंकर आये क्योंकि जैसे कोई प्रकाशकी ओर पीठ कर दे तो उसके मुखपर अंधेरा छा जाता है, वैसे ही ये सत्ताएं अंधकारमें जा गिरीं। अब जीवन मृत्युमें, चेतना निश्चेतनामें, प्रेम घृणामें और प्रकाश अंधकारमें परिणत हो गया। तबसे हमारी यह सृष्टि अपने मूल स्रोत, परमकी खोजमें भटक रही है।

भागवत करुणाने जब सृष्टिकी यह दशा देखी तो उनका मातृ-हृदय द्रवित हो उठा और उन्होंने देवोंकी सृष्टि की, किंतु देव सहायता तो दे पाते थे, परंतु जो दिव्य सत्ताएं आसुरिक बन गयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं उन्हें बदल न सकते थे और न ही नष्ट कर पाते थे। तब जगत्-जननीने सृष्टिके इस अंधकारमें अव्यवस्था, अस्तव्यस्तता और कोलाहलमें छलांग मारी। उनके इस बलिदान और प्रयासके कारण प्रकाश और जीवन फिरसे अपने दिव्य रूप धारण करके भागवत सेवामें लगे हैं, प्रेम अपने-आपको परिवर्तित करनेमें असमर्थ पाकर उस भागवत करुणामें विलीन हो गया। निश्चेतना दिव्य अवतरणके कारण अभी अपने-आपको वदलनेकी प्रक्रियामें है और उसका दूसरा रूप जो असत्यका रूप धारण किये हुए सत्य था, अब भी अपने-आपको वदलनेके लिये तैयार नहीं है। उसने हमारे जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें अपने पैर फैला रखे हैं।

आजकल हमारी नैतिकता गुमराह होकर भटक रही है। हमारा पारिवारिक जीवन संघर्षोंसे घिरा है। सामाजिक जीवनमें आदर्श नहीं, श्रेष्ठता नहीं, महत्त्व है तो वस धनका। रहा राजनीतिक जीवन, तो उसकी अवस्था किससे छिपी है!

इस समय हम क्या करें? हमारा दायित्व स्पष्ट है। जो लोग जीवनमें सचाई लानेकी कोशिश कर रहे हैं, उन्हें सहायता पहुंचाना हमारा कर्तव्य बन गया है। जीवनके जिस किसी क्षेत्रमें सचाई, ईमानदारी, सदाचार लानेमें जो रत हैं उन सबका हाथ बंटाकर हम भागवत सेवा कर सकते हैं।

भारतमें आज एक नयी हवा बह रही है, नया आदर्श जाग उठा है, हम उसका हार्दिक स्वागत करें, उसकी मददके लिये तत्पर रहें।

हम सुमित्रानंदन पंतके शब्दोंमें अग्निपरीक्षाका स्वागत करें:

"धरती यज्ञ कुंड है जाग्रत्!
पावन जीवन पावकका
मैं करता स्वागत!"

—अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनान्दिनी

मई

१. अपने विश्वासको बनाये रखो, अगर यह तुम्हारे जीवनको बनानेमें सहायता करे, लेकिन यह भी जानो कि यह केवल एक विश्वास है, दूसरे विश्वास भी तुम्हारे विश्वासके जितने अच्छे और सच हैं।

२. सहन करना श्रेष्ठ भावोंसे भरपूर होना है; इसका स्थान पूर्ण समझको लेना चाहिये।

३. प्रभो, तेरे निकट होनेके लिये, तेरे योग्य बननेके लिये, व्यक्तिको अपमानके चषक-पर-चषक खाली करने होंगे और फिर भी अपमानित नहीं अनुभव करना होगा।

व्यक्तिका अपमान उसे सचमुच मुक्त करता और केवल तेरा बननेके लिये तैयार करता है।

४. हममेंसे हर एकके अंदर बहुत-से 'व्यक्तित्व' होते हैं। अगर ये व्यक्तित्व मेल खायें, एक-दूसरेके पूरक हों, तो इनसे मनुष्य एक समृद्ध और जटिल "व्यक्ति" बनता है। लेकिन सामान्यतः यह नहीं होता। ये व्यक्तित्व एक-दूसरेके साथ मेल नहीं खाते। उदाहरणके लिये उनमेंसे एक कुछ प्रगति करना, अधिकाधिक पूर्ण बनना, चीजोंका अधिक गहरा ज्ञान पाना, अधिक-से-अधिक चरितार्थ करना और सत्ताकी पूर्णताकी ओर बढ़ना चाहता है तो हो सकता है दूसरा, जहांतक हो सके, केवल मौज-मजा करना चाहता है। अगर व्यक्तित्व मेल न खाये तो जीवन असंगत होगा।

५. सफल (सामंजस्य व्यक्तित्व पानेमें) होनेके लिये तुम्हें सचेतन रूपसे चैत्य पुरुषको केंद्र बनाकर उसके चारों ओर अन्य व्यक्तित्वोंको व्यवस्थित करना और उनमें सामंजस्य लाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये। सच्चा सामंजस्य और आंतरिक व्यवस्था ऐसे ही सतत प्रयासका परिणाम होती है।

६. अगर तुमने कोई ऐसा काम किया है जो तुम्हें नहीं करना चाहिये था, तो तुम्हें स्वयं अपने सामने उसे स्वीकार करना चाहिये; अगर तुम्हारे अंदर कोई असराहनीय गतिविधि उठी हो तो तुम्हें उसकी ओर सीधा देखकर अपने-आपसे कहना चाहिये, "यह अच्छा नहीं था, यह घृणास्पद था।"

७. बालक बहुत छोटी उम्रसे ही सतर्कताके साथ अपने-आपको परखना शुरू कर दे, ईमानदारीके साथ अपना निरीक्षण करे, ताकि वह न तो अपने-आपको धोखा दे, न ही दूसरोंको धोखा दे, तो यह उसकी आदत बन जायगी और वह बादके बहुत सारे संघर्षोंसे बच जायगा।

८. तुम्हें स्वयंपर इतना काबू होना चाहिये कि तुम बच्चेको कभी न डांटो, चाहे उससे बहुत कीमती और प्रिय वस्तु भी क्यों न टूट जाय। तुम्हें पूछना चाहिये, "कैसे किया, क्या हुआ", ताकि अगली बार वह सावधान रहे। तुम देखोगे कि बच्चा तुम्हें धोखा देनेके बदले तुम्हारे प्रति सच्चा और निष्कपट होगा।

९. तुम्हें बच्चेको इतना समझाना है कि सत्तामें एक आभिजात्य, एक महान् शुद्धता, सौंदर्यके लिये महान् प्रेम होता है जो इतना शक्तिशाली होता है कि अधिक-से-अधिक धूर्त और अपराधी व्यक्ति भी सचमुच सुन्दर, वीरतापूर्ण या निःस्वार्थ कार्यको स्वीकार करनेको बाधित होता है।

१०. मेरे ख्यालसे किसीके लिये वफादार और ईमानदार हुए विना पूरी तरहसे सच्चा और निष्कपट बनना बहुत ही कठिन है।

११. अपनी चैत्य सत्ताको पानेका अर्थ है एक तरहका दृढ़ विश्वास, चैत्य सत्ताके अस्तित्वपर श्रद्धा।

१२. लक्ष्यका होना पर्याप्त नहीं है। हमेशा अपनी गतिविधियोंके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूलमें जानेकी कोशिश करते हुए लक्ष्यको पानेका संकल्प होना चाहिये।

१३. आत्म-प्रभुत्वका अर्थ है अपने और अपनी गतिविधिके बारेमें सचेतन होना, वही करना जिसे करनेका तुमने निश्चय किया है, वह नहीं जिसे दूसरे करवाना चाहते हैं।

१४. कठिनाइयोंसे भागना उन्हें पार करने या उनपर विजय पानेका तरीका नहीं है। अगर तुम दुश्मनसे दूर भागो तो उसे हरा नहीं पाओगे; लेकिन उसे तुम्हें हरानेका पूरा अवसर मिलेगा।

१५. श्रद्धा हो तो व्यक्ति कुछ भी, कुछ भी कर सकता है। लेकिन वह शुद्ध श्रद्धा होनी चाहिये, उसमें व्यक्तिगत प्रतिक्रिया या इच्छाका मिश्रण नहीं होना चाहिये।

१६. सपने तुम्हारी चेतनाकी वर्तमान अवस्था बता सकते हैं, और साथ-ही-साथ यह भी दिखा सकते हैं कि अवचेतनमें चीजें कैसे मिलती हैं, कौनसे पार्थिव प्रभाव होते हैं, वे कैसी छाप छोड़ जाते हैं। यह अध्ययन करनेका बहुत ही रुचिकर विषय है।

१७. सोनेसे पहले अगर तुम अपने-आपको बहुत ही धीरेसे शिथिल छोड़ दो तो सोते हुए तुम्हें महान् आनन्द मिलेगा। अगर तुम तनावभरी स्नायुओंसे सोओगे तो तुम्हारी नींद बहुत अशांत होगी और रातमें तुम कई करवटें बदलोगे।

१८. सबसे पहली चीज यह ढूंढ़ना है कि वह क्या है जिसे चरितार्थ करनेके लिये तुम हो, तुम्हें कौन-सी भूमिका निभानी है, तुम्हारा विशेष उद्देश्य क्या है, वे क्षमताएं या गुण कौनसे हैं जिन्हें तुम्हें अभिव्यक्त करना है।

१९. जबतक तुम अपनी सत्ताके सत्यको नहीं पा लेते तबतक उस सच्ची चीजको जाननेकी आशा कैसे कर सकते हो जिसे तुम्हें चरितार्थ करना है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०. भगवान् हर जगह, हर चीजमें हैं। तुम्हें यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिये, क्षण भरके लिये भी यह न भूलना चाहिये।

२१. पूर्ण निष्कपटता, पूर्ण ईमानदारी और तुम जो कुछ करो उसमें गरिमाका भाव, ताकि तुम चीजको उसी तरह करो जिस तरह करना चाहिये।

२२. लोग तुम्हारे बारेमें जो द्वेषपूर्ण बेवकूफियां कहते हैं अगर तुम उनसे परेशान, उद्विग्न या हतोत्साह हो जाते हो तो तुम पथपर बहुत आगे न बढ़ पाओगे।

२३. सोनेसे पहले कोई मंत्र या शब्द जपना या प्रार्थना करना अच्छा है।

२४. अब चलो कामपर।
धैर्य, सहिष्णुता, पूर्ण समता और निरपेक्ष श्रद्धा।

२५. तुम्हारे लिये बस एक ही रास्ता है। वह है पूर्ण, समग्र और बिना शर्तके समर्पणका।

२६. मेरा मतलब है, न केवल अपनी क्रियाओं, कर्म, महत्त्वाकांक्षाओं-को छोड़ देना बल्कि अपने सभी भावोंको भी छोड़ देना है यानी तुम जो करते हो, तुम जो हो, वह सब ऐकांतिक रूपसे भगवान्के लिये हो।

२७. एक बार तुम सभी बाहरी सत्ताओं और चीजोंकी आसक्ति छोड़ दो, तो तुम तुरंत अपने हृदयमें उस परम उपस्थिति, उस परम शक्ति, उस परम कृपाका अनुभव करते हो जो हमेशा तुम्हारे साथ होती है।

२८. हर क्षण यह जाननेके लिये कि क्या करना चाहिये, कैसे करना चाहिये, बाहर सहारा ढूंढ़नेकी जगह अगर तुम अन्दर, भागवत ज्ञानपर एकाग्र होओ और प्रार्थना करो, स्वयं जो कुछ हो, उसे दे दो, जो कुछ करो पूर्णता पानेके लिये करो, तो तुम अनुभव करोगे कि सहारा मौजूद है, रास्ता दिखा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२९. कोई समस्या आये तो उससे युद्ध करनेकी इच्छाके स्थानपर तुम उसे परम प्रज्ञाके हवाले कर दो—कि वह सभी दुर्भावनाओं, गलतफहमियों, बुरी प्रतिक्रियाओंके साथ जो उचित है, वह करे।

३०. आदमी पूजा करनेसे इसी शर्तपर अलग रह सकता है कि वह अपने-आपको बदले, लेकिन बहुत-से ऐसे हैं जो न तो बदलना चाहते हैं, न पूजा करना।

३१. किसी उद्देश्यकी विजयके लिये हिंसा कभी बहुत अच्छा साधन नहीं होती। कोई अन्यायद्वारा न्याय, घृणाद्वारा सामंजस्य प्राप्त करनेकी आशा कैसे कर सकता है?

प्रार्थना और ध्यान

मेरा पिछले कुछ दिनोंका अनुभव कैसा अजीब है। मैं उसके बारेमें सोचना, अपनी ओर ध्यानको मोड़ना नहीं चाहती थी बल्कि हमेशाकी तरह या तो हाथमें लिये हुए काम या तेरे दिव्य प्रेममें तल्लीन रहना चाहती थी। लेकिन मैं इस दर्शनके कारण ऐसा नहीं कर सकती जो इतना नया है, जिसके कारण समस्त आधार-का विलोपन, अपने अंदर समस्त वौद्धिक नींवका विलोपन हो गया है, न संवेदनों और भावोंका बाह्यतम केंद्र और न ही तेरी दिव्य उपस्थितिका गहरे-से-गहरा केंद्र बल्कि जिससे मेरी सत्ताका मध्यवर्ती या मानसिक केंद्र बना था वह विलीन हो गया है, उड़ गया है, ठीक उसी तरह जैसे पिछली गरमियोंमें संवेदी और संवेगात्मक केंद्र लुप्त हो गये थे। मैंने इसे पिछली गरमियोंमें दुःख-कष्टके रूपमें अनुभव किया था किंतु मैं समझ पायी थी और बौद्धिक केंद्र अविचलित बना रहा था; मैं दृढ़तापूर्वक निर्वैयक्तीकरणके कार्यके समाप्त होनेकी प्रतीक्षा कर रही थी। अब ऐसा लगता है कि मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न कुछ जानती हूं न समझती हूं, मानों अपनी गहरी अनुभूतिको व्यवस्थित करने, अभिव्यक्त करने, उसका संश्लेषण करने और उसे समझनेकी शक्ति गंवा दी हो। ऐसा प्रतीत हो रहा है मानों मेरी चेतना मुझे छोड़ गयी हो। मुझे दुःख-कष्ट नहीं हो रहा—मानों मैं एक अथाह खाईके ऊपर लटक रही हूं। मुझे डर नहीं लगता क्योंकि सचमुच मुझे अपने जीवनकी कोई चिंता नहीं है और मैं इस बारेमें बिलकुल उदासीन हूं कि मैं जीती हूं या गायब हो जाती हूं। लेकिन जो कुछ भी हो रहा है उसमें मेरे अंदर कोई चीज बहुत रुचि ले रही है। मेरा ख्याल है कि निर्वैयक्तीकरणके कार्यको पूरा करनेके लिये चेतनाके इस केंद्रके विलयन और वह जिसे सोचनेकी और समझनेकी आदत है, इन दोनोंके बीच एक तरहका संघर्ष चल रहा है।

अगर मैं सारे प्रतिरोध छोड़ पाऊं तो सब कुछ कितना सरल हो जायेगा। काश! मैं तेरे चरणोंपर अपने-आपको निछावर कर दूं और संपूर्ण समर्पणमें, पूर्ण आत्मविस्मृतिकी शान्त निद्रामें जा गिरूं!

हे प्रभु, तेरी अपरिवर्तनशील शांतिकी मधुरिमा . . .

६ अप्रैल, १९१४ —माताजी

छोटे बच्चोंके साथ व्यवहार

(बच्चोंको डांटनेके और उनके रूठनेके बारेमें बातचीत हो रही थी तो माताजीने कहा) :

मेरा ख्याल है कि तुम्हें बच्चोंकी इन छोटी-मोटी बातोंको महत्त्व न देना चाहिये। इससे उन्हें प्रोत्साहन मिलता है। तुम्हें उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर ध्यान न देना चाहिये। इस तरह न देखो मानों तुम उन्हें कोई महत्त्व दे रहे हो। महत्त्व देनेकी अपेक्षा, उन्हें महत्त्व न देना उनसे पिंड छुड़ानेका ज्यादा अच्छा उपाय है। इन अहंकारभरी बातोंपर जरा भी महत्त्व न दो। उनकी ओर ऐसे देखो मानों तुमने उनपर नजर भी न डाली हो। इससे उन चीजोंका मनोवैज्ञानिक समर्थन हट जाता है। अगर कोई बच्चा रूठ जाय तो उसकी ओर ध्यान न दो। इससे रूठनेका सारा प्रभाव ही जाता रहता है। समझे ?

जी, माताजी।

बच्चे सहज रूपसे अपनी ओर ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं, जैसे वह बालक जो छतपर सिपाही होनेका अभिनय करता है। तुम्हें इन चीजोंको महत्त्व न देना चाहिये। उन्हें डांट न पिलाओ और उनकी ऐसी बातोंकी ओर ध्यान भी न दो।

बच्चे दुर्बल प्राणी होते हैं और वे सोचते हैं कि कुछ ऊटपटांग चीज करके वे अपनी ओर तुम्हारा ध्यान खींच सकते हैं। उन्हें यह पता लगना चाहिये कि यह चाल नहीं चलती।

हमें उन्हें डांटना भी नहीं चाहिये ?

हां, डांट तो हर्गिज नहीं। उन्हें बिलकुल न डांटो। डांट-फटकार करनेसे अध्यापक भी उतना ही बुरा बन जाता है। अगर वह आपेसे बाहर हो जाता है तो इसका अर्थ यह है कि वह भी विद्यार्थीके स्तरपर ही है।

ऐसी ही एक और मजेदार घटना है। एक छोटा बच्चा औरोंपर रौब गांठनेके लिये बच्चोंसे कह रहा था, मेरे मां-बाप हमेशा रेलके पहले दर्जेमें चला करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना इरादेके किसीने यह बात माताजीको सुना दी। माताजीने इसे बहुत गंभीरतासे लिया और पूछा, "तुमने कुछ कहा इसपर?"

जी नहीं।

तो अब कहो। उस बच्चेको और उसके साथियोंको इकट्ठा करके उन्हें समझाओ कि यहां हम पैसे या ऊपरी शान-शौकतको महत्त्व नहीं देते। महत्त्व इस बातका है कि तुम भगवान्के लिये क्या करते हो।

श्रीअरविंद्की शिक्षा और साधना-पद्धति

इस योगमें इसके सिवा और कोई तरीका नहीं है कि एकाग्र होओ, ज्यादा अच्छा तो यह है कि हृदयमें एकाग्र होओ और माताजीकी उपस्थिति और शक्तिका आह्वान करो कि वह आकर तुम्हारी सत्ताको ले ले और अपनी शक्तिद्वारा चेतनाका रूपांतर करे। तुम सिर या भौंहोंके बीच भी एकाग्र हो सकते हो लेकिन बहुतोंके लिये यह ज्यादा कठिन उद्घाटन होता है। जब मन अचंचल और स्थिर हो जाता है और एकाग्रता प्रबल हो जाती है और अभीप्सा तीव्र होती है तो फिर अनुभूतिका आरंभ होता है। श्रद्धा जितनी अधिक होगी परिणामकी भी उतनी ही तेजीसे आनेकी संभावना होती है। बाकीके लिये तुम्हें अपने ही प्रयासपर निर्भर नहीं रहना चाहिये बल्कि भगवान्के साथ नाता जोड़नेमें और माताजीकी शक्ति और उपस्थितिके लिये ग्रहणशीलता स्थापित करनेमें सफल होना चाहिये।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-आपको माताजीके प्रति खुला रखो, उन्हें हमेशा याद रखो और अन्य सभी प्रभावोंको त्यागते हुए केवल उन्हींकी शक्तिको अपने अंदर काम करने दो। योगके लिये यही नियम है।

*

चैत्य रूपसे माताजीकी ओर खुला रहनेसे, कामके लिये या साधनाके लिये जो कुछ जरूरी है वह उत्तरोत्तर होता जायगा। यह साधनाके मुख्य रहस्योंमेंसे एक, केंद्रीय रहस्य है।

अपने-आपको माताजीके हाथोंमें सौंप दो

यह मान लेना बहुत बड़ी भूल है कि तुम अपने निजी प्रयाससे पूर्णयोग कर सकते हो। उसके सभी पहलुओंको चरितार्थ और पूरा कर सकते हो। कोई मनुष्य यह नहीं कर सकता। तुम्हें करना यह चाहिये कि अपने-आपको माताजीके हाथोंमें सौंप दो और सेवाद्वारा, भक्तिद्वारा, अभीप्साद्वारा अपने-आपको उनके प्रति खोलो। तब माताजी अपने प्रकाश और अपनी शक्तिसे तुम्हारे अंदर काम करती हैं ताकि साधना हो सके। एक बड़ा पूर्ण योगी या अतिमानव सत्ता बननेकी महत्त्वाकांक्षा, और अपने-आपसे यह पूछना कि मैं इस दिशामें कहांतक जा पहुंचा यह भी गलत है। सच्ची मनोवृत्ति तो यह है कि माताजीके लिये भक्ति करो, अपने-आपको उन्हें दे दो और यह चाहो कि तुम वही बनो जो वे तुम्हें बनाना चाहती हैं। तुम्हारे अंदर बाकी जो करना या निर्णय करना है वह माताजीके हाथमें है।

*

यहां योगी, संन्यासी, तपस्वी होना लक्ष्य नहीं है। लक्ष्य है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपांतर। और रूपांतर वही शक्ति कर सकती है जो तुम्हारी अपेक्षा अनंतगुना बड़ी हो। यह दिव्य जननीके हाथोंमें सचमुच बालकके समान हो जानेसे ही संभव है।

*

अगर तुम यह रूपांतर चाहते हो तो अपने-आपको माताजी और उनकी शक्तिके हाथोंमें सौंप दो, किसी वितण्डा या प्रतिरोधके बिना उन्हें बिना किसी बाधाके अपने अंदर काम करने दो। तुम्हारे अंदर तीन चीजें होनी चाहिये, चेतना, नमनीयता और अबाध समर्पण। तुम्हें अपने मन और अंतरात्मा, हृदय और प्राणमें, शरीरके अणु-अणुमें सचेतन होना चाहिये। तुम्हें माताजी और उनकी शक्तियों तथा उनके बारेमें अभिज्ञ होना चाहिये। वे यद्यपि तुम्हारे अंधेरे-में, तुम्हारे अचेतन भागों और क्षणोंमें कार्य करती और कर सकती हैं लेकिन वही चीज नहीं होती जैसी तब होती है जब तुम उनके साथ जीवित-जाग्रत् संपर्कमें हो। तुम्हारी सारी प्रकृति उनके स्पर्शके प्रति नमनीय होनी चाहिये। जैसे आत्मनिर्भर अज्ञानी मन प्रश्न करता, शंका करता और झगड़ता है, जैसे वह बोध और परिवर्तनका शत्रु होता है उस तरह मत करो। अपनी ही गतिविधिपर हठ न करो, जैसे मनुष्यका प्राण हठ करता है और आग्रहके साथ अपनी दुर्दान्त कामनाओं और दुर्भावनाको लेकर हर भागवत प्रभावका विरोध करता है। जिस तरह मनुष्यकी भौतिक चेतना बाधा देती है, अपनी क्षुद्रता और अपने अंधकारके साथ चिपकी रहती है, उसकी आत्महीन नित्यचर्या, मन्द आलस्य, या निष्क्रिय तन्द्राके विरुद्ध जरा-से स्पर्शसे ही चीखने-चिल्लाने लगती है उसी तरह बाधा न दो, तमस् और जड़तामें गड़े न रहो। तुम्हारी आंतरिक और बाह्य सत्ताका अबाध समर्पण तुम्हारी प्रकृतिके सभी भागोंमें नमनीयता लायेगा; प्रज्ञा, प्रकाश, शक्ति, सामंजस्य, सुन्दरता और ऊपरसे प्रवाहित

3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होनेवाली पूर्णताके प्रति सतत उद्घाटन तुम्हारे अंदर सब जगह चेतनाको जगायेगा। शरीर भी जाग जायेगा और अंतमें अपनी चेतनाको, जब वह अंतर्लीन न रहेगी, अतिमानसिक अतिचेतन शक्तिके साथ एक कर देगा। ऊपर-नीचे, इधर-उधरसे उसकी शक्तियोंको फैलते हुए अनुभव करोगे और परम प्रेम और आनंदसे पुलकित हो उठेगा . . .

*

पार्थिव चेतनाके क्रम-विकासमें अतिमानसिक परिवर्तन नियत और अनिवार्य वस्तु है; क्योंकि उसके आरोहणका अंत नहीं हुआ है और मन उसका अंतिम शिखर नहीं है। परिवर्तन आ सके, रूप ले, बना रह सके, इसके लिये नीचेसे पुकारकी आवश्यकता है जिसके साथ ऐसी इच्छा होनी चाहिये कि जब प्रकाश उतरे तो वह उसे मान्यता दे, उसे अस्वीकार न करे और ऊपरसे परम प्रभुकी स्वीकृतिकी भी आवश्यकता है। जो शक्ति स्वीकृति और पुकारका माध्यम होती है वह है भागवत मांकी उपस्थिति और शक्ति। मांकी शक्तिके सिवाय और कोई मानव उद्यम और तपस्या अकेले ढक्कनको तोड़कर, परदेको फाड़कर, पात्रको सुडौल बनाकर अंधकार, मिथ्यात्व, मृत्यु और दुःख दर्दके इस जगत्में सत्य, प्रकाश, भागवत जीवन और अमरताका आनंद नहीं उतार सकती।

स्वीकृति

इस जगत्की समस्त लीला व्यक्तिगत सत्ताकी अमुक सापेक्ष मुक्त इच्छापर निर्भर है। यहांतक कि साधनामें भी यह बात बनी रहती है और हर पगपर उसकी स्वीकृति आवश्यक होती है—भगवान्के प्रति समर्पण करके वह अज्ञान, अलगाव और अहंसे छुटकारा पाता है, फिर भी हर कदमपर वह स्वेच्छापूर्वक समर्पण होना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागवत कृपा और शक्ति सब कुछ कर तो सकती है लेकिन साधककी पूर्ण स्वीकृतिके साथ ही। उस पूर्ण स्वीकृतिको देना सीखना ही साधनाका संपूर्ण अर्थ है। मनमें विचारों, प्राणमें कामनाओं या भौतिक चेतनामें जड़ताके कारण इसमें समय लग सकता है लेकिन सहायताद्वारा या क्रियामें भागवत शक्तिको पुकारकर इन चीजोंको हटाया जा सकता है, इन्हें हटाना ही होगा।

*

मुख्य जोर शक्तिपर होना चाहिये लेकिन साधककी सक्रिय स्वीकृति आवश्यक है, कुछ चीजोंमें शक्तिके यंत्रके रूपमें उसकी इच्छाकी भी आवश्यकता हो सकती है।

इच्छा

शक्ति . . . तबतक कोई निश्चित और चिरस्थायी फल नहीं लाती जबतक साधकके अंदर प्राप्त करनेकी इच्छा और संकल्प न हो।

*

इच्छा चेतनाका एक भाग है और उसे मनुष्योंमें प्रकृतिकी गतिविधियोंको वशमें रखनेके लिये मुख्य माध्यम होना चाहिये।

*

अगर इच्छाका सतत उपयोग हो तो बाकी सत्ता, चाहे जितनी धीरे हो, इच्छाकी आज्ञा मानना सीख लेती है। तब क्रियाएं प्राणिक आवेगों और कामनाओंके नहीं बल्कि इच्छाके अनुरूप होती हैं।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर तुम अपनी इच्छाका प्रयोग न कर सको तो एक ही रास्ता है—वह है शक्तिको पुकारना, केवल मनसे या मानसिक शब्दसे पुकारना भी एकदम निष्क्रिय होने और अपने-आपको प्रहारके सुपुर्द कर देनेसे कहीं ज्यादा अच्छा है—चाहे वह तुरंत सफल न भी हो फिर भी मानसिक पुकार शक्तिको लाने और चेतनाके फिरसे खुलनेका परिणाम ला सकती है, क्योंकि सब कुछ उसपर निर्भर है। बहिर्मुख चेतनामें अंधकार और दुःख-दर्द हमेशा रह सकते हैं, अंतर्मुखी चेतना जितना अधिक शासन करेगी ये चीजें उतनी ही अधिक पीछे धकेली और बाहर निकाली जायेंगी। या पूरी तरह अंतर्मुखी चेतनाके साथ ये रह ही नहीं सकतीं—अगर वे आयें फिर भी उन बाहरी स्पर्शोंकी तरह आयेंगी जो सत्तामें टिक नहीं सकते।

*

यह हमेशा याद रखो कि भागवत शक्ति मौजूद है, कि तुमने उसका अनुभव किया है और, यद्यपि . . . चाहे तुम्हें यह लगे कि तुम कुछ समयके लिये चेतना खो रहे हो, चाहे वह तुम्हें कोई दूरकी चीज लगे, फिर भी वह मौजूद है और उसका विजयी होना निश्चित है। जिन्हें शक्तिने छू दिया है और अपनी शरणमें ले लिया है वे उसी समयसे भगवान्‌के बन जाते हैं।

(बुलेटिन अगस्त ८२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषिवर बोले :

साहस

वन्दना कुछ उतावलीमें थी। ऋषिवर अभी बैठ भी न पाये थे कि उसने एक प्रश्न दाग ही तो दिया, "ऋषिवर! एक बात मेरे दिमागको चकरा रही है। शास्त्रोंमें, सदाचार, सद्व्यवहारकी पुस्तकोंमें और महापुरुषोंकी जीवनियोंमें सब जगह साहसके गुणगान पढ़े हैं। आपसे, मां-बापसे और सभी बड़े-बूढ़ोंसे निर्भय और साहसी बननेके उपदेश पाये हैं पर मैं जब कभी साहसकी ओर पैर बढ़ाना चाहती हूं तभी चारों ओरसे न-कार सुनायी देता है मानों मैं किसी कुएमें कूदनेके लिये पर तोल रही हूं। इसका क्या कारण है और इसके प्रति मेरी क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिये ?

ऋषिवरने कहा, साहस एक दैवी गुण है परंतु और सब गुणोंकी तरह यह सत्य पथपर न रहे तो आसुरी भी बन सकता है। अभिमन्यु दैवी साहसके कारण ही कौरव अक्षौहिणियोंके बीचमें घुस गया और हारकर भी अपना नाम अमर कर गया। दूसरी ओर सुन्द उपसुन्द जैसे साहसी वीरोंने अपना ही सर्वनाश कर डाला।

साहस मुख्य रूपसे प्राणका गुण है। साहस जिस ओर मुंह करे उसीके अनुसार बन जाता है, इसके बहुतसे प्रकार होते हैं। व्यक्तिगत साहस, जैसे कोई आदमी अपने किसी साथीको मुसीबतमें देखकर उसे बचानेके लिये संकटमें कूद पड़ता है। दूसरा होता है सामुदायिक साहस जिसमें एक मनुष्यपर कठिनाई आते देखकर एक पूरा-का-पूरा समुदाय उसकी रक्षा करनेके लिये दौड़ पड़ता है। इस समुदायमें अनेकों जन्मजात भीरू होते हैं परंतु समुदायका अंग बनकर वे भी साहसके नशेमें धुत हो जाते हैं। इस प्रकारके बहुतेरे दृष्टांत हमें युद्धोंमें या सार्वजनिक विपदाओंके समय दिखायी देते हैं। झांसीकी रानी, गुरु गोविन्द और हमारे कालमें गांधी जी तथा पंडित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेहरू, सरदार पटेल जैसे वीरोंने हजारों भीरुओंमें साहस उंडेला था।

लेकिन यह साहस एकांगी होता है, ऐसे उदाहरण देखे गये हैं कि बड़े-बड़े वीर सेनानी बिल्लीसे या अंधेरेसे डरते थे। ऐसे लोग भी विरल नहीं हैं जो क्रुद्ध भीड़का साहसके साथ सामना कर सकते हैं परंतु अपने साथियोंकी निन्दा नहीं सह सकते, उसके सामने उनका साहस काफूर हो जाता है।

सच्चा, सर्वांगीण साहस अंतरात्मामें होता है। उसे अपने भागवत संपर्कका पता होता है और उसे मालूम होता है कि 'हक निगहबान है तो क्या डर है'।

एक निम्न प्रकारका साहस भी होता है जिसे साहस न कहकर हठ या दुराग्रह कह सकते हैं। अगर एक गुजराती मुहावरेका प्रयोग किया जाय तो इसे गधेकी पूंछ पकड़ना कहा जा सकता है। इसमें बुद्धिपर ताला डालकर आदमी डट जाता है, गधा चाहे जितनी लात लगाये फिर भी वह उसे नहीं छोड़ता और किस उद्देश्यसे? केवल अपनी बात रखनेके लिये।

ऋषिवर जरा रुके कि एक लड़कीने जिसे वहांके सब सदस्य ६० नम्बर कहा करते थे, क्योंकि वह अपनी तथा औरोंकी आशासे बहुत बढ़-चढ़कर परीक्षामें ६० प्रतिशत अंक ले आयी थी, अपने अनुरूप एक छोटा-सा प्रश्न पूछ लिया। ऋषिवर, मुझे ऐसे लोगोंसे पाला पड़ा है जो अपने-आप बड़े साहसी हैं, जो अंधेरी रातमें भुतहा रास्तोंपर, भूत-बाधासे ग्रस्त मकानोंमें, उत्तेजित भीड़के सामने जाते तनिक भी नहीं सकुचाते, नदीके भंवरमें, समुद्रके संकटभरे स्थानोंपर, एकदम खड़े कगारोंपर जाते जरा भी नहीं डगमगाते परंतु उनके प्रियजन धूरी संझाको भी घरसे बाहर पांव रखने लगें तो उनके दिलमें कंपकंपी-सी आ जाती है, वह सीधा तो कुछ नहीं कहते पर उस कार्यक्रमको टाल जानेकी, समय बदलनेकी और यह भी न हो पाये तो उनके साथ अपने-आप जानेकी कोशिश करते हैं। इसे आप क्या कहेंगे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषिवर कुछ बोलें उससे पहले एक और लड़की जिसे ये लोग ६० की तुलनामें ८० कहा करते हैं, बोल पड़ी, मैं बताऊं ऋषिवर, मुझे लगता है कि यह भी एक प्रकारकी भीरुता है जो आसक्तिसे पैदा होती है। हम हमेशा यही चाहते हैं कि हमारे अपने लोगोंको कष्ट न हो, उनपर कष्ट आये तो हम उसे अपने ऊपर लेकर उन्हें बचाना चाहते हैं। इसमें कुछ उनकी सहायता करनेका भाव होता है, कुछ उनकी क्षमता, उनकी सहनशक्तिपर अविश्वास और कुछ अपने ऊपर अधिक विश्वास। हम यही सोचते हैं कि हमारे अंदर जितनी सहनशक्ति है, जितना सामर्थ्य और साहस है उतना किसी औरमें कहांसे आयेगा, इसलिये हम टिटिहरीकी तरह गिरते हुए आकाशको रोकनेके लिये अपने पांव ऊपर कर देते हैं और विशेष रूपसे तब जब वह प्रियजन आयुमें छोटा हो या उस श्रेणीका हो जिसे सदियोंकी आदतने अबला मान लिया हो।

तो मेरे ख्यालसे इसमें झूठा दम्भ, दूसरेके प्रति दया, अपने ऊपर बहुत अधिक विश्वास, झूठी आसक्ति, अपने शौर्यपर, अपनी रक्षण-शक्तिपर जरूरतसे ज्यादा विश्वास आदि बहुत-से परस्पर सहायक या विरोधी तत्त्व होते हैं। क्यों ऋषिवर, ठीक है?

सभी विद्यार्थी एक साथ बोल पड़े, ऋषिवर, इसने तो अपना 'अस्सी' नाम सार्थक कर दिया। इसके बाद और क्या कहा जा सकता। इस विशद व्याख्याने अभीके लिये तो समाधान कर ही दिया।

कोनेमें बैठी ५० ने धीरेसे कहा, ऋषिवर, अस्सीकी बात ठीक अस्सी लायक है पर मुझे लगता है इसमें २० की कमी रह गयी है। इसे आप पूरा कर दीजिये। हम लोगोंकी उड़ान इससे आगे नहीं है।

ऋषिवरने जवाब दिया, नहीं, यह बात तुम्हारी समझके बाहर नहीं है। सारी वीरता, सारा साहस, सारा शौर्य और यही नहीं सभी गुण भगवान्‌से आते हैं और सभी उल्टी चीजें अहंकारसे। जब तुम समझते हो कि इसकी रक्षाका भार मेरे ऊपर है, यह मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिम्मेदारी है तभी ऐसी शंका-कुशंकाएं पैदा होती हैं और तभी तुम चिंतित हो उठते हो। अगर तुम्हें यह विश्वास, सच्चा विश्वास हो कि सब कुछ भगवान्‌पर निर्भर है, तुम कुछ भी नहीं हो और कुछ भी नहीं कर सकते तो काम आसान हो जाता है। वे सर्व-शक्तिमान् तुम्हें भी और तुम्हारे प्रियजनको भी अपनी बांहोंमें ले लेते हैं और तब किसका भय और कहांकी चिंता ? तब साहस शब्दकी-भी जरूरत नहीं रह जाती। वह तुम्हारे जीवनका अंग बन जाता है।

श्रीअरविंद-वाणी : सप्त चतुष्टय

त्रिकालदृष्टि

त्रिकाल दृष्टि, ज्ञानकी एक विशेष क्षमता है जिसके द्वारा उस व्यापक शक्तिको वस्तुओंकी वास्तविकता, घटनाके ब्योरों, प्रवृत्तियों-पर जगत्‌के भूत, वर्तमान और भविष्यपर, जगत् जैसा है, जैसा था और कालमें जैसा होगा—इन सबपर लागू किया जाता है। जैसे ज्ञान व्यापक सत्यके साथ व्यवहार करता है, उसी तरह यह तथ्य विशेषके साथ व्यवहार करती है। त्रिकालदृष्टि अनेक तरीकोंसे काम करती है :

१) सीधी, किसी साधन या बहानेके बिना, दृष्टि, श्रुति और स्मृतिद्वारा।

२) विषयपर एकाग्र रहकर—जिस पद्धतिको पांतजलि विषयपर सयम कहते हैं—यहांतक कि अवलोकक और अवलोकितका मन एक हो जाय और हम यह जान लें कि विषयमें, चाहे भूत, भविष्य, वर्तमानमें, क्या है, ठीक वैसे ही जैसे हम अपनी निजी सत्ताके अंदरकी चीजोंको जानते हैं।

३) किसी बाह्य चिह्न या किसी सांकेतिक विज्ञान जैसे सामुद्रिक, ज्योतिष, शकुन विचार आदिको साधन बनाकर। अगर इन विज्ञानों-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का उपयोग उच्चतर विज्ञानमय शक्तियोंद्वारा न हो तो इनका कुछ मूल्य नहीं होता क्योंकि ये जिन चिह्नोंका उपयोग करते हैं वे अधिकतर प्रवृत्तियोंकी ओर संकेत करते हैं और लिखित शास्त्र या कामचलाऊ नियमोंसे वास्तविक संभाव्यताओंको संभावनाकी प्रवृत्तियोंसे अलग पूरी तरह नहीं पहचाना जा सकता।

४) व्याप्ति और प्राकाम्यकी दो शक्तियोंद्वारा जिनसे वह चीज बनती है, जिसे यूरोपीय दूरबोध या टेलीपैथी कहते हैं।

अष्टसिद्धि

व्याप्तिः प्राकाम्यमैश्वर्यमीशिता वशिता महिमा लघिमाणिमोत्यष्टसिद्धिः।

अष्ट सिद्धियां तीन स्तरोंकी हैं:

१) ज्ञानकी दो सिद्धियां—व्याप्ति और प्राकाम्य।

२) शक्तिकी तीन सिद्धियां—ऐश्वर्य, ईशिता, वशिता।

३) शरीरकी तीन सिद्धियां—महिमा, लघिमा, अणिमा।

प्राकाम्य

प्राकाम्यका अर्थ है मन और इन्द्रियोंका पूर्ण प्रकाशन जिसके द्वारा वे शरीरकी सामान्य सीमाओंको लांघ जाते हैं और दृष्टि, श्रुति, स्पर्श आदि द्वारा और अधिक साधारणतः और अधिक आसानीसे मानसिक संवेदन और अभिज्ञताद्वारा अभिज्ञ होते हैं:

१) मन और इन्द्रियोंकी सामान्य क्रियासे छिपे हुए या दूरस्थ वस्तुओं, दृश्यों और घटनाओंके बारेमें।

२) जीवनके अन्य स्तरोंकी वस्तुओं, दृश्यों, घटनाओंके बारेमें।

३) ऐसी वस्तुओं आदिके बारेमें जो भूत या भविष्यकी हैं परंतु जिनकी प्रतिमाएं हमारे अध्ययनके विषयमें हैं।

४) अन्य लोगोंकी मन, बोध, संवेदन आदिकी वर्तमान स्थिति या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके विशेष विचारों, भावों, संवेदनों, अथवा ऐसी अवस्थाओं या विशिष्ट विचारों आदिके बारेमें जो भूतकालमें उनमें थे और चित्तपर जिनकी छाप रह गयी है अथवा जो उनके अंदर भविष्यमें आयेंगे, जिनका चित्र उनके चित्रके पूर्वज्ञानके भागमें बन चुका है।

व्याप्ति

प्राकाम्यके हर रूपके साथ उससे मेल खाता हुआ एक व्याप्तिका रूप होता है यानी ग्रहण और संचार होता है। उदाहरणके लिए प्राकाम्यद्वारा हम किसी औरके संवेदनोंका दर्शन पा सकते हैं। व्याप्तिद्वारा हम उन्हें अपनी चेतनापर टकोर लगाते हुए पाते हैं या हम अपने संवेदनोंको दूसरेपर प्रक्षिप्त करते हैं। प्राकाम्य है दूरसे देखनेवालेकी दृष्टि और वस्तुको देखना, व्याप्ति है उस वस्तुका संवेदन जो हमारी ओर आता है या हमारे संस्पर्शमें आता है। व्याप्तिद्वारा अपने अंदरकी किसी भी चीजको, विचार, संवेदन, शक्ति आदिको दूसरेतक पहुंचाया जा सकता है और अगर वह उसे पकड़ सके और रख सके तो वह उसे अपना बनाकर उसका उपयोग कर सकता है। यह एक तरहसे हमारे अंदरकी चीजको दूसरेपर भौतिक रूपसे फेंककर किया जा सकता है या स्वभावपर इच्छाशक्तिका प्रयोग करके उसे स्थानान्तरणके लिए बाधित करके। शिक्षक और गुरु स्वभावतः व्याप्तिकी इस शक्तिका उपयोग करते हैं जो बोलने या लिखनेसे कहीं अधिक प्रभावकारी है, लेकिन सभी मनुष्य अचेतन रूपमें इसका उपयोग करते या इससे प्रभावित होते हैं। क्योंकि हमारे अंदर हर विचार, भावना, संवेदन या चेतनाकी कोई भी गति एक लहर या धारा पैदा करती है जो उसे चारों ओरकी जगत् चेतनामें ले जाती है और वहां वह किसी भी ऐसे आधारमें प्रवेश करती है जो उसे ले सके और लेनेको तैयार हो। हमारे अभ्यासगत विचारों और भावनाओंमेंसे कम-से-कम आधे तो इस तरहके अचेतन उधार होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐश्वर्य

ऐश्वर्य है इच्छाकी प्रभावकारिता जो वस्तुओं या घटनाओंपर भौतिक साधनोंकी सहायताके बिना कार्य करती है। वह कार्य कर सकती है :

१) जिस वस्तुको प्रभावित करना हो उसपर चैतन्यके सीधे दबाव या तपद्वारा।

२) चेतनाके (चाहे सामान्य निम्न-प्रकृति या स्वयं वस्तुके अंदर प्रकृति-पर) प्रकृतिपर दबाव या तपद्वारा, जो सीधा वांछित परिणाम ले आये।

३) प्रकृतिपर दबाव डालकर, ताकि वह ऐसी परिस्थितियां पैदा करे जो परोक्ष रूपसे वांछित परिणाम लानेके लिए बाधित करें।

४) दबावके बिना, केवल विचारद्वारा, जो इच्छा है, जो आज्ञा, ईश्वरकी आज्ञा है, जिसका प्रकृति यंत्रवत् पालन करती है।

अंतिम, ऐश्वर्यकी उच्चतम शक्ति और चरम सिद्धि है क्योंकि इसमें चित् और तपस् उसी तरह एक हो जाते हैं जैसे स्वयं भगवान्की इच्छामें हैं।

ईशिता

ईशितामें इच्छाकी वही प्रभावकारिता है परंतु वह विचार या आज्ञाके द्वारा कार्य नहीं करती बल्कि हृदय और चित्तके द्वारा आवश्यकताके दर्शन या शुद्ध लिप्सामें काम करती है। लिप्सा जिस किसी चीजकी ओर बढ़ती है या सचेतन ज्ञानके बिना ही उसे जिस चीजकी जरूरत होती है वह ईशितावाले व्यक्तिमें अपने-आप आ जाती है। ईशिता अपने-आपको या तो वस्तुपर या प्रकृतिपर दबाव डालकर प्रकट करती है या केवल प्रत्यक्ष दर्शनद्वारा, जो अपने लक्ष्य-पर यांत्रिक रूपसे प्रभावकारी होता है। यहां फिरसे अंतिम ईशिता-की उच्चतर शक्ति और परम सिद्धि है।

वशिता

वशिता वस्तुपर उसकी प्रकृतिमें नियंत्रण है ताकि वह उच्चारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दके प्रति आज्ञाकारी, संचारित विचारके लिए ग्रहणशील और सुझाये गये कार्यके प्रति संवेदनशील और प्रभावकारी हो। वशिता यांत्रिक रूपमें एक प्रकृतिके दूसरेपर स्थापित नियंत्रणके द्वारा काम करती है, या कार्यके शब्द, विचार और सुझावमें प्राकृतिक शक्तिको उड़ेलनेका कार्य करती है ताकि वह दूसरोंकी प्रकृतिपर प्रभाव उत्पन्न कर सके। पिछली चीज निम्नतर और सामान्य सिद्धि है और पहली परम या पूर्णतः भागवत सिद्धि है। व्याप्ति वशिताके मुख्य साधनोंमेंसे एक है।

शक्तिकी शर्तें

ध्यान रखा जाय कि शक्तिकी कोई भी सिद्धि पूरी तरह या मुक्त रूपसे तबतक कार्य नहीं कर सकती, जबतक चित्तकी अशुद्धि, विचार या स्वभावमें अहंकार या सिद्धिके उपयोगमें कामनाका प्रभुत्व हो। ऐसी परिस्थितियोंमें शक्तियोंका कभी-कदास उपयोग हो सकता है और अनियमित प्रभावकारिता हो सकती है। यह एक ऐसी चीज है जो अपने निजी संस्कारों और अभ्यासगत प्रक्रियाओं-को छोड़ने और विज्ञानमय शक्तिके क्रियाकलापको स्वीकारनेका प्रशिक्षण देनेके लिए उपयोगी है। या निश्चित तांत्रिक क्रियाओंद्वारा सीमित शक्तियोंका नियमित और प्रभावकारी उपयोग हो सकता है। पूर्णयोगके साधकोंको इससे बचना चाहिए।

ज्ञानकी शर्तें

इस बातका भी ध्यान रखना चाहिए कि पूर्ण ज्ञान और त्रिकाल-दृष्टि अन्तःकरणकी पूरी-पूरी शुद्धिसे ही संभव हैं। विशेष आवश्यक हैं कामनाका बहिष्कार, बुद्धिकी विशुद्धि, मनकी पूर्ण निष्क्रियता और अंतमें विज्ञानकी शक्तियोंकी पूर्ण की हुई क्रिया। इन उच्चतर शक्तियोंकी अपूर्ण और अस्थायी क्रिया हमेशा संभव है और यह धुंधले रूपमें बहुत-से ऐसे लोगोंमें पायी जाती है जो योगी या साधक नहीं हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरिक सिद्धियां

शारीरिक शक्तियों—महिमा, लघिमा, अणिमा—के बारेमें अभी कहनेकी आश्यकता नहीं, हालांकि वे विज्ञानके धर्मकी हैं लेकिन वे शरीरमें कार्य करती हैं और शुद्ध रूपसे सिद्धिका अंग हैं।

समाधि

समाधि वह शक्ति है जिसमें स्थिर रूपसे चैतन्यका अपने विषय-पर लगकर जाग्रत, स्वप्न सुषुप्तिकी तीनों अवस्थाओंमें ज्ञान और चेतनाके क्षेत्रको विस्तृत करना, ब्रह्मके उन तत्वोंका अनुभव करना है जिनके लिए सामान्य जाग्रत् चेतना अंधी है, और भौतिक धरती या इस जाग्रत् भौतिक चेतनासे भिन्न, अन्य लोकों या चेतनाके स्तरोंका प्रतिबिंबित चित्रों अथवा स्वयं वस्तुओंके रूपमें अनुभव करना है। समाधिपर विचारको भी अभी स्थगित रखा जा सकता है।

४—शरीर-चतुष्टय

शरीर सिद्धि

उसी तरह अभीके लिये शरीर-चतुष्टयकी व्याख्या करनेकी जरूरत नहीं है। उसके चार अंग हैं:

आरोग्यमुत्थापना सौंदर्यं विविधानन्द इति शरीरचतुष्टयम्।

तीन सामान्य चतुष्टय

ये आधार-शुद्धिके चार चतुष्टय हैं, इनके अतिरिक्त तीन सामान्य चतुष्टय हैं: —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५—कर्म-चतुष्टय या लीला-चतुष्टय

कृष्णः काली कामः कर्मेति कर्मचतुष्टयम् ।

६—ब्रह्म-चतुष्टय

सर्वमनन्तं ज्ञानमानन्दं ब्रह्मेति ब्रह्मचतुष्टयम् ।

७—योग-चतुष्टय या संसिद्धि-चतुष्टय

शुद्धिर्मुक्तिर्भुक्तिः सिद्धिरिति योगचतुष्टयम् ।

इनमें अंतिम या सातवां एक साथ साधन, कुल योग और बाकी सबकी पूर्ति है। और सबको समझनेके लिए इसकी व्याख्या जरूरी है और उसे अलगसे लिया जायगा।

शांति-चतुष्टय

१—समता या तो नकारात्मक होती है या सकारात्मक।
नकारात्मक—तितिक्षा, उदासीनता, नति।
सकारात्मक—समरस, समभोग, समआनंद।

नकारात्मक समता

तितिक्षा—स्थिरता और अचंचलताके साथ, सत्ताके केंद्रमें किसी प्रतिक्रियाके बिना, सब प्रकारके स्पर्शोंको सहन करना, चाहे वे सुखद हों या दुखद। मन और शरीर कामना कर सकते या कष्ट पा सकते हैं परंतु साक्षी पुरुष अनाकर्षित और अविचलित रहता है। वह केवल साक्षीकी तरहसे, सारे तंत्रको ईश्वरकी तरह दृढ़ताके साथ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक साथ पकड़े रहता है और अचचलताके साथ द्वन्द्वोंके निकल जानेकी इच्छा करता है। वह सुखकी लालसा या मांग नहीं करता, वह दुखदर्दका त्याग नहीं करता। जब सुख या दुख बहुत अधिक हो तब भी वह इच्छा करता है कि मन और शरीर उनसे न तो पीछे हटें न उन्हें धकेलें बल्कि दृढ़तासे सह लें। वह भूख प्यास, गरमी सर्दी, स्वास्थ्य, रोग, सफलता, असफलता, मान निन्दा आदि सभी द्वन्द्वोंके साथ इसी तरह व्यवहार करता है। वह न तो स्वागत करता और आनंद मनाता है, न दुःख करता और बचता है। वह समस्त जुगुप्सा, भय, संकोच, प्रतिक्षेपण, दुःख, अवसाद आदिसे, यानी उन सभी साधनोंसे पिंड छुड़ा लेता है जिनके द्वारा भूत प्रकृति हमें उन सब चीजोंके विरुद्ध सावधान करती और उनसे बचानेका प्रयास करती है जो विरोधी हैं। वह उन्हें प्रोत्साहन नहीं देता। न वह आवश्यक रूपसे उन साधनोंमें बाधा देता है जो विरोधी स्पर्शोंको दूर करनेके लिए जरूरी हों। वह भौतिक रूपसे सुखद स्पर्शोंको त्यागता भी नहीं, सिवाय तब जब यह सामयिक अनुशासनके रूपमें जरूरी हो। लेकिन आंतरिक रूपसे वह सबके सामने सहन-शक्तिका समान व्यवहार रखता है।

परिणाम होता है उदासीनता।

उदासीनता—उदासीनता चार प्रकारकी हो सकती है। तामसिक, राजसिक, सात्विक और त्रिगुणातीत। तामसिक उदासीनताका संबंध वैराग्य, घृणा, निराशा, प्रयाससे ऊब, प्रयासके लिए अनिच्छासे होता है। यह सच्ची उदासीनता नहीं है क्योंकि यह सबको समान रूपसे दुःखका कारण मानकर उनसे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूपमें बचना चाहती है। यह जुगुप्साका सामान्यीकरण है और तितिक्षासे नहीं, उसके विरोधी तत्वसे आती है। इसे कभी-कभी राजसिक भी कहा जाता है क्योंकि, यद्यपि उसका स्वभाव तामसिक है, उसका कारण राजसिक है—कामनाकी निराशा। तामसिक उदासीनता उस वैरागीके लिए उप-योगी होती है जो किसी भी तरह जगत्से पिंड छुड़ाना चाहता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन पूर्णताका प्रयास करनेवालेके लिए यह मार्गका रोड़ा है इसका एकमात्र उपयोग है हठी रजोगुणको अनुत्साहित करना और जब वह आये तो इस प्रयोजनके लिए इसे स्वीकारा जा सकता है। लेकिन, वह जितना भला करता है लगभग उतना ही नुकसान भी पहुंचाता है और जबतक हम उसके बिना काम न चला सकें हमारी प्रगतिके मन्द होनेकी संभावना है। राजसिक उत्सुकता और निराशासे उत्पन्न तामसिक ऊबके बीच ऊभ-चूभका क्रम लगा रहता है। इन द्वन्द्वोंकी टूट-फूटसे तामसिक उदासीनता कभी-कदास राहत देती है। सदाके लिए तामसिक उदासीनतामें बने रहना पूर्णताके लिए घातक है।

राजसिक उदासीनता प्रयासद्वारा आरोपित उदासीनता है, निश्चय-द्वारा जारी रहती है और लंबे आत्म-संयमद्वारा उसकी आदत पड़ जाती है। यह नैतिक शूरकी, तपस्वी स्टोइककी उदासीनता है। तामसिककी अपेक्षा यह अधिक सहायक है लेकिन इसे आग्रहसे बनाये रखा जाय तो अंतरात्मापर इसका कठोर बना देने और संकीर्ण करनेवाला प्रभाव होता है, उसकी नमनीयता और आनंदकी क्षमता घट जाती है। अगर राजसिक उदासीनताका उपयोग किया जाय तो हमें उसे हमेशा पार करना चाहिए। यह एक उपकरण है जो आसानीसे बाधा बन सकता है।

सात्विक उदासीनता—यह ज्ञानसे उत्पन्न उदासीनता है। यह जगत्के माया अथवा लीलाके रूपमें दर्शनसे और सभी चीजोंको ब्रह्मके अंदर समान रूपमें देखनेसे आती है। यह अचंचल, प्रकाशमान, प्रयाससे मुक्त, सभी चीजोंके प्रति सहिष्णु, घटनाओंके प्रति स्मित-पूर्वक उदासीन, राजसिक और तामसिक प्रतिक्रियाओंको त्यागनेके बारेमें सावधान होती है। सात्विक उदासीनता बहुत सहायक है और लगभग अपरिहार्य स्थिति है। लेकिन उसकी सीमाएं होती हैं। वह जगत्से अलग खड़ी रहती है और मोक्षके लिए, लीलासे अपने-आपको खींच लेनेकी तैयारी है। पूर्णताके साधकके लिए यह अंतिम विश्रामस्थल होने योग्य नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिगुणातीत उदासीनता—त्रिगुणातीत उदासीनता वह है जो सभी चीजोंको समान रूपसे लेती है, सात्विक, राजसिक, तामसिक प्रतिक्रियाओंमें कोई फर्क नहीं करती, परंतु अपनी अंतरात्मामें इन सब गतिविधियोंसे, समस्त द्वन्द्वोंसे अलग रहती है। पहले उन्हें पूर्ण निष्पक्ष भावसे देखती है और उनमें भाग लेनेसे हमेशा इंकार करके मन और प्राणमें उनसे पीछा छुड़ा लेती है। वह उनके आने या जानेपर न तो खुशी मनाती है न दुखी होती है, 'न शोचति न नन्दते'। वह इन सब चीजोंको प्रकृतिकी क्रियाओंके और उनके कारणोंको ईश्वरकी इच्छाके रूपमें देखती है। यह उदासीनता समताके तीसरे तत्व, नतिकी तैयारी है।

नति—नति ईश्वरकी इच्छाके प्रति समान रूपसे समर्पण है। वह सभी चीजोंको उस इच्छाकी अभिव्यक्तिके रूपमें देखती है और अपनी अहंकारमय कामनाओं, मतों, पसंदों इत्यादिमें चोट खा जानेपर अंदरसे किसी भी चीजपर दुख करने या विद्रोह करनेसे इंकार करती है। उसकी सारी वृत्ति सभी वस्तुओं और घटनाओंमें भगवान्के प्रत्यक्ष दर्शनपर निर्भर होती है। वह सुख-दुख, स्वास्थ्य और रोग, सौभाग्य और दुर्भाग्य, स्तुति और निन्दा, प्रशंसा और बदनामी, क्रिया और निष्क्रियता, असफलता या विजयको स्वीकार करती है परंतु अपनेआपको उनमेंसे किसीके साथ आसक्त नहीं करती। नति निष्क्रियताकी तामसिक मौन स्वीकृति, असफलताकी आधीनता, जीवनके प्रति तटस्थता नहीं है। वह तो तामसिक उदासीनता है। नति सक्रिय होती है। वह जीवन और प्रयासको भगवान्की इच्छा और उनकी सत्ताके अंगके रूपमें स्वीकार करती है, वह सभी परिणामोंके लिए समान रूपसे तैयार रहती है। उसमें फलकी लालसा नहीं होती परंतु राजसिक श्रम या तामसिक उदासीनताके बिना कर्तव्य कर्मके दिखाये गये परिणामोंके लिए काम करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शांति

शांति—नकारात्मक समताकी पूर्णताको समस्त सत्तामें सुस्थापित शांतिसे मापा जाता है। अगर हृदय और प्राणमें पूरी-पूरी अचंचलता और प्रशांतता हो, कष्ट, अस्तव्यस्तता, उत्कण्ठा, दुःख, अवसाद आदिकी कोई प्रतिक्रिया न हो तो हम निश्चित हो सकते हैं कि नकारात्मक समता पूर्ण हो गयी है। अगर कोई ऐसी गड़बड़ हो तो यह इस बातका चिह्न है कि तितिक्षा उदासीनता या नतिमें कहीं कोई अपूर्णता है। हो सकता है कि अपूर्णता सत्ताके केंद्रमें न हो, बल्कि उसके बाहरी भागोंमें हो। तब केंद्रमें स्थिर प्रशांतता रहेगी लेकिन सतह-पर गड़बड़ हो सकती है। ये ऊपरी गड़बड़ें उग्र भी हो सकती हैं और अंदर प्रतिष्ठित शांतिको छिपा सकती हैं लेकिन वह फिरसे उभर आती है। उसके बाद गड़बड़ अपनी घनतामें अधिकाधिक पतली और शक्तिमें दुर्बल होती जाती है। इसका अन्त होता है अंतरात्मामें, कभी-कदास शक्ति, साहस, श्रद्धा और आनंदके अवसादमें, जो नकारात्मक और प्रायः विना किसी प्रत्यक्ष कारणके होता है और बादमें पूरी तरह गायब हो जाता है।

नकारात्मक समता और शांति सकारात्मक समता और आनंदके लिए आवश्यक तैयारी है। इस आधारके बिना हमेशा यह संभावना बनी रहती है कि आनंद अपनी अवधिमें अनिश्चित और अपनी समग्रतामें अपूर्ण हो। अतः सभी चीजें—सभी स्पर्शोंमें सहनशीलता, सभी द्वन्द्वोंके प्रति उदासीनता, भागवत इच्छाकी सभी गतिविधियोंके प्रति समर्पण और पूर्ण आंतरिक शांति तथा अचंचलता पूर्णताके पहले कदम हैं।

नकारात्मक समता और शांति शुद्धिका परिणाम और मुक्तिकी शर्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकारात्मक समता

नतिके आधारपर हम सकारात्मक समताकी ओर बढ़ते हैं जिसका मतलब है सम आनंद। इसका आधार है आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान जिससे हम समस्त विश्वको एकमेव सत्ताके रूपमें देखते हैं जो अपने-आपको अनेक रूपों और क्रियाओंमें अभिव्यक्त करती है। अतः यह एकमेव सभी सत्ताओंकी आत्मा, मेरी आत्मा और साथ ही अन्य सबकी, मित्र और शत्रु, सन्त और पापी, मनुष्य, पक्षी और पशु, वृक्ष और पत्थरकी आत्मा है—अभिव्यक्तिमें सभी चीजें मेरी आत्माके रूप और क्रिया-कलाप हैं। और फिर यह आत्मा विश्वका स्वामी, पुरुषोत्तम, दिव्य विष्णु, शिव, या कृष्ण है, हर व्यक्तिगत अंतरात्मा उनका एक सचेतन केंद्र है। वह अंतरात्मा प्रभुके साथ अपने ऐक्यके बारेमें अभिज्ञ है, साथ ही विश्वमें उनसे अपने अलगावके बारेमें भी सचेतन है। अभिव्यक्ति उन भगवान्की लीला या खेल है जो अपनी सत्तामें सर्व आनंद है। अतः यह लीला भी केवल सत् और चित्की ही नहीं, आनंदकी भी लीला है। मन, प्राण और शरीरके अहंभावसे उत्पन्न द्वित्त, दुःख और दर्दका सृजन करते हैं। हमें अपने-आपको इस आत्माके साथ एक करना चाहिए, इस प्रभु और एक-मेवके साथ और उनके अंदर सभी चीजोंके साथ एक करना चाहिए, उन्हें अपनी आत्माके रूपमें देखना चाहिए ताकि हम दुःखसे पिंड छुड़ाकर दिव्य आनंदका भोग कर सकें। लेकिन पहले यह जरूरी है कि हम लीलाको उसके सभी ब्यौरों और घटनाओंके साथ, विद्रोहके विना समान रूपसे स्वीकार करें। यह नतिसे आता है। तितिक्षा इन्द्रिय-मन और शरीरद्वारा समान स्वीकृतिकी वृत्ति है, उदासीनता है मन और हृदयद्वारा समान रूपसे स्वीकृतिकी वृत्ति और नति है अंतरात्मा द्वारा समान रूपसे स्वीकार करनेकी वृत्ति। अंतरात्मा सभी चीजों-को सर्व-आनंदमय प्रभुकी लीलाके रूपमें, परम आत्मा और ईश्वरकी इच्छाके रूपमें स्वीकार करती है। वह कर्म और कर्मफलको भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनसे आसक्त हुए बिना स्वीकार करती हैं। लेकिन अनासक्त होते हुए भी उसे सभी चीजोंमें आनंद लेना सीखना चाहिए, जैसे प्रभु उनमें आनंद लेते हैं।

पहला आनंद है साक्षीका, जो समस्त विश्वकी समस्त क्रियाको और स्वयं अपनी क्रियाको इस तरह देखता है जैसे किसी लीला या नाटकको देखता है; बुद्धि, इन्द्रियों और सौंदर्यग्राही क्षमताओंद्वारा सारी चीजका रस लेता है। सभी चीजें, सभी घटनाएं, वैश्व सत्ताके अमुक गुणोंकी अभिव्यक्ति हैं। भगवान् अनंत गुण हैं। गुलाब रूप, गंध तथा अन्य कम स्पष्ट गुणोंकी अभिव्यक्ति है। हर एक विशेष रूपके रसकी, दिव्य आनंदकी छाप लिये है।

(अपूर्ण)

कठिनाइयोंका सामना

(आज व्यक्ति, समाज, देश और मानवजाति सभी कष्टसे पीड़ित हैं। ऐसा लगता है कि सभीको एक ही रोग हुआ है, किसीमें एक लक्षण प्रबल है, किसीमें दूसरा। आर्षवाणी कभी पुरानी नहीं होती। १९३०में श्रीअरविंदका लिखा हुआ यह पत्र हमारे लिए आज भी उतना ही उपयोगी है।—सं०)

निश्चय ही जो शक्ति तुम्हारे ऊपर इस समय काम कर रही है वह योग और पृथ्वीपर भागवत उपलब्धिके विरुद्ध है। यह वह शक्ति (या शक्तियां) हैं जो यहां आश्रममें हैं और एकसे दूसरेके पास जा रही है। कुछ लोगोंके साथ वह सफल हुई है और कुछने उसे अपने पाससे हटा फेंका है और अपनी अंतरात्माके प्रकाशको मुक्त करनेमें सफल हुए हैं। वे माताजीकी सतत उपस्थिति और निकटताके प्रति खुले हैं, उन्होंने अपने अंदर माताजीकी क्रियाका अनुभव किया है और सतत आध्यात्मिक प्रगतिमें आगे बढ़े हैं। कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी संघर्ष कर रहे हैं लेकिन संघर्षकी कटुताके बावजूद निष्ठापूर्वक भगवान्‌की पुकारके साथ लगे हुए हैं, जो उन्हें यहां लेकर आयी है।

यह वही एक विरोधी शक्ति है, यह इस बातसे स्पष्ट है कि, चाहे उसकी उपस्थिति हमें दिखलायी न दे, चाहे हम उसे महसूस न कर सकें, वह अपने शिकारोंको हमेशा एक जैसे सुझाव देती है। उसका एक बहुत बड़ा चिह्न है आश्रमसे भाग जानेका आवेग। तुरंत आश्रमसे, मुझसे, माताजीसे दूर, इस वातावरणके बाहर निकल जानेकी प्रेरणा। यह शक्ति सोचनेके लिए, प्रतिरोध करनेके लिए या रक्षक-शक्तिकी क्रियाके लिए समय नहीं देना चाहती। उसके दूसरे लक्षण हैं: संदेह, तामसिक उदासी, अशुद्धि और अयोग्यताका बढ़ा-चढ़ा भाव, यह विचार कि माताजी दूर हैं, हमारी परवाह नहीं करती, उन्हें जो देना चाहिए वह नहीं दे रहीं, वे भगवती नहीं हैं, और इसी तरहके और बहुतसे सुझाव। इनके साथ ही माताजीकी उपस्थिति या सहायताका अनुभव कर सकनेमें अक्षमता, यह भावना कि योग करना संभव नहीं है या इस जीवनमें नहीं होगा, यहांसे चले जाने और साधारण संसारमें, कुछ करनेकी इच्छा, वह चीज व्यक्तिगत मनके अनुसार अलग-अलग हो सकती है। अगर यह एक ही विरोधी शक्तिका काम न होता तो इन सब मामलोंमें इतनी अधिक समानता न होती। हर उदाहरणमें वही बुद्धि-विमोह न होता, प्राणकी वही अवचेतन गतिविधियां सतह पर न लायी जातीं, वही अयुक्तियुक्त आवेश यहांसे चले जाने, आत्माके सत्यको त्यागने, भागवत प्रेम और भागवत पुकारको नकारनेके लिए प्रेरित न करते।

यह तुम्हारे लिए और औरोंके लिए प्राणिक संकट, जांच और अग्नि-परीक्षा है। जो लोग हमारे साथ हैं उन्हें हम खुशीसे इस जांच और अग्निपरीक्षासे बचा सकते हैं लेकिन वे गतिकी किसी गलत रेखाके अनुसरणमें लगे रहने या आंतरिक मनोभावके मिथ्यात्वके कारण उसे अपने ऊपर बुला लेते हैं। यह शक्ति जिस मिथ्यात्व-को साधकोंपर फैलाती है, उसे अगर तुम पूरी तरहसे अस्वीकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दो, अगर तुम उस ज्योतिके प्रति निष्ठावान् रहो जिसने तुम्हें यहां बुलाया था तो तुम्हारी विजय होती है, अगर फिर भी गंभीर कठिनाइयां बनी रहें तो भी अंतिम विजय और अज्ञान तथा अंधकार-पर अंतरात्माकी दिव्य विजय निश्चित है।

इन शक्तियोंको अवसर तब मिलता है जब साधक अपनी साधना-के अनिवार्य पथपर मानसिक या उच्चतर प्राणिक स्तरसे भौतिक चेतनामें उतरता है। इसके साथ ही पहली गहरी अनुभूतियां विलीन हो जाती हैं और उदासीन, अंधकारमय तमसमें अवतरण होता है। यह तमस ही अनुद्धारित प्रकृतिका सुदृढ़ आधार है। भगवान्के प्रकाश, शक्ति और आनंदको यहां उतरकर हर चीजका रूपांतर कर देना चाहिए और सभी धुंधलेपन, सभी जड़ताको सदाके लिए भगाकर कांतिमय ऊर्जाको, पूर्ण ज्योति और अपरिवर्तनशील आनंदको प्रतिष्ठित करना चाहिए। केवल मन और उच्चतर प्राणमें नहीं—वहांपर सारी कठिनाइयां हैं—लेकिन वहां भी विजय पानी होगी और नये जगत्की आधारशिला रखनी होगी। मैं इस महान् और अति कठिन परिवर्तनकी कठिनाइयां तुमसे नहीं छिपाना चाहता और न यही संभावना छिपाना चाहता हूं कि तुम्हें लंबे समयतक कठिन कार्य करना पड़ेगा लेकिन क्या सचमुच तुम उसका सामना करनेके लिए और इस महान् कार्यमें अपना भाग लेनेके लिए अनिच्छुक हो? क्या तुम इस समयके अधिक उत्तेजक कार्यके लिए पागल, बेतुके आवेशका अनुसरण करनेके लिए या किसी ऐसे क्षणके लिए, जिसके लिये तुम्हारी प्रकृतिमें कोई सच्ची पुकार नहीं है, इस प्रयासकी महानताको अस्वीकार कर दोगे?

निराशाके लिए कोई सच्चा कारण नहीं है, तुम्हारे अंदर जो कुछ हुआ है उसमें या जो कुछ तुमने लिखा है उसमें, मुझे इसके लिए कोई उचित कारण नहीं मिलता। औरोंने जो कठिनाइयां झेली हैं, और उनपर विजय पायी है, ऐसे लोगोंने जो तुमसे अधिक मजबूत नहीं थे, उनके आगे जिन कठिनाइयोंका तुम्हें अनुभव हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है वे कुछ भी नहीं हैं। हुआ बस यह है कि भौतिक चेतनामें इस अवतरणके कारण सामान्य बाहरी मानव प्रकृति अपनी मौलिक अपूर्णताओं और अवचेतन, असंतुष्ट आवेशोंके साथ सामने आ गयी है और विरोधी शक्तियां इन्हींका समर्थन मांगती हैं। मन और उच्चतर प्राणने अपने अंदरसे ऐसे विचारों और भ्रांतियोंको दूर कर दिया है जो उन चीजोंकी तुष्टिको उचित ही नहीं आभिजात्यपूर्ण मानते थे। लेकिन उनकी जड़––उनकी तुष्टिके लिए अविवेकी आवेश नहीं गया है। इसका एक उदाहरण है सेक्सकी वह गतिविधि जिसका तुमने जाग्रत या स्वप्नावस्थामें अनुभव किया है। यह अनिवार्य था। बस जरूरत इसीकी है कि तुम्हारा चैत्य पुरुष आगे आये और तुम्हें मेरे और माताजीके साथ सीधे, वास्तविक और सतत संपर्कके लिए खोले। अभीतक तुम्हारी अंतरात्माने अपनेआपको मन और उसके आदर्शों और सराहनाओंद्वारा या प्राण और उसके उच्चतर आनन्द या अभीप्साके द्वारा प्रकट किया है, लेकिन भौतिक कठिनाईको जीतने और जड़ द्रव्यको प्रकाशमान बनाने और रूपांतरित करनेके लिये इतना काफी नहीं है। स्वयं तुम्हारी अंतरात्माको, तुम्हारे चैत्य पुरुषको आगे आना, पूरी तरह जागना और मूलभूत परिवर्तन लाना चाहिये। चैत्य सत्ताको बौद्धिक विचारों और बाहरी चिह्नों और सहायताओंकी जरूरत न होगी। वह अकेला ही भगवान्की प्रत्यक्ष अनुभूति, सतत सामीप्य, आंतरिक सामर्थ्य और सहायता देगा तब तुम्हें माताजी दूर नहीं लगेंगी और सिद्धिके बारेमें कोई संदेह न रहेगा क्योंकि मन सोचता है, प्राण ललकता है परंतु अंतरात्मा भगवान्का अनुभव करती और उन्हें जानती है।

अपने अंदरसे संदेह और अवसाद आदिकी गतियोंको निकाल फेंको जो तुम्हारी सच्ची और उच्चतर प्रकृतिका भाग नहीं है। इस अयोग्यता, अनुपयुक्तता आदिके इन सुझावों और विरोधी शक्तिकी इन सब अविवेकी गतिविधियोंको अस्वीकार करो। अपनी अंत-

(शेष आवरण ४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

O Lord, awaken in me an ardent desire to know Thee. I aspire that my life may be consecrated to Thy service.

The Mother

Space donated by

Kooverji Devshi & Co., Pvt. Ltd.

FIREX LEADS TO SAFETY

SAFETY LEADS TO PROSPERITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A happy beginning
A good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

New Horizon Sugar Mills
(Pvt.) Ltd.

Pondicherry

Telegram : 'SAKAR'
Phone : Town Office : 4280
Factory : 5153

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋतु अनुकूल हवन सामग्री

हमने आर्य यज्ञ प्रेमियोंके आग्रहपर संस्कार विधिके अनुसार "हवन सामग्री"का निर्माण हिमालयकी ताजी जड़ी बूटियोंसे प्रारंभ कर दिया है, जो कि उत्तम, कीटाणुनाशक, सुगन्धित एवं पौष्टिक तत्वोंसे युक्त है वह आदर्श हवन सामग्री अत्यंत अल्प मूल्यपर प्राप्त है। थोक मूल्य ५ रुपये प्रति किलो है।

जो यज्ञ प्रेमी हवन सामग्रीका निर्माण करना चाहें वह सब ताजी हिमालयकी वनस्पतियां हमसे प्राप्त कर सकते हैं, वे चाहें तो कुटवा भी सकते हैं, यह सब सेवा मात्र है।

योगी फार्मेसी

लक्सर रोड

पोस्ट गुरुकुल कांगड़ी—२४९४०४

हरिद्वार (जिला सहारनपुर)

Love in
The wh

Ary

Exp
Ceram

Calcut
75c, P
Calcut
INDIA

Offi:
Resi:
Telex:
Gram

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Love in her was wider than the universe,
The whole world could take refuge in her single heart.

Sri Aurobindo

Arvind Exports (P) Ltd.

Exporters of Engg. Goods, Pesticides, Chemicals, Ceramics, Readymade Garments & Handicrafts etc.

Calcutta Head Office :
75c, Park Street
Calcutta - 700 016
INDIA

Bombay Office :
76, 77 Atlanta, Nariman Point
Bombay - 400 021
INDIA

Phones:

Calcutta:
Offi: 240277 ● 240367
Resi: 814512
Telex: 011-4104
Gram: "ARVIEXPO"

Bombay:
Offi: 249065 ● 248642
Resi: 478368
Telex: 021-7984
Gram: "AUROEXPORT"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जीवन लक्ष्यहीन होता है वह सुखहीन भी होता है।

तुम्हारा लक्ष्य होना चाहिये उच्च और विशाल, उदार और उन्मुक्त और फिर तुम्हारा जीवन तुम्हारे लिये और दूसरोंके लिये भी बहुमूल्य हो जायगा।

— श्रीमां

आहूजा
सहारनपुर सर्विस स्टेशन

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीर्वाण-वाणी

लोभं त्यक्त्वा वैमनस्यं च तद्वत्कार्यो नित्यं स्वस्वभावावमर्शः।
शून्याच्छून्यं नैव भिन्नं यथैव तस्मात्त्वं तद्भेदबुद्धिर्वृथैव ॥१॥

(रे मनुष्य !) तू लोभको मार (त्याग) दे और सहज (स्वातम) का विचार कर। (उस परम-ब्रह्मको प्राप्त करना कोई सरल कार्य नहीं है) अपितु उसे एक महंगा सौदा जान। इसलिये कल्पनाएं करना छोड़ दे। वह तो तेरे निकट है, उसे अपनेसे दूर न ढूंढ़। वह शून्यके साथ मिल जानेके समान है।

दर्शने दर्शनीयस्त्वं, हृदयं पाषाण-सन्निभम्।
यत्र सत्यांकुरो नैव शास्त्राधीतो विभेददृक् ॥२॥

दिखनेको तो तेरा चेहरा बड़ा सुन्दर है किंतु हृदय पत्थरके समान है, जिसमें सत्यकी बात कभी समायी नहीं। पढ़ते-लिखते तेरे होंठ व उंगलियां घिस तो गईं किंतु मेरे अंदरकी दुय (द्वैत भावना) दूर नहीं हुई।

अहो काष्ठ-धनुस्तत्र, शरः शष्पविनिर्मितः।
निर्मातुं राजप्रासादं, कारुरज्ञः समागतः।
यथा पण्यगृहं हट्टे यन्त्रकेण विनास्थितम्।
शरीरं मामकं तद्वद् जानीयात्को मम स्थितिम् ॥३॥

(भाग्यने मेरे साथ खिलवाड़ किया) काटके धनुषके लिये बाण मिला तो वह घासका। राजमहलके (निर्माणके) लिये बढ़ई मिला तो वह भी मूर्ख। मेरी स्थिति तो बीच बाजार में ताले रहित दुकान जैसी हो गई है। देह मेरी तीर्थ-विहीन ही रही। मेरी यह विवशता कौन जान सकता है !

(भुवनवाणी प्रेस लखनऊसे प्रकाशित 'लल्द्यद'से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

रात्माके प्रकाशकी ओर उस समय भी निष्ठा बनाये रखो जब वह बादलोंमें छिपी हो। मेरी और माताजीकी सहायता हमेशा पीछे-से काम करती रहेगी, उस समय भी जब तुम उसे अनुभव नहीं कर सकते। तुम्हारे और सबके लिये एकमात्र जरूरी चीज यह है कि भौतिक चेतनाकी अंधेरी शक्तियोंके अंधकारमें भी अपनी अंतरात्माके प्रति और भगवान्‌की पुकारकी यादमें दृढ़ताके साथ निष्ठावान् रहो।

निष्ठावान् रहो और तुम्हारी विजय होगी।

३०-३-१९३० —श्रीअरविंद

सोसायटी समाचार

घोषणाएं — सोसायटीकी रजत जयन्तीके कार्यक्रमके अन्तर्गत हम भारतीय सौन्दर्य शास्त्रमें नवरस पर काम कर रहे है। जिन पाठकों-को इस विषयमें रस है उनसे हम साहित्य (केवल संस्कृत और अंग्रेजीमें) चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत और नृत्यमें इनके अच्छे-से-अच्छे उदाहरणोंके बारेमें सुझाव पाना चाहेंगे। इस विषयमें श्री विजय, नवरस योजना, श्रीअरविंद सोसायटी पांडिचेरी—६०५००२ से पत्र-व्यवहार करें।

नव प्रकाशन — श्रीअरविंदने दर्शन-शास्त्रोंकी पद्धतिके कुछ संस्कृत सूत्र लिखे थे और अंग्रेजीमें उनकी व्याख्या की थी। ये सप्त चतुष्टय शीर्षकसे अग्निशिखामें छपे हैं। अब ये पुस्तकाकार भी उपलब्ध हैं। मू. ४.००।

बेसिक आसन — आश्रमके शारीरिक शिक्षण विभागसे अंग्रेजीमें एक छोटीसी पुस्तक 'बेसिक आसन' प्रकाशित हुई है जिसमें २९ आसनोंका सचित्र परिचय है। यह आश्रमके नवज्योति कार्यालय से चार रुपयेमें मिल सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

जून १९८५ वर्ष १५, अंक ११, पूर्णांक १७९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

सत्ताके विभिन्न व्यक्तित्व	श्रीअरविंद	१
माताजीका संदेश		२
संपादकीय : अश्रुत छंद	अनुबेन	४
दैनन्दिनी		६
श्रीमातृवाणीसे :		
शरीरमें साधना		९
पुनरुज्जीवन		१४
भौतिकमें भागवत प्रेमके लिये अभीप्सा		१५
सूर्यसे मैत्री		१७
प्रकृति और मानव		१८
एक तरुण साधकका श्रीअरविंद और माताजीके साथ पत्रव्यवहार		२४
श्रीअरविंदके साथ बातचीत		२७
कविको सलाह		३१
कलाकारका मिजाज		३१
सोसायटी समाचार		३३
गीर्वाण-वाणी		आ० ४

वार्षिक अग्निशिखा १०.००; पुरोधा १४.००; दोनों २२.००

आजीवन अग्निशिखा १७५.००; पुरोधा २२५.०० दोनों ४००.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :

संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्ताके विभिन्न व्यक्तित्व

तुम्हें अपनी आंतरिक सत्ताकी अनुभूति और सतही सत्ताकी प्रति-क्रियाओंमें फर्क मालूम हो रहा है। इससे यह पता लगता है कि अब तुम अपनी प्रकृतिके अलग-अलग हिस्सोंके बारेमें कुछ जानने लगे हो। इनमेंसे हर एकका अपना स्वभाव होता है। वास्तवमें हर आदमी कई व्यक्तित्वोंसे मिलकर बना होता है जिनमेंसे हर एक अलग तरहसे अनुभव और व्यवहार करता है, और उसके कार्योंका निश्चय वह भाग करता है जो उस समय सामने हो। क्रोध और कठोरता किसी ऐसी चीजका गलत रूप है जिसका अपना मूल्य है—वह है इच्छा-शक्तिका एक तरहका बल, क्रिया-शक्ति और प्राणमें नियंत्रण। इनके विना कोई काम नहीं हो सकता। जिसमें किसीके विरुद्ध कोई भावना नहीं होती वह है चैत्य पुरुष या हृदयमें स्थित भाव सत्ता। आवश्यक यह है कि क्रोधसे पिंड छुड़ाओ, परंतु बल और दृढ़ इच्छाशक्तिको बनाये रखो। साथ ही विकसित निर्णय करने-की वह क्षमता भी हो जो यह बतला सके कि क्या ठीक है और क्या नहीं। उदाहरणके लिये, लोगोंको अपनी राह चलने और अपनी मरजीके अनुसार काम करने दिया जा सकता है, लेकिन तभीतक जबतक कि उससे काम न विगड़े, जब जो कुछ करना है उसे करनेका उनका अपना तरीका हो, लेकिन अगर उनका अपना तरीका कामकी व्यवस्था और उसके अनुशासनके विरुद्ध हो, तब उनपर लगाम लगानी होगी लेकिन यह चुपचाप, क्रोधके बिना, कोमलतासे करना चाहिये। बहुधा यदि तुम माताजीकी मौन शक्तिको कार्यपर लगानेकी आदत डाल लो, तुम्हारी अपनी इच्छा उसका यंत्रमात्र हो तो यह अपने-आपमें काफी होगा, तुम्हें कुछ कहने-सुननेकी जरूरत न होगी, आदमी अपने-आप अपने तौर-तरीके बदल लेगा मानों यह उसके अपने अंतर्भासके कारण हो।

२६-१-१९३६ (श्रीअरविंदके एक पत्रसे)

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1962

We thirst for perfection—.
Not this human perfection which is
a perfection of the ego and bars the
way to the Divine perfection.
But that one perfection which
has the power to manifest upon earth
the Eternal Truth

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजीका संदेश

हमें पूर्णताकी प्यास है। लेकिन उस मानव पूर्णताकी नहीं जो अहंकारकी पूर्णता है और दिव्य पूर्णतामें बाधा देती है।

लेकिन उस एकमात्र पूर्णताकी जिसमें शाश्वत सत्यको धरतीपर प्रकट करनेकी शक्ति है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्रुत छंद

किसे निरर्थक कहा जाय और किसे सार्थक, यह बड़ी जटिल समस्या है। कल ही एक विशाल परिवारकी दादी, पड़दादीकी मृत्यु हो गयी। यह सच है कि उनका शरीर प्रायः बेकार हो चुका था, चलने-फिरनेमें सहायताकी आवश्यकता पड़ती थी फिर भी जब उनका देहान्त हुआ तो घरकी बेटियोंके साथ-साथ बहुएं भी आंसू बहा रही थीं। उस परिवारमें समाजके रीति-रिवाजोंका कोई महत्त्व न था इसलिये किसी रस्मका पालन नहीं हुआ। मरते समय अम्मा-जीने इच्छा प्रकट की थी कि भजन गानेके सिवा और कुछ न किया जाय इसलिये बेटे, बेटियां, पोते, बहुएं सब उन्हें घेरकर भजन गा रहे थे, साथ ही चुपके-चुपके आंसू बहाते जा रहे थे। यह अनिवार्य-की, शांति और श्रद्धाके साथ स्वीकृतिका ऐसा दृश्य था कि दादी, पड़दादीको जाननेकी उत्कंठा जाग उठी।

दूसरे दिन एक बहूसे बातचीत हुई तो वह गद्-गद् होकर बोली, 'अम्माजीने हम सबको कितना सिखाया। कभी कुछ कहा नहीं, बस कर दिखाया।' कितने बड़े घरकी बहू थीं। एक रात जब सब लुप्त हो गया तो भी वैसे ही प्रसन्न बनी रहीं, जब पति गये तो न रोयीं, न शिकायत की; उनके सामने बेटेके सिरपर मुसीबतके पहाड़ टूटे तो अम्माजी हंसकर कहतीं, 'अरे पहले सोनेको तपाया जाता है, तभी वह शुद्ध होकर चमकता हुआ कुंदन बनता है। भगवान् मेरे बेटेको कसौटीपर कस रहे हैं। अच्छा है!' . . . . और एक दिन वही बेटा उनके सामने चल बसा तो हम सब टूट गये। अम्माजीने तब हमें ढांढ़स बंधाया। हमें उनका बड़ा सहारा था।' क्या शरीरसे अक्षम अम्माजीको नगण्य, निरर्थक कहा जा सकता है!

हमारा यह देश बड़ा ही विचित्र है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ओर निष्क्रिय अम्माजीका इतना गौरव! दूसरी ओर प्रौढ़ सशक्त रावजीको अपना परिवार पालनेमें कितनी मुश्किलका सामना करना पड़ रहा था।

रावजी सस्ते होटलोंमें जाकर हाथ जोड़-जोड़कर लोगोंसे प्रार्थना करता कि वे उससे मालिश करवा लें। वह एक ही रुपयेमें पूरे शरीरकी मालिश कर देगा। घरमें बच्चे भूखे हैं, पत्नी रुग्ण है। इस भांति अनुनय-विनय करके कभी चार, कभी पांच रुपये कमा लेता था। एक दिन मनमौजी युवकोंकी टोली मालिश करवाकर सज-धजके साथ घूमने निकल पड़ी। रावजी अन्य ग्राहकोंकी आशामें वहीं बैठा रहा। रात गहराने लगी। निराश होकर रावजी उठा, चलनेको हुआ कि पांवसे कोई चीज टकरायी। उठाकर देखा तो मनी पर्स! फिर वहीं बैठ गया। हो-हल्ला करके यह युवक दल लौटा तो रावजीने पर्स उसके हवाले किया। उन्हींके एक सदस्यने जल्द-बाजीमें पर्स गिरा दिया था। उस युवकने पर्स खोलकर गिना, पूरे चार सौ रुपये वैसे-के-वैसे पड़े थे। कृतज्ञतावश उसने रावजीको पुरस्कार देना चाहा। बड़ी आनाकानीके बाद उसने पांचका नोट स्वीकार किया।

यह है भारतका सच्चा चरित्र!

इस अस्पृश्य चीजको, अश्रुत छंदको, जो भारतीय मानसमें फैली हुई है, हमारी संस्कृतिका ताना-बाना माना जाता है। यही है वह गौरव जिसे हमें बनाये रखना है लेकिन रक्षा करनेसे पहले हमें अपनी संस्कृतिको समझना होगा।

आजकल हम कितने भारतीय हैं? बहुत-सी चीजोंमें हम यूरोपका कूड़ा-कबाड़ अपने ऊपर उंडेलकर अपने-आपको गौरवान्वित अनुभव करते हैं।

भारतीय संस्कृति क्या है? क्या हम उसे जानते हैं, उसे आत्म-सात् किया है हमने?

दकियानूसी, लकीरके फकीर बने रहना भारतीयता नहीं है।

चरैवेति, चरैवेति हमारे पूर्वजोंका मंत्र रहा है। हमें भी इस मंत्रको अपना मार्गदर्शक बनाना चाहिये। —अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनान्दिनी

जून

१. प्रभु ही हर चीजको सत्ताकी गहराइयोंसे गति देते हैं, उनकी इच्छा निदेशन करती है, उनकी शक्ति कार्य करती है।

२. एक क्षणके लिये भी यह न भूलो कि यह सब स्वयं भगवान्ने अपने अंदरसे बनाया है। वे केवल हर चीजमें उपस्थित ही नहीं हैं अपितु स्वयं हर चीज हैं। भेद केवल अभिव्यंजना और अभिव्यक्तिमें है।

३. भौतिक स्तरपर भगवान् अपने-आपको सौंदर्यद्वारा, मानसिक स्तरपर ज्ञानद्वारा, प्राणिक स्तरपर शक्तिद्वारा और चैत्य स्तरपर प्रेमद्वारा अभिव्यक्त करते हैं।
जब हम पर्याप्त ऊपर उठ जाते हैं तो पता लगता है कि ये चारों पहलू एक ही चेतनामें एक-दूसरेके साथ मिल जाते हैं जो प्रेमसे भरपूर, प्रदीप्त, शक्तिशाली, सुन्दर, सभीको लिये हुए, सभीमें व्याप्त होती है।

४. हम सदा बदलते हुए ऊपरी दृश्योंको ही न देखा करें। हर चीजमें और हर जगह केवल भगवान्की अपरिवर्तनशील एकता का ही मनन करें।

५. इस भ्रमके संसारको, इस निराशाजनक दुःस्वप्नको भगवान्ने अपनी परम सद्वस्तु प्रदान की है और जड़ द्रव्यके हर अणुमें उनकी शाश्वतताका कुछ अंश है।

६. जो अपने हृदयके अंदर सुनना चाहता है उससे सारी सृष्टि भगवान्की बातें करती हैं।

७. परम चेतनाको छोड़कर और कोई चेतना नहीं है।
परम इच्छाको छोड़कर और कोई इच्छा नहीं है।
परम जीवनको छोड़कर और कोई जीवन नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम व्यक्तित्वको छोड़कर और कोई व्यक्तित्व नहीं है, वही एक और सर्व है।

८. सौंदर्य प्रकृतिका आनन्दपूर्ण निवेदन है।

९. तुम्हें कुछ भी अधूरा न छोड़ना चाहिये। हमेशा सावधान और जाग्रत् रहना चाहिये तब तुम सुरक्षित रहोगे।

१०. कृष्ण वैश्व भगवान् और अंतस्थ भगवान् दोनोंका प्रतिनिधित्व करते हैं। हम उनसे अपनी सत्ताके अंदर भी मिल सकते हैं और जो कुछ अभिव्यक्त जगत्में है उसमें भी।

११. जड़ भौतिकमें कृष्णकी लीला: सुन्दरता, प्रेम और आनन्द साथी हैं, यह लीला तुम्हें विस्तृत करती और तुम्हारी प्रगति करवाती है।

१२. राधाकी चेतना भगवान्के साथ पूर्ण आसक्तिका प्रतीक है।

१३. काली जो कुछ शुभ, सत्यमय और प्रगतिशील हो उसे कभी नष्ट नहीं करती, इसके विपरीत वह उसकी रक्षा करती है और उसे सहारा देती है।

१४. जबतक धरतीपर भगवान्की उपलब्धि तुम्हारा लक्ष्य न हो तबतक भगवान्के संदेशवाहकोंके बहुत नजदीक न आनेमें पूरी सावधानी बरतो, क्योंकि उनकी क्रिया तूफान जैसी होती है जो सभी स्थापित चीजोंको उड़ा देती है।

१५. हर बार जब हम आध्यात्मिक प्रगतिमें एक निर्णायक पग उठाते हैं तो भगवान्के अदृश्य शत्रु हमेशा बदला लेनेकी कोशिश करते हैं। जब वे अंतरात्माको नुकसान नहीं पहुंचा सकते तो शरीरपर प्रहार करते हैं लेकिन उनके सारे प्रयास व्यर्थ हैं और अंतमें वे पराजित होंगे क्योंकि भागवत कृपा हमारे साथ है।

१६. हमें विरोधी शक्तियोंको शरारत करनेका अवसर कभी न देना चाहिये—वे जरा-सी निश्चेतनाका लाभ उठाती हैं।

१७. ईर्ष्या, स्वार्थपूर्ण असंतोष और आहत दर्प तुम्हें भागवत रक्षण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से बाहर खींचता है, चेतनाके द्वारको विरोधी आक्रमणोंके लिये खोल देता है।

इन भ्रांतिपूर्ण गतिविधियोंको अपने अंदर होने देनेसे इंकार करके ही तुम विरोधी प्रभाव और उसके विपत्तिजनक परिणामोंसे छुटकारा पानेकी आशा कर सकते हो।

१८. विरोधी शक्तियोंको संसारमें सहा जाता है क्योंकि वे मनुष्यकी सच्चाईकी परख करती हैं। जिस दिन मनुष्य पूरी तरह सच्चा हो जायगा वे चली जायेंगी क्योंकि तब उनके अस्तित्वका कोई कारण न रह जायगा।

१९. आदमी पूजा करनेसे इसी शर्तपर अलग रह सकता है कि वह बदले, लेकिन बहुत-से ऐसे हैं जो न तो बदलना चाहते हैं न पूजा करना!

२०. मनुष्यको अधिकार है कि वह मुक्त रूपसे दिव्य सत्यकी खोज करे और मुक्त रूपसे अपने ही ढंगसे उसकी ओर जाय। लेकिन हर एकको जानना चाहिये कि उसकी खोज केवल उसीके लिये अच्छी है, उसे औरोंपर आरोपित नहीं करना चाहिये।

२१. अपना अच्छे-से-अच्छा प्रयास करो और परिणाम प्रभुके हाथोंमें सौंप दो।

२२. श्रीअरविंद कहते हैं कि मनुष्य अपने-आपको जो सोचता है वही बन जाता है।

२३. तुम्हें नैतिकताको छोड़ देने या पानेका तबतक कोई अधिकार नहीं है जबतक तुम अपने-आपको किसी भी नैतिक विधि-विधानसे ऊंचे और बहुत अधिक कठोर विधानके अधीन न कर लो।

२४. अगर हर एक पूर्ण सच्चाई, ईमानदारी और सद्भावनासे व्यक्तिगत प्रयास करे तो कामके लिये सबसे अच्छी परिस्थितियां प्राप्त हो जायेंगी।

२५. हे मनुष्यो! तुम शांति जैसे उदात्त शब्दका उच्चारण भी कैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सकते हो जब तुम्हारे हृदयोंमें शांति नहीं है।

२६. किसी उद्देश्यके लिये हिंसा कभी बहुत अच्छा साधन नहीं होती। कोई अन्यायद्वारा न्याय, घृणाद्वारा सामंजस्य प्राप्त करनेकी आशा कैसे कर सकता है?

२७. भगवान् हर जगह हैं और हर जगह परम रूपसे सचेतन हैं। ऐसी कोई चीज न करनी चाहिये जो भगवान्के आगे न की जा सके।

२८. भगवान्के अंदर ही संरक्षण है, उन्हींकी शरण लो और समस्त भयको दूर फेंक दो।

२९. सर्वोत्तम सुरक्षा है भागवत कृपामें अचल श्रद्धा।

३०. संरक्षण सक्रिय होता है और वह तभी प्रभावकारी हो सकता है जब तुम्हारी ओरसे सतत, पूर्ण श्रद्धा हो।

३१. उदारता अपने-आपको देती है और बिना मोल-भावके देती है।

(श्रीमातृवाणी, खंड १५)

शरीरमें साधना

इस शरीरमें न तो देवताका निर्विरोध अधिकार है न संतकी अविचलित शांति। अभीतक यह अतिमानव अवस्थाका नौसिखिया भर है।

*

हे मेरे मधुर स्वामी, परम 'सत्य'! मैं अभीप्सा करती हूं कि मैं जो भोजन लेती हूं वह मेरे शरीरके समस्त कोषाणुओंमें तेरा सर्व-ज्ञान, तेरी सर्वशक्ति और तेरा सर्व-शुभ भर दे।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा शरीर तभी अतिमानसिक शरीर बनेगा जब मनुष्योंकी प्रगतिके लिये यह जरूरी न रहेगा कि यह उनके शरीर जैसा हो।

*

यह तथ्य है कि 'परम देव' ने हमेशा शरीरको रूपांतरित करने और उसे धरतीपर अपनी अभिव्यक्तिका एक उपयुक्त यंत्र बनानेके उद्देश्यसे भौतिक शरीर धारण किया। लेकिन यह भी एक तथ्य है कि अभीतक, वे यह करनेमें असफल रहे हैं और किसी-न-किसी कारण उन्हें रूपांतरके कार्यको अधूरा छोड़कर अपना भौतिक शरीर त्यागना पड़ा।

भगवान् जिस शरीरद्वारा अपने-आपको अभिव्यक्त कर रहे हैं उसे संपूर्ण रूपांतर साधित होनेतक बनाये रखें, इसके लिये जरूरी है कि, ज्यादा नहीं तो कम-से-कम एक व्यक्ति सामंजस्य, बल, सचाई, सहनशीलता, निःस्वार्थता, भौतिकमें संतुलनकी आवश्यक शर्तोंको पूरा करे। यह शरीर जिसमें भगवान् अवतरित होते हैं यह केवल सबसे महत्त्वपूर्ण वस्तु ही न हो, बल्कि अपवादिक रूपसे एकमात्र महत्त्वपूर्ण चीज हो, स्वयं भागवत 'कार्य'से भी अधिक महत्त्वपूर्ण, बल्कि यूं कहें, यह शरीर धरतीपर भागवत 'कार्य' का प्रतीक और मूर्त रूप हो जाय।

*

मुझे काम कभी नहीं थकाता; जब मैं असंतोष, अवसाद, संदेह, गलतफहमी और दुर्भावनाके वातावरणमें काम करनेके लिये बाधित होती हूं तो एक-एक कदम आगे बढ़ानेमें बहुत अधिक प्रयासकी जरूरत होती है और शरीरपर उसका असर दस वर्षके सामान्य कामसे ज्यादा होता है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले कुछ दिनोंसे सवेरे जागते समय मुझे एक बड़ा अजीब-सा संवेदन होता है कि मैं एक शरीरमें प्रवेश कर रही हूं जो मेरा नहीं है—मेरा शरीर मजबूत और स्वस्थ, ऊर्जा और जीवनसे भरा, लोचदार और सामंजस्यपूर्ण है, लेकिन इस शरीरमें इनमेंसे कोई गुण नहीं होता; उसके साथ संपर्क पीड़ा देता है; मुझे अपने-आपको उसके अनुकूल बनानेमें बहुत कठिनाई होती है और इस बेचैनीको दूर करनेमें बहुत समय लगता है।

*

कल रात फिल्म देखनेके बाद मुझे जो अनुभूति हुई थी यह निर्णायक रूपसे उसके बाद आयी। मैंने बहुत जोरसे अनुभव किया कि मेरे बालक स्वाधीन हो गये ह और अब उन्हें अपने कार्यको अच्छी तरह करनेके लिये मेरे भौतिक हस्तक्षेपकी जरूरत नहीं है। इतना काफी है कि मेरी उपस्थिति उनके बीच अन्तःप्रेरणा और पथ-प्रदर्शनके रूपमें रहे ताकि वे लक्ष्यको स्पष्ट रूपसे देख सकें और भटक न जायें। स्वभावतः इसका परिणाम होता है अपने अंदर भौतिक निवर्तन ताकि भौतिक रूपसे शरीरके रूपांतरपर एकाग्र हुआ जा सके। अब मैं बाहरी रूपसे उन्हें काम करनेके अपने विचारोंके अनुसार चीजें करनेके लिये छोड़ सकती हूं और अपनी उपस्थितिको घटाकर न्यूनाधिक रूपसे अदृश्य सर्जक अंतःप्रेरणा और चेतनाकी भूमिकामें रखूं।

*

शरीर बार-बार और मर्मस्पर्शी सचाईके साथ दोहराता है: "मैं किसीसे भी कोई भी चीज क्यों मांगूं? अपने-आपमें मैं कुछ नहीं हूं, मैं कुछ नहीं जानता, मैं कुछ नहीं कर सकता। जबतक सत्य मुझे भेदकर मुझे आदेश न दे, मैं छोटे-से-छोटा निर्णय करने और यह जाननेमें असमर्थ हूं कि बहुत ही तुच्छ परिस्थितियोंमें करने लायक और जीने लायक सबसे अच्छी चीज क्या है। क्या मैं कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस हदतक रूपांतरित होनेके योग्य बनूंगा कि मुझे जो होना चाहिये वह होऊं और जो धरतीपर अभिव्यक्त होना चाहता है उसे अभिव्यक्त करूं ?" गहराइयोंसे निर्विवाद निश्चितिके साथ हमेशा तेरा यह उत्तर क्यों आता है, प्रभो : "अगर तुम न कर सको, तो धरतीपर और कोई शरीर इसे न कर सकेगा"? बस, एक ही निष्कर्ष निकलता है: मैं अपने प्रयासमें लगी रहूंगी, हार न मानूंगी, मैं मृत्यु या विजयतक लगी रहूंगी।

*

मेरे प्रभो, तू मुझसे जो करवाना चाहता था वह मैंने कर दिया। 'अतिमानस'के द्वार खुल गये हैं और 'अतिमानसिक चेतना', 'ज्योति' और 'शक्ति' की धरतीपर बाढ़ आ गयी है।

लेकिन अभीतक मेरे चारों ओर वे लोग इससे अनजान हैं— उनकी चेतनामें कोई मौलिक परिवर्तन नहीं आया और चूंकि वे मेरी बातपर विश्वास करते हैं इसीलिये यह नहीं कहते कि सचमुच कुछ नहीं हुआ। और फिर बाहरी परिस्थितियां पहले जैसी थीं उससे अधिक कठोर हैं और ऐसा लगता है कि पहलेसे भी अधिक अलंघ्य कठिनाइयां उठती आ रही हैं।

अब चूंकि अतिमानस यहां है—इसके बारेमें मुझे पूरा विश्वास है, भले सारी धरतीपर उसे जाननेवाली मैं अकेली ही क्यों न होऊं- तो क्या इसका मतलब है कि इस रूपका लक्ष्य पूरा हो गया है और इसकी जगह कोई और शरीर इसके कामको उठा लेगा ? मैं तुझसे पूछती हूं और उत्तर मांगती हूं—कोई ऐसा संकेत जिससे मुझे निश्चित रूपसे पता लग जाय कि अब भी मेरा काम है और मुझे समस्त विरोधों, समस्त निषेधोंके होते हुए जारी रखना है।

संकेत चाहे कुछ भी हो, इसकी मुझे परवाह नहीं है पर होना चाहिये **स्पष्ट**।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं अबतक "मैं" नहीं कह सकती, क्योंकि जब मैं "मैं" कहती हूं तो लोग मेरे शरीरके बारेमें सोचते हैं, और मेरा शरीर अबतक सचमुच मैं नहीं है, उसका रूपांतर अबतक नहीं हुआ, और यह बात उनके मनमें गड़बड़ पैदा करती है। इसके अलावा, मैंने हमेशा यह अनुभव किया है कि भौतिक चेतनामें जीवंत और निरंतर नम्रता बनाये रखनेके लिये अपनी अपूर्णता देखनेकी मेरे शरीरकी यह वृत्ति अनिवार्य थी।

जब रूपांतर सर्वांगीण हो जाय, तब मैं कह सकूंगी, उससे पहले नहीं।

*

हे दिव्य 'प्रकाश', अतिमानसिक 'सद्वस्तु':

इस भोजनके साथ सारे शरीरमें प्रवेश कर, प्रत्येक कोषाणुमें प्रवेश कर, हर अणुके अंदर अपने-आपको प्रतिष्ठित कर; वर दे कि हर चीज पूरी तरह सच्ची, निष्कपट और ग्रहणशील बन जाय, ऐसी सभी चीजोंसे मुक्त हो जो अभिव्यक्तिमें बाधा देती हैं, संक्षेपमें, मेरे शरीरके उन सभी भागोंको जो अभीतक तू नहीं हैं, अपनी ओर खोल।

*

और शरीर परम प्रभुसे कहता है: "तुम जो चाहते हो कि मैं बनूं मैं वही बनूंगा, तुम जो चाहते हो कि मैं जानूं, उसे मैं जानूंगा, तुम जो चाहते हो कि मैं करूं, उसे मैं करूंगा।"

*

लेकिन इस शरीरको व्यायामकी जरूरत है और सीढ़ियोंपर चढ़ना उतरना वास्तवमें बहुत अच्छा व्यायाम है। और फिर उसे मेरे

3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काममें सहयोग देनेकी आदत है और अगर उसकी कठिनाइयोंके कारण कोई परिवर्तन किया जाय तो उसे दुःख होगा।

अतः चीजें जैसी हैं वैसी ही चलती रहेंगी और जब उसके कठिनाइयोंमेंसे मुक्त होनेका समय आयेगा तब कठिनाइयां गायब हो जायेंगी।

*

क्या आप कृपया मुझे अपने नये शरीरमें दर्शन देंगी? मेरा ख्याल है कि यह आपकी सहायतासे संभव होगा।

सहायता तो हमेशा रहती है लेकिन उसे ज्यादा तीव्र कर दिया जायगा क्योंकि तुम्हें बहुत लंबे समयतक प्रतीक्षा करनेके लिये तैयार रहना चाहिये।

(श्रीमातृवाणी, खंड १३)

पुनरुज्जीवन

हमारे लिये पुनरुज्जीवनका अर्थ है पुरानी चेतनाका झड़ जाना; लेकिन यह केवल पुनर्जन्म नहीं है जो अतीतके साथ पूरी तरह संबंध तोड़ देता है। इसमें अपने पुराने स्व, अपनी निचली बाह्य प्रकृतिकी ओरसे मरने और नये सूत्रपातमें एक निरंतरता रहती है। पुनरुज्जीवनके अनुभवमें पुरानी सत्ताको छोड़नेकी गतिमें और उभरती हुई नयी चेतना तथा नयी शक्तिकी गतिमें नजदीकका संबंध होता है ताकि फेंकी हुई चीजमें जो कुछ उत्तम है वह आनेवाली नयी रचनाके साथ मिल सके। पुनरुज्जीवनका सच्चा अर्थ यह है कि भागवत चेतना जिस निश्चेतनामें उतरकर अपने-आपको खो बैठी है, वहांसे, उस अचेतनासे जागती है और मृत्यु, रात्रि और अंधकारके लोकमें उतरनेके बावजूद अपने बारेमें फिरसे सचेतन होती है। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंधकारका लोक हमारी भौतिक रातसे ज्यादा अंधेरा होता है : अगर तुम उसमें गोता लगाकर आओ तो तुम्हें सचमुच अधिक-से-अधिक अभेद्य रात भी उजली लगेगी, ठीक वैसे ही जैसे दिव्य चेतनाके सच्चे प्रकाशमेंसे, बिना किसी धुंधलेपनके अतिमानसिक प्रकाशमेंसे लौटकर भौतिक सूर्य काला लगता है। लेकिन उस परम अंधकारकी गहराइयोंमें 'ज्योति' छिपी रहती है। वह 'ज्योति' वह 'चेतना' तुम्हारे अंदर जागे, तुम्हारे अंदर महान् 'पुनरुज्जीवन' हो।

(श्रीमातृवाणी खण्ड ३ से)

भौतिकमें भागवत प्रेमके लिये अभीप्सा

यह एक फूल है जिसे हम "भौतिकमें भागवत प्रेमके लिये अभीप्सा" कहते हैं। यहां "भौतिक" से मेरा मतलब है भौतिक चेतना, बिलकुल साधारण बाहरी चेतना, अधिकतर मनुष्योंकी साधारण चेतना जो ज्यादा ऊंची चीजोंके लिये अभीप्सा करनेकी जगह आराम, अच्छा भोजन, अच्छे कपड़े, सुखद संबंध आदिको ज्यादा महत्त्व देती है। भौतिकमें भागवत प्रेमके लिये अभीप्सामें यह बात ध्वनित होती है कि भौतिक सिर्फ यही अनुभव करना चाहता है कि भगवान् उससे कैसे प्रेम करते हैं, इसके अतिरिक्त वह कुछ नहीं मांगता। वह भली-भांति अनुभव करता है कि उसकी सब सामान्य संतुष्टियां एकदम अपर्याप्त हैं। लेकिन इसमें समझौता नहीं हो सकता : यदि भौतिक भागवत प्रेम चाहता है तो उसे बस वही चाहना चाहिये, वह यूं नहीं कह सकता : "मैं भागवत प्रेम भी लूंगा और साथ ही अन्य आसक्तियों, आवश्यकताओं और उपभोगोंको भी बनाये रखूंगा . ."।

चैत्य केंद्र अभीप्साका मौलिक निवासस्थान है जहांसे वह सत्ताके विभिन्न भागोंमें प्रकट होती है। जब मैं भौतिकमें अभीप्साकी बात कहती हूं तो इसका मतलब यह होता है कि तुम्हारी वही चेतना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो भौतिक सुख-चैनके लिये लालायित रहती है, वही तुम्हारी चेतना-के उच्चतर भागोंके दबावके बिना ऐकान्तिक रूपसे भागवत प्रेमकी मांग करे। साधारणतः तुम्हें अपने उच्चतर भागोंके द्वारा उसे दिव्य प्रकाश दिखानेकी जरूरत होती है; निश्चय ही यह निरंतर करना जरूरी है वरना भौतिक कभी न सीखेगा और अपने-आप सीखनेसे पहले प्रकृतिके युगोंके कई चक्र बीत जायेंगे। वास्तवमें, प्रकृतिके युग-चक्रोंका मतलब यही है कि उसे सब प्रकारकी तृप्तियां दी जायं और उन्हें निःशेष करके उसे यह विश्वास दिलाया जाय कि उनमेंसे किसीसे उसे सन्तोष नहीं हो सकता, कि वह अंदरसे सचमुच जिस चीजकी खोज कर रहा है वह भागवत सन्तोष है। योगमें हम प्रकृतिकी इस धीमी प्रक्रियाको तेज कर देते हैं और इस बातपर आग्रह करते हैं कि भौतिक चेतना सत्यको देखे, उसे पहचानना और उसीको चाहना सीखे। लेकिन उसे सत्यका दर्शन कैसे कराया जाय? बस, वैसे ही जैसे तुम अंधेरे कमरेमें रोशनी लाते हो। अपनी भौतिक चेतनामें अपने अधिक परिष्कृत भागोंके अंतर्भास और अभीप्साके द्वारा प्रकाश करो और तबतक करते रहो जबतक उसे यह प्रतीति न हो जाय कि सामान्य निचली चीजोंकी भूख कितनी व्यर्थ और असंतोष-जनक है, और वह सहज रूपसे सत्यकी ओर न मुड़ चले। और जब वह सत्यकी ओर मुड़ जायगी तो तुम्हारा सारा जीवन ही बदल जायगा—इस अनुभूतिमें कोई भूल नहीं हो सकती।

जब बचपनमें मैं अपनी मांसे भोजन या किसी ऐसी छोटी-सी बातके विषयमें शिकायत करती तो वे मुझे सदा यही कहतीं कि जाओ, इन तुच्छ विषयोंकी चिंता न करके अपना काम करो या पढ़ो-लिखो। वे मुझसे कहतीं कि क्या तुमने अपने विषयमें यह सुखद भावना बना रखी है कि तुम आरामके लिये पैदा हुई हो। वे कहतीं "तुम उच्च आदर्शको चरितार्थ करनेके लिये जन्मी हो।" और इतना कहकर मुझे चलता करतीं। वे बिलकुल ठीक कहती थीं, यद्यपि इसमें संदेह नहीं कि सर्वोच्च आदर्शके विषयमें उनका विचार हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानदण्डोंसे कहीं छोटा था। हम सभी सर्वोच्च 'आदर्श' के लिये उत्पन्न हुए थे: अतएव, जब कभी हमारे आश्रममें अधिक आराम और भौतिक सुखकी कोई तुच्छ मांग पूरी नहीं की जाती तो यह तुम्हारी भलाईके लिये और जिस उद्देश्यके लिये तुम यहां आये हो उसकी पूर्तिके लिये ही होता है। मांकी अस्वीकृति वस्तुतः उतने अंशमें कृपा ही होती है जहांतक कि तुम इसके द्वारा उस सर्वोच्च 'आदर्श'-के योग्य और उसके अनुसार गढ़े जानेके अधिकारी समझे जाते हो।

(मातृवाणी खण्ड ३ से)

सूर्यसे मैत्री

मैं कुछ ऐसे युवकोंको जानती थी जो हमेशा शहरोंमें ही रहे थे—शहरमें, और वहां उन छोटे कमरोंमें, जैसे कि बड़े शहरोंमें हुआ करते हैं, जहां हर एक ठुंसा रहता है। हां, तो वे अपनी छुट्टियां देहातमें बिताने दक्षिण फ्रांसमें आये थे, वहां सूरज काफी तपता है, स्वभावतः यहांकी तरह नहीं, लेकिन फिर भी वहां गर्मी बहुत पड़ती है (उदाहरणके लिये, जब तुम भूमध्य सागरके तटकी धूपकी तुलना पैरिसकी धूपके साथ करो, तो सचमुच उसमें बहुत फर्क होता है), तो, जब वे देहातमें घूमने निकले तो पहले कुछ दिनोंतक उनके सिरमें भयंकर दर्द रहा। वे धूपके कारण बिलकुल बेचैन हो उठे; लेकिन अचानक उन्हें यह विचार आया: "अगर हम सूरजके साथ दोस्ती कर लें तो वह हमें आगेसे नुकसान नहीं पहुंचायेगा।" और उन्होंने सूरजके साथ मैत्री और विश्वासका संबंध जोड़नेके लिये एक तरहका आंतरिक प्रयास शुरू कर दिया, और जब वे धूपमें होते तो सिमट-सिकुड़कर अपने-आपसे यह कहनेके बजाय: "ओह, कितनी गर्मी है, कितनी जलन होती है।" वे कहते: "आहा! यह सूरज कितनी शक्ति, कितने आनन्द और कितने प्रेमसे भरपूर है!" इत्यादि...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे यूं (संकेत) खुल गये, और इतना ही नहीं कि आगेसे उन्हें बिलकुल कष्ट न उठाना पड़ा, बल्कि उन्होंने स्वयंको इतना शक्तिशाली अनुभव किया कि उनसे जो भी कहता : "ओह, गरमी पड़ रही है" —वे यही कहते : "हमारी तरह करो, तुम देखोगे कि यह कितना भला करती है।" और वे नंगे सिर, बिना किसी असुविधाके घंटों तपती धूपमें रह सकते थे। सिद्धांत वही है।

हां, सिद्धान्त वही है। उन्होंने अपने-आपको सूर्यमें जो वैश्व प्राणिक शक्ति है उसके साथ जोड़ लिया और उन्हें वह शक्ति प्राप्त हुई जिसने उन सभी चीजोंको हटा दिया जो उन्हें अप्रिय थीं।

प्रकृति और मानव

जब तुम देहातमें होते हो, पेड़ोंके नीचे टहलते हुए स्वयंको 'प्रकृति' के, वृक्षोंके, आसमानके, सभी पत्तियों, सभी शाखाओं और सभी घासोंके बहुत निकट अनुभव करते हो, जब तुम इन वस्तुओंके साथ एक गहरी दोस्तीका अनुभव करते हो और जब तुम उस हवामें सांस लेते हो जो इतनी अच्छी है, जो सभी पेड़-पौधोंकी सुगंध लिये होती है, तब तुम अपने-आपको खोलते हो, खुलते समय वैश्व शक्तियोंके साथ तुम्हारा संबंध जुड़ जाता है, सभी चीजोंके साथ यही बात होती है।

क्या ठंडमें भी हम यही चीज कर सकते हैं?

हां, मेरा ख्याल है। मैं समझती हूं कि सभी परिस्थितियोंमें तुम यही कर सकते हो।

'प्रकृति' की व्यवस्थामें सूरज एक बहुत शक्तिशाली प्रतीक है। इसलिये बात एकदम वही न होगी, उसमें ऊर्जाकी असाधारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घनता होती है। ठंड मुझे अधिक अभावात्मक वस्तु प्रतीत होती है: वह किसी वस्तुका अभाव है। लेकिन हर हालतमें, अगर तुम 'प्रकृति' के क्रिया-कलापोंके तालके साथ मेल बैठाना जानो, तो तुम बहुत-सी असुविधाओंसे बच जाते हो।

*

जब किसीको नींद नहीं आती, वह आराम नहीं कर सकता क्योंकि वह बहुत ज्यादा उत्तेजित और व्याकुल है, उसकी स्नायुएं अत्यधिक उत्तेजनाके कारण दुर्बल या रुग्ण बन गयी हैं, तो उससे कहा जाता है, उदाहरणके लिये, एक मछलीघरके सामने बैठ जाओ, मछलीघर बहुत सुन्दर होता है, है न ?—एक मछलीघरके सामने बैठ जाओ जिसमें छोटी-छोटी सुन्दर मछलियां हों, सुनहरी मछलियां। वहां बस बैठ जाओ, वहां एक आरामकुर्सीपर बैठ जाओ और कुछ भी न सोचनेकी कोशिश करो, कम-से-कम अपनी कठिनाइयोंके बारेमें न सोचो, बस मछलियां देखो। तो वह मछलियोंको देखता है जो इधर-उधर घूमती हैं, आती हैं, जाती हैं, तैरती हैं, फिसलती हैं, मुड़ती हैं, मिलती हैं, एक-दूसरेका रास्ता काटती हैं, अनिश्चित काल-तक पीछा करती हैं, वह देखता है कि पानी मछलियोंके पाससे गुजरता है और मछलियां भी आती जाती हैं। कुछ समयके बाद वह मछलीका जीवन जीने लगता है। वह आता-जाता है, तैरता, फिसलता, खेलता है। और एक घंटा समाप्त होनेपर उसकी स्नायुएं बिलकुल ठीक हालतमें होती हैं और वह पूरी तरह शांत होता है!

लेकिन शर्त यही है कि वह अपनी कठिनाइयोंके बारेमें न सोचे, बस मछलियोंको ताकता रहे।

*

सभी शक्तियां वैयक्तिक हैं; प्रकृतिमें सभी चीजें वैयक्तिक हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन अगर हम उन्हें अवैयक्तिक मान लें, तो उनके साथ हमारा अवैयक्तिक संबंध होता है।

उदाहरणके लिये अभी जो हुआ है उसीको लो। अगर तुम मौसम-विज्ञानी हो और अगर तुमने सभी वायु-प्रवाहों आदिको नाप रखा है, और कहते हो: "जब यह हुआ है, तो वह होगा, और इतने दिन वर्षा होगी, आदि।" तो यह तुम्हारे लिये एक शक्ति है जिसे हम प्रकृतिकी शक्ति कहनेके लिये बाधित हैं, और उसके लिये तुम कुछ भी नहीं कर सकते, सिर्फ चुपचाप देखते रहो और दिनोंकी अमुक संख्याके बीतनेकी प्रतीक्षा करो। लेकिन अगर तुम्हारा वैयक्तिक संबंध उन छोटी-मोटी सचेतन सत्ताओंके साथ हो जो आंधीके पीछे, तूफानके पीछे, वर्षा, बिजलीके पीछे, सभी तथाकथित प्रकृतिकी शक्तियोंके पीछे होती है, जो शक्तियां और वैयक्तिक शक्तियां हैं, अगर उनके साथ तुम्हारा वैयक्तिक संबंध हो और इस संबंधके द्वारा तुम उनसे दोस्ती कर सको, तो उन्हें शत्रु और निर्दय यंत्र माननेकी जगह जिसके लिये तुम कुछ भी नहीं कर सकते, जिसे सह लेना ही एकमात्र उपाय है, शायद तुम उनके साथ जरा ज्यादा मैत्रीपूर्ण संबंध बना सकते हो और उनपर कुछ प्रभाव पा सकते हो और उनसे पूछ सकते हो: "तुम यह तूफान और मेह क्यों लाना चाहते हो, तुम यह सब कहीं और क्यों नहीं करतीं?"

और मैंने अपनी आंखोंसे देखा है . . . मैंने यहां देखा है, फ्रांसमें देखा है, अल्जीरियामें देखा है . . . वर्षा किसी विशेष और बिलकुल निश्चित स्थानपर होती थी, और वह ठीक ऐसा स्थान होता था जहां वर्षाकी नितांत आवश्यकता थी, क्योंकि वह सूखा था और वहां एक खेत था जिसे पानीकी जरूरत थी, और एक और जगहपर . . . बस, इतनी ही दूरीपर जैसे यहांसे इस कमरेके उस छोरतक, उस जगह थोड़ा-सा स्थान था जहां धूप खिली थी, सब कुछ सूखा था, क्योंकि वहां धूपका होना जरूरी था। स्वभावतः, अगर तुम वैज्ञानिक दृष्टिकोणकी खोज करो, तो वे यह बात बहुत वैज्ञानिक
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढंगसे समझा देंगे। लेकिन मैंने वस्तुतः इसे हस्तक्षेपके परिणाम-स्वरूप देखा है... किसी ऐसे व्यक्तिके कारण जो यह करना जानता था और जिसने परिणाम पाया।

अलजीरियामें मैंने ऐसी कम चीजें नहीं देखीं, बड़ी ही मजेदार। और कहा जा सकता है कि चूंकि वहां जरा अधिक वास्तविक ज्ञान-का एक विशेष वातावरण था, इसलिये वहां छोटी-मोटी सत्ताएं थीं, उदाहरणके लिये एक ऐसी सत्ता जो हिमपातका संचालन करती थी, जो हिम पैदा करती थी, जो आकर कमरेमें प्रवेश करके किसी-से यह कह सकती थी: "अब यहां बरफ गिरनी चाहिये!" (उस देशमें पहले कभी बरफ नहीं गिरी थी, कभी नहीं।) "बरफ! तुम मजाक कर रहे हो। सहाराके इतने नजदीक बरफ पड़ेगी?" "बरफ गिरनी ही चाहिये, क्यों लोगोंने यहां, पहाड़ोंपर देवदारुके पेड़ लगाये हैं, और जब हम देवदारु देखते हैं तो आ जाते हैं। देवदारु हमें बुलानेके लिये हैं, इसलिये हम आ रहे हैं।" तो, देखो, इस तरह बहस हुई, और वह छोटी-सी सत्ता बरफ लानेकी स्वीकृति पाकर चली गयी, और उसके जानेपर फर्शपर बरफके पानी-की डबरी बनी थी, बरफ पिघलकर पानी बन गयी थी। यह भौतिक चीज थी... पहाड़ बरफसे ढका हुआ था। अलजीरियामें! वह सहारा रेगिस्तानके **बहुत नजदीक** है, तुम कुछ किलोमीटर उतरो तो सहारामें जा पहुंचोगे। किसीने खिलवाड़के लिये पहाड़ियोंको देवदारुके वृक्षोंसे ढक दिया था। "देवदारु ठण्डे देशोंके पेड़ हैं, तुमने हमें बुलाया क्यों? हम आ रहे हैं।" यह सारी सच्ची कहानी है, यह मन-गढ़न्त नहीं है।

सब कुछ तुम्हारे संबंधपर निर्भर है। बहुत संभव है कि मौसम-शास्त्री इसे भी समझा देते। मैं उसके बारेमें कुछ नहीं जानती। तुम जो चाहो उसे वे समझा देंगे।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तुत:, नियमितता क्या है? मैं जानती हूं कि जबसे मैं यहां आयी हूं, मैंने सभी संभव चीजें देखी हैं, और कुछ ही दिन ऐसे थे — ऐसे दिन बहुत ही कम थे—जब मैं कह सकती थी: "लो! गरमीकी पराकाष्ठा है, अब गरमियोंकी ऋतु है," और था यह नवंबरके शुरूमें। वह इस वर्षकी मईकी अपेक्षा बहुत अधिक गरम था। बस हम इस तरह सोचते हैं: "अब गरमियां हैं; उसके बाद पतझड़, फिर आयेगी ठण्ड।" और हम अपने-आपको उसके अनुकूल बना लेते हैं, लेकिन यह सच नहीं होता। तो, देखो! ऐसी चीजें होती हैं। यहांके लोगोंने मुझसे कहा था... मैं दूसरी बार अप्रैलके महीनेमें आयी थी... पहली बार, पहली बार, जैसा कि हम जानते हैं, मैं २९ मार्चको आयी थी, यानी अप्रैल उसके बाद आता है। उन दिनों यह माना जाता था: यहां कम-से-कम तीन महीने वर्षा कभी नहीं हुआ करती थी—पानीकी एक बूंद नहीं, सब कुछ सूख जाता था। छप्परपर जो पत्ते डाले जाते हैं वे इतने सूख जाते थे कि अचानक उनमें आग लग जाती और लपटें उठने लगती थीं। ऐसा ही हुआ करता था। मैं आयी और जबर्दस्त वर्षा! तब लोगोंने मेरी ओर देखा (यहां लोगोंमें इस तरहकी धारणा-सी है कि चीजें पूरी तरह यांत्रिक नहीं होतीं, समझे)। यह वर्षा कैसे हो रही है? तो मैंने उत्तर दिया: "पता नहीं, यह मेरा काम नहीं है, पर वर्षासे मेरी दोस्ती है।"

मैं दक्षिण फ्रांसमें पो नामक स्थानपर ऐसे समय गयी जब वहां कभी वर्षा नहीं हुआ करती—यानी, जिन लोगोंको अपने बचपनकी बातें भी याद थीं उन्होंने इन दिनोंमें पानीकी एक बूंद भी न देखी थी — वहां मूसलाधार वर्षा हुई।

मैं दक्षिण अलजीरिया गयी, स्वभावत: वहां खुश्की और बहुत तीव्र गरमी थी — वहां वर्षा शुरू हो गयी।

और फिर यहां भी वही बात हुई। लोगोंने कहा कि इससे पहले इस तरह केवल एक बार ही वर्षा हुई थी... इससे ज्यादा मैं नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानती . . . प्रायः दो सौ वर्ष पहले। लोगोंको यह बात याद थी कि कोई आया था और वर्षा हुई थी, और उन्होंने इसे बहुत ही अच्छा शकुन माना। तो देखो, यह अपवादिक नियतिका चिह्न था। यहां लोगोंमें शुभ और अशुभके मुहूर्तका, शुभ घटनाओंका, अशुभ घटनाओंका विचार होता है। हां, तो, जब कोई ऐसे समय आये जब वर्षा नहीं हुआ करती और वर्षा हो जाय, तो इसे बहुत शुभ घटना माना जाता है।

अतः चीजें वैसी होती हैं जैसे तुम उन्हें देखते हो। परंतु मैंने और चीजें भी देखी हैं जो इस तरहकी हैं, लेकिन वे बहुत सुखद नहीं होतीं। जबसे मनुष्यने आविष्कार किया—आविष्कार नहीं, बल्कि खोज की है—तबसे उसने बच्चोंकी तरह ऐसी चीजोंके साथ खेलना शुरू किया है जिन्हें वह नहीं जानता था, और अणु बम और इससे भी बदतर चीजें बनायी हैं। इसने सचमुच इन सब छोटी सत्ताओंको भयानक रूपमें क्षुब्ध कर दिया है जो वस्तुतः एक अपनी निजी लयके अनुसार रहती थीं, और उन्हें कम-से-कम पूर्वदृष्ट घटनाओंको अपनी आज्ञामें रखनेकी आदत थी। इससे वे बहुत-बहुत ज्यादा क्षुब्ध हो गयी हैं, उन्हें बहुत भयंकर रूपसे कष्ट हुआ है, और इससे वे अपना दिमाग गंवा बैठी हैं। अब उन्हें पता नहीं होता कि वे क्या कर रही हैं।

युद्धके अंतमें एक ऐसा समय था जब वहां, ऊपर चीजें सचमुच **भयंकर रूपसे** अस्त-व्यस्त हो गयी थीं। वे एक प्रकारकी विसंगतिमें रहती थीं; और चूंकि ये दुर्भाग्यपूर्ण अनुभव जारी हैं, अतः वे अभी-तक अपने आतंकसे निकल नहीं पायीं। वे संत्रस्त हैं। सचमुच लोग ऐसी चीजोंके साथ खेलते हैं जिन्हें वे केवल बाहरसे ही जानते हैं, यानी, वे बिलकुल नहीं जानते। वे बस इतना भर जानते हैं कि उनका गलत उपयोग कर सकें। कुछ भी हो सकता है जिनमें दुर्भाग्य-वश, उन महासंकटोंकी भी गिनती हो जाती है जिनके बारेमें बहुत पहले भविष्यवाणी की गयी थी। यह हो सकता है . . . यह निर्भर है . . . कि किसका हस्तक्षेप होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद और माताजीके साथ एक युवा साधकका पत्र-व्यवहार

मनके कौन-से भाग अबतक आपको समर्पित नहीं हैं?

भौतिक मनके वे भाग जो अबतक मिथ्या और अज्ञानके प्रभाव तले हैं। वे अभीप्साकी पूर्ण निष्कपटताके द्वारा प्रदीप्त हो सकते हैं।

२५ दिसंबर १९३३ —माताजी

तीसरे पहर, तीन बजे मुझे हर्षका अनुभव हुआ, लेकिन कुछ देर बाद मैंने ललाटसे ठोड़ीतक किसी चीजके उतरनेका, फिर उसके मुंहतक उठनेका अनुभव किया--उसके बाद वह गायब हो गयी--यह एक संवेदना थी।

किस तरहकी संवेदना?

२५ दिसंबर १९३३ —माताजी

मैं संवेदनाका वर्णन नहीं कर सकता। विशेष रूपसे मैंने ऊपरसे नीचे आते हुए एक दबावका अनुभव किया।

जिसका तुम वर्णन कर रहे हो वह सामान्यतः ऊपरसे आनेवाली माताजीकी शक्तिका दबाव होता है।

आप मेरी प्राणिक सत्ताके बारेमें कुछ कहेंगी?

वह बहुत चंचल है और उसे अधिक स्थिर और शांत रहनेकी आवश्यकता है।

—श्रीअरविंद

२६ दिसंबर १९३३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृपया बताइये कि प्राणको स्थिर और शांत करने, और उसे आपको समर्पित करनेके लिये मुझे क्या करना होगा ?

उसे शांत रहनेकी शिक्षा दो। यह केवल आदतकी बात है। उसकी सचेतन और अचंचल रहनेकी आदत डालो।

—श्रीअरविंद

२७ दिसंबर १९३३

क्या यह सच नहीं है कि मासिक पत्र और कहानियां पढ़नेके लिये व्यक्तिको एकदम पूरी तरह सामान्य चेतनामें डूबना पड़ता है ?

यह अनिवार्य नहीं है, लेकिन इससे उल्टा करना बहुत कठिन है।

—माताजी

२८ दिसंबर १९३३

हे मां ! वर दो कि मेरा प्राण स्थिर हो जाय। वह घड़ी निकट है जब प्राण . . .

एकाग्र, बलशाली और स्थिर हो जायगा।

—माताजी

२९ दिसंबर १९३३

यह कब संभव होता है कि भगवान् अपना प्रेम प्राणमें उंडेल सकें और प्राण केवल उन्हींसे प्रभावित हो ?

जब प्राण बदल जाय—यानी, जब वह भगवान्‌को चाहे।

—माताजी

३० दिसंबर १९३३

क्या मनोमय पुरुष मानसिक सत्तापर नियंत्रण रखता है ?

मनोमय पुरुष स्वयं मानसिक सत्ता है। उसे मानसिक प्रकृतिको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियंत्रित करना चाहिये। लेकिन बहुधा वह उसपर नियंत्रण करती है।

३ जनवरी १९३४ —श्रीअरविंद

आज शाम 'ड' ने मुझसे योगके बारेमें बातें कीं। मैं जानता हूं कि उससे बातें करना बहुत अच्छा नहीं था। ज्यादा अच्छा होता कि मैं न करता। लेकिन क्या आपको लगता है कि इस चीजसे मुझे कोई हानि पहुंची है?

हमें उन गलतियोंपर संताप नहीं करना चाहिये जो हमने की हैं; केवल अपनी अभीप्सामें पूर्ण निष्कपटताको बनाये रखनेकी आवश्यकता है -- तब अंतमें सब कुछ अच्छा होगा।

४ जनवरी १९३४ —माताजी

३१ दिसम्बरको जब 'प' बीमार थी तो आपने डा० बाबूसे कहा, "क्या 'प' आज राततक अच्छी नहीं हो सकती?" अगर "यह असंभव है" कहनेकी बजाय उन्होंने कहा होता, "अगर यह आपकी इच्छा है तो हो सकता है", तो शायद 'प' नववर्षके आधी रातके ध्यानके लिये आ पाती।

घटनाओंके चक्रको बदलनेके लिये केवल उत्तर पर्याप्त नहीं है। केवल अभीप्सा या श्रद्धा ही इसे कर सकते हैं — क्योंकि अभीप्सा और श्रद्धा ही भागवत कृपाको कार्य करने दे सकती हैं।

—माताजी

९ जनवरी १९३४

(बुलेटिन अगस्त ८२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंदके साथ बातचीत

(सौंदर्यबोध और कलाके बारेमें)

२७-८-१९२६

शिष्य—आपने कहा था कि सौंदर्य उच्चतर लोकोंमें एक शक्ति है। मानसिक क्षेत्रमें तो यह केवल एक कल्पना या आकर्षण है।

श्रीअरविंद—सौंदर्य भगवान्के आनन्दकी शक्ति है और वह हर लोकमें शक्ति ही है।

शिष्य—शक्तिके रूपमें सौंदर्यसे आपका क्या मतलब है?

श्रीअरविन्द—लेकिन सौंदर्य है क्या? स्वयं भगवान् जो अपनी आनन्द-शक्तिमें विराजमान हैं और जगत्में पूर्ण अभिव्यक्तिकी कोशिश कर रहे हैं।

शिष्य—भक्ति क्या है और उसमें सौंदर्यका क्या स्थान है?

श्रीअरविन्द—भक्तिमें बहुत-सी चीजें होती हैं, जैसे प्रेम, श्रद्धा आदि।

शिष्य — क्या भक्तिमें सौंदर्य-भाव भी होना चाहिये?

श्रीअरविन्द—हो भी सकता है और नहीं भी। भारतमें सौंदर्यको एक ऐसी शक्ति माना जाता है जिसके द्वारा भगवान्को आसानीसे पाया जा सकता है। यूरोपमें सौंदर्यको एक अनैतिक चीज माना जाता है।

शिष्य—सौंदर्य सम्बन्ध है—इसमें विभिन्न तत्त्वोंके बीच सामंजस्य और अनुपात रहता है। बिना किसी सम्बन्धके कोई सीधी-सादी चीज सुन्दर नहीं हो सकती।

श्रीअरविन्द—सौंदर्य अपने-आपको इसी तरह प्रकट करता है। सौंदर्यका सारतत्त्व सामंजस्यपूर्ण रूपमें नहीं होता। अन्य प्रकारका भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंदर्य हो सकता है जैसे विचारका सौंदर्य, शक्तिका सौंदर्य, जीवनका सौंदर्य।

शिष्य--जीवनके सौंदर्य और रूपके सौंदर्यमें क्या फर्क है?

श्रीअरविन्द--(लकड़ीका एक टुकड़ा हाथमें लेते हुए) इसमें जीवन नहीं है लेकिन रूप है। जीवनके सौंदर्यमें रूप भी होता है परंतु रूपका सौंदर्य निर्जीव भी हो सकता है।

शिष्य--आपने कहा था कि कला और सौंदर्यबोध प्राणमय जगत्की चीजें हैं।

श्रीअरविन्द--पहला आवेग प्राणसे आता है परंतु वह अन्य लोकोंसे भी तत्त्व ले सकता है।

शिष्य--एक अच्छा कलाकार मनसे कार्य नहीं करता, वह किसी उच्चतर स्रोतसे प्रेरणा पाता है।

श्रीअरविन्द--प्राणपर क्रिया करती हुई कोई उच्चतर शक्ति एक आवेग पैदा करती है। उसके बाद वह अभिव्यक्ति पानेके लिये मानसिक जगत्की ओर उठती है। उसमें बुद्धिका खेल हमेशा हुआ करता है परंतु सबसे अच्छी कविता अंतर्भासात्मक मनके द्वारा आती है। अंतर्भासात्मक मनका अर्थ बहुत-सी चीजें हैं। इसमें बहुत-सी शक्तियोंका खेल आ जाता है।

अच्छी कला पैदा करनेके लिये भौतिक यंत्रको प्रशिक्षित करना जरूरी है। ऐसे लोग हैं जिनके पास ऊपर तो बहुत-सी चीजें हैं पर नीचे भौतिक स्तरपर आते-आते वे चकरा जाते हैं।

शिष्य--कविता लिखनेसे पहले हमें भाषा आनी चाहिये।

श्रीअरविन्द--हां, काव्य-शास्त्र आना चाहिये।

शिष्य--भौतिक मनका प्रशिक्षण भी उच्चतर शक्ति ही करेगी।

श्रीअरविन्द--हां, लेकिन अगर वह पहलेसे ही प्रशिक्षित हो तो बहुत लाभ रहता है।

शिष्य--मन और प्राणके लिये भी यही बात है?

श्रीअरविन्द--हां, साधारणतः कवियों और कलाकारोंके लिये ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही होता है। यंत्र तैयार होते हैं, फिर भी उन्हें प्रशिक्षणकी जरूरत होती है।

शिष्य—अच्छी कलामें सीमांकन और संयम होना चाहिये?

श्रीअरविन्द—लेकिन सभी अच्छे कलाकार रूढ़िभंग करते हैं। वे अपने-आपको रूढ़ि और परंपराके अनुसार नहीं चलाते। वे रूप और रेखाको परिस्थितिके रूपमें स्वीकार करते हैं। परंतु ये चीजें बहुत लचीली रहती हैं। अलग-अलग कवि अलग-अलग छन्द लेकर उनसे अलग-अलग तरहका सौंदर्य प्रकट करते हैं। सौंदर्य केवल रूप और रेखातक सीमित नहीं है, उनसे कुछ अधिक भी है। यही चीज है जिसके कारण यूरोपीय लोगोंको भारतीय कला समझनेमें कठिनाई होती है। वे हेलेनिक आदर्श—रूपकी पूर्णता—को मानते हैं।

शिष्य—सौंदर्यमें ऐसा क्या है जो हमारे अंदर आनन्द पैदा करता है?

श्रीअरविन्द—सौंदर्य है अपने-आपको अभिव्यक्त करते हुए भगवान्। और आनन्द दो चीजोंसे निर्धारित होता है। (१) जो शक्ति अपने-आपको अभिव्यक्त कर रही है, (२) उस अभिव्यक्तिका तरीका। अभिव्यक्ति जितनी पूर्ण होगी उतनी ही अधिक उसमें सुन्दरता होगी।

शिष्य—सौंदर्य स्वयं भगवान् है।

शिष्य—'क' स्वयं भगवान् है।

श्रीअरविन्द—क्या तुम्हारा मतलब यह है कि 'क' सुन्दर नहीं है? (हंसी)

शिष्य—लेकिन जब आदमी सुन्दरकी सराहना करता है तो वह यह नहीं सोचता कि यह भगवान्की अभिव्यक्ति है।

श्रीअरविंद—लोग प्रायः कुरूप चीजें पसंद करते हैं और फिर जब कोई किसी सुन्दर लड़कीके पीछे भागता है तो वह यह नहीं सोचता कि वह भगवान्के पीछे भाग रहा है।

सभी चीजोंकी तरह सच्ची सुन्दरताको सराहनेके लिये प्रशिक्षणकी जरूरत होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य--भारतमें सौंदर्यबोधके ह्रासके क्या कारण हैं?

श्रीअरविन्द--पहला कारण तो यह कि लोगोंकी जीवनी-शक्तिमें ह्रास आ गया है। यह दो-तीन शताब्दी पहले शुरू हुआ था। उसमें फिर भी सुन्दरताके लिये कुछ सहज वृत्ति थी लेकिन यूरोपके धावेने और विशेषकर अंग्रेजोंके प्रभावने सब कुछ मटियामेट कर दिया। अंग्रेज संसारमें सबसे अधिक कलाहीन जाति है। विदेशी जिस किसी चीजको अच्छा कहते थे या जिस चीजके बारेमें उन्हें लगता था कि विदेशी इसे अच्छा मानते हैं, लोगोंने उसकी सराहना शुरू कर दी, उदाहरणके लिये रवि वर्माके चित्र यूरोपीय कलाकी नकल और बुरी नकल हैं।

शिष्य--हम यह कैसे जानें कि प्राचीन भारतीय बहुत सौंदर्यबोध रखते थे?

श्रीअरविन्द--यह भारतके प्राचीन साहित्यमें पाये जानेवाले वर्णनों-से पता चल सकता है। और बहुत-सी चीजें अब भी बची हुई हैं और कुछ रीति-रिवाज भी हैं जिनसे पता लगता है कि भारतीय बहुत कलाप्रेमी और सौंदर्यबोधवाले लोग थे।

*

शिष्य--जब उच्चतर शक्ति प्राणपर उसे शुद्ध करने और बदलनेके लिये क्रिया करती है तो क्या वह मनके द्वारा काम करती है?

श्रीअरविन्द--वह मनके द्वारा भी और सीधी अपने-आप भी कर्म करती है।

शिष्य--रूपांतरकी प्रक्रियामें जो परिवर्तन होते हैं क्या मनको उनका पता होता है?

श्रीअरविन्द--तैयारी पीछे-पीछे होती है यद्यपि मन अधिकाधिक सचेतन होता जाता है और प्राणमें होनेवाले परिवर्तनोंको देखता है।

(श्रीअरविंद सर्कल, १९८४ से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविको सलाह

किसी कविको रामकी अपेक्षा कृष्ण ज्यादा आकृष्ट करते थे। श्रीअरविंद उसे लिखते हैं, "तुम्हारे रामकी अपेक्षा कृष्णको ज्यादा पसंद करनेकी तहमें सांप्रदायिक नहीं, मनोवैज्ञानिक कारण है। उत्तर भारतके लोग रामको ज्यादा पसंद करते हैं क्योंकि वहांके लोग अधिक मानसिक, नैतिक और सामाजिक होते हैं और इस प्रकारके लोगोंके लिए राम अधिक अनुकूल हैं। इसके विपरीत बंगाली, भावप्रधान और अंतर्भासात्मक होते हैं और उन्हें राम बहुत शुष्क लगते हैं। वे कृष्णकी ओर ज्यादा झुकते हैं। मेरा ख्याल है कि इस प्रकारके चुनावका यही रहस्य है।

स्वभावकी पसंद और नापसंद तथा स्वाभाविक आकर्षणके अतिरिक्त हम कह सकते हैं कि राम ऐसे भगवान् हैं जो मानव मनके सांचेको स्वीकार करते और महिमान्वित करते हैं जब कि कृष्ण तो मानव सांचोंको तोड़ते हुए प्रतीत होते हैं ताकि ज्यादा ऊंचे स्तरके नये रूप बना सकें, क्योंकि वे सीधे अधिमानससे नीचे उतरे हैं और वहांकी शक्तियोंसे मनुष्यके मन, प्राण और हृदयपर हथौड़े बरसाते हैं ताकि उन्हें बदलकर, मुक्त करके दिव्य बना सकें। उन दोनोंके भेदको देखनेका कमसे कम यह भी एक तरीका है।

कलाकारका मिजाज

हम साधारणतः देखते हैं कि कलाकार बड़े तुनकमिजाज होते हैं। कवि, गायक, नर्तक सभी बड़ी जल्दी रूठ जानेवाले, झींगुरकी तरह फुदकनेवाले और समयपालन, वचनपालनके एकदम विरोधी होते हैं। जब कोई आदमी इस तरहके लक्षण दिखलाये तो हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह देते हैं इसका तो कलाकारोंका-सा मिजाज है। देखें श्रीअरविंद इस बारेमें क्या कहते हैं, "इस बातसे उदास होनेकी कोई जरूरत नहीं कि एक सर्वोत्तम स्थिति है जहां तुम अभी तक नहीं पहुंच पाये। हर कविको यह लगना चाहिए कि किसी स्तरपर एक ऐसी चमत्कारिक काव्य रचना है जहांतक वह नहीं पहुंच पाया है। उसे कभी वहांतक पहुंचनेके बारेमें निराशा न होनी चाहिए। उसे अपनी वर्तमान उपलब्धियोंको अपनी अंतिम मंजिल नहीं, उस लक्ष्यके रास्तेका एक पड़ाव या एक कदम मानना चाहिए जहां पहुंच कर वह अपनी कविता लिखना चाहता है। यह सच्चे कलाकारका मिजाज है।"

*

कविको इतनेसे संतोष नहीं होता। वह अपनी रचनाको धिक्कारता है। श्रीअरविंद उसे सान्त्वना देते हुए कहते हैं, "ऐसा लगता है कि तुम्हें अपनी निन्दा करने और अपने-आपको धिक्कारनेकी सनक है। बहुत-से कवियों और कलाकारोंमें यह चीज होती है। स्वयं मेरे अंदर भी यह चीज रही है, साथ ही कभी इसका विपरीत रूप भी रहता था। 'क'में भी यह भाव है। लेकिन लिखते समय इस भावका रहना सबसे अधिक कष्टकर स्थिति है। अगर तुम खुलकर लिखना चाहते हो तो इससे पिंड छुडाओ।"

*

अधीरतासे कोई सहायता नहीं मिलती, तीव्र अभीप्सा सहायक होती है, चेतनाको ऊपर उठाये रखनेका लाभ यह है कि जब कभी ऊपरसे प्रेरणाका प्रवाह आये तो वह उसे ग्रहण करनेके लिए तैयार रहती है। यथासंभव जल्दीसे जल्दी उच्चतम क्षेत्रतक पहुंचनेके लिए तुम्हें अपनी चेतनाको सदा उसकी ओर अभिमुख रखना और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी पुकारको सदा बनाये रखना पड़ेगा। पहले तुम्हें उस स्थायी उद्घाटनको स्थापित करना होगा या यह प्रयास करना होगा कि वह अपने-आपको स्थापित करे, उसके बाद आरोहण और सतत आरोहण। इसके बाद ही सब कुछ आसानीसे हो सकेगा।

(श्रीअरविंदके 'लेटर्स आन पोएट्री'के आधारपर)

सोसायटी समाचार

२४ अप्रैलको दर्शन-दिवस होता है। इस वर्ष माताजीके यहां दूसरी बार आनेकी ६५ वीं वर्षगांठ थी। सवेरे दर्शनार्थी श्रीअरविंद-के कमरेमें प्रणामके लिये गये और दससे साढ़े दसतक समाधिके चारों ओर ध्यान हुआ और शामको क्रीड़ांगणमें मार्चपास्ट, वृन्दवाद्य और ध्यान।

उज्जैनके विक्रम विश्व-विद्यालयके कुछ प्राध्यापकों और शोध छात्रोंका एक दल आश्रम तथा उसके साथ संबंध रखनेवाली संस्थाएं देखनेके लिये आया था। श्री किशोरीलाल ढांढणियाने उन्हें श्रीअरविंदकी दृष्टिसे भावी समाजके बारेमें बतलाया और उनके प्रश्नोंके उत्तर दिये।

नव विहानने माताजीके संदेशके साथ छापे गये कलात्मक पोस्ट कार्ड तैयार किये हैं। ५० कार्डोंका दाम १०० रु. है। ये शब्द, श्रीअरविंदाश्रम, पांडिचेरी-६०५००२ से मिल सकते हैं।

सोसायटी बीच आफिस का टेलीफोन नं. अब ६३९६, ६३९७, ६३९८ हो गया है। इंटर नैशनल गेस्ट हाऊसका नं. ६४९४ है।

१३ मार्चको बंबईके बिड़ला मातुश्री सभागारमें श्रीअरविंद नृत्य, भजन संध्याका कार्यक्रम सोसायटीकी रजत जयन्तीके उपलक्ष्यमें हुआ जिसकी अध्यक्षता श्री चंपकलालजीने की। सर्व श्री मोहन मिस्त्री, अनूप जलौटा, अनुराधा पाडुवाल, हरेन्द्र खुराना, रेनू और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय चौधरीने अपने भजन सुनाये। इस अवसरपर एक स्मारिका भी प्रकाशित हुई। कार्यक्रमकी आय श्रीअरविंद सोसायटीको भेंट दी गयी।

देहरादूनमें श्रीअरविंद सोसायटीकी रजत जयन्ती समारोहके उपलक्ष्यमें २१-२-८५को हिन्दीमें माताजीकी 'राधाकी प्रार्थना'का सुन्दर कार्ड प्रकाशित किया गया।

हमारी नागपुर शाखामें २७ मार्चको सावित्रीके बारेमें डा. गोपालन शास्त्रीका भाषण हुआ। श्रीअरविंद जन्म शताब्दीके अवसरपर यह सज्जन श्रीअरविंदके बारेमें लेख प्रतियोगितामें पहले आये थे और स्वयं माताजीने इन्हें श्रीअरविंदकी पुस्तकोंका शताब्दी संस्करण पुरस्कारस्वरूप दिया था।

वल्लभ विद्यानगरमें श्रीअरविंद साधना केंद्रके पास अब अपना मकान हो गया है। २९ मार्चको चंपकलालजीने इसका उद्घाटन किया और वहां श्रीअरविंदके पवित्र स्मारककी प्रतिष्ठा हुई। रातको संगीत-कार्यक्रम हुआ।

डा. थानकीने मार्च १९८४से अप्रैल ८५ तक गुजरातका दौरा किया और १०१ स्कूलों और कालेजोंमें भाषण दिये।

सोसायटीके बीजापुर (कर्णाटक) केंद्रने २९ मार्चको अपनी वर्षगांठ मनायी जिसमें बहुतसे विद्यार्थियोंने भाग लिया। कन्नड़ 'अर्पण' का ग्रंथ मोचन किया गया। पुलिस सुपरिन्टेंडेंट श्री टैगोरने आश्रम यात्राके अपने अनुभव सुनाये।

सोसायटीकी बंगलौर शाखाने प्रसिद्ध गायक बनारस संगीत कालेजके डा. पटकरके भक्तिभरे गीतोंका कार्यक्रम रखा।

२९ मार्चको वरधामें सोसायटीके एक नये केंद्रका उद्घाटन हुआ। बरोरा केंद्रके श्री भैयाजी तथा अमरावती और नागपुरके कई भक्तोंने समारोहमें भाग लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भी बहुतसे केंद्रोंसे माताजीके जन्म दिन, पांडिचेरीमें आनेके दिन आदिके मनाये जानेके समाचार आये हैं।

सोसायटीके नाम धनादेश भेजनेवालोंसे अनुरोध है कि कूपनमें अपना नाम और पता अवश्य लिखा करें।

सोसायटी और अग्निशिखाका चंदा जल्दीसे जल्दी भेजनेकी कृपा करें।

सोसायटीका वार्षिक अधिवेशन १९८५

अगस्त दर्शनके अवसरपर सोसायटीका वार्षिक अधिवेशन पांडिचेरीमें हुआ करता है। इस वर्ष रजत जयन्तीके नाते पांच दिनका कार्यक्रम होगा जिसमें साधनाविषयक भाषण, फूलकी व्यवस्था, शारीरिक व्यायाम आदिपर भाषण होंगे। सोसायटीके कामोंका सिंहावलोकन और नयी योजनाओंपर विचार होगा। देश विदेशके कार्योंका विवरण दिया जायगा और कुछ प्रदर्शनियां होंगी।

सोसायटीके सदस्यों और मित्रोंसे अनुरोध है कि वे इस अवसरपर अवश्य आनेकी कोशिश करें। रेलवे कंसेशन मिलनेकी आशा है लेकिन वह होगा सिर्फ सदस्योंके लिए।

ठहरनेकी व्यवस्था

हमारी अतिथिशालाओंमें जगहकी कमी है इसलिए हमें बाहर व्यवस्था करनी पड़ती है। सदस्य अपनी जरूरतकी सूचना पहलेसे ही निश्चित फार्मपर प्रति व्यक्ति २० रु. पेशगीके साथ भेज दें। —वे चाहे दो दिनके लिए रहना चाहें या दसके लिए। बाहरके चेक स्वीकार नहीं किये जाते, ड्राफ्ट या धनादेश एकोमोडेशन सेक्शन, श्रीअरविंद सोसायटी पांडिचेरीके नाम भेजे जाएं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेल कंसेशनके लिये आवेदन-पत्र

वार्षिक अधिवेशन १९८५

मेम्बरशिप सेक्शन, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी–६०५००२

मैं अगस्तमें सोसायटीके अधिवेशनमें आना चाहूंगा। कृपया मेरे लिए कंसेशन फार्म भेज दें। मेरी मासिक आमदनी २०००रु. से अधिक नहीं है। अगर मैं फार्मका उपयोग न कर सकूं तो उसे १६ अगस्तसे पहले लौटा दूंगा।

तारीख हस्ताक्षर सदस्य

सदस्यता सं. और नाम सदस्यता कबतकके लिए है?

पूरा पता

*

एकोमोडेशन सेक्शन, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी–६०५००२

कृपया मेरे/हमारे लिए निम्न प्रकारके आवासकी व्यवस्था कर दें।

नाम (बच्चोंके भी नाम) स्त्री/पुरुष आयु

कैसा स्थान चाहिए: डार्मिटरी, एक व्यक्तिका कमरा, दो व्यक्तियों का कमरा

कितने दिनके लिए पेशगी भेजे जा रहे हैं

ता. से राशि

ता. तक ड्राफ्ट या धनादेश

पांडिचेरी कब पहुंच रहें हैं। समय तारीख

यदि अतिथिशालामें जगह न हो तो मुझे बाहरके होटलमें जगह स्वीकार होगी। (अगर आपको अस्वीकार हो तो हमें आवेदन पत्र वापिस करना होगा क्योंकि हमारे गेस्ट हाउसमें जगह बहुत सीमित है।)

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Selfishness kills the soul; destroy it. But take care that your altruism does not kill the souls of others.

Sri Aurobindo

ASSAM TEA

WAREHOUSING

CORPORATION

24, Ganesh Chandra Avenue, Calcutta-700 013

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Love in her was wider than the universe,
The whole world could take refuge in her single heart.

Sri Aurobindo

Arvind Exports (P) Ltd.

Exporters of Engg. Goods, Pesticides, Chemicals, Ceramics, Readymade Garments & Handicrafts etc.

Calcutta Head Office :

75c, Park Street
Calcutta - 700 016
INDIA

Bombay Office :

76, 77 Atlanta, Nariman Point
Bombay - 400 021
INDIA

Phones:

Offi: 240277 • 240367
Resi: 814512
Telex: 011-4104
Gram: "ARVIEXPO"

Offi: 249065 • 248642
Resi: 478368
Telex: 021-7984
Gram: "AUROEXPORT"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋतु अनुकूल हवन सामग्री

हमने आर्य यज्ञ प्रेमियोंके आग्रहपर संस्कार विधिके अनुसार "हवन सामग्री"का निर्माण हिमालयकी ताजी जड़ी बूटियोंसे प्रारंभ कर दिया है, जो कि उत्तम, कीटाणुनाशक, सुगन्धित एवं पौष्टिक तत्वोंसे युक्त हैं वह आदर्श हवन सामग्री अत्यंत अल्प मूल्यपर प्राप्त है। थोक मूल्य ५ रुपये प्रति किलो है।

जो यज्ञ प्रेमी हवन सामग्रीका निर्माण करना चाहें वह सब ताजी हिमालयकी वनस्पतियां हमसे प्राप्त कर सकते हैं, वे चाहें तो कुटवा भी सकते हैं, यह सब सेवा मात्र है।

योगी फार्मेसी

लक्सर रोड

पोस्ट गुरुकुल कांगड़ी—२४९४०४

हरिद्वार (जिला सहारनपुर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A happy beginning
a good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

New Horizon Sugar Mills (Pvt.) Ltd.

Pondicherry

Telegram : 'SAKAR'
Phone : Town Office : 4280
Factory : 5153

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर मेरे कार्यक्रममें कोई परिवर्तन हुआ, तो मैं आपको सूचना दे दूंगा ताकि आरक्षणके कम-से-कम सात दिन पहले आपको सूचना मिल जाये। ऐसा न कर सकनेपर मैं अपने अग्रिम धनकी वापसी-की मांग न करूंगा।

निर्धारित समयके २४ घंटेतक अगर मैं आरक्षित स्थानपर न पहुंचूं तो आरक्षण खतम हो जायेगा और मैं अग्रिम धनकी मांग नहीं करूंगा।

मैं... शाखा/केंद्रका सदस्य/कार्यकर्ता/पदाधिकारी हूं।

नाम, पता और सदस्यता संख्या

हस्ताक्षर

श्रीअरविंद सोसायटीके सदस्योंकी वार्षिक आम-सभा २९ जून १९८५ को उसके कलकत्तेके पंजीकृत कार्यालयमें होगी। उसकी विस्तृत सूचना इस अंकके साथ अलगसे भेजी जा रही है। ३१ मार्च १९८४ को खतम होनेवाले वर्षके लेखे-जोखेका संक्षिप्त रूप भी जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

गीर्वाण-वाणी

यदेव षट्कं ते देव तदेव च मम प्रभो।
नियोक्ता त्वं नियोज्याहं तस्यास्तीत्यावयोर्भिदा ॥१॥

हे श्यामगला (नीलकंठ)! जिन छः (उपाधियों) से आप युक्त हैं, उन्हीं छः (उपाधियों) से मैं भी युक्त हूं। बस, आपमें और मुझमें यदि कोई भेद है तो वह यह है कि आप छः के स्वामी हैं और मेरे छः मुझे लूट गये हैं। (यहां पर छः उपाधियोंसे तात्पर्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर अथवा पंचेन्द्रियों व मनसे है)।

आसाद्य संसारमहं वराकी प्राप्ता विशुद्धं सहजं प्रबोधम्।
म्रिये न कस्यापि न कोऽपि मे वा मृतामृते मां प्रति तुल्यरूपे ॥२॥

संसारमें मैं तप करनेको आयी और बुद्धि-प्रकाशसे सहज (स्वात्म-बोध) को पा लिया। (देशकाल, माया-मोह आदिके बंधनोंसे मैं मुक्त हो चुकी) न मेरा कोई मरेगा और न मैं ही किसीके लिये मरूंगी। (स्थिति ऐसी हो गयी है कि) मरूं तो वाह! जीवित रहूं तो वाह! (स्वात्म-बोध जीवन और मृत्युकी सीमाओंसे परे है)।

बालाग्रं सूचिकाग्रं वा नाहं पश्चाद्वर्तिनी।
अन्तस्तमो गृहीतं तन् मया दीर्णं क्षणान्तरे ॥३॥

सूईके नोक व बाल जितना भी मैं कभी (परमात्म-प्राप्तिके लिये) पीछे न रही। मैंने अपने अन्दरके अन्धकारको पकड़ लिया और पकड़कर उसे चाक कर डाला)। (अर्थात् तन्मय होकर मैंने अपने भीतर अज्ञानरूपी अंधकारको समाप्त कर डाला)।

(भुवनवाणी प्रेस लखनऊसे प्रकाशित 'लल्यद्'से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल काँगड़ी

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

अक्तूबर १९८५ वर्ष १६, अंक ३, पूर्णांक १८३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

संदेश		१
संपादकीय : सिंहवाहिनी	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		५
श्रीमातृवाणी : जातीय श्रेष्ठताका वास्तविक मूल		९
पूर्व जन्मकी याद		११
विचारकी शक्ति		१२
गीर्वाण-वाणी		१६
एक तरुण साधकका श्रीअरविंद और माताजीके साथ पत्र-व्यवहार		१७
ऋषिवर बोले : प्रार्थना		२०
श्रीअरविंदकी शिक्षा और साधना-पद्धति		२४
भागवत प्रेम	श्रीअरविंद	२७
आधुनिक जबाल		३१
सोसायटी समाचार		३४

वार्षिक अग्निशिखा १०.००; पुरोधा १४.००; दोनों २२.००

आजीवन अग्निशिखा १७५.००; पुरोधा २२५.०० दोनों ४००.००

पत्र, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :

संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

कृपया चेक न भेजें। और ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

7947

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1947

At the very moment when everything seems to go from bad to worse, it is then that we must make a supreme act of faith and know that the Grace will never fail us.

जिस समय हर चीज बुरीसे अधिक बुरी अवस्थाकी ओर जाती हुई प्रतीत होती है, ठीक उसी समय हमें अपनी महती श्रद्धाका परिचय देना चाहिए और यह जानना चाहिए कि भगवत्कृपा कभी हमारा साथ नहीं छोड़ेगी ।

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंहवाहिनी

भारतवर्षमें कभी प्राणशक्तिका, उत्साह और जीवनकी ललकका सागर उमड़ा करता होगा। संसारभरमें दैनिक चर्याके बाद इतने उत्सवों और त्यौहारोंको मनानेका ऐसा उल्लास कहीं नहीं दीखता। भारतमें ऐसा कोई महीना खोजे न मिलेगा जिसमें कोई भी त्यौहार न हो। वसंत पंचमी, होलीसे लेकर दीपावली और देव जागरणके कितने ही उत्सव मनाये जाते हैं। प्रत्येक निराले ढंगसे, कहीं किसी क्रियाकी पुनरावृत्ति नहीं होती। होलीकी उन्मुक्त हंसी-ठिठोली, राम नवमीकी नव रस दर्शाती रामलीला, श्रावणमें गंभीरतासे भक्ति-पूर्ण शिवपूजा तो दीपावलीके अवसरपर देवी लक्ष्मीके आगमनमें जलाए जानेवाले असंख्य दीप; इतना वैविध्य, आनंदके इतने रूप अन्य किसी राष्ट्रकी संस्कृति संजो नहीं पायी है।

ऐसा ही एक लोकप्रिय त्यौहार है दुर्गापूजा। हम मां दुर्गाको केवल हिन्दुओंकी एक देवीके रूपमें पूजते हैं किंतु उनका सच्चा रूप इससे कहीं अधिक व्यापक है।

उस रूपको श्रीअरविंदने दुर्गास्तोत्रमें पूर्णरूपसे प्रकट किया है। देखें, दुर्गाका वह बृहद् रूप :—

मातः दुर्गे! सिंहवाहिनी, सर्वशक्तिदायिनी, मातः शिवप्रिये! तुम्हारी ही शक्तिके अंश हम भारतवर्षके युवक तुम्हारे मंदिरमें आसीन, प्रार्थना करते हैं। सुनो मातः, भारतवर्षमें प्रकट हो, प्रकाशमान हो।

मातः दुर्गे! हम युग-युगसे मानव शरीरमें अवतीर्ण होकर जन्म-जन्मान्तर तुम्हारे ही कार्य संपन्न कर तुम्हारे आनंदधाममें लौट जाते हैं। इस बार भी जन्म लेकर तुम्हारे ही कार्यव्रती हैं हम। सुनो मातः, भारतवर्षमें प्रकट हो, हमारी सहायक हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातः दुर्गे! सिंहवाहिनि, त्रिशूलधारिणि, कवचसे आवृत सुन्दर शरीरमें जयदायिनि मातः, भारत तुम्हारी प्रतीक्षामें है, तुम्हारी उस मंगलमयी मूर्तिको देखनेको उत्सुक है वह। सुनो, मातः, भारतवर्षमें प्रकट हो, प्रकाशमान हो।

मातः दुर्गे! बलदायिनि, प्रेमदायिनि, ज्ञानदायिनि शक्तिस्वरूपिणि, भीमे, सौम्य-रौद्ररूपिणि! जीवन संग्राम और भारत-संग्राममें हम तुमसे प्रेरित योद्धा हैं, दो मां, प्राण और मनमें असुरकी शक्ति दो, असुरका उद्यम दो, मातः हृदयमें, बुद्धिमें देवताका चरित्र दो, देवताका ज्ञान दो।

मातः दुर्गे! जगत्श्रेष्ठ भारतजाति निबिड़ अंधकारमें आच्छन्न थी। तुम ही मां, क्षितिजपर धीरे-धीरे उदित हुईं, तुम्हारे स्वर्गीय शरीरसे तिमिर-विनाशी आभामें उषाका प्रकाश हुआ। आलोकका विस्तार करो हे मातः, तिमिरका विनाश करो।

मातः दुर्गे! श्यामला, सर्वसौन्दर्य-अलंकृता, ज्ञान, प्रेम, शक्तिकी आधार तुम्हारी विभूति, भारतवर्ष शक्ति संहरण करके आत्मगोपन किये हुए था। अब युग आ गया है, वह दिन आ गया है, जब भारतवर्षका भार अपने कन्धोंपर लिये भारत जननी उठ खड़ी हुई है, आओ मां, प्रकट हो।

मातः दुर्गे! हम तुम्हारी संतान हैं, तुम्हारे प्रसादसे, तुम्हारे प्रभावसे महान् कार्यके, महान् भावके उपयुक्त हों। मातः, क्षुद्रताका विनाश करो। स्वार्थका विनाश करो, भयका विनाश करो।

मातः दुर्गे! कालीरूपिणि, नरमुण्डमालिनि, दिगम्बरि, कृपाणपाणि, असुरविनाशिनि देवि! क्रूर निनादसे अन्तःस्थित रिपुका विनाश करो। वह हमारे अंदर बिल्कुल जीवित न रहे, हम विमल निर्मल बनें, हे मातः यही हमारी प्रार्थना है, प्रकट हो।

मातः दुर्गे! स्वार्थसे, भयसे, क्षुद्राशयताके कारण भारत म्रियमाण है। मातः हमें महान् बनाओ, महत्प्रयासी बनाओ, उदारचेता बनाओ, सत्य-संकल्प बनाओ और हम अल्पाशी, निश्चेष्ट, आलसी और भयभीत न हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातः दुर्गे! योगशक्तिका विस्तार करो। तुम्हारी प्रिय आर्य संतान, जिनकी शिक्षा, चरित्र, मेधाशक्ति, भक्तिश्रद्धा, तपस्या, ब्रह्मचर्य, सत्यज्ञान लुप्त हो गये हैं इन सबका हमारे अंदर विकास कर जगत्में विस्तारित करो। मानव सहायताके लिये, हे दुर्गतिनाशिनि, जगदम्बे प्रकट हो।

मातः दुर्गे, अंतःस्थित रिपुका संहार कर बाहरकी विघ्नबाधाओंको निर्मूल करो। बलशाली, पराक्रमी, उन्नतचेता जाति भारतके पवित्र काननमें, उर्वर क्षेत्रमें, गगनसहचर पर्वततलमें, पूतसलिला नदीके तटपर, एकतामें, प्रेममें, सत्य शक्तिमें, शिल्पमें, साहित्यमें, विक्रममें, ज्ञानमें श्रेष्ठ होकर निवास करे, मातृचरणोंमें यही प्रार्थना है। हे मातः प्रकट हो।

मातः दुर्गे। हमारे शरीरमें योगबलसे प्रवेश करो। तुम्हारे यंत्र हैं हम, हम तुम्हारे अशुभ-विनाशी खड्ग, अज्ञान-विनाशी प्रदीप हों। भारतवर्षके युवकगणकी इस इच्छाको पूरा करो। यंत्री होकर यंत्र चलाओ, अशुभका हनन करनेवाली बनकर अपना खड्ग घुमाओ, ज्ञानदीप्तप्रकाशिनी बनकर प्रदीप दिखाओ। प्रकट हो।

मातः दुर्गे! तुम्हें पाकर फिरसे विसर्जन न करेंगे, श्रद्धा, भक्ति और प्रेमकी डोरसे बांध कर रखेंगे, हमारे मन, प्राण शरीरमें प्रकट हो।

वीरमार्गप्रदर्शिनी, आओ! अब तुम्हारा विसर्जन न करेंगे। हमारा सारा जीवन अविच्छिन्न दुर्गापूजा है, हमारा संपूर्ण कार्य अविरत पवित्र प्रेममय, शक्तिमय मातृसेवाव्रत हो, यही प्रार्थना है, हे मातः, भारतवर्षमें प्रकट हो, प्रकाशमान हो।

इस स्तोत्रके बारेमें श्रीअरविंदने किसीको बतलाया था, "इस प्रार्थनामें जिस दुर्गाका आह्वान किया गया है वह है समस्त भारतवर्षकी मातृशक्ति—वह हिन्दू, सिख, जैन, बौद्ध, मुसलमान, ईसाई और पारसियोंकी मां है—वह कोई हिन्दुओंकी खास देवी नहीं है। नास्तिक भी इस परिवारका अंग है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या प्रत्येक भारतवासी इस दुर्गाको पुकारेगा? जैसे बालक मांको पुकारता है वैसे तीव्र प्रेमसे हम सब पुकारेंगे तो मां अवश्य अपने बालकोंकी रक्षा करने आ पहुंचेगी। कौन इंकार करेगा कि इस समय हमें ऐसी रक्षाकी आवश्यकता है?

आइये, सम्मिलित स्वरसे हम सिंहवाहिनी दुर्गाको पुकारें।

—अनुबेन

दैनन्दिनी

अक्तूबर

१. अपने-आपको उस नये प्रकाशके प्रति खोलो जो धरतीपर उदित हुआ है और तुम्हारे सामने एक ज्योतिर्मय पथ खुल जायेगा।

२. ग्रहणशील बनो
और
नमनीय बनो।

३. शाश्वत यौवन: यह ऐसा उपहार है जो भगवान् हमें तब देते हैं जब हम अपने-आपको उनके साथ एक कर देते हैं।

४. अपने जीवनको किसी ऐसी चीजकी उपलब्धिके प्रति एकाग्र करो जो तुमसे अधिक ऊंची, अधिक विस्तृत हो और बीतते वर्ष तुम्हारे लिये कभी भार न बनेंगे।

५. शांत और निर्भीक रहो।

६. शांत और घटनाविहीन मृत्युके आनंदके लिये तुम्हें उसकी तैयारी करनी होगी। एकमात्र प्रभावकारी तैयारी है, कामनाओंका विलयन।

७. मृत्युपर विजय पानेके लिये और अमरताको हस्तगत करनेके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये न तो तुम्हें मृत्युसे भय खाना चाहिए, न ही उसकी कामना करनी चाहिए।

८. अगर हम अपने अंदर, कुछ अधिक अंदर जायें तो हमें पता लगेगा कि हममेंसे हर एकके अंदर एक चेतना है जो युगोंसे जीती आ रही है और विभिन्न रूपोंमें अभिव्यक्त होती आ रही है।

९. अगर तुम इस जगत्से भाग जाओ तो तुम्हें वापिस आना पड़ेगा, शायद अधिक बुरी परिस्थितियोंमें आना होगा और सारी चीज नये सिरेसे करनी पड़ेगी।

१०. ज्यादा अच्छा यह है कि भीरु मत बनो, अभी परिस्थितिका सामना करो और उसपर विजय पानेके लिये आवश्यक प्रयास करो। सहायता सदैव तुम्हारे साथ है, तुम्हें उससे लाभ उठाना सीखना होगा।

११. भक्तके लिये प्रभुसे दूर रहनेसे बढ़कर कोई पाप नहीं है।

१२. शरीरकी बीमारी हमेशा आंतरिक सत्ताके किसी असामंजस्य, किसी अव्यवस्थाका अनुवाद, उसकी बाहरी अभिव्यक्ति होती है; जबतक यह आंतरिक अव्यवस्था ठीक नहीं हो जाती, तबतक बाहरी इलाज पूर्ण और स्थायी नहीं हो सकता।

१३. तुम्हें डरना नहीं चाहिए। तुम्हारी अधिकतर कठिनाइयां भयसे आती हैं। वास्तवमें, ९० प्रतिशत बीमारियां शरीरके अवचेतन भयका परिणाम होती हैं।

१४. सच्ची बीमारी भय है। भयको दूर फेंक दो तो बीमारी चली जाएगी।

१५. अपनी बीमारीसे छुटकारा पानेके लिये तुम्हें दृढ़ संकल्प करना होगा और परिणामोंके प्रति शांत और अविचल रहना होगा। जब तुम पूरी तरह नीरोग हो जाओ तो यह किसी आंतरिक प्रगतिका सूचक होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६. नयी शक्तिके आनेके लिये शक्तिका व्यय होना चाहिए। मानव शरीर बंद घड़ा नहीं है जो खर्च करनेसे खाली होगा। वह एक वाहिका है जिसमें तभी कुछ आता है जब शक्तिका खर्च हो।

१७. हे प्रभु, समस्त मनुष्यजाति तुझसे प्रार्थना करती है कि तू उसे बार-बार उन्हीं मूर्खताओंमें जा गिरनेसे बचा।

१८. यह पृथ्वी तबतक सजीव और स्थायी शांतिका उपभोग नहीं कर सकती जबतक मनुष्य अपने अंतर्राष्ट्रीय व्यवहारोंमें भी पूर्ण रूपसे सत्यपरायण होना नहीं सीखता।

१९. बोलो मत, करो। घोषणा न करो, कार्यान्वित करो।

२०. एक दिन अवश्य आयेगा जब प्रेम इस जगत्को मृत्युसे मुक्त कर देगा। (श्रीअरविंद)

२१. अखिरकार, सत्ताके अंदर विद्यमान संकल्प ही वह चीज है जो परिस्थितियोंको मूल्य प्रदान करती है, बहुधा आशातीत मूल्य प्रदान करती है, बाह्य परिस्थितिका रूप-रंग तो एक भ्रांति उत्पन्न करनेवाला लक्षण ही है।

२२. यदि कोई जाति या सभ्यता मृत्युकी ओर जानेकी इच्छा करे, यदि वह पतनकी ओर जानेवाली शिथिलतासे चिपकी रहे और मृत्युके मुखमें जानेके लिये तत्पर हो अथवा शक्ति-सामर्थ्य होनेपर भी विनाशकी ओर ले जानेवाली प्रवृत्तियोंपर अंध-भावसे आग्रह करे अथवा वह केवल मृत युगकी शक्तियोंको ही प्रिय समझे और भविष्यकी शक्तियोंको अपनेसे दूर हटा ले, यदि वह भावी जीवनकी अपेक्षा अतीतको ही पसंद करे, तो फिर कोई भी चीज, यहांतक कि प्रचुर शक्ति, वैभव और बुद्धिमत्ता भी, जीते रहनेके बहुतसे आह्वान तथा निरंतर प्राप्त होनेवाले अवसर भी उसे अनिवार्य विघटन या संहारसे नहीं बचा सकते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३. परंतु यदि उसमें प्रबल अत्मविश्वास आ जाय और जीवित रहनेका प्रबल संकल्प उत्पन्न हो जाय, यदि वह आनेवाली वस्तुओंकी ओर खुल जाय, भविष्यको और उससे प्राप्त होनेवाली चीजोंको प्राप्त करनेके लिये इच्छुक हो जाय, जहां भविष्य प्रतिकूल प्रतीत हो वहां उसका दमन करनेकी शक्ति रखती हो तो वह प्रतिकूलता, पराजयसे भी अदम्य विजय प्राप्त करनेकी शक्ति पा सकती है।

२४. ऊपरसे दीखती असहायता और क्षयसे ऊपर उठकर महत्तर जीवनके प्रकाशमें ले जानेवाले नवीन उत्साहकी प्रचंड ज्योति प्राप्त की जा सकती है।

२५. यही करनेके लिये भारतीय सभ्यता आज पुनः जागृत हो रही है जैसा कि वह अपनी आत्माकी शाश्वत शक्तिके द्वारा सदासे करती आ रही है। (श्रीअरविंद)

२६. भागवत प्रेमकी अभिव्यक्तिको शीघ्र आगे बढ़ानेका सबसे उत्तम पथ है दिव्य सत्यकी विजयमें सहयोग देना।

२७. मनुष्यका मुख्य लक्ष्य है अपनी प्रगतिको प्रकृतिपर आरोपित करना।

२८. अपने-आपको नयी शक्तिके प्रति खोलो। उसे अपने अंदर रूपांतरका काम करने दो।

२९. दुर्गा मांकी संरक्षण शक्ति है।

३०. जो लोग ऋजु नहीं हैं वे मांकी सहायतासे लाभ नहीं उठा सकते क्योंकि वे अपने-आप ही उसे दूर हटा देते हैं।

३१. वफादार बनो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातीय श्रेष्ठताका वास्तविक मूल

ऊपरकी ओर विकासके बारेमें चैत्य सत्ताकी जगह चैत्य उपस्थितिकी बात करना ज्यादा ठीक होगा। क्योंकि चैत्य उपस्थिति ही शनैः-शनैः चैत्य सत्ता बन जाती है। हर विकसित होनेवाले आकारमें यह उपस्थिति तो होती ही है, लेकिन व्यक्ति रूपमें नहीं। वह एक ऐसी चीज होती है जो बढ़ सकती है और विकास-क्रमकी गतिके अनुसार चलती है। वह ऊपरसे उतरनेवाला अंतर्लंघन नहीं है। यह भागवत चेतनाकी चिनगारीके चारों ओर क्रमशः रूप लेता है और इसका उद्देश्य होता है विकास पाती हुई सत्ताका केंद्र बनना जो आगे चलकर व्यक्तितत्व प्राप्त करके चैत्य सत्ताका रूप लेता है। यह चिनगारी स्थायी होती है और अपने चारों ओर नाना प्रकारके तत्वोंको इकट्ठा करती रहती है जिनसे व्यक्तित्वकी रचना होती है; सच्ची चैत्य सत्ता तभी बनती है जब चैत्य व्यक्तित्व पूरी तरह विकसित हो जाता है और शाश्वत दिव्य चिनगारीके चारों ओर पूरी तरहसे गठित हो जाता है; उसकी पूर्ण पूर्णता या पराकाष्ठा तब आती है जब वह ऊपरकी सत्ता या व्यक्तित्वके साथ एकता प्राप्त कर ले।

मानव स्तरसे नीचे सामान्यतः मुश्किलसे ही कोई व्यक्तित्व बनता है—वहां कम या ज्यादा, यह उपस्थिति ही होती है। परंतु जब दिव्य चेतनाकी चिनगारीके चारों ओर शरीरका निर्माण हुआ और धरतीपर मानव जातिका आरंभ हुआ तो कुछ मानव जीवोंने अपने उत्तरोत्तर विकासके द्वारा काफी पूर्णता पा ली और अपने उद्घाटन और अपनी ग्रहणशीलताके कारण ऊपरसे उतरती हुई किन्हीं सत्ताओंके साथ संयोजन कर पाये। इससे एक प्रकारकी दिव्य मानवता पैदा हुई जिसे हम एक प्रकारकी विशिष्ट जाति कह सकते हैं: अगर ये लोग अपने-आपमें समाये रहते तो एक अद्वितीय अतिमानव जाति बने रहते। वास्तवमें बहुत-सी जातियोंने इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातका दावा किया है। बारी-बारीसे आर्य, सेमेटिक और जापानी जातियोंने अपने-आपको चुनी हुई जाति माना है। लेकिन, वास्तवमें, मानवजातिको सामान्य रूपसे समतल किया गया है और उसमें बहुत अधिक मिश्रण हुआ है। क्योंकि श्रेष्ठ जातिके बढ़ने और फैलनेकी आवश्यकता पैदा हुई तो उसे बाकी मानवजातिके साथ, जिसे हम पाशविक मानवजाति कह सकते हैं, घुलना-मिलना पड़ा। इस तरह उसका मूल्य गिर गया और परिणामस्वरूप वह पतन आया जिसका संसारके शास्त्रोंमें उल्लेख मिलता है जिसे स्वर्गसे निष्कासन या सत् युगका अंत कहा गया है। चेतनाकी दृष्टिसे यह पतन अवश्य था, परंतु भौतिक बलकी दृष्टिसे नहीं। क्योंकि सामान्य मानवजातिके लिये यह बहुत बड़ा लाभ था। निश्चय ही, कुछ ऐसी सत्ताएं थीं जिनमें न मिलनेका दृढ़ संकल्प था, जो अपनी श्रेष्ठता खोनेसे बहुत अप्रसन्न थीं; और यही जातीय गर्व, जातीय अनन्यता और भारतके ब्राह्मणों जैसी विशेष जातीय वरिष्ठताका मूल है। लेकिन अब यह नहीं कहा जा सकता कि मानवजातिका कोई भी भाग पूरी तरह पाशविक है: ऊपरके अवतरणने सभी जातियोंको छुआ है, व्यापक सम्मिश्रणके कारण ऊपरसे उतरी हुई चीजका प्रभाव बहुत ज्यादा फैल गया है।

हां, यह नहीं कहा जा सकता कि हर मनुष्यमें चैत्य सत्ता है और इसी तरह यह भी नहीं कहा जा सकता कि सभी जानवर उससे वंचित हैं। बहुत-से जानवरोंमें, जो मनुष्यके साथ रहे हैं, चैत्यका आरंभ दिखायी देता है और बहुत बार हमें ऐसे लोग मिलते हैं जो पशुके अतिरिक्त कुछ नहीं हैं। यहां भी, बहुत कुछ समतल किया गया है। लेकिन सब मिलाकर देखें तो सच्चे अर्थोंमें चैत्य मानव स्तरपर ही शुरू होता है: इसीलिये कैथोलिक धर्मका कहना है कि सिर्फ मनुष्यमें अंतरात्मा होती है, सिर्फ मनुष्यमें ही यह संभावना है कि चैत्य पूरा विकास पा सके और अंतमें उतरते हुए देवके साथ मिलकर एक हो सके।

(श्रीमातृवाणी खंड ३से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्व जन्मकी याद

हममेंसे कितनोंको अपने पूर्व जन्मोंकी याद है ?

हम सभीमें, चेतनाके एक भागमें, यह स्मृति रहती है। परंतु यह एक खतरनाक विषय है, मानव मनको अतिरंजनाका बहुत शौक होता है। जैसे ही उसको पुनर्जन्मके सत्यके बारेमें कुछ ज्ञात होता है, वैसे ही वह इसके चारों ओर एक सुन्दर कहानी गढ़ डालना चाहता है। तुम्हें बहुत-से लोग इस बारेमें अद्भुत कहानियां सुनायेंगे कि इस सृष्टिकी रचना कैसे हुई, भविष्यमें इसकी क्या गति होगी, तुम पहले कैसे और कहां जन्मे थे और आगे क्या होओगे, कैसे-कैसे जीवन तुमने बिताये हैं और अब कैसे-कैसे जीवन बिताओगे। परंतु इन सबसे आध्यात्मिक जीवनका कुछ संबंध नहीं। पूर्वजन्मोंकी सच्ची स्मृति पूर्ण ज्ञानका एक अंग अवश्य हो सकती है, किंतु इसकी प्राप्ति इस प्रकारकी सुन्दर-सुन्दर कल्पना-तरंगोंद्वारा संभव नहीं है। एक ओरसे यह ज्ञान वस्तुनिष्ठ है तो दूसरी ओरसे बहुत कुछ व्यक्तिगत और आत्मनिष्ठ अनुभूतिपर निर्भर है और यहीं बनावट और विकार पैदा करने तथा असत्य रचनाओंको गढ़ डालनेकी संभावना रहती है। इन बातोंके सत्यतक पहुंचनेके लिये आवश्यक है कि अनुभव ग्रहण करनेवाली चेतना शुद्ध और निर्मल हो, किसी भी मनोमय या प्राणमय हस्तक्षेपोंसे मुक्त हो और तुम्हारी व्यक्तिगत धारणाओं और भावुकताओंसे तथा मनकी अपने ही तरीकेसे समझाने या व्याख्या करनेकी आदतसे मुक्त हो। पूर्व जन्मोंका अनुभव सत्य हो सकता है, किंतु तुमने जो देखा और तुम्हारे मनने उसकी जो कुछ व्याख्या की अथवा उसका जो रूप गढ़ा, इन दोनोंके बीचमें एक बड़ी भारी खाई होती है। जब तुम मानव भावनाओंसे ऊपर उठ सको और अपने मनसे अलग हो सको तभी इस सत्यतक पहुंच सकोगे।

(श्रीमातृवाणी खंड ३से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारकी शक्ति

१९ मई, १९२९

विचारकी शक्ति किस प्रकारकी है? मैं किस हदतक और कैसे अपने जगत्का कर्ता हूं?

बौद्धमतके अनुसार, प्रत्येक मनुष्य अपने ही जगत्में रहता और विचरण करता है, उसका यह जगत् दूसरे मनुष्यके जगत्से सर्वथा स्वतंत्र होता है; जब इन विभिन्न जगतोंमें एक प्रकारका सामंजस्य हो जाता है तभी ये एक-दूसरेमें अन्तःप्रविष्ट हो सकते हैं और तभी मनुष्य परस्पर संपर्कमें आते और एक-दूसरेके विचारोंको समझ सकते हैं। जहांतक मनका संबंध है यह बात ठीक है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने ही विचारोंद्वारा बनाये गये मानसिक जगत्में विचरण करता रहता है। यह बात यहांतक सच है कि सदा ही जब कोई बात कही जाती है तो प्रत्येक व्यक्ति उसे अलग रूपमें समझता है, श्रोता, जो कुछ कहा गया है उसे ग्रहण नहीं करता, बल्कि किसी ऐसी चीजको ग्रहण करता है जो उसके मस्तिष्कमें पहलेसे भरी हो। परंतु यह सत्य मनोमय भूमिकाकी गतियोंसे ही संबंध रखता है और उसी भूमिकापर लागू होता है।

मन कर्म करने और आकार देनेका करण है, ज्ञानका करण नहीं। यह प्रत्येक क्षण आकारोंकी रचना करता रहता है। विचार आकारमय होते हैं और इनका अपना व्यक्तिगत जीवन स्रष्टासे सर्वथा स्वतंत्र होता है। स्रष्टा जब इन विचारमय आकारोंको जगत्में भेज देता है तो ये अपने अस्तित्वके प्रयोजनको पूरा करनेके लिये जगत्में विचरण करने लगते हैं। जब तुम किसी व्यक्तिके विषयमें विचार करते हो तो तुम्हारा विचार एक आकार धारण करके उसे खोजनेके लिये निकल पड़ता है, और यदि तुम्हारे विचारके पीछे कोई संकल्प लगा हो तो तुम्हारे अंदरसे निकला हुआ यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारमय आकार अपने-आपको चरितार्थ करनेकी चेष्टा करता है। उदाहरणके लिये, मान लो कि तुम्हारी यह तीव्र इच्छा है कि अमुक व्यक्ति तुम्हारे पास आये, और इच्छाके इस प्राणमय आवेगके साथ-साथ यदि तुम्हारे बनाये हुए मनोमय आकारके साथ एक जोरदार कल्पना भी जुड़ी हो तो तुम कल्पना करोगे : "यदि वह आये तो ऐसा होगा या वैसा होगा।" कुछ कालके बाद तुम इस विचारको सर्वथा त्याग देते हो, लेकिन तुम नहीं जानते कि तुम्हारे भूल जानेके बाद भी तुम्हारे विचारका अस्तित्व बना हुआ है। वास्तवमें, अब भी उसका अस्तित्व है और वह तुमसे सर्वथा स्वतंत्र रहकर अपना काम कर रहा है, और उसे अपने कामसे वापस बुलानेके लिये एक महान् शक्तिकी आवश्यकता होगी। वह उस विचारसे संबंध रखने-वाले व्यक्तिके वातावरणमें प्रविष्ट होकर अपना काम करने लगता है और उसमें तुम्हारे पास आनेकी इच्छा उत्पन्न करता है। और यदि तुम्हारे विचारमय आकारमें कार्य-सिद्धिके लिये पर्याप्त इच्छा-शक्ति है, यदि उस आकारका गठन भली-भांति हुआ है तो वह अपना काम पूरा करेगा। परंतु इस आकार-रचना और उसकी सिद्धिके बीच कुछ समय लगता है और यदि इस बीच तुम्हारा मन और ही चीजमें लगा हो, तो जबतक तुम्हारा यह भूला हुआ विचार कार्यमें परिणत होगा तबतक हो सकता है कि तुम्हें यह याद भी न रहे कि एक दिन तुमने ही इसे आश्रय दिया था, संभव है तुम्हें यह पता ही न हो कि तुम्हींने इसे क्रियान्वित होनेके लिये प्रेरित किया था और आज जो परिणाम आया है वह तुम्हारे ही कारण है। और बहुधा यह भी होता है कि जब इन विचारमय आकारोंका फल प्राप्त होता है तब तुम उस विषयकी इच्छा या परवाह भी नहीं करते। कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनमें इस प्रकारकी रचना-शक्ति बहुत ही बलवान् होती है और उनकी मनोरचनाएं सदा कार्यान्वित होती हैं, लेकिन चूंकि उनकी मनोमय और प्राणमय सत्ता अच्छी तरह सधी हुई नहीं होती, इसलिये वे कभी इस चीजकी इच्छा करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं तो कभी उस चीजकी, अतः उनकी ये भिन्न-भिन्न अथवा विरोधी रचनाएं और उनके परिणाम, एक-दूसरेसे टकराते और भिड़ते रहते हैं। और इन लोगोंको आश्चर्य होता है कि उनके जीवनमें इतनी अधिक अव्यवस्था और असामंजस्य क्यों है! वे इस बातका अनुभव नहीं करते कि उनके अपने विचारों और इच्छाओंने ही उनके इर्द-गिर्द ऐसी परिस्थिति बनायी है जो उन्हें इतनी बेमेल और परस्पर विरोधी जान पड़ती है और उनके जीवनको प्रायः असह्य-सा बना देती है।

यह ज्ञान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, पर तभी जब सदुपयोग करनेके रहस्यके साथ-साथ दिया जाय। आत्म-संयम और आत्म-शासन ही इसके रहस्य हैं। सत्यके मूलको तथा भागवत संकल्पके सतत शासन-को अपने अंदर खोज निकालना ही यह रहस्य है—केवल भागवत संकल्पका अनवरत शासन ही प्रत्येक विचारमय आकारको उसकी पूर्ण शक्ति तथा उसकी संपूर्ण और सामंजस्यमय सिद्धि प्रदान कर सकता है—साधारणतया, मनुष्य यह जाने बिना ही कि उनकी विचार-रचनाएं किस प्रकार गति और क्रिया करती हैं, विचारोंको रचा करते हैं। इस प्रकारकी अज्ञानमय और विश्रृंखल अवस्थामें गढ़े हुए विचार परस्पर टकराते रहते हैं और तुमपर भार, श्रम और थकानका प्रभाव डालते हैं और तुम्हें लगता है मानों तुम असंख्य बाधाओंके बीचसे अपना मार्ग बना रहे हो। अज्ञान और असंगतिकी ये अवस्थाएं एक विश्रृंखल संघर्ष शुरू कर देती हैं और सबसे अधिक बल और सहनशीलतावाले विचारमय आकार विजयी होते हैं।

मन और उसके कार्यके विषयमें एक बात निश्चित है; और वह यह कि तुम केवल उसी बातको समझ सकते हो जिसका तुम्हें अपनी अंतरात्मामें पहलेसे ही ज्ञान है। किसी पुस्तककी वही बात तुमपर विशेष असर करती है जिसे तुम अपने अंदरकी गहराईमें पहले ही अनुभव कर चुके हो। मनुष्य, किसी पुस्तक या उपदेशको अत्यंत अद्भुत पाते हैं और बहुधा तुम उन्हें यह कहते हुए पाते हो: "यहां जो कुछ कहा गया है ठीक वही मैं स्वयं अनुभव करता और जानता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूं, किंतु मैं इसे इतनी अच्छी तरह व्यक्त नहीं कर सकता था जैसे यहां किया गया है।" जब मनुष्य किसी सच्चे ज्ञानकी पुस्तकका पारायण करते हैं तो उसमें प्रत्येक पाठक अपने-आपको पाता है, और प्रत्येक पारायणमें उसे कुछ ऐसी बातें मिलती हैं जिन्हें वह पहले न देख सका था, प्रत्येक आवृत्तिमें यह ग्रंथ उसके सामने ज्ञानके एक नवीन क्षेत्रको, जिसे वह अभीतक उसमें न पा सका था, खोलकर दिखा देता है। परंतु यह इसलिये होता है कि उस मनुष्य-की अवचेतनामें ज्ञानके जो स्तर अभिव्यक्त होनेकी प्रतीक्षा कर रहे थे, यह पारायण उनका स्पर्श करता है और वह देखता है कि उस ज्ञानकी अभिव्यक्ति किसी दूसरे व्यक्तिने की है और वह भी, वह स्वयं करता उससे कहीं अधिक सुन्दर रीतिसे। परंतु एक बार यह अभिव्यक्ति होते ही वह उसे तुरंत पहचान लेता है और अनुभव करता है कि यह सत्य है। जो ज्ञान बाहरसे आता हुआ दिखायी देता है वह तुम्हारे अंदरके ज्ञानको बाहर ले आनेका एक अवसरमात्र है।

यह एक साधारण अनुभव है कि हम जो कुछ कहते हैं उसे प्रायः और ही रूपमें समझा या प्रदर्शित किया जाता है, इसका कारण भी उपर्युक्त प्रकारका ही है। हम जो कुछ कहते हैं वह सर्वथा स्पष्ट हो तो भी लोग उसे जिस प्रकार समझते हैं उसे देखकर आदमी चकरा जाता है। प्रत्येक व्यक्ति उसमें कुछ ऐसी बात देखता है जो कहनेवालेके अभिप्रायसे अलग होती है, यहांतक कि वह उसमें कोई ऐसी चीज जोड़ देता है जो उसके आशयसे बिल्कुल उल्टी होती है। यदि तुम सच्चे रूपमें समझना और इस प्रकारके भ्रमसे बचना चाहते हो तो तुम्हें शब्दोंकी ध्वनि और गतिके पीछे जाकर नीरवतामें सुनना सीखना चाहिये। यदि तुम नीरवतामें सुनोगे तभी तुम ठीक-ठीक सुनोगे, ठीक-ठीक समझोगे। परंतु जबतक तुम्हारे मस्तिष्कमें कोई चीज घूम रही हो और कोलाहल मचा रही हो, तबतक तुम केवल वही समझोगे जो तुम्हारे सिरमें घूम रहा है, न कि वह जो तुमसे कहा गया है।

(श्रीमातृवाणी खंड ३से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीर्वाण-वाणी

निम्नस्थगर्तोपरि नृत्यकारिन्
इहैव सर्वं परिहाय गच्छेः
कथं हि चित्तं रमतेऽत्र संगतम् ।
कथं पुनस्ते स्वाशनं हि रोचते ॥१॥

तेरे नीचे खाई है और तू उसके ऊपर नाच रहा है। भला तेरा मन इस स्थितिसे समझौता कैसे कर रहा है? सब कुछ इकट्ठा कर बादमें यहीं छोड़ देना है, (इस बातको जानते हुए भी) भला तुझे अन्न कैसे रुचता है?

अधियाना चिरान्नाभूत्, तव योग्या हि योग्यता।
अभूच्च सर्वथा दुःखम्, जिह्वा-तालु-विशोषणम्।
मालामावर्तमानाया, अंगुष्ठ-कर-वल्लरी।
छिन्ना जाता परं नैव, गता द्वैताभिभावना॥२॥

पढ़ते-पढ़ते मेरी जीभ और तालु फट गये मगर तेरे योग्य कर्तव्य-विधि मेरी समझमें न आयी। समरनी (माला) फेरते-फेरते मेरा अंगूठा और उंगलियां गल गईं मगर मनकी दुय (द्वैतभावना) फिर भी दूर न हुई।

सहस्रशो गुरुः पृष्टः
किं नामाज्ञातवस्तुनः।
मौनेनैव समाज्ञप्ता,
सर्वं वाचामगोचरम् ॥३॥

गुरुसे मैंने हजार बार पूछा कि जिसे 'कुछ नहीं' कहते हैं, उसका नाम क्या है? पूछते-पूछते मैं थक गई और मुरझा गई। (अंतमें) मैं यही समझी कि 'कुछ नहीं' से ही कुछ-न-कुछ निकला है।

(भुवनवाणी प्रेस लखनऊसे प्रकाशित 'लल्द्यद'से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद और माताजीके साथ

एक तरुण साधकका पत्र-व्यवहार

क्या मैं जान सकता हूं कि प्राण किस तरह क्रिया करता है। मेरे ख्यालसे वह अभीतक अशुद्धियोंसे भरा है।

अपनी अशुद्धियोंके बारेमें बहुत सोचना सहायता नहीं करता। तुम जो पवित्रता, प्रकाश और शांति पाना चाहते हो, उसपर अपने विचारको स्थिर रखना ज्यादा अच्छा है।

—माताजी

७ फरवरी १९३४

अभी-अभी मैं अनुभव कर रहा हूं कि सब कुछ शांत है। यह कैसी अवस्था है—सच्चा आराम, या एक रचना?

व्यर्थके प्रश्नोंसे आराममें क्यों बाधा डालो? मनको भी शांत रहना चाहिये।

—माताजी

८ फरवरी १९३४

आज सुबह सामान्य ध्यानके समय मैंने कुछ दबावका अनुभव किया। मैं आशा करता हूं कि यह मेरी पढ़ाईमें बाधा न बनेगा। इस हालतमें ज्यादा अच्छा होगा कि मैं ध्यान न करूं।

मुझे इसका कोई कारण नहीं दीखता कि उचित रूपसे किया गया ध्यान पढ़ाईमें बाधक बने—एकदम विपरीत। अगर तुम जिसे "ध्यान" कहते हो वह ध्यान बिल्कुल न हो बल्कि **जड़ निष्क्रियता** और तन्द्रिलताकी अवस्था हो तो वह तुम्हारी पढ़ाईको नुकसान पहुंचा सकती है, और चूंकि हर एक दृष्टिकोणसे वह अवस्था पूरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह अवांछनीय होती है, इसलिये निश्चित रूपसे ज्यादा अच्छा है कि तुम इसमें रस न लो।

१२ फरवरी १९३४ —माताजी

फिर सच्चा ध्यान क्या है ?

वह भागवत उपस्थितिपर संकल्पके साथ की गयी एकाग्रता है और उस परम सद्वस्तुका सतत, जागरूक निदिध्यासन है।

यह दबाव कैसे और क्यों आता है ?

अगर तुम्हारा मतलब जड़ निष्क्रियतासे है, तो यह निम्नतर प्राण और जड़-भौतिक प्रकृतिके अंधकारके प्रतिरोधसे आती है। अथक इच्छा और अभीप्साद्वारा इसपर विजय पायी जा सकती है।

१२ फरवरी १९३४ —माताजी

माताजी, क्या मैं इस अवसादके बारेमें कुछ जान सकता हूं--यह कैसे आता है ?

सामान्य वातावरणमें अवसाद था और उसने उन सबपर आक्रमण किया जो उसके प्रति खुले थे।

१ मार्च १९३४ —माताजी

तो, अवसादके आक्रमणसे बचनेके लिये क्या किया जा सकता है ?

उसपर एकदमसे ध्यान न दो और इस तरह व्यवहार करो मानों वह है ही नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन, सबसे पहले, वह हमारे अंदर प्रवेश करे इससे पहले हम यह कैसे जान सकते हैं कि वातावरणमें अवसाद है?

यह ठीक नहीं है। तुम उन चीजोंको दूरसे देख और अनुभव कर सकते हो जो चीजें तुम्हारे बाहर हैं।

उसी तरह इससे पहले कि वह तुम्हें छुए तुम वातावरणमें अवसादका अनुभव कर सकते हो।

—माताजी

१ मार्च १९३४

एक पत्रमें मैंने कहा था, "भौतिकपर बहुत-से प्रहार आ रहे हैं" और आपने उत्तर दिया था, "चूंकि तुम अधिकतर भौतिक चेतनामें रहते हो--इसलिये वे भौतिकपर आते हैं।" एक दूसरे पत्रमें मैंने पूछा था, "क्या मैं अब भी भौतिक चेतनामें रहता हूं?" आपने जवाब दिया, "हर एक रहता है--जबतक शरीर है।" मैं यह नहीं समझ पाया।

यह उन प्रश्नोंपर निर्भर है जो तुम पूछते हो। जबतक तुम्हारा शरीर है, तुम भौतिक चेतनाके बिना रह ही नहीं सकते, लेकिन तुम अधिक केंद्रीय भावसे चैत्य और दूसरे भागोंमें निवास कर सकते हो और उनके द्वारा भौतिकका रूपांतर कर सकते हो।

—श्रीअरविंद

६ मार्च १९३४

प्यारी मां! मैं सोचता हूं कि चैत्य और मन--भौतिक मनके अलावा--आपको समर्पित हो चुके हैं।

लेकिन प्राण और भौतिक अब भी विद्रोह कर रहे हैं।

कृपया उन्हें बदलनेके लिये कुछ सुझाव दीजिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणमें यह व्यक्तिगत अहंकार और कामनाके त्यागसे ही आ सकता है। इनके स्थानपर भगवती माताकी इच्छा स्थापित हो जाय।

भौतिकके लिये—नमनीयता, अपने अभ्यासगत विचारों, सम्वेदनों, आवश्यकताओं, लिप्साओंपर जोर न देना बल्कि स्वयंको यंत्रके रूपमें भगवती माताके अर्पण कर देना।

१० मार्च १९३४ —श्रीअरविंद

मेरी समझमें नहीं आता कि 'घ' अब भी मेरा संपर्क क्यों चाहती है। क्या वह कभी बन्द न करेगी? कोई बात नहीं--मुझे अपनी तरफसे केवल दृढ़ताके साथ सावधान रहना चाहिये।

हां, यही करना है। जब तुम्हारे अंदर स्त्रियोंके लिये कोई दुर्बलता न रहेगी तब वे तुम्हारा पीछा छोड़ देंगी।

१२, मार्च १९३४ —माताजी

(बुलेटिन नवंबर ८२)

ऋषिवर बोले :

प्रार्थना

आज ऋषिवरके यहां जो दल आनेवाला था उसके सदस्योंके नाम मजेदार थे। एक था पकौड़ा, दूसरा था राय साहब और तीसरा राय बहादुर और इसी तरह और भी कई थे। एकको बहस करनेकी आदत है और स्वयं ऋषिवर उसे वकील साहब कहकर बुलाते हैं।

हां तो आते ही वकील साहबने अपना प्रश्न दाग दिया, 'ऋषिवर, क्या भगवान् हमारी उल्टी-सीधी प्रार्थनाएं भी सुनते हैं? मेरी नानी कहती हैं कि एक आदमीके पास पीतलका लोटा था। वह हर रोज प्रार्थना करता था, 'हे भगवान् इसे सोनेका बना दो' लेकिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी कुछ न हुआ। एक दिन तेहामें आकर उसने कहा, 'हे भगवान्, तुम मेरी बात नहीं सुनते, सोनेका न सही मिट्टीका ही बना दो इसे।' उसी समय महादेव पार्वती उस तरफ घूमने आये थे। पार्वतीने महादेवसे अनुनय की, 'नाथ इसकी प्रार्थना सुन लो, बहुत दिनोंसे पुकार रहा है।' शिवजीने कह दिया, 'एवमस्तु' और उनके एवमस्तुने पीतलको झट मिट्टीमें बदल दिया। क्या इन कहानियोंमें कोई तथ्य होता है या ये बस बच्चोंको बहलानेके लिये, उन्हें सुलानेके लिये बनायी गयी हैं?'

ऋषिवरने कहा, 'हमारे पूर्वजोंको कहानी कहनेका बड़ा शौक था। वे बड़ी-से-बड़ी, ऊंची-से-ऊंची बातें सामान्य कहानियोंमें कह जाते थे। सामान्य बुद्धिवालोंके लिये ये कोरी, मनोरंजक कहानियां होती थीं और जरा समझदारके लिये इनमें और बहुत कुछ भरा होता था। अब, ऊपरकी इसी कहानीको ले लो।

'यह सारी चीज गहराईसे देखो कि सामान्य प्रार्थना लोभसे, वासनासे या किसी कामनासे उठती है। और ऐसे अगर हर एक प्रार्थना स्वीकृत होने लग जाय तो यह संसार रहेगा कहां! लेकिन भाग्यवश ऐसा होता नहीं है।

'भगवान्तक वही प्रार्थना पहुंच पाती है जिसमें कुछ सचाई हो, प्रार्थना करनेवालेमें भगवान्पर विश्वास हो और प्रार्थना भगवान्की योजनाके अनुकूल हो। उल्टी-सीधी प्रार्थनाएं आपसमें ही टकराती रहती हैं। कभी कोई किसी देवके पास पहुंच जाती है और वहांसे उसका वरदान ले आती है। हमारा वातावरण अनगिनत प्राणिक सत्ताओंसे भरा होता है, जो अपने-आप थोड़ी बहुत समर्थ होती हैं उनके अंदर छोटे-मोटे काम कर देनेकी क्षमता होती है। इनमेंसे कुछ ही क्यों, बहुत-सी भगवान्से उल्टी चलती हैं और उनके काममें बाधा डालनेकी कोशिश करती हैं। ये अपने मनोरंजनके लिए धरतीके प्राणियोंका उपयोग करती हैं और हमारी दृष्टिमें उसका परिणाम भला हो या बुरा, उनका मनोरंजन हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कई स्थानोंपर जहां बड़े-बड़े जुएके अड्डे हैं ऐसी शक्तियां या ऐसी सत्ताएं इकट्ठी हो जाती हैं और जुआ खेलने वालोंको उल्लू बनाकर मजा लेती हैं। ऐसी घटनाएं तुमने सुनी होंगी कि एक आदमी जीतता गया, जीतता गया, मित्रोंने सलाह दी 'अब बस कर', 'अब बस कर।' उसने किसीकी न मानी और अंतिम दांवपर सब कुछ लगाकर हार बैठा। अब उसके लिए आत्महत्याके सिवा और कोई चारा न था। ये सब इसी प्रकारकी सत्ताओंके खेल हैं।

'लेकिन आदमी सावधान रहे तो इनसे बच भी सकता है। यहां एक चीज और है। कई बार परिणाम तुम्हारी प्रार्थना या इच्छाकी तीव्रतापर भी निर्भर होता है। अब इसी लोटेवालेको ले लो। पहले उसकी प्रार्थना मंद रही होगी परंतु क्रोधने उसमें गति पैदा कर दी और उसका प्रभाव उसे भुगतना पड़ा। अगर यही तीव्रता पहले रही होती तो शायद ऐसी नौबत न आती।

'हम साधारण भाषामें जिसे भगवान् कहते हैं उसमें उन सभी सत्ताओंका समावेश होता है जो हमारे वातावरणमें भरी हैं। हम कई बार भागवान् समझकर विरोधी शक्तियोंको पूजते हैं और उसके परिणाम भी हमें भुगतने पड़ते हैं। भगवान् कभी किसीका अनिष्ट नहीं करते। हो सकता है कि ऊपरसे चीज अवांछनीय हो परंतु उसका परिणाम उस आदमीकी दृष्टिसे हितकर हो जैसे कड़वी दवाई पीनेमें तो बुरी लगती है, परंतु रोग-निवारण जैसा मधुर फल लाती है।'

अभी यह बात खतम नहीं हुई थी कि राय साहबने अपनी शंका प्रकट की, 'प्रार्थना करते समय हमारी क्या वृत्ति होनी चाहिए?' ऋषिवरने कहा, 'सबसे अच्छी और सुन्दर वृत्ति तो यह है कि तुम प्रार्थना करके परिणाम भागवान्के हाथोंमें छोड़ दो। यह जिद न करो कि भगवान् तुम्हारी हर इच्छा पूरी करें। यह उन्हींपर छोड़ो कि तुम्हारे लिए जो हितकर हो वही करें। अगर तुम अपनी जिद करो तो ज्यादा संभावना यही हैं कि ये निचली शक्तियां जिनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं अभी बात कर रहा था, तुम्हारी प्रार्थनाका लाभ उठाकर कभी अपना बड़प्पन दिखानेके लिए, कभी अपने मनोरंजनके लिए, तुम्हारे लिए हितकर हो या अहितकर, तुम्हारी मांगी हुई चीजें तुम्हें दे दें।'

राय बहादुर बोल उठे, 'मैंने एक घटना सुनी है, सच झूठ तो भगवान् जानें। एक आदमीकी अपने किसी प्रियजनके साथ लड़ाई हो गयी और उसने क्रोधमें भरकर दोनों भुजाएं उठाकर कहा, "हे भगवान्! तू मुझे अंधा कर दे ताकि मैं ऐसी चीजें न देख पाऊं! कहते हैं कुछ दिनोंमें उसकी अच्छी-भली आंखें बिगड़ गईं और कुछ भी देखना कठिन हो गया। इसके बारेमें आप क्या कहेंगे ?'

ऋषिवरने कहा, 'ऐसी घटनाएं बहुत बार हुआ करती हैं। आवेगमें आकर आदमीकी प्राणिक शक्ति कुछ समयके लिए बहुत बढ़ जाती है और वह अवश्य प्रभावकारी होती है। यहांपर एक बातका ख्याल रखो, तुम्हारे मनमें जो आवेग उठता है वह अपने-आप कई बार ऐसी प्रार्थनाओंके बराबर प्रभावकारी होता है। यह जरूरी नहीं है कि वह प्रार्थना किसी उच्चतर शक्तिकी ओर भेजी जाय। अगर तुम मनमें यह निश्चय करो कि ऐसा होना चाहिए तो वह भी हो जाता है और साधारणतः तुम्हारा प्राण अनिष्टके लिए ही ज्यादा वेगसे पुकार करता है, इसीलिए इस प्रकारकी प्रार्थनाएं या इच्छाएं ज्यादा असानीसे फल लाती हैं। जैसा कि मैंने कहा, सबसे अच्छा उपाय यही है कि तुम भगवान्के सामने अपनी प्रार्थना रख दो और बिना आग्रह किए या यूं कहें कि आग्रहके साथ उनसे निवेदन करो कि जो तुम्हारे लिए अभीष्ट हो वही करें। बिना स्वार्थ, सचाईके साथ की गयी प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं जाती।

'क्यों वकील साहब, इतना काफी है आजके लिए ? अगर इसके बाद कुछ और भी प्रश्न हों तो अगली बैठकमें देखेंगे। आज ज्यादा होनेसे अजीर्ण न हो जाय।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंदकी शिक्षा और साधना-पद्धति

(उनके पत्रोंसे संकलित)

समर्पण

समर्पणका अर्थ है अपने अंदरकी हर चीजका भगवान्‌की ओर उत्सर्ग। तुम जो कुछ हो, तुम्हारे पास जो कुछ है, उसका अर्पण। अपने विचारों, कामनाओं, आदतों आदिपर आग्रह न करना बल्कि दिव्य सत्यको उनके स्थानपर हर जगह अपने ज्ञान, इच्छा और क्रियाको रखने देना।

*

समर्पणका अर्थ है अपने-आपको भगवान्‌के अर्पित करना—तुम जो कुछ हो, तुम्हारे पास जो कुछ है उसे भगवान्‌को दे देना और किसी चीजको भी अपना न मानना, केवल भगवान्‌की इच्छाका पालन करना, और किसीकी इच्छाका नहीं, भगवान्‌के लिये जीना, अहंकारके लिये नहीं।

*

अगर तुम अपने समर्पणको रोके रखो तो माताजीके प्रति खुले रहनेका कोई आध्यात्मिक अर्थ नहीं होता। जो यह योग करते हैं उनसे आत्मदान या समर्पणकी मांग की जाती है, क्योंकि सत्ताके इस तरहके उत्तरोत्तर समर्पणके बिना लक्ष्यके कहीं आसपास पहुंचना भी बिलकुल असंभव है। खुले रहनेका अर्थ है माताजीकी शक्तिको अपने अंदर काम करनेके लिये बुलाना और अगर तुम उसके प्रति समर्पण न करो तो इसका अर्थ होता है शक्तिको अपने अंदर बिलकुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम न करने देना या केवल इस शर्तपर काम करने देना कि वह उस तरह काम करेगी जैसा तुम चाहो, अपने तरीकेसे नहीं जो भागवत सत्यका तरीका है।

*

हमारी साधनाका पहला सिद्धान्त यह है कि समर्पण परिपूर्तिका साधन है और जबतक अहंकार या प्राणिक मांग और कामनाको पोसा जाय तबतक पूर्ण समर्पण असंभव है। आत्मदान अपूर्ण है। हमने इस पापको कभी छिपाया नहीं है। यह कठिन भी हो सकता है और है परंतु यही तो साधनाका पहला सिद्धांत है। चूंकि यह कठिन है इसलिये निरंतर, धीरताके साथ तबतक करना चाहिये जबतक काम पूरा न हो जाय।

जब कभी प्राणिक मिलावट सिर उठाये तुम्हें उसे त्यागते जाना चाहिये। अगर तुम त्यागमें स्थिर रहो तो वह अपनी अधिकाधिक शक्ति खोती जायगी और फिर गायब हो जायगी।

*

अगर तुम भगवान्‌को चाहते हो तो स्वयं भगवान् तुम्हारे हृदयकी शुद्धिका काम अपने हाथमें ले लेंगे, साधनाको विकसित करेंगे और आवश्यक अनुभूतियां देंगे। अगर तुम्हारे अंदर भगवान्‌पर विश्वास और भरोसा है, अगर समर्पणकी इच्छा है तो ऐसा हो सकता और होता है। इस प्रकारकी प्राप्तिके लिये केवल अपने प्रयत्नपर निर्भर रहनेकी जगह अपने-आपको भगवान्‌के हाथमें सौंपनेकी जरूरत है। इसमें भगवान्‌पर भरोसा और विश्वास करना और उत्तरोत्तर आत्मदान भी आ जाता है। वस्तुतः यह साधनाका वह सिद्धांत है जिसका स्वयं मैंने अनुसरण किया था और मैं योगको जिस तरह देखता हूं यह उसकी केंद्रीय प्रक्रिया है।....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पणसे मेरा मतलब है मन और प्राणका यह आंतरिक समर्पण। निश्चय ही बाहरी समर्पण भी होता है—उस सबको त्याग देना जो साधनाके भाव या उसकी आवश्यकताके विरुद्ध हो, अर्पण, भगवान्के पथ-प्रदर्शनके प्रति आज्ञापालन, अगर साधक उस स्थितितक पहुंच चुका है तो सीधा आज्ञापालन या चैत्यद्वारा या गुरुके मार्ग-दर्शनके प्रति . . .

*

आन्तरिक समर्पणका मर्म है भगवान्पर विश्वास और भरोसा। तुम यह वृत्ति अपनाते हो, "मैं केवल भगवान्को चाहता हूं और कुछ नहीं। मैं अपने-आपको पूरी तरह उनके अर्पण कर देना चाहता हूं और चूंकि मेरी अंतरात्मा यह चाहती है इसलिये यह हो ही नहीं सकता कि मैं उनसे मिल न सकूं, उन्हें प्राप्त न करूं। मैं कुछ नहीं मांगता, बस उन्हें ही और यह कि मेरे अंदर उनकी क्रिया मुझे उनतक ले जाय, उनकी वह क्रिया खुले आम हो या गुप्त, अभिव्यक्त हो या छिपी हुई। मैं अपने समय और अपने मार्गपर आग्रह नहीं करता। वे सब कुछ अपने समयपर, अपने ढंगसे करें, मैं उनपर विश्वास करूंगा, उनकी इच्छाको स्वीकार करूंगा, उनके प्रकाश, उनकी उपस्थिति और उनके आनंदके लिये निरंतर अभीप्सा करूंगा, सभी विघ्न-बाधाओं और विलम्बोंको पार करूंगा, उनके ऊपर भरोसा रखते हुए कभी निराश न होऊंगा। वर दे कि मेरा मन अचंचल रहे और उनपर विश्वास करे और उसे अपने प्रकाशके प्रति खोले, मेरा प्राण अचंचल रहे और केवल उन्हींकी ओर मुड़े, वे इसे अपनी स्थिरता और अपने उल्लासकी ओर खोलें, सब कुछ उनके लिये हो, मैं उन्हींके लिये होऊं। चाहे जो कुछ हो मैं इस अभीप्सा और आत्मदानको पकड़े रहूंगा और इस पूरे भरोसेके साथ चलता रहूंगा कि यह कर दिया जायगा।"

यही वह वृत्ति है जिसमें हमें विकसित होना चाहिये, क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय ही इसे तुरत पूर्ण नहीं बनाया जा सकता क्योंकि मानसिक और प्राणिक गतिविधियां बीचमें आती हैं। लेकिन अगर इसके लिये संकल्प रखा जाय तो यह सत्तामें विकसित होती है। बाकी सब, जब मार्ग-दर्शन अपने-आपको प्रकट करे, उसकी आज्ञा माननेकी बात है, अपनी मानसिक और प्राणिक गतिविधियोंको हस्तक्षेप न करने दिया जाय।

मेरे कहनेका आशय यह नहीं है कि यह मार्ग एकमात्र मार्ग है और साधना किसी और तरहसे की ही नहीं जा सकती। ऐसे बहुत-से मार्ग हैं जिनसे मनुष्य भगवान्‌की ओर बढ़ सकता है। लेकिन मैं यह एक ही मार्ग जानता हूं जिसमें प्रकृतिकी तैयारी पूरी होनेसे पहले ही भगवान्‌की साधनाको अपने हाथमें ले लेना एक समीचीन तथ्य बन जाता है।

अन्य पद्धतियोंमें भगवान्‌के बोधका समय-समयपर अनुभव हो सकता है लेकिन वह अधिकतर तबतक पर्देके पीछे रहता है जबतक सब कुछ तैयार न हो जाय। कुछ साधना-पद्धतियोंमें भागवत क्रिया-को नहीं माना जाता, सब कुछ तपस्याद्वारा करना होता है। अधिकतरमें दोनों चीजें मिली-जुली रहती हैं, अन्तमें तपस्या प्रत्यक्ष सहायता और हस्तक्षेपको बुलाती है। यह विचार और अनुभूति कि भगवान् ही सब कुछ करते हैं, समर्पणपर आधारित योग-पद्धतिकी चीजें हैं।

(बुलेटिन–नवंबर ८२)

भागवत प्रेम

भागवत प्रेम, सौंदर्य और आनंदको पृथ्वीपर लाना ही वास्तवमें हमारे योगका शिखर और सारतत्व है। लेकिन जबतक इसके आधार और रक्षाके लिए भागवत सत्य—जिसे मैं अतिमानस कहता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूं—और उसकी भागवत शक्ति न आये तबतक मुझे इन चीजोंको पाना हमेशा असंभव लगा है। अन्यथा स्वयं भागवत प्रेम आजकी चेतनाकी अस्त-व्यस्ततासे अन्धा होकर मानव पात्रोंमें लड़खड़ा कर गिर सकता है, या फिर ऐसा भी हो सकता है कि उसे मान्यता न मिले, उसे दूर हटा दिया जाय या उसका तेजीसे पतन हो जाय और वह मनुष्यकी निम्नतर प्रकृतिकी दुर्बलतामें खो जाये। लेकिन जब वह भागवत सत्य और शक्तिमें आता है तो यह भागवत प्रेम पहले किसी श्रेष्ठ या वैश्व वस्तुके रूपमें प्रकट होता है और अपनी उसी श्रेष्ठता और वैश्व-भावके साथ वह भागवत सत्य और इच्छाके अनुसार मनुष्योंमें अपना काम करता है। कोई भी मानव मन या हृदय, अभी जिस प्रेमकी कल्पना कर सकता है उससे कहीं अधिक विस्तृत, महान् और पवित्र वैयक्तिक प्रेमकी रचना भागवत प्रेम करता है। जब तुम इस प्रेमके उतरनेका अनुभव करो केवल तभी तुम जगत्में भागवत प्रेमके जन्म और क्रियाके लिए सचमुच एक यंत्र हो सकते हो।

*

भागवत प्रेमको मनुष्योंके साथ अपने सबंधों या मानव चरित्रकी श्रेष्ठतामें पाना या यह सोचना कि हम यहां मानव और अहंकार-पूर्ण उद्देश्योंके लिए मानसिक, नैतिक और सामाजिक सत्यको स्थापित करने आये हैं तो मैं कहूंगा कि तुम एकदमसे अज्ञानी हो और मेरी शिक्षासे कोसों दूर हो। मैंने कभी किसी ऐसी चीजको करनेका वचन नहीं दिया। मानव स्वभाव अपूर्णताओंसे बना है, यहांतक कि उसकी धार्मिकता और गुण भी दिखावा और अपूर्णताएं हैं, अहंकारका खेल हैं . . . हम जिस लक्ष्यकी बात कर रहे हैं वह है जीवनके आधार-में आध्यात्मिक सत्यको बिठाना, इसके पहले स्वर हैं भगवान्के प्रति समर्पण, उनके साथ एकता और अहंकारका विलोपन। जबतक यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधार न बन जाये तबतक साधक एक अज्ञानी और अपूर्ण मानव रहता है जो अपने निम्न स्वभावके अशुभोंसे जूझता है।

*

श्रद्धा और दूसरी चीजोंको पानेके लिए तुम्हें हठ करना चाहिए, जबतक तुम उन्हें पा न लो तबतक प्रयास न छोड़ो, निराश या निरुत्साह न हो—जबसे इस कठिन पृथ्वीपर चिंतनशील और अभीप्सा करनेवाले प्राणी आये, तबसे इसी तरीकेसे हर चीज पायी गयी। यानी हमेशा, हमेशा प्रकाशकी ओर खुलो, अंधकारसे मुंह मोड़ लो। उन आवाजोंपर कान न दो जो हमेशा यही कहती हैं कि 'तुम नहीं कर सकते, तुम नहीं करोगे, तुम असमर्थ हो, तुम किसी सपनेकी कठपुतली हो'—क्योंकि ये दुश्मनकी आवाजें हैं। ये अपने कर्कश शोरशराबेसे तुम्हें आनेवाले परिणामसे वंचित कर देती हैं और फिर विजयी भावके साथ अपने कथनकी पुष्टिके रूपमें उस परिणामकी निरर्थकताकी ओर इशारा करती हैं। यह तो मानी हुई बात है कि इस काममें कठिनाइयां आती हैं लेकिन कठिनाईका दूसरा नाम असंभव नहीं है—हमेशा कठिन चीजको पाया गया है। पृथिवीके इतिहासमें जो कुछ मूल्यवान है वह इन कठिनाइयोंपर विजय पानेका परिणाम है। आध्यात्मिक कार्यके लिए भी वही बात लागू होगी।

*

मैं जानता हूं कि तुम्हारे और हर एकके लिए यह कठिनाईका समय है। सारे संसारके लिए यही बात है। हर जगह, हर चीजमें अस्तव्यस्तता, कठिनाई, अव्यवस्था और गड्डमड्डता सामान्य बात हो गयी है। जो ज्यादा. अच्छी चीजें आनेवाली हैं वे पर्देके पीछे तैयार या विकसित हो रही हैं और हर जगह बुरी-से-बुरी चीज ही दिखायी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे रही है। करने लायक एकमात्र चीज है जबतक प्रकाशका मुहूर्त न आ जाय तबतक डटे रहना, पूरी तरह डटे रहना।

*

कोई भी प्रणाली स्वयं अपने बलपर उस परिवर्तनको नहीं ला सकती जिसकी मानवताको सचमुच आवश्यकता है; वह परिवर्तन केवल तभी आ सकता है जब मानवता अपनी उच्चतर प्रकृतिकी दृढ़ रूपसे चरितार्थ की गयी संभावनाओंमें विकसित हो। और यह विकास किसी बाहरी नहीं बल्कि आंतरिक परिवर्तनपर निर्भर है। लेकिन कम-से-कम बाहरी परिवर्तन उस अधिक सच्चे सुधारके लिए अनुकूल अवस्थाएं पैदा कर सकता है—या फिर, इसके विपरीत वे परिवर्तन उन अवस्थाओंतक ले जा सकते हैं जहां केवल कल्किकी तलवार ही पृथ्वीको दुराग्रही आसुरिक मानवताके भारसे मुक्त करके शुद्ध कर सके। चुनाव स्वयं राष्ट्रपर निर्भर करता है, क्योंकि वह जो बोयेगा अपने कर्मका वही फल पायेगा।

*

अपने अंदरसे संदेह, निराशा और उन सभी चीजोंको निकाल बाहर फेंक दो जो तुम्हारी सच्ची और उच्चतर प्रकृतिका हिस्सा नहीं हैं। असमर्थता, अक्षमताके सभी सुझावों और विरोधी शक्तिकी अविवेकी गतियोंको त्याग दो। अपनी अंतरात्माके प्रकाशके प्रति वफादार बनो, उस समय भी जब वह बादलोंमें छिपी हो। मेरी सहायता और माताजीकी इच्छा उन क्षणोंमें भी पीछे काम करती रहती हैं जब तुम उनका अनुभव नहीं कर सकते। तुम्हारे लिए और साथ-साथ सबके लिए आवश्यकता बस इसी बातकी है कि जड़-भौतिक चेतनाकी अंधेरी शक्तियोंके अंधकारमें भी अपनी अंतरात्मा-के प्रति और भागवत पुकारके स्मरणके प्रति आग्रहके साथ सच्चे बने रहो। सच्चे बनो और तुम विजयी होगे।

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक जाबाल

कथा प्रसिद्ध है कि ब्रह्मचारी जाबाल ब्रह्मज्ञानकी प्राप्तिके लिये ऋषिके चरणोंमें समिधपाणि होकर उपस्थित हुआ। गुरुने उसे कुछ दुबली-पतली क्षीणकाय गौएं दीं और कहा, इन्हें जंगलमें ले जाओ और जब इनकी संख्या एक हजार हो जाय तो इन्हें वापिस ले आना। तब तुम ब्रह्म-ज्ञानके योग्य होगे।

कुछ बदले हुए आधुनिक रूपमें यही कहानी आज श्रीअरविंदाश्रममें दोहरायी जा रही है। यहां माताजीने शारीरिक श्रम और व्यायाम-को बहुत अधिक महत्व दिया है। उनका कहना है कि भगवान्के लिये किया गया काम शरीरद्वारा की गयी भगवान्की पूजा है। यहां पठन-पाठन आदिको उतना ही महत्व दिया जाता है जितना बरतन धोने और झाड़ू लगानेको।

अभी कुछ ही वर्ष पहलेकी बात है आश्रमके पास एक जमीन थी जिसके बारेमें अभीतक यह ठीक न किया गया था कि वहांपर क्या किया जाय। माताजीने इसे नाम दिया था ग्लोरिया। जमीन सब तरह की थी, कुछ भाग ऊसर और कुछ उर्वर; समतल होनेकी तो आशा ही नहीं की जा सकती थी। यानी कठिनाई साहसको चुनौती देती थी। सहसा एक आश्रमवासी 'म'के मनमें समायी कि वह भी उक्त ब्रह्मचारीकी तरह गो सेवा करेगा और उसके लिये इष्टप्राप्तिका सबसे अच्छा साधन यही होगा। बातों-बातोंमें माताजीकी स्वीकृति मिल गयी और गंभीरताके साथ काम शुरू हो गया। 'म' ने न तो इस विषयमें कोई शिक्षा पायी थी और न उसे कोई अनुभव था। था तो अपने भुजबलपर विश्वास और भागवत कृपापर श्रद्धा।

आज उस जमीनको पहचानना कठिन है। इधर धानकी खेती लहलहा रही है तो उधर केलोंके पेड़ हवाके थपेड़ोंको सहते हुए भी अपने कार्यमें लगे हुए हैं। उन्हें आश्रमवासियोंके लिये लगभग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांच हजार केले रोज देनेका काम सौंपा गया है। कहीं नारियलके पेड़ खड़े व्योमसे बतिया रहे हैं, कहीं भिंडी, बैंगन, टमाटर आदिके पौधे आपसमें सरगोशियां कर रहे हैं। यह रहे विदेशी कुबाबुलके पेड़ जो एक चमत्कारसे कम नहीं। उन्हें काटते जाओ और वे चरी देते जाएंगे। किसी विशेष परिश्रमकी जरूरत नहीं, देखरेखमें विशेष सावधानीकी जरूरत नहीं। वे धरती और हवासे खाद्य जुटाकर पौधों और पशुओंके लिये भोज तैयार करते रहते हैं। शायद इसी कारण श्रीमती इन्दिरा गांधीने इनका नाम सुबाबुल कर दिया था।

जी हां, धीरज न खोइये। केले, नारियल और धानके खेतोंमें फंसकर हम गौओंको भूल नहीं गये हैं। वह देखिये आपके दाईं ओरसे एक विराट्काय जानवर चला आ रहा है। पहली नजरमें धोखा हो जायगा कि यह कोई सांड है जिसे व्यवस्थापकोंने लापरवाहीसे खुला छोड़ दिया है। जी नहीं, यह ग्लोरियाकी प्रसिद्ध गाय है हिडिम्बा। उसके शरीरको देखते हुए यह नाम दिया गया है। स्वभावमें वैसी नहीं है, इसके पीछे-पीछे नन्दिनी चली आ रही है। देखनेसे ही लगता है 'आश्रम-मृगोऽयं राजन् ।' इनके पीछे-पीछे कल्लोलें करता हुआ दुधारु गायोंका झुण्ड चला आ रहा है। इनमेंसे कोई भी दिनमें दस बारह लिटरसे कम दूध नहीं देती। इनमें भारतकी अनेक प्रसिद्ध जातियोंकी गौएं हैं। सब मिलाकर यहां ढाई सौ गौएं होंगी जो यहां आकर अपनी विशेषताओंको निखार रही हैं।

ग्लोरियाके काममें एक विशेषता है। यह श्रीअरविंदाश्रमका एक विभाग है इसलिये इसे पैसा या नाम कमानेकी चिंता नहीं हैं। काम अच्छे-से-अच्छा करना ही इसका उद्देश्य है। अच्छा दिखावा करके पीछे गंदगी बनाये रखना या छलावा करना किसीको भी लाभ नहीं पहुंचाता। यहां तो गुरुके सामने एक हजार स्वस्थ हृष्ट-पुष्ट गौएं प्रस्तुत करना ही उद्देश्य है और उनके लिये प्रकृतिकी वन-संपदा भी प्राप्त नहीं है, वह भी अपने-आप ही जुटानी पड़ रही है।

माताजी रासायनिक उर्वरक पसंद नहीं करती थीं। ग्लोरियामें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही प्रयास हो रहा है कि उनके बिना ही 'सोनार बांगला' की तरह यहां भी धानके खेत सोना उगलने लगें। गोबर और गोमूत्रका जैसा सुन्दर उपयोग हो रहा है उसे देखकर तबीयत खुश हो जाती है और मजेदार बात यह कि वहां दुर्गन्धका नाम भी नहीं है।

यूरोपके कई समृद्ध देश एशिया और अफ्रीकाके विकसनशील देशोंकी सहायता करना चाहते हैं। हालैंडवाले उन देशोंके युवा कृषकोंको ऐसी खेती, गोपालन आदिकी शिक्षा देनेकी व्यवस्था करते हैं जो उनके अपने देशोंमें काम आये, जिससे उन्हें वास्तविक सहायता मिले। उसके प्रबन्धकोंकी नजर ग्लोरियापर पड़ी तो वे मुग्ध हो गये और यह निश्चय किया कि इस बारका शिक्षण शिविर ग्लोरियामें ही लगे। आश्रमवालोंने इसकी स्वीकृति दे दी और जुलाई-अगस्त १९८५में यहां एक शिविर लगा जिसमें विभिन्न देशोंके तीस कार्यकर्ता, छः सप्ताहके लिये शिक्षण-प्रशिक्षण लेने आये थे।

आगन्तुकोंमेंसे एकने बताया, हमारे यहां रासायनिक उर्वरक देकर हरित क्रांति लायी गयी है। चावलकी उपज तो बहुत बढ़ गयी है पर उस चावलमें सारतत्व नहीं है। पहले पाव भर खानेसे जो तृप्ति होती थी आज आध सेर खाकर भी वह तृप्ति नहीं मिलती। हमारा किसान इसके परिणामोंसे संतुष्ट नहीं है हालांकि इसके कारण उसे पैसा अधिक मिल रहा है। आज आप लोग जो परीक्षण कर रहे हैं उनका महत्व भविष्य ही बतलायेगा। ग्लोरियामें खेतकी पैदावारसे ही खाद बनती है, गोबर और गोमूत्र ही यहां की खेतीको पुष्ट करते हैं। सिद्धांत रूपमें ऐसी बातें बहुत सुनी थीं पर व्यावहारिक रूपमें वह बहुत छोटे पैमानेपर थीं। यह सब होते हुए देखकर खुशी होती है।

सेमिनारमें भाग लेनेवाले एक सज्जनने कहा, यहां जिस कृषि-पद्धतिका अनुसरण किया जा रहा है वह प्रकृतिके साथ मेल खाती है। स्वयं पेड़ पौधे अधिक खाद्यान्न पैदा करनेमें सहायक होते हैं और इस अन्नमें रासायनिक उर्वरकों और कीटाणुनाशकोंके विषैले प्रभाव नहीं होते। यहां हमने रासायनिक चीजोंके उपयोगके बिना ही बहुत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सी चीजें करनी सीखीं। हमने देखा कि प्राकृतिक तरीके हमारे लिये अधिक अनुकूल हैं। इन विषयोंमें और अधिक शोध-कार्यकी जरूरत है। अफ्रीकाके पुराने कृषक इनमेंसे कई चीजें जानते थे।

यहां पूर्व और पश्चिमकी पद्धतियां मिल रही हैं। ठीक दिशामें एक प्रयास किया जा रहा है और सबसे अच्छी बात यह है कि सफलताने इनके दिमाग खराब नहीं किये हैं। सारे प्रयोगके प्राण 'म'का कहना है, 'हम अभी सीख रहे हैं, अभी बहुत कुछ सीखना बाकी है। कृषिके समन्वयको समझना है।' सेमिनारमें भाग लेने-वाले यहांकी शिक्षाके साथ भारतकी सद्भावना भी अपने साथ ले गये हैं और उचित जलवायु पाकर यह उन देशोंके साथ मैत्री और घनिष्ठतामें परिणत होगी।

सोसायटी समाचार

१५ अगस्त श्रीअरविंदका ११३वां जन्मदिन था। स्वयं श्रीअरविंद ने कहा है कि उनके जन्मदिनपर भारतका स्वाधीन होना कोई संयोगकी बात नहीं है। उन्होंने भारतकी स्वाधीनताके लिये बहुत कार्य किया था और वे इसे उस कार्यपर भागवत शक्तिकी मुहर मानते हैं। तड़केसे ही आश्रमवासियों और दर्शकोंने श्रीअरविंदके कमरेके दर्शन शुरू किये। वहांपर माताजीकी हस्तलिपिमें एक संदेश बांटा गया जिसका आशय है, "वर दे कि परम पुरुषके साथ पूर्ण ऐक्यमें धरतीपर उनका कार्य संपादित हो और यहां एक दिव्य जगत्की सृष्टि हो।" इसके साथ ही सोसायटीकी ओरसे रजत जयंतीके उपलक्ष्यमें एक छोटी-सी पुस्तिका 'लाइट, एंडलेस लाइट' भी बांटी गयी।

१९८५का सोसायटी वार्षिकोत्सव बीच आफिसमें १०से १४ अगस्त तक मनाया गया। माताजीके कार्यके लिये नया उत्साह, समर्पणके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये अभीप्सा, श्रीअरविंदके योगमार्गकी समझ प्राप्त करनेके लिये प्रयास किया गया। केंद्रीय कक्षमें माताजीकी कुर्सीपर उनका चित्र विराजमान था।

पहले दो दिनोंमें कई वक्ताओंने माताजीकी कृपाके बारेमें अपनी अनुभूतियां सुनायीं और यह बतलाया कि कामके द्वारा श्रीअरविंदके योगकी साधना कैसे की जाती है। इसके बाद प्रश्नोत्तरकी बारी आयी। एक अधिवेशन हिन्दीमें हुआ। १२ अगस्तको सवेरे 'सर्वांगीण शिक्षा' विषयपर डा. श्रीनिवास अयंगारका महत्त्वपूर्ण भाषण हुआ। डा. अयंगारके सभापतित्वमें बनी सोसायटीकी शिक्षा-समितिने भारतकी शिक्षाके लिये जो सिफारिशें की थीं उसकी रिपोर्टकी प्रतियां बांटी गयीं और डा. अयंगार, डा. महेश्वरी, डा. जायसवाल और विजयके तत्वावधानमें इस विषयके क्रियात्मक पहलूपर बातचीत हुई। दोपहर नारी अधिवेशन और युवा अधिवेशनकी बैठकें हुईं। निश्चय हुआ कि २१से २३ नवंबरतक 'नारीकी सच्ची भूमिका' के बारेमें सेमिनार होगा। युवा अधिवेशनमें बहुतसे विषयोंपर बातचीत हुई। अक्तूबरमें युवा कार्यकर्ताओंका एक शिविर होगा। रातको श्री अनूप जलोटा और श्रीमती जलोटाने भजन गाये।

१३को छोटेसे ध्यानके बाद नवजातजीकी ध्वन्यांकित वार्ता सुनायी गयी। सोसायटीके सभापति डा. नारायणने 'माता और उनकी कृपाका प्रवाह' विषयपर भाषण दिये और अपने अनुभव सुनाये। उन्होंने पिछले वर्षमें सोसायटीके कार्यकलापकी प्रगतिका अहवाल सुनाया और कार्यको आगे बढ़ानेकी अपील की। उन्होंने अपील की कि सभी सदस्य अपनी सुविधाके अनुसार सोसायटीके कामके लिये कुछ-न-कुछ दें। उसके बाद डा. नीरदवरणने श्रीअरविंदके बारेमें भाषण दिया और श्री किशोरी लालजीने 'हमारे कार्य'के बारेमें बोलते हुए कहा कि आज मानवजाति संकटका सामना कर रही है, पुराने मूल्य नष्ट हो गये हैं। हमारा कार्य है चेतनाके विकासके लिये आवश्यक मनोवैज्ञानिक परिवर्तन लाना। हमारे कार्य, जिनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई सीमा नहीं, इस परिवर्तनके माध्यम हों। दोपहरके अधिवेशनमें 'हमारे कार्य'के बारेमें प्रश्नोत्तर हुए।

१४ अगस्तको आध्यात्मिकताके बारेमें भाषण हुए। पहले जपके बारेमें नवजातजीका ध्वन्यांकित भाषण सुनाया गया, फिर माधव पण्डितके तत्त्वावधानमें अन्य भाषण हुए। मोना सरकारने माताजीके साथ हुई अपनी बातचीतका एक अंश सुनाया, श्री मनोज दासने जीवनके व्यावहारिक पक्षपर भाषण दिया। दोपहरको के साधनाके बारेमें प्रश्नोत्तर हुए। अंतमें डा. नारायणने अधिवेशन समापनके साथ यह सूचना दी कि रजत जयंती वर्ष १९ सितंबर १९८६तकके लिये बढ़ा दिया गया। मोहन मिस्त्रीके भजनोंके साथ अधिवेशन समाप्त हुआ। स्मारिकाके रूपमें उन्हें माताजीके एक संदेश'के साथ श्रीअरविंदका फोटो दिया गया। नवजातजीके एक भाषणकी पुस्तिका और 'भगवान्के लिये प्रेम' नामक गुलाब और प्रसाद भेंट किया गया।

फूलोंकी मौन भाषा नामक एक वीडियो टेप अधिवेशनमें दिखलाया गया जिसे लोगोंने बहुत पसंद किया।

जैसा कि हम पहले कह चुके हैं नवजातजीके दो भाषणोंके कैसेट और उनकी पुस्तिकाएं अंग्रेजीमें 'डिवाइन लाइफ इन डिवाइन बॉडी' और हिंदीमें 'भागवत चेतनासे प्रभावित जीवन' शब्दसे मिल सकते हैं। एक कैसेटका दाम है ५०+६ सेलसटैक्स, १० रुपये पैकिंग और डाक खर्च। पुस्तिकाका दाम है ३+डाक खर्च।

केंद्रोंके समाचार

रेडियों वार्ताएं—हमारे सभापति श्री नारायणने २३ अगस्तको

'आओ हम सब शाश्वत रूपसे उनके प्रति कृतज्ञ हों जिन्होंने हमें पथ दिखलाया है और सदा दिखाते रहते हैं। (२-२-१९७३)

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसे भगवान्‌के साथ ऐक्य प्राप्त है उसके लिये हर जगह भगवान्‌का पूर्ण सुख और आनंद है। वह हर जगह और हर परिस्थितिमें हमारे साथ रहता है।

—श्रीमां

चादर, शाल, दोशाले थोक खरीदनेके लिये पत्रव्यवहार करें:

यूनिक स्टोर्स

घास मंडी: लुधियाना

दूरभाष : २५४४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

O Lord, awaken in me an ardent desire to know Thee. I aspire that my life may be consecrated to Thy service.

The Mother

Space donated by

Kooverji Devshi & Co., Pvt. Ltd.

FIREX LEADS TO SAFETY

SAFETY LEADS TO PROSPERITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Thee, I
e.
Mother

Love in her was wider than the universe,
The whole world could take refuge in her single heart.

Sri Aurobindo

Arvind Exports (P) Ltd.

Exporters of Engg. Goods, Pesticides, Chemicals, Ceramics, Readymade Garments & Handicrafts etc.

Calcutta Head Office :
75c, Park Street
Calcutta - 700 016
INDIA

Bombay Office :
76, 77 Atlanta, Nariman Point
Bombay - 400 021
INDIA

Phones:

Offi: 240277 ● 240367
Resi: 814512
Telex: 011-4104
Gram: "ARVIEXPO"

Offi: 249065 ● 248642
Resi: 478368
Telex: 021-7984
Gram: "AUROEXPORT"

o.,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A happy beginning
a good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

New Horizon Sugar Mills (Pvt.) Ltd.

Pondicherry

Telegram : 'SAKAR'
Phone : Town Office : 4280
Factory : 4423 4424

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मद्रास आकाशवाणीसे, श्री किशोरी लालने [illegible] [illegible]जानकीने अहमदाबादसे और श्री संजीव रावने विजयवाडा और श्री जगन्नाथ वेदालंकारने संस्कृतमें वाराणसी और इलाहाबादसे वार्ताएं प्रसारित कीं। रजत जयंती वर्षमें और भी कई रेडियो वार्ताओंकी व्यवस्था हो रही है।

कई केंद्रों और शाखाओंसे श्रीअरविंद जयंती मनाये जानेके समाचार आ रहे हैं। अधिकाधिक लोग जीवनके नये मूल्योंमें रस लेने लगे हैं।

बंगलोर शाखाने पिछले दो महीनोंमें बड़े मजेदार कार्यक्रम रखे। डा. पई मस्तिष्कके बारेमें और डा. महेश्वरी 'आध्यात्मिकता और भारतका भविष्य'पर बोले। श्री सुरेन्द्रनाथने कैलाश मानसरोवर यात्राकी कहानी सुनायी और स्लाइडें दिखायीं। श्री बसवराजने चुम्बक चिकित्साके बारेमें बतलाया। हर रविवारको बैठकें होती हैं जिनमें ध्यानके साथ-साथ माताजी और श्रीअरविंदकी पुस्तकोंका पाठ होता है।

भुवनेश्वर शाखा श्रीअरविंद भवन और मदर्स पार्कमें कुछ और सुविधाओंकी व्यवस्था कर रही है।

सिंगापुर शाखाने श्रीअरविंदका जन्म दिन मनाया और डा. नाडकरणी 'श्रीअरविंदका जन्म और उनकी दृष्टि'पर बोले। उन्होंने श्रीअरविंदकी तीन कविताओं, 'उर्वशी', 'प्रेम और मृत्यु', तथा 'सावित्री' का परिचय दिया और प्रीति गांगुलीकी 'प्रेम और मृत्यु'पर आलेखित स्लाइडें दिखलायीं।

डा. नाडकरणी तीन वर्षके लिये सिंगापुरमें रहेंगे। वे हर सप्ताह श्रीअरविंदकी पुस्तक 'एसेज ऑन गीता'पर भाषण देते हैं।

सोसायटीके नये पते—१) श्रीअरविंद चक्र, द्वारा श्री श्याम कुमार चोपड़े, १८२ कुसुम स्मृति, पोद्दार बाग, वरधा ४४२००१, महाराष्ट्र। २) श्रीअरविंद सोसायटी चक्र,- द्वारा डा. प्रभाकर शर्मा, मकान १०-१४-३ गौतमी नगर, कोवूर ५३४३५०, आन्ध्र प्रदेश। ३) श्रीअरविंद अध्ययन चक्र, द्वारा श्री वासुदेव छंगाणी, जालोटी दरवाजेके भीतर, जोधपुर ३४२००१, राजस्थान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

घोषणाएं

श्रीअरविंद सोसायटीका नारी आयोग २१से २३ नवंबरतक नारियोंकी भूमिका पर पांडिचेरीमें एक सेमिनार कर रहा है। इसमें विशेष जोर होगा दैनिक जीवनके लिये नारियोंको दी गयी व्यावहारिक सीखपर।

कार्यक्रममें जीवनके विभिन्न क्षेत्रोंमें व्यक्तिगत अनुभव, नारियोंको माताजीका पथप्रदर्शन, कला प्रदर्शनी, स्वास्थ्य, चिकित्सा और सौन्दर्य-वर्द्धक पदार्थ, आश्रमकी नारी कलाकारोंके चित्रोंकी प्रदर्शनी, फूल और उनका आध्यात्मिक अर्थ, दैनिक जीवनमें सहायता देनेवाले माताजीके वचन, नारियोंके लिये सरल आसन, एक्यूप्रेशर आदि चीजें होंगी।

जो इसमें भाग लेना चाहें वे कोआर्डिनेटर वीमेन्स कमिशन, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी–६०५००२ को डेलीगेट फार्म और रहनेकी व्यवस्थाके लिये पहली नवंबरसे पहले लिखें। रहनेकी व्यवस्थाके पेशगी पचास रुपयेके ड्राफ्टके साथ एकोमोडेशन सेक्शन, श्रीअरविंद सोसायटीको सीधा लिखें, उसमें अपना नाम, साथ आनेवालोंके नाम, यहां आने और यहांसे लौटनेकी तारीख बतानेके साथ यह भी लिखें कि कैसा स्थान चाहिए।

उत्तर प्रदेशकी श्रीअरविंद सोसायटीका वार्षिक अधिवेशन लखनऊमें १९,२०,२१ अक्तूबर ८५को होगा। आसपासके प्रदेशोंके लोग भी निमंत्रित हैं। जानकारीके लिये श्री प्रमोद चन्द, श्रीअरविंद सोसायटी, २८ विधान सभामार्ग, लखनऊ २२६००१से पत्र व्यवहार करें।

डिवोशन नामक पुस्तक २.५०में शब्दसे उपलब्ध है। डाक व्यय ५० पैसे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

दिसंबर १९८५ वर्ष १६, अंक ५, पूर्णांक १८५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संदेश — १
संपादकीय : पौरुषको चुनौती — अनुबेन — २
दैनन्दिनी — ४
श्रीमातृवाणी : ध्यान इत्यादिके बारेमें — ६
योगके विषयमें — ९
श्रीअरविंद और माताजीके साथ
एक तरुण साधकका पत्र-व्यवहार — १३
ऋषिवर बोले : आत्मसंयम — १६
श्रीअरविंदके साथ बातचीत — २०
मार्गदर्शन — २४
श्रीअरविंद-वाणी — २६
आलि मैं तो भई बावरी . . . — २७
अमृत-बिन्दु — ३५
गीर्वाण-वाणी — ३७
सोसायटी समाचार — आ० ३

वार्षिक अग्निशिखा १०.००; पुरोधा १४.००; दोनों २२.००
आजीवन अग्निशिखा १७५.००; पुरोधा २२५.००; दोनों ४००.००

पत्र, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :
संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
कृपया चेक न भेजें। और ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

संपादक : रवींद्र, अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्देश

तुमसे सबसे अधिक मांग की जाती है प्रकाशकी ओर मुड़नेमें अध्यवसायकी। प्रकाश हम जितना समझते हैं उससे भी अधिक हमारे निकट है और किसी भी क्षण उसका मुहूर्त आ सकता है।

—श्रीअरविंद

९-९-४३

*

मेरे प्रिय बालक,

यह वर्ष तुम्हें सब परिस्थितियोंमें मुस्करानेकी शक्ति दे क्योंकि मुस्कान कठिनाइयोंपर वैसे ही काम करती है जैसे सूर्य बादलोंपर—वह उन्हें भगा देता है।

—माताजी

९-९-४२

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौरुषको चुनौती

एक समय था जब भारतभूमि 'वीर प्रसू' कहलाती थी किंतु अब तो कभी-कभी लगता है कि वह कायर डरपोक पुरुषों—ना, डरपोक नरोंकी भूमि है। अब अभिमन्युसे वीरकी कोई कल्पना भी न कर पाएगा जो अकेला असंख्य कुरुवीरोंके बीच युद्धमें कूद पड़ा था। आज तो दिन-दहाड़े दिल्ली जैसे महानगरमें आतंककारी गोली चलाकर आरामसे निकल जाते हैं। जनता देखती रहती है, पुलिस भाग-दौड़के बाद मुंह लटकाए चली आती है और हत्यारे साफ बच निकलते हैं। कहा जा सकता है कि न्यूयार्क, सान फ्रांसिस्को आदि नगरोंमें दिन-दहाड़े मारकाट होती है और हत्यारे सैंकड़ों आंखोंके आगेसे बच निकलते हैं। ठीक है, लेकिन यह हमारे लिये सान्त्वनाकी बात नहीं है। भारतसे हम अधिक ऊंचे चरित्रकी, अधिक आदर्शमय व्यवहारकी आशा करते हैं इसलिये जब यहांके अखबार ऐसी घटनाओंसे भरने लगते हैं तो लज्जा आती है।

लोग कहते हैं, "अरे, बन्दूकके आगे निहत्थे क्या साहस दिखा सकते हैं। यह तो मूर्खताभरा दुःसाहस होगा।" यह सुनकर हमारी परिचिताके साथ कुछ वर्ष पहले घटी एक घटना अनायास स्मृतिमें कौंध जाती है।

वह दिल्लीसे रेल द्वारा दक्षिण भारत आ रही थी। रास्तेमें आधी रातको रेलकी रफ्तार कुछ धीमी पड़ गई। दस, पन्द्रह मिनटके बाद दौड़ती रेलका दरवाजा खोलकर चार व्यक्ति घुस पड़े। प्रत्येकके हाथमें रिवाल्वर था। उन्होंने यात्रियोंको घेर कर उनसे पैसे गहने वसूल करना शुरू किया। दरवाजेके पास सबसे पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठे एक वयोवृद्ध यात्रीसे पैसे उगाहे, फिर आगे बढ़ते गये। हमारी परिचिता दो यात्रियोंके बीच बैठी थीं जो पति-पत्नी थे। दोनोंको उसके प्रति सहानुभूति हो आई। उन्होंने उसे सीटके नीचे छिपा दिया किंतु कहते हैं न, चोरकी चार आंखें होती हैं। सो उन लोगोंने उसे देख ही लिया। थरथर कांपती हुई वह बाहर आई और अपना बटुआ देने लगी। उन्होंने वह लेनेसे इनकार किया और उसे अपने साथ चलनेका आदेश दिया। भयंकर भविष्यकी कल्पनासे सिहरती हुई वह बार-बार अपनी मांके दुःख भरे मुखकी चिंता करती, आगे बढ़ी। उसके आगे एक डाकू था और पीछे दूसरा। वे दरवाजे तक आ गये, सारे यात्री निष्प्राण बने इस दृश्यको देख रहे थे कि दरवाजे पर अधलेटे वयोवृद्ध पुरुषने बिजली-की फुर्तीसे अपना डण्डा आगे चलते डाकूके पांवपर दे मारा। उसका गिरना था कि सारे यात्री शेर बन कर डाकुओंपर झपट पड़े। खैर, यह है एक पुरुषका पौरुष।

हमारे महानगरमें इतनी हत्याएं होती हैं फिर भी किसीमें पौरुष क्यों नहीं जागता? क्या कारण है कि हत्यारे निकल भागते हैं? यह मानना असंभव है कि कोई उपाय नहीं है। उपाय है और वह है नागरिक संगठन। सारे समय पुलिसपर आश्रित न रहकर नागरिक अपना संघ बनाएं। मारकाटको बढ़ावा देनेकी बात तो कोई समझदार व्यक्ति सोच नहीं सकता, किंतु अपराधीको पकड़ना, हत्यारेको अधिक हत्या करनेसे रोकना न केवल समझदारीकी बात है; बल्कि हर पुरुषका कर्तव्य है।

—अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

दिसंबर

१. बाहरी रूप-रंगके पीछे एक सूक्ष्म सद्‌वस्तु है जो सत्यके अधिक निकट है। हम तुम्हें वही दिखलानेकी कोशिश कर रहे हैं।

२. प्रकृतिमें ज्योतिके लिये सहज प्यास होती है।

३. कृष्णकी लीला : रूप रंगोंके पीछे छिपी प्रगतिकी शक्ति।

४. महासरस्वतीका उद्देश्य है, संसारको पूर्णताकी आवश्यकताके प्रति जगाना।

५. हमेशा विरोधी शक्तियोंके बारेमें सोचते रहना और उनसे डरना बहुत भयानक दुर्बलता है।

६. मैं हमेशा यही सलाह देती हूं कि मंत्रको हृदयकी गहराइयोंसे सच्ची अभीप्साके रूपमें उठने दो।

७. जबतक तुम किसी व्यक्तिको पीटनेकी योग्यता रखते हो, तुम अपने-आप पिटाई पानेके लिये दरवाजा खोलते हो।

८. हमेशा भागवत उपस्थितिपर एकाग्र होओ तो सुरक्षा अधिक सहज होगी।

९. जो भगवान्‌को दिया गया है उसके सिवा कुछ भी सुरक्षित नहीं है।

१०. रही बात दुर्भावना, ईर्ष्या, झगड़े और तानोंकी, तो तुम्हें सच्चाईके साथ इन सबसे ऊपर उठना चाहिए और कड़वे-से-कड़वे शब्दोंके उत्तरमें भी एक सद्‌भावनापूर्ण मुस्कान देनी चाहिए।

११. जबतक तुम अपनी प्रतिक्रियाओंके बारेमें बिल्कुल निश्चित न हो, साधारण नियमके रूपमें चुप रहना ही ज्यादा अच्छा है।

१२. दूसरोंपर नियंत्रण रखनेके लिये स्वयं अपने ऊपर पूर्ण नियंत्रण पाना अनिवार्य शर्त है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३. अगर राजनय छल, कपट और मिथ्यात्वपर आधारित होनेकी जगह दिव्य सत्य और भागवत कृपाका यंत्र बन जाय तो यह मानव एकता और सामंजस्यकी ओर बड़ा कदम होगा।

१४. धरतीका भविष्य चेतनाके परिवर्तनपर आधारित है।

१५. मानवजाति जिस भयंकर दुर्दशामें फंसी हुई है उससे चेतनाके आमूल परिवर्तनके सिवा उसे कोई नहीं बचा सकता।

१६. एकता किसी गहरी व्यवस्थासे नहीं आती, वह आती है शाश्वत ऐक्यके बारेमें सचेतन होनेसे।

१७. मानवजातिकी एकता मूलभूत और विद्यमान तथ्य है। लेकिन मानवजातिकी बाह्य एकता मनुष्यकी सचाई और सद्भावनापर निर्भर है।

१८. जीवन रात्रिके अंधकारमें एक यात्रा है। भीतरी प्रकाशकी ओर जागो।

१९. हर बाधाको गायब हो जाना चाहिए, सत्ताके हर भागमें अज्ञान-के अंधकारका स्थान भागवत ज्ञानके प्रकाशको लेना चाहिए।

२०. आगे बढ़ो, ज्यादा अच्छे भविष्यकी ओर, कलकी उपलब्धियों-की ओर आगे बढ़ो।

२१. भविष्य उन लोगोंके लिये संभावनाओंसे भरा होता है जो अपने-आपको उसके लिये तैयार करना जानते हैं।

२२. प्रगतिका कोई अंत नहीं है और हर रोज, तुम जो कुछ करते हो उसे ज्यादा अच्छी तरह करना सीख सकते हो।

२३. पीछे मत देखो, हमेशा आगे देखो, तुम जो करना चाहते हो उसे देखो—तुम निश्चय ही प्रगतिशील रहोगे।

२४. अपने-आपको खुश करनेकी कोशिश न करो, औरोंको खुश करनेकी कोशिश भी न करो। केवल प्रभुको खुश करनेकी कोशिश करो।

२५. धरतीपर एक नया प्रकाश आयेगा, सत्य और सामंजस्यका प्रकाश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२६. तुम्हें दो बातें कभी न भूलनी चाहिए। श्रीअरविंदकी अनुकंपा और दिव्य मांका प्रेम। इन दोके साथ तुम शत्रुओंको पूरी तरह पराजित करने और सदाके लिये विजय पानेतक, धैर्यके साथ युद्ध करते रहोगे।

२७. बाहरके सारे शोरको चुप कर दो, भगवान्‌की सहायताके लिये अभीप्सा करो। जब वह आये तो उसकी ओर पूर्ण रूपसे खुलो ओर उसकी क्रियाके आगे समर्पण करो।

२८. ऐसा हो कि नया प्रकाश धरतीपर फैले और मानव जीवनकी अवस्थाको बदल दे।

२९. केवल सत्य ही जगत्‌को भागवत प्रेमको प्राप्त करने और उसे अभिव्यक्त करनेकी शक्ति दे सकता है।

३०. तुम्हें हर चीजका, जीवित या मृत, सबका सम्मान करना चाहिए और यह जानना चाहिए कि सब कुछ भागवत चेतनामें रहता है।

३१. हे प्रभु, वर्षका अंत हो रहा है और हमारी कृतज्ञता तेरे आगे झुक रही है।

ध्यान इत्यादिके बारेमें

यदि कोई कहे "मुझे परिणामके बारेमें निश्चय है, मैं जानता हूं कि मैं जो चाहता हूं वह भगवान् मुझे देंगे," तो क्या इससे कोई सहायता मिलती है?

तुम इस रूपमें ले सकते हो। तुम्हारी श्रद्धाकी तीव्रता या अटलताका यह अर्थ हो सकता है कि भगवान्‌ने यह निर्धारित कर रखा है कि तुम्हारी श्रद्धा जिसका निर्देश करती है वह अवश्य पूर्ण हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचल श्रद्धा भागवत संकल्पके विद्यमान होनेका चिह्न होती है, जो होनेवाला है उसकी निर्दशिका होती है।

जिस समय कोई चुपचाप ध्यानावस्थामें होता है तब उसके अंदर कौन-सी शक्तियां काम करती हैं?

यह वात ध्यान करनेवालेपर निर्भर करती है।

परंतु क्या निश्चल-नीरव ध्यानकी अवस्थामें साधक अपने-आपको पूर्ण रूपसे खाली नहीं कर देता? तब फिर कोई बात उसपर कैसे निर्भर कर सकती है?

यदि तुम अपने-आपको संपूर्ण रूपसे शून्य कर डालो तो भी इससे तुम्हारी अभीप्सामें कोई परिवर्तन नहीं होता, उसका कार्यक्षेत्र नहीं वदलता। किसीकी अभीप्सा मानसिक भूमिकाओंपर अथवा प्राणके क्षेत्रोंमें कार्य करती है; किसीकी अभीप्सा आध्यात्मिक होती है। यह तुम्हारी अभीप्साके गुणपर निर्भर है कि कैसी शक्ति उसका उत्तर देगी और वह क्या काम करेगी। ध्यानके समय अपने-आपको शून्य कर लेनेसे तुममें एक आंतरिक निश्चल-नीरवता पैदा हो जाती है; किंतु इसका यह अर्थ नहीं कि तुम शून्य बन गये हो या तुम कोई निर्जीव या जड़ वस्तु बन गये हो। अपने-आपको खाली पात्र बनाकर तुम उस वस्तुका आवाहन करते हो जो उसे भर देगी, अर्थात्, तुम अपनी आंतरिक चेतनाके दबावको सिद्धिकी ओर खोल देते हो। यह तुम्हारी चेतनाके स्वभाव और उसके दबावपर निर्भर है कि तुम किन शक्तियोंको कार्यक्षेत्रमें उतार सको और वे शक्तियां तुम्हारे कार्यमें सहायता पहुंचायें और उसे सफल करें या विफल करें अथवा हानि पहुंचाएं और बाधा दें।

तुम विभिन्न अवस्थाओंके ध्यान कर सकते हो और उन सभीका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंदर या नीचेकी ओर उतारी गयी शक्तियोंपर तथा उनके कार्यपर प्रभाव पड़ता है। यदि तुम अकेले ध्यानमें बैठो तो तुम्हारी आंतर और बाह्य अवस्था ही मुख्य होगी। और यदि तुम दूसरोंके साथ बैठो तो फिर सामान्य अवस्थाका महत्त्व अधिक होगा। परंतु इन दोनों दशाओंमें अवस्थाएं सदा बदलती रहेंगी और जो शक्तियां उनका उतर देंगी वे कभी एक-सी न होंगी। उचित रूपमें की गयी सम्मिलित एकाग्रता एक महान् शक्ति हो सकती है: एक प्राचीन कहावत है कि यदि एक दर्जन सच्चे मनुष्य अपने संकल्प और अभीप्साको एक करके भगवान्को पुकारें तो भगवान् प्रकट हुए बिना न रह सकेंगे। परंतु उनका संकल्प एकनिष्ठ होना चाहिये, उनकी अभीप्सा सच्ची होनी चाहिये। हो सकता है कि इस प्रकारका प्रयास करनेवाले किसी प्रकारकी जड़ताके वश अथवा किसी भ्रांत या विकृत इच्छाके कारण एक हो गये हों और ऐसी अवस्थामें परिणाम विनाशकारी हो सकते हैं।

ध्यानके समय पहली और अनिवार्य आवश्यकता है तुम्हारी समस्त चेतनाका पूर्ण और नितांत सचाईकी अवस्थामें होना। यह अपरिहार्य है कि तुम अपने-आपको धोखा न दो और दूसरेको न तो धोखा दो और न दूसरेके धोखेमें आओ। बहुधा लोगोंमें कोई कामना होती है, कोई मनकी पसंद या प्राणकी वासना होती है, वे चाहते हैं; कि उनके ध्यानमें होनेवाली अनुभूति किसी विशिष्ट रूपमें हो अथवा वह कुछ ऐसा मार्ग ले जिससे उनकी भावनाओं, इच्छाओं और पसंदोंको संतोष मिले; वे अपने-आपको खाली और निष्पक्ष रखकर जो कुछ होता है उसे सरलता और सचाईके साथ साक्षी रूपमें नहीं देखते। यदि ऐसी अवस्थामें होनेवाली चीज तुम्हें पसंद न हो तो अपने-आपको धोखा देना सहज होगा; तुम एक चीज देखोगे, किंतु उसे थोड़ा-सा तोड़-मरोड़कर कोई और ही चीज बना डालोगे अथवा किसी सहज और स्पष्ट वस्तुको विकृत कर डालोगे या उसे बढ़ाकर असाधारण अनुभूति बना दोगे। जब तुम ध्यान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने बैठो तो तुम्हें एक बालककी भांति सरल और निष्कपट रहना चाहिये, अपने बाहरी मनको किसी प्रकारका हस्तक्षेप न करने दो, कोई आशा या किसी तरहका हठ न करो। यदि यह अवस्था हो तो बाकी सब तुम्हारी अंदरकी अभीप्सापर निर्भर होगा। यदि तुम अंदरसे शांति मांगोगे, तो वह मिलेगी; यदि बल मांगोगे, शक्ति मांगोगे, ज्ञान मांगोगे, तो वे भी मिलेंगे––किंतु सब-के-सब तुम्हारी ग्रहण करनेकी शक्तिके परिमाणमें मिलेंगे। और यदि तुम भगवान्‌का आवाहन करो––यह स्वीकार करते हुए कि भगवान् तुम्हारे आवाहनको सुननेके लिये सदा तैयार हैं, और इसका यह अर्थ हुआ कि तुम्हारा आवाहन उनतक पहुंचनेके लिये पर्याप्त रूपसे शुद्ध और बलवान् है––तो तुम्हें उसका उत्तर अवश्य मिलेगा।

(श्रीमातृवाणी खंड ३से)

योगके विषयमें

७ अप्रैल, १९२९

क्या आप योगके विषयमें कुछ कहनेकी कृपा करेंगी ?

तुम योग-साधना किसलिये करना चाहते हो ? शक्ति प्राप्त करनेके लिये ? शांति और स्थिरताकी प्राप्तिके लिये ? मानवजातिकी सेवाके लिये ?

इनमेंसे कोई भी उद्देश्य यह बतानेके लिये काफी नहीं है कि तुम इस योग-मार्गके लिये हो।

तुम्हें जिस प्रश्नका उत्तर देना है वह यह है : क्या तुम भगवान्‌के लिये योग-साधना करना चाहते हो ? क्या भगवान् ही तुम्हारे जीवनके परम सत्य हैं, यहांतक कि तुम उनके बिना रह ही नहीं सकते ? क्या तुम यह अनुभव करते हो कि तुम्हारे जीवनका एकमात्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्देश्य भगवान् ही हैं और उनके विना तुम्हारे जीवनका कोई अर्थ नहीं है? यदि ऐसा हो तभी कहा जा सकता है कि तुम्हारे अंदर इस योग-मार्गके लिये पुकार है।

सबसे पहली आवश्यक चीज है भगवान्के लिये अभीप्सा।

और दूसरी बात है इस अभीप्साको सतत बनाये रखना, उसे सदा जीवंत, ज्वलंत और जाग्रत् रखना। और इसके लिये जिस बातकी आवश्यकता है वह है एकाग्रता—भगवान्पर एकाग्रता जो उनके संकल्प और अभिप्रायके प्रति पूर्ण और निरपेक्ष आत्म-समर्पणके भावसे की गयी हो।

हृदय-केंद्रमें अपने-आपको एकाग्र करो। हृदयमें प्रवेश करो, उसके अंदर जाओ, उसकी गहाराईमें उतरो और दूरतक, जितनी दूरतक तुम जा सको जाओ। अपनी चेतनाके वाहर बिखरे हुए तारोंको एकत्र कर लो, उन्हें समेटकर अंदर डुबकी लगाओ और तहमें जाकर बैठ जाओ।

वहां, हृदयकी गभीर शांतिमें एक अग्नि जल रही है। यही है तुम्हारे अंतरमें रहनेवाले भगवान्का दिव्य अंश—तुम्हारी सत्य सत्ता (हृत्पुरुष)। इसकी आवाज सुनो और इसके आदेशका पालन करो।

एकाग्रताके लिये दूसरे केंद्र भी हैं, उदाहरणस्वरूप, एक केंद्र मस्तिष्कके ऊपर है (सहस्रार), दूसरा भ्रू-मध्यमें है (आज्ञा)। इनमेंसे हर एकका अपना प्रभाव है और हर एक किसी परिणामपर पहुंचाता है। परंतु केंद्रीय पुरुषका स्थान हृदय है और हृदयसे ही सब केंद्रीय प्रवृत्तियां निकलती हैं—यहींसे रूपांतरके लिये समस्त गतिशीलता और वेग और आत्मदर्शन करनेकी शक्ति निकलती है।

जो अपने-आपको योगके लिये तैयार करना चाहता हो उसे क्या करना चाहिये?

सबसे पहले उसे सचेतन होना चाहिये। हम अपनी सत्ताके एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

 अधिकांश भागमें हम अचेतन हैं।
नगण्यसे भागमें सचेतन हैं, इसके अधिकांश भागमें हम अचेतन हैं।
यह अचेतनता ही हमें अपनी प्रकृतिके अपरिमार्जित भागके साथ
नीचेकी ओर बांधे रहती है और उसके परिवर्तन या रूपांतरको रोकती
है। अचेतनाद्वारा ही अदिव्य शक्तियां हमारे अंदर घुस आती हैं
और हमें अपना गुलाम बना लेती हैं। तुम्हें अपने बारेमें सचेतन
होना चाहिये, अपनी प्रकृति और प्रवृत्तियोंके प्रति तुम्हें जाग्रत् होना
चाहिये, तुम्हें यह जानना चाहिये कि तुम किसी चीजको क्यों और
कैसे करते हो, कैसे सोचते या अनुभव करते हो। तुम्हें अपने
प्रेरकभावों, आवेशों और अपनी गुप्त या प्रकट शक्तियोंको, जिनकी
प्रेरणासे तुम काम करते हो, समझना चाहिये। या यूं कहें कि तुम्हें
अपनी सत्ताकी मशीनके सभी कल-पुर्जोंको अलग-अलग करके जान
लेना चाहिये। एक बार तुम सचेतन हो जाओ तो तुम खरे और
खोटेकी परख और छान-बीन कर सकोगे, तुम देख सकोगे कि कौन-
सी शक्तियां तुम्हें नीचेकी ओर खींचती हैं और कौन-सी ऊपर उठनेमें
सहायता देती हैं। और जब तुम उचितको अनुचितसे, सत्यको
असत्यसे, दिव्यको अदिव्यसे अलग करके जान सको तो तुम्हें सख्तीसे
अपने इस ज्ञानके अनुसार चलना चाहिये, अर्थात्, दृढ़तापूर्वक एकको
त्यागकर दूसरेको स्वीकार करना चाहिये। पग-पगपर ये द्वन्द्व
तुम्हारे सामने उपस्थित होंगे और पग-पगपर तुम्हें चुनाव करना होगा।
तुम्हें धैर्य रखना होगा, लगन लगाये रहना होगा और चौकन्ना रहना
होगा—योगियोंकी भाषामें "निद्रारहित", जो कुछ भी दिव्य हो उसे
स्वीकार करना और जो कुछ अदिव्य हो उसे किसी भी प्रकारका
मौका देनेसे इंकार करना होगा।

क्या यह योग मनुष्यजातिके लिये है?

नहीं, यह भगवान्‌के लिये है। हमारी साधनाका ध्येय मनुष्य-
जातिका कल्याण नहीं है, हमारी साधनाका हेतु है भगवान्‌की अभि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्ति। हम भगवान्‌के संकल्पको कार्यमें परिणत करनेके लिये यहां हैं, बल्कि यह कहना अधिक सत्य होगा कि हम यहां इस लिये हैं कि भगवान्‌का संकल्प हमारे ऊपर कार्य कर सके, ताकि हम पुरुषोत्तमको उत्तरोत्तर मूर्तिमान करने और पृथ्वीपर उनके राज्यकी स्थापना करनेके लिये उनके यंत्र बन सकें। मानवजातिका जो भाग इस भागवत पुकारका प्रत्युत्तर देगा केवल वही उनके प्रसादको प्राप्त करेगा।

प्रत्यक्ष रूपसे यदि न भी हो तो अप्रत्यक्ष रूपसे ही सही, इस योगद्वारा सामूहिक रूपमें मानवजातिको लाभ होगा या नहीं, यह बात मानवजातिकी अपनी अवस्थापर निर्भर करेगी। इस विषयका निर्णय यदि मानवजातिकी वर्तमान अवस्थाओंसे किया जाय तो बहुत अधिक आशा नहीं दिखायी देती। आज एक औसत मनुष्यका—मनुष्यजातिके प्रतिनिधिका —क्या भाव है? क्या वह विशुद्ध रूपसे भगवान्‌का अंश धारण करनेवाली किसी भी वस्तुके संपर्कमें आते ही क्रोधसे कांप नहीं उठता या विद्रोह नहीं करता? क्या वह यह नहीं अनुभव करता कि भगवान्‌का अर्थ ही है उसकी पाली-पोसी हुई संपत्तिका नाश! क्या वह भगवान्‌की इच्छा और संकल्पसे साफ-साफ इंकार करके उसके विरुद्ध लगातार चिल्ल-पों नहीं करता? भगवान्‌के आविर्भावसे कुछ भी लाभ उठानेकी आशा करनेसे पहले मानवजातिको बहुत बदलना होगा।

हम सब लोग यहां एक साथ मिले हैं इसका क्या अर्थ है?

हम सब पूर्वजन्मोंमें मिल चुके हैं, नहीं तो इस जन्ममें एक साथ न होते।

हम सब एक ही परिवारके हैं और हमने भगवान्‌की विजय तथा पृथ्वीपर उनकी अभिव्यक्तिके लिये युग-युगमें काम किया है।

(श्रीमातृवाणी खंड ३से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद और माताजीके साथ

एक तरुण साधकका पत्र-व्यवहार

कल आपने लिखा था, "इससे सिद्ध होता है कि उसकी इच्छा, तुम्हारी इच्छाके जितनी ही मजबूत है--और यह बहुत अच्छी चीज है।" मैं यह नहीं समझ पाया कि "यह बहुत अच्छी चीज है" से आपका क्या अभिप्राय है?

किसी व्यक्तिमें मजबूत इच्छा शक्ति हो तो यह हमेशा अच्छा होता है।

--माताजी

२२ मार्च १९३४

'च' की इच्छा मेरे ऊपर क्रिया क्यों करती है, जब कि मेरी 'ज'के ऊपर नहीं करती?

इससे यह पता लगता है कि 'ज' तुम्हारे प्रभावके प्रति जितनी खुली है, तुम उससे अधिक 'च'के प्रभावके प्रति खुले हो। यह हमेशा शोचनीय होता है कि कोई किसी दूसरे व्यक्तिके प्रभावके प्रति खुला हो। तुम्हें भगवान्‌के प्रभावके सिवाय और किसीके प्रभावको स्वीकार नहीं करना चाहिये।

--माताजी

२२ मार्च १९३४

क्या मानसिक सत्ताके लिये कोई ऐसा उपाय है जिससे वह प्राणके प्रभावसे बची रहे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनको ऊपरसे प्रकाश प्राप्त करने दो और प्रभावित होनेसे इंकार करो।

२२ मार्च १९३४ —माताजी

मैं प्राणिक सत्ताको यह कैसे समझाऊं कि माताजी कभी पक्षपात नहीं करतीं ?

एक उपाय है माताजीपर पूर्ण श्रद्धा रखना—दूसरा है यह मानना कि वह तुमसे अधिक बुद्धिमान हैं और जो कुछ करती हैं उसके पीछे जरूर कारण होते हैं जो तुम्हारे मनके निर्णयोंसे ज्यादा अच्छे होते हैं।

मैं इसे मनमें दृढ़तासे किस तरह बिठा सकता हूं ?

इसे प्रतिष्ठित करना होगा—बस इतना ही। जबतक प्राण और मन यह समझते हैं कि वे माताजीसे अधिक बुद्धिमान हैं और वे उनका मूल्यांकन कर सकते हैं तबतक तुम इन मूर्खताओंके विलीन होनेकी आशा कैसे कर सकते हो ?

—श्रीअरविंद

२२ मार्च १९३४

मैं आपसे पूछता हूं अगर प्राण और मन अपने-आपको माताजीसे अधिक बुद्धिमान समझें और उनके बारेमें निर्णय करें तो मैं उन्हें यह कैसे अनुभव कराऊं कि यह सच नहीं है ?

तुम उन्हें उनके दावेकी हास्यास्पद मूर्खता नहीं दिखा सकते क्या ?

—श्रीअरविंद

२३ मार्च १९३४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'च'से प्रभावित होनेके बारेमें मैं क्या कर सकता हूं?

विचार और क्रियामें उसपर कोई ध्यान न दो।

उससे मैं कैसे प्रभावित होता हूं।

क्योंकि तुम उसके लिये आकर्षणका अनुभव करते हो, और उसकी इच्छा तुम्हारी इच्छासे अधिक मजबूत मालूम होती है।

चूंकि 'ज'की मुझसे बातें करनेकी प्रबल इच्छा होती है, मैं यह नहीं समझ पाता कि यह भला किस तरह अच्छी है?

यह इच्छाकी अपेक्षा कामना या सहजवृत्ति है।

मैं यह नहीं कहती कि यह अच्छा है कि वह तुमसे बात करना चाहती है, मैं कहती हूं कि सामान्यत: मजबूत इच्छा-शक्ति होना अच्छा है। जब तुम्हारी इच्छा-शक्ति मजबूत होती है तो तुम्हें बस उसे उचित रूपसे निर्देशन देना होता है। अगर तुम्हारे अंदर इच्छा-शक्ति ही न हो तो पहले तुम्हें उसका विकास करना होता है जो हमेशा समय लेता है और कभी-कभी कठिन होता है।

ऊटपटांग प्रश्न पूछनेसे पहले ज्यादा अच्छा रहेगा कि तुम जरा सोचो और खुद ही समझनेका प्रयास करो।

—माताजी

२३ मार्च १९३४

मैं प्रणामके बाद ठहर गया था क्योंकि आपने मुझसे कहा था कि अगर कुछ लोग रह जायें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। आज मैं नहीं रुका क्योंकि 'ह'ने मुझसे कहा कि माताजीने मना किया है।

यह सूचना मैंने उस समय लगवायी थी जब बहुत-से बाहरके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिथि आये हुए थे और सभी रुके रहते थे, और इसलिये थी क्योंकि ज्यादा-से-ज्यादा लोगोंको प्रणामके बाद बैठने और दूसरोंको देखनेकी आदत होने लगी थी, मानों यह कोई प्रदर्शन हो। लेकिन अगर थोड़े-से लोग रहें तो मुझे आपत्ति नहीं।

२४ मार्च १९३४ —माताजी

आज शामसे मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि एक काला बादल हट गया है और मैं खुशीका अनुभव कर रहा हूं। क्या यह सच है?

तुम्हें इच्छा करनी चाहिये कि यह सच और स्थायी हो।

२४ मार्च १९३४ —माताजी

(बुलेटिन नवंबर ८२)

ऋषिवर बोले :

आत्मसंयम

ऋषिवरने कहा, लो आज तुम्हारे पूछे बिना ही मैं कुछ बतलाने चला हूं। तुम सब काफी बड़े हो चुके हो फिर भी बचकानी बातें ही कहूंगा। इसका कारण भी है। पहले जमानेमें ब्रह्मचारी शिक्षा पूरी कर चुकता था, शास्त्र और शस्त्र दोनोंमें पारंगत हो जाता था तब आचार्य अंतिम दीक्षा देते समय कहते थे, सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमदः। उन्हीं आचार्योंके पदचिह्नों पर चलते हुए मैं भी तुम बड़े-बड़े विद्यार्थियोंको वन्दनाके जन्मदिनपर एक छोटी-सी कहानी-गोष्ठी उपहारमें देता हूं। शुरू मैं करूंगा, आगे तुम चलाओगे।

हां, तो एक बड़ा बलवान हृष्ट-पुष्ट विद्यार्थी था! उससे सभी डरते थे। कहीं कुछ कर न बैठे। उसे भी इस बातका गर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था कि उसके आगे कोई चूं नहीं कर सकता। एक दिन वह जरा उदास-सी शक्ल बनाये मेरे पास आया और बोल पड़ा, 'ऋषिवर, नहीं पसंद आता यह सब। मैं सबसे मजबूत हूं। मल्लयुद्ध, मुष्टियुद्ध वगैरहमें पारंगत हूं। सब मुझसे डरते हैं। पहले मुझे इस बातपर गर्व था परंतु अब मुझे लगता है मैं हौआ बन गया हूं। मैं सचमुच मारना नहीं चाहता पर जरा-सी अप्रिय चीज हो जाय तो मेरा पारा चढ़ जाता है और मैं अपने-आपको रोक नहीं पाता। जहां मेरे तेवर ही बहुत होते वहां हाथ उठा देता हूं और अपने ऊपर, अपने साथियोंपर इसकी प्रतिक्रिया देखकर पछताता हूं लेकिन अगला अवसर आनेपर फिर वही होता है। कोई उपाय बतलाइये।'

समस्या नयी नहीं थी इसलिए नये इलाजकी भी जरूरत न पड़ी। मैंने सदियों पुराना नुस्खा बता दिया। जब गुस्सेमें आओ तो अपने हाथ जेबमें डाल लिया करो। है तो कठिन पर दो चार बार करनेसे अभ्यास हो जायगा।

कुछ दिनतक मैंने उसकी शकल न देखी। मैंने सोचा इतना सरल-सा उपाय सुनकर उसे विश्वास न हुआ होगा। लेकिन दो तीन महीने बाद वह आया। उसका मुखड़ा चमक रहा था। उसने कहा, "ऋषिवर, आपके सीधे-सादे उपायके अनुसार चल रहा हूं और सचमुच उससे बड़ा फायदा हुआ है। मारनेकी अपेक्षा अपने-आपको चुप रखनेमें कहीं अधिक बलकी जरूरत होती है और जहां मारनेके बाद अपनेसे ग्लानि होती थी, दूसरोंसे संबंध बिगड़ते थे वहां इससे एक तरहका आत्मसंतोष होता है।"

मैंने बीचमें ही कहा, 'देखो भई, यहांतक तो बात ठीक है, इससे आगे न बढ़ना। कहीं यह न हो कि तुम्हारा सिर फूलने लगे कि देखो मैं कितना शांत व्यक्ति हूं। जहां और मारपीट पर उतारू हो जाते वहां मैं चुपचाप रह सका। चाहे किसी कारणसे हो, चाहे किसी बहानेसे हो, सिरका फूलना एक भयंकर बीमारी है। जिसका और कोई उपाय नहीं, उसमें सूई चुभोनी ही पड़ती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने गुरजिएफके बारेमें एक कहानी सुनी है, नम्रता बोली। जब वह आठ नौ वर्षका था तो उसके बाबाने खाट पकड़ ली और जानेसे पहले उसे एक सीख देते गये। उन्होंने कहा, बेटे, कोई तुमसे नाराज हो, कोई अप्रिय बात कहे तो कभी तुरंत उत्तर न देना। अगर तुम कुछ समय रुक जाओगे तो देखोगे कि तुम कोई अप्रिय या मूर्खतापूर्ण कार्य करनेसे बच गये हो।'

तनयाने कहा, इससे भी बढ़िया बात तो मुझे मालूम है। किसीने महात्मा बुद्धपर गालियोंकी बौछार शुरू की। उन्होंने उसकी ओर आंखतक न उठायी, चुपचाप बैठे रहे। जब गाली देनेवाला, गाली देते-देते थक गया तो उसने कहा, 'बात क्या है ?' मैंने इतना कुछ कहा तुम उत्तर क्यों नहीं देते ? बुद्धने करुणा भरी दृष्टि डालते हुए कहा, 'तुम अगर मुझे कुछ उपहार दो और मैं उसे स्वीकार न करूं तो वह किसका होगा ?' दूसरेने उत्तर दिया 'मेरा'। बुद्धने कहा, 'मैंने तुम्हारी गालियोंको स्वीकार नहीं किया।' आदमी झट उन चरणोंमें नत हो गया। उसने अपने जीवनमें एक बड़ी सीख पा ली थी।

'ऋषिवर, वन्दनाने कहा, यह तो हमने क्रोध और उसके नाते-रिश्तेदारोंके साथ व्यवहार करनेकी तरकीब सीखी। कामनाके लिए क्या करना चाहिए ? कामनाका दौरा भी क्रोधकी तरह ही जोरसे आता है। क्रोधमें कटुता, तिक्तता, उग्रता आदि होती है। इसमें एक प्रकारकी मधुरता होती है। और फिर कितने प्रकारकी कामनाएं होती हैं। बहुत बार तो वे हमें निर्दोष मालूम होती हैं। इसलिए कामनासे बचना और भी कठिन है!'

ऋषिवर बोले, 'एकदम व्यावहारिक प्रश्न है तुम्हारा। मैं भी शास्त्रीय उत्तर न देकर व्यावहारिक उत्तर दूंगा। पहले तुम्हें कामना और आवश्यकतामें फर्क करना सीखना होगा। जीवनमें सच्ची आवश्यकताएं बहुत कम होती हैं, अधिकतर तो कामनाओंका ही झुंड लगा रहता है और इसमें अपने-आपको धोखा देना बहुत आसान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। हम मन और प्राणकी हर कामनाको आवश्यकता मान लेते हैं और फिर अपने-आपको शाबाशी देते हैं कि देखो हम कितने समझदार हैं। केवल एकदम आवश्यक वस्तुओंकी ही चाह करते हैं। सोहन हलवा और खीरपूरी खानेकी इच्छा हो तो हमारा मन हमें यह बतलाता है कि इन चीजोंकी शरीरको आवश्यकता है, और कोई कारण नहीं है। शुरू-शुरूमें हर एकके अन्तःकरणमें एक भाग ऐसा होता है जो इस चीजको समझ सकता है। वह हमारी भूलपर अंगुलि-निर्देश भी करता है परंतु जब उसकी बात नहीं सुनी जाती तो वह पीछे हटकर चुप हो रहता है। दबाव डालना उसका स्वभाव नहीं है।'

'आवश्यकता और कामनामें फर्क करनेका एक छोटा-सा तरीका यह है कि जब हम किसी चीजकी चाह करते हैं और चीज हमारे सामने आ जाती है तो हम उत्तेजित हो उठते हैं, नाचते-कूदते हैं, अति प्रसन्न हो उठते हैं और अगर चीज न मिले तो क्रोध, उदासीनता, खीज आदिका दौरा होता है। ये चीजें इस बातका प्रमाण हैं कि हमारी मांग प्राणिक कामनापर आधारित है। सच्ची आवश्यकताकी चीजको पाने और न पाने, दोनोंमें आदमी शांत रहता है।

कभी-कभी कामना पूरी न होनेपर प्राण हड़ताल कर बैठता है, किसी चीजमें रस नहीं लेता, हर चीजसे किनारा करना चाहता है, यहांतक कि कभी-कभी जीवनसे भी पिंड छुड़ानेकी सोचता है। हड़-तालके समय तुम्हें बिल्कुल शांत रहना चाहिए, तुम साधारण काम तो कर सकते हो पर उस अवस्थामें, उस उदासीमें कोई महत्वपूर्ण निर्णय न लो।

कामनासे आनेवाली उत्तेजना और उदासी दोनोंके समय तुम्हारे अंदर बाहरी वातावरणसे अवांछनीय चीजें घुस आती हैं, उनसे सावधान रहो। ऐसे अवस्थामें अपने-आपको थोड़ा शांत रखनेकी कोशिश करो।

शहंशाह पंजाबके एक सन्त हो गये हैं। एक बार वे कहीं चले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा रहे थे। उनके अंदर मांस खानेकी प्रबल इच्छा जागी। उन्होंने अपना मन इधर-उधर करनेकी कोशिश की पर--मरज बढ़ता गया जूं जूं दवा की। वे अभी कुछ ही कदम गये होंगे कि एक चील ऊपरसे गुजरी और उनके पैरोंके सामने मांसका एक टुकड़ा डाल गयी। शहंशाह वहीं खड़े हो गये और बोले, मन, ले तू मांस खाना चाहता था न। यह सामने पड़ा है। चल अभी खा ले। मैं उठा कर न दूंगा। तू स्वयं बाहर आकर इसे खा जा। शहंशाहने कई बार बुलाया पर मन बाहर न आया। उन्होंने डांटकर फिर कहा, देख मैंने तुझे अवसर दिया पर तूने नहीं खाया। खबरदार, आगेसे कभी तंग न करना मुझे। कहते हैं इसके बाद ऐसी कोई कामना नहीं जागी। तो हर एकका अपना-अपना तरीका होता है। लो आजके लिए हमारी यही भेंट है।'

श्रीअरविंदके साथ बातचीत

असुर, बीमारी, भोजन इत्यादिके बारेमें

१५-६-१९२६

शिष्य--असुरोंका प्राणिक रूप कैसा है?

श्रीअरविंद--असुर मानसिक स्तरकी सत्ताएं हैं। वे मनुष्योंपर उनके मानसिक रूपों, रचनाओं और उनके अहंकारके द्वारा कार्य करते हैं। मनुष्य अपने मनमें विचार गढ़ लेते हैं और उन्हें रूप मानते हैं। अज्ञान और अहंकारसे प्रेरित होकर, ये तरह-तरहकी योजनाएं और कार्यक्रम बनाते हैं। यही वह क्षेत्र है जहां असुर मनुष्यके साथ खिलवाड़ करनेके लिये अपना अवसर पाता है।

असुर सत्ताओंके क्रममें, राक्षसों और पिशाचोंसे ऊपर हैं। ये दोनों प्राणिक जगत्‌की सत्ताएं हैं। असुर, कार्योंमें चाहे जितने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपूर्ण और दोषपूर्ण क्यों न हों, उसमें कुछ प्रकाश और आत्म-संयम तो होता ही है, लेकिन राक्षस अंध-कामनाओं और अन्धकारमय आवेगोंसे खेलते हैं, जिनपर न कोई लगाम होती है न कोई नियंत्रण।

भौतिक स्तरपर काम करनेवाली सत्ताएं बहुत ही अंधेरी और निम्न कोटिकी होती हैं। उन्हें किसी एक वर्गमें गिनना या एक नाम देना मुश्किल है। शायद भूत इसी श्रेणीके होते हैं।

असुरों और राक्षसोंको उनकी प्रकृतिके अनुसार, अलग-अलग स्पष्ट वर्गोंमें गिना जा सकता है परंतु मनुष्य आसुरी, राक्षसी और दिव्य-गुणोंका मिश्रण होता है।

शिष्य—वे कौन-सी सत्ताएं हैं जो बीमारी पैदा करती हैं? क्या हर एक बीमारीके लिये अलग-अलग सत्ता है?

श्रीअरविंद—नहीं, बीमारीकी कोई अलग व्यक्तिगत सत्ता नहीं होती। राक्षसोंके जैसी अंधकारमय शक्तियां, मनुष्योंकी बीमारीमें अपना काम पा लेती हैं।

शिष्य—प्रकृतिके नियम पालन और मनुष्यके स्वास्थ्यमें क्या संबंध है?

श्रीअरविंद—प्रकृतिके नियम कौन-से हैं? क्या उनका निश्चय हो गया है? क्या बीमार लोग प्रकृतिके नियमोंका उल्लंघन करते हैं?

शिष्य—मान लीजिये कोई आदमी स्वास्थ्यके नियमोंका पालन करता है तो क्या वह स्वस्थ न रहेगा?

श्रीअरविंद—स्वास्थ्य विज्ञानके नियम कृत्रिम होते हैं, और वे हमारी बहुत सहायता नहीं करते। स्वस्थ दीखनेवाला मनुष्य अप्रत्याशित आक्रमणके आगे टूट जाता है और बड़ा ही कमजोर-सा दीखनेवाला, सब कुछ सह लेता है। हम बस इतना ही कह सकते हैं कि सक्रिय जीवन और खुली हवामें रहना स्वास्थ्य और लंबे जीवनके लिये अच्छा है।

शिष्य—तो सचमुच स्वस्थ रहनेमें किस चीजसे सहायता मिलती है?

श्रीअरविंद—रोग प्राणमय स्तरपर आक्रमण है। हर व्यक्तिके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये उसकी प्राणिक सत्ता और बाह्य शक्तियोंके बीच एक संतुलन होता है। अगर वह इस संतुलनको बनाये रख सके तो स्वस्थ रह सकता है। एक तरहसे शरीर इस संतुलनके बारेमें सचेतन होता है और अगर उसे अपने हालपर छोड़ दिया जाय तो वह अपने-आपको परिस्थितियोंके साथ समन्वित कर सकता है लेकिन सामान्यतः शरीर-चेतनामें मानसिक विचार और रचनाएं गड़बड़ कर देती हैं। हमारी बहुत-सी आदतें और बहुत-से संस्कार हमारे रोगोंके उत्तरदायी होते हैं।

शिष्य—क्या यह शरीर चेतना किसी प्रकारका सहज बोध है?

श्रीअरविंद—हां, सहज बोध है। पशुओंमें यह बहुत अधिक प्रबल होता है। मनुष्यने उसे कृत्रिम नियमों और आदतोंके कारण बिगाड़ दिया है। लेकिन तुम इस प्राणिक संतुलनके बारेमें भली-भांति सचेतन हो सकते हो और तब अपने-आपको स्वस्थ रख सकते हो। कभी-कभी भूलोंके कारण या डगमगाकर मनुष्य अकस्मात् प्राणिक संतुलनमें जा पड़ता है और तब, लंबे जीवनकी काफी संभावना रहती है।

शिष्य—क्या यह सहज बोध पशुओंमें बहुत प्रबल होता है?

श्रीअरविंद—वे भी भूलें करते हैं, जो परिस्थितियोंसे पैदा होती हैं। जब पशु बहुत भूखा हो तो वह ऐसी चीजें भी खा लेगा जो सामान्यतः वह नहीं खाता।

शिष्य—हमें एक चीज खानेकी कामना होती है और दूसरीको हम छोड़ देते हैं। क्या यह कामना हमारा ठीक पथ-प्रदर्शन करती है?

श्रीअरविंद—कामनाएं प्राणिक सत्तासे आती हैं और शरीरके योगक्षेमकी चिंता किये बिना अपनी पूर्तिकी मांग करती हैं। मैंने जिस शरीर-चेतनाकी बात की है वह कामना नहीं, शरीरकी आवश्यकताओंकी जानकारी है। जिस आदमीमें यह चेतना हो, वह किसी चीजको इसलिये नहीं खायेगा कि उसे खानेकी लालसा है और किसी और चीजको इसलिये नहीं छोड़ेगा कि वह उसे ना-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पसंद है। आखिर पसंद और नापसंद, आदत और संस्कारोंपर निर्भर है। वह ऐसा भोजन चुनता है जो उसके शरीरधारणके लिये जरूरी हो।

शिष्य—क्या भोजन शरीरके लिये अत्यंत आवश्यक है ?

श्रीअरविंद—जीवनके लिये आवश्यक है प्राण-शक्ति, विश्वमें प्राण-शक्तिका अखूट भंडार है और तुम सीधे विश्वसे जितनी चाहो, उतनी प्राणशक्ति खींच सकते हो।

शिष्य—क्या विश्वसे प्राणशक्ति लेना भोजनसे प्राणशक्ति लेनेकी अपेक्षा अधिक कठिन नहीं है ?

श्रीअरविंद—मेरे लिये पहली बात ज्यादा आसान है। मैं विश्वसे जितनी चाहूं उतनी प्राणशक्ति खींच सकता हूं। जेलमें मैंने दस दिनका उपवास किया था, मैं हर तीसरे दिन सोता था। दस दिन पूरे होनेपर मैंने अपने-आपको अधिक बलवान् पाया, मैं उतना भार उठा सकता था जितना पहले न उठा सकता था। लेकिन मेरा भार ग्यारह पाऊंड कम हो गया। शरीरके शुद्ध भौतिक पदार्थकी क्षतिको नहीं रोका जा सकता था। जब मैं चेट्टी हाउस (पांडिचेरी) में रहता था तो मैंने तेईस दिनका उपवास किया। मैं रोज आठ घंटे काम करता था, अपने कमरेमें टहलता था, सामान्य रूपसे सोता था और तेईस दिनका उपवास पूरा होनेपर मैंने नियमानुसार थोड़ा-थोड़ा भोजन नहीं, सामान्य पूरा भोजन करना शुरू कर दिया। मेरा संतुलन जरा भी नहीं बिगड़ा। मैं अपनी शक्तिको सुरक्षित बनाये रखनेके लिये वैश्व ऊर्जासे पर्याप्त ऊर्जा खींचता रहता था लेकिन मेरा मांस सिकुड़ गया और मैं शुद्ध रूपसे भौतिक द्रव्यके इस ह्रासको न रोक सका इसलिये कुछ भौतिक अन्न लेना जरूरी हो गया।

शिष्य—क्या इस भौतिक आवश्यकताको जीत लेना संभव नहीं है ?

श्रीअरविंद—हां, संभव तो है पर मैं अपनी साधनाके उस स्तरपर ऐसा न कर सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—क्या उपवासके कारण नींद कम हो जाती है?

श्रीअरविंद—अपने दूसरे उपवासके समय तो मैं सामान्य रूपसे सोता था, परंतु जेलमें पहले उपवासके दिनोंमें मुझे साधनाका बहुत अधिक दबाव सहना पड़ता था, इसलिये मैं अधिक सोये बिना ही काम चला लेता था।

मार्गदर्शन

आदतोंसे छुटकारा, सच बोलना

इन भावोंके बार-बार लौट आनेकी आदतका कारण है, भौतिक चेतना। और भौतिक चेतनामें मनुष्य हमेशा दुर्बल रहता है। आदतोंकी गतिविधिसे छुटकारा पाना हमेशा कठिन होता है। मानसिक इच्छाशक्ति इनसे छुटकारा दिला सकती है परंतु वह हमेशा मजबूत नहीं होती। उसके अतिरिक्त तीन चीजें सहायता कर सकती हैं: पहली चीज है चैत्य सत्ता। शुरू-शुरूमें तुम्हारी चैत्य सत्ता बहुत सक्रिय थी और इन चीजोंको बार-बार धकिया देती थी, उन्हें घुसने न देती थी और अगर कोई चीज घुस आती तो उसे मार भगाती थी। चैत्य क्रियाशीलता वापिस लौट आयेगी और नीचे भौतिक शरीर तकमें प्रवेश करेगी। तब कठिनाई बहुत कम हो जायगी। दूसरी है सदा जाग्रत् आंतरिक चेतना। यह चीज चेतनाको गहरा करनेसे ही आती है जिससे बाहरी और भीतरी चेतनाके बीचका परदा दूर हो जाय। और अंतमें माताजीकी शक्ति, जो हमेशा रहती है। अगर ये तीनों चीजें हों तो सब कुछ हो सकता है। इन तीनोंको एक साथ सक्रिय बनानेमें समय लगता है लेकिन यह होगा अवश्य और इसके साथ ही भीतरी कठिनाइयां गायब हो जाएंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच बोलना

तुम्हें जिस भीतरी नियंत्रणका अनुभव हो रहा है, जो तुम्हें रास्ता दिखाता है और जिसने तुमसे सच बोलनेका प्रण करवाया है, निश्चय वह तुम्हारी जाग्रत् चैत्य सत्ता है।

तुम चरित्रके जिस दोषकी बात कह रहे हो वह सामान्य बल्कि मानव प्रकृतिमें लगभग सर्वव्यापक है। जो चीज सच्ची नहीं है उसे कहना या बढ़ा-चढ़ाकर मोड़-तोड़ कर बोलना, अपने दर्पको संतुष्ट करनेके लिये, अपनी पसंद-नापसंदके अनुसार, अपनी इच्छा पूरी करनेके लिए, कोई लाभ उठानेके लिए या कोई वांछित वस्तु पानेके लिए ऐसा करना तो बहुत आम बात है। अगर तुम अपनी प्रकृतिको बदलनेमें सफल होना चाहते हो तो तुम्हें सच और केवल सच बोलना सीखना होगा।

प्रकृतिमें जिस चीजको बदलना है उसके बारेमें सचेतन होना, बदलनेके लिए पहला कदम है। तुम्हें उदास हुए बिना, यह सोचे बिना कि यह असंभव है, या मेरा बदलना असंभव है, इन चीजोंको देखना चाहिए। तुम ठीक चीज करो और विश्वास रखो कि परिवर्तन आयेगा। अगर चैत्य सत्ताकी प्रकृति जाग्रत् है और माताजीकी चेतनाके साथ तुम्हारा मार्गदर्शन कर रही है और उनकी शक्ति उसके पीछे है और तुम्हारे अंदर कार्य कर रही है तो कोई चीज असंभव नहीं है। अब यही हो रहा है। विश्वास रखो सब कुछ होगा।

२९-१०-१९३५ (श्रीअरविंदके दो पत्रोंके आधारपर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद-वाणी

अपनी निम्न सत्तामें किसी अशुद्धिसे पिंड छुड़ानेका सबसे अच्छा तरीका यह है कि उसे उच्चतर शक्तिके आगे रख दो। तब त्रुटि अपने शुद्ध रूपमें दिखायी देगी। तब अतिमानसमें उनके मूल स्रोतको देखा जा सकता है जो यहां निम्न सत्तामें विकृत हो गया है। हमारे जीवनकी हर चीजका बीज अतिमानसमें है। जो चीज निम्नतर स्तरपर मिथ्या और अपूर्ण प्रतीत होती है वही अतिमानसमें अपने सत्य और अपनी पूर्णतामें दिखायी देती है। अपूर्णता और अशुद्धिको दूर करनेका यही ठीक उपाय है।

*

जब पहले-पहल मेरे आगे योगका प्रस्ताव रखा गया तो मैंने उसे आसानीसे स्वीकार नहीं किया। उस समय मेरा ख्याल था कि योग आदमीको कार्य और जीवनसे दूर ले जाता है और मैं अपने देशकी स्वाधीनता लानेके लिये अभीप्सा कर रहा था। लेलेके साथ मिलनेसे दो वर्ष पहले मैंने योगाभ्यास शुरू किया। मेरा ख्याल था कि इससे मेरे अंदर असाधारण शक्तियां आ जाएंगी। तो इस तरह मैं अर्थार्थीके रूपमें योगकी ओर आया था। मेरा उद्देश्य था मातृभूमि और मानवताकी सेवा। लेकिन समयके साथ-साथ यह सब बदल गया।

*

ईसाके भारत आनेकी कहानी कुछ रूसी दिमागोंकी उपज है। कुछ विद्वान् तो ईसाके अस्तित्वके बारेमें भी संदेह करते हैं। हो सकता है कि ईसा नामक कोई व्यक्ति हुआ हो और उसके बारेमें प्रचलित सारी कहानियां उसके जीवनकी घटनाएं न हों बल्कि बादमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके नामके साथ चिपका दी गयी हों। उसी तरह कइयोंका कहना है कि बुद्धके नामसे प्रचलित सभी शिक्षाएं स्वयं बुद्धकी नहीं भी हो सकती हैं। परंतु इस वातका कोई महत्व नहीं है कि सचमुच कोई ईसा था या नहीं और ईसाइयों द्वारा आरोपित सब घटनाएं उसके साथ घटी थीं या नहीं फिर भी, ईसाका विचार जीवित-जाग्रत् है और उसने चैत्य स्तरपर काफी शक्ति जुटा ली है और मानवजातिपर बहुत प्रभाव रखता है। रामके बारेमें कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है, हो सकता है कि राम जैसा व्यक्ति न भी रहा हो। वेदमें राम और सीता सूर्य और धरतीके प्रतिनिधि हैं। उनका जीवनपर बहुत जबर्दस्त प्रभाव है।

आलि मैं तो भई बावरी

(श्रीमांने बहुतसे फूलोंके आध्यात्मिक नाम बताये हैं। दर्शनके अवसरपर आश्रममें इन नामोंके साथ फूलोंकी एक प्रदर्शनी लगी; यहां लेखिका आपको उसीकी सैर कराने ले चली हैं।)

"आलि, मैं तो भई बावरि" पगमें घुंघुरू नहीं बंधे हैं बल्कि हृदयमें खुशबुओंके झरनोंके कलकल संगीतने आज मुझे बौरा दिया है, तन मनकी सुध बुध हर ली है। सखि, तू मुझे हमेशा चिट्ठी न लिखनेकी वजहसे ताने दिया करती थी कि "ढाई आखर प्रेमका लिखे सो पंडित होय" ले, आज मैं तुझे चार आखर सौंदर्यके लिख रही हूं लेकिन यह चिट्ठी नहीं, मदमस्त हृदयसे छलकी हुई खुशबूसे पगी कुछ बूंदे हैं—

नन्दन कानन नहीं, पांडिचेरी आश्रममें लगी फूलोंकी प्रदर्शनीमें पहुंच गयी थी मैं। तू तो जानती है मुझे फूलोंकी प्रदर्शनीमें अधिक रस नहीं, फूल किसे नहीं भाते लेकिन उनपर लटके भारी-भरकम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लैटिन नामोंके बिल्ले रह-रहकर मेरी अनभिज्ञताका मुंह चिढ़ाते हैं। और नाम भी ऐसे ऐसे जबान पलट कि याद करना तो दूर उनका शुद्ध उच्चारण पड़नानीका स्मरण करा दे—लेकिन अंतमें कई इष्ट-मित्रोंसे एक ही बातको उलट-पुलटकर दसियों बार सुननेके बाद, कि भई यह प्रदर्शनी अनूठी है, खीर चखे बिना उसका स्वाद नहीं जाना जा सकता, मैं कुछ अनखती अनखाती-सी आखिर जा पहुंची और वहां कदम रखते ही हृदयके तार झंकृत हो उठे और रामनरेश त्रिपाठीकी ये पंक्तियां फूट पड़ीं—

अनुभव करो हृदयसे यह अनुपम सुषमाकर देखो।
यह सामने अथाह प्रेमका सागर लहराता है,
कूद पड़ूं, तैरूं इसमें, ऐसा जीमें आता है!!

सचमुच उसपर लट्टू हो गयी मैं पहली ही नजरमें। यहां हायासिंथस ओरिआंटालिस या मुसाण्डा ल्यूटेओला हिडिम्बा सरीखे नहीं बल्कि पवित्रता, समर्पण, पूर्णता, अभीप्सा जैसी हृदयको गद्‌गद् करनेवाले नामोंकी पुर्जियां चमक रही थीं। आश्चर्यके साथ भृकुटियां प्रश्नचिह्न बनकर उभर आयीं, उधर जवाब हृदय गुहामें झंकृत हो उठा—मां भगवतीने अपने पुष्परूपी बालकोंको बड़े यत्नसे गढ़कर यथागुण नाम दिया है—धराके फूल, आध्यात्मिक जगत्‌के नाम! है ना अद्‌भुत सामंजस्य!! इधर एक और गठबंधन हो रहा था, पुष्पोंकी भीनी भीनी सुगंधका अगरुके पवित्र धुंएके साथ।

कमरेमें कदम रखते ही आंखें चुम्बककी तरह बरबस सामने दीवारपर टंगे चित्रपर खिंची चली जाती हैं—नन्हीं-मुन्नी प्यारी-सी बच्ची जो हरियालीमें खिले एकाकी फूलको लौलीन निहार रही है—मानों उससे गुपचुप बतिया रही हो—हो सकता है मैं भी चित्रके साथ एकात्म हो, बिन पंखोंवाली इस धरतीकी परीके बोलते हृदयकी भाषा सुन सकूं—देखो, देखो उतर आया मां भगवतीका उत्तर चित्रके नीचे टंगे कागजपर—

पुष्प निःशब्द प्रार्थनाएं . . . अगर हम फूलोंकी बातें सुनना जानें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो वे हमसे बोलते हैं। उनकी भाषा सूक्ष्म और सुरभित होती है।

कितना सटीक, कितना खुशबूदार वाक्य!

फूलोंकी सूक्ष्म भाषा!!

आजका स्थूल विज्ञान भी इस सत्यको नकार नहीं सकता। प्रत्यक्ष प्रमाण जो दीखते हैं। फूल पौधे बच्चेकी तरह पनपते हैं। किसी पौधेको भड़कानेवाला जैज म्यूजिक और उससे कुछ दूरीके दूसरे पौधेको कर्णप्रिय शास्त्रीय संगीत सुनाकर बड़ा करो—वही माटी, वही पानी लेकिन दोनोंके विकासमें उतना ही अंतर होगा जितना कपूत और सपूतमें।

दो कदम चलनेके बाद एक मेजके ऊपर गत्तेकी तख्तीपर कलात्मक तरीकेसे लिखा है—बालककी अभीप्सा। फूलोंकी प्रदर्शनीमें भला बालककी अभीप्साका क्या तुक! कदम-कदमपर प्रश्न ठोकनेवाले दिमागसे यह पूछे बिना रहा न गया। मैंने उसे पृष्ठभूमिमें सरका दिया और फिरसे हृदयके मार्गदर्शनमें हो ली—हृदय जो तर्क नहीं करता, अनुभूतिसे जानता है। यहां हैं खूबसूरत पीले बिगुलनुमा फूल जिन्हें हम और तुम जाफरान या अंग्रेजीमें कहें तो ब्लैंकेट फ्लावरके नामसे जानते हैं। यहांवालोंके लिये यह है 'सक्सेसफुल फ्यूचर' यानी सफलतापूर्ण भविष्य, ऐसा भविष्य जो प्रतिज्ञाओं तथा हर्षपूर्ण आश्चर्यों-से भरपूर है—बालकका भविष्य। पास ही घंटीके आकारके चटकीले पीले रंगके नाजुक फूलके पुर्जेपर इपोमेआ टचूबेरोजा नहीं मानसिक कृतज्ञता लिखा हुआ है। कितना हृदयस्पर्शी नाम! मैं दम भरके लिये ठिठक जाती हूं—यह आनत फूल साक्षात् कृतज्ञता लग रहा है —वह भी मानसिक! हमारा यह **अहंकारी** मन उस प्रत्येक चीजके प्रति कृतज्ञ हो उठे जिसकी सहायतासे वह प्रगति करता है तो... तब हम भी इस फूलकी तरह उन परमेश्वरके चरणोंमें यूं ही झुक जायेंगे। सामान्य भाषामें इसे कहते हैं वुडन रोज। अरे वाह! खूब जंच रहे हैं ये कैलिएंड्रा—लगता है मानों पुष्पराजके लिये चंवर जुटाये गये हैं। मुलायम रेशेकी तरह हैं इनकी पंखुड़ियां और रंग भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनमोहक सफेद, लाल, गुलाबी। जरा देखूं तो यह किस मानवीय गुणके वृक्षको अपने अंदर संजोये हुए हैं—प्रज्ञाकी ओर कोशिश! सच बालक हर क्षण जानने, समझने, बूझनेके भरसक प्रयत्नमें लगा रहता है, उसके क्यों, कैसे, कहां प्रज्ञाकी ओर बढ़ते हुए कदम ही तो हैं! ओह! मन कुसुम खिल उठा गुलाबी छटा लिये इस नारंगी फूलको देखकर। यह जवाकी एक किस्म है लेकिन मांने अपने इस बालकको क्या नाम दिया है जानती हो—शाश्वत यौवन!! अहा! शाश्वत यौवनकी बगलमें फूलदानोंमें सज रहे हैं बैंगनी धरतीवाले क्रिजेंथिमम यानी जीवनी-शक्ति। कितना उपयुक्त नाम मिला है इन्हें—सच जीवट, दम खमसे भरपूर होते हैं ये।

अब समझ आ गया कि इन फूलोंको 'बालककी अभीप्सा' शीर्षक तले क्यों रखा गया। आदर्श बालकके लिये ये गुण मीलके पत्थर-की तरह तो हैं।

आगे बढ़नेके करीब थी कि ऊपर टंगे वाक्योंने फिरसे मेरा दामन थाम लिया "फूल दयालु होता है, उसके अंदर ऐसी मृदुता होती है, वह इतना प्यारा होता है, हमारे इतना पास होता है, इतना जीवंत कि उसकी उपस्थिति हमें आनंदसे भर देती है। फूल हमेशा प्रसन्नचित्त और खुश होता है।"

कितनी हृदयंगम भाषामें जीवनके एक सत्यको उजागर कर दिया श्रीमांने और वे कहती हैं, "फूल अपने चारों तरफकी चीजोंके प्रति खुला होता है—प्रकृति, प्रकाश, सूरजकी किरणों, हवा, इत्यादि सबके प्रति। वह आसपासकी चीजोंपर सहज स्वाभाविक प्रभाव डालता है, वह खुशी और सौंदर्यको फैलाता है।"

हृदय कमल झूम-झूम उठ रहा है इन उद्धरणोंको पढ़कर, दिल कह उठता है—ईर्ष्या, द्वेष, कलह, लूटमार, धोखाधड़ीकी कीचड़में सड़ना कोई जीना है, जियो तो फूलोंकी तरह जियो जिनके लिये माताजी कहती हैं—वह निस्संकोची होता है, अपने सौंदर्यको रत्ती भर नहीं छिपाता। उसे अपने अंदरसे स्वाभाविक रूपसे बहने देता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। वह सबके प्रति एक जैसा बर्ताव करता है... बिना किसी प्रतिस्पर्धाके हर एक उसकी सुन्दरता और खुशबूका पान कर सकता है।

मेरी आंखें छलछला उठीं। ये आंसू नहीं, शुद्ध प्रसन्नताके मोती हैं जो चैत्यसे छलक उठे।

उस मेजके फूल अपनी शाखें हिला-हिलाकर मुझे बुला रहे हैं—यहां ऊपर बड़े-बड़े अक्षरोंमें लिखा है—प्रकृतिकी घड़ी। यानी? शायद प्रकृतिने अपनी सुहूलियतके लिये ही कुछ फूलोंका खुलना मुंदना निश्चित कर दिया है—ये रहे सफेद जवा—इनके अंदर उगते सूरजके साथ मेल खाते चटक नारंगी परागकोष मन्द पवनमें झूम कर कैसी ताजगीका अहसास दिला रहे हैं और नाम है: पवित्र शक्तिका प्रकाश—वह प्रकाश जो जन-जनके हृदयको आलोकित कर दे। उधर कितनी सोंधी-सोंधी खुशबू वातावरणमें तैर रही है, परिचित-सी सुगंध, इसके फूल न नीले हैं न बैंगनी, दोनोंका समन्वय और सींक सरीखी इनकी पंखुड़ियां!! याद आया हम इन्हें झुमकालता कहते हैं, वास्तवमें झुमकेकी तरह लटक रहे हैं—शायद वनदेवीके हों—इनका आध्यात्मिक नाम है नीरवता। सच, वनदेवीके आभूषण नीरवता, प्रशांति, हर्ष और प्रसन्नता ही तो होंगे। पास ही गुलदानमें सजे कुमुद नयनोत्सव बने हुए हैं। ये हैं महालक्ष्मीकी समृद्धि यानी कुमुदकी तरह पूर्णरूपसे खिलकर ही मनुष्य अपनी सच्ची समृद्धि भगवान्‌के अर्पण करता है, सखि, ये कुछ फूल हैं जो सवेरे-सवेरे खिलकर सूर्य देवताको अपना अर्घ्य चढ़ाते हैं। चंदाकी चांदनीमें महकनेवाले भी कम नहीं—मधुमालती यानी निष्ठा, रातकी रानी जिसे पवित्रताके नामसे अलंकृत किया गया है और उसके दसियों किस्म रातके वातावरणमें खुशबूका संसार रचनेवाले कारीगर हैं।

उस तरफ प्रकृतिके कुछ तत्त्व फूलोंका वाना पहने मुझे बुला रहे हैं—प्रकाश, अग्नि, जल—अग्नि यानी कृष्णचूडा: घने गुच्छोंके ये लाल-लाल कलगीदार फूल सचमुच जंगलमें आगकी लपटोंका भ्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैदा कर सकते हैं। वाह क्या नजाकत है, क्या रवानगी है घंटीनुमा इन सफेद पुष्प गुच्छोंमें। नाम भी है जल—गंगाका निर्मल बहता पानी . . .

अरे उस तरफ घंटियोंकी तरह झूमते उन गुलाबी फूलोंकी शानका क्या कहना—शायद हिन्दीमें इसे जख्मे हयात कहते हैं, नहीं भई, इस रूप, इस रंगके साथ जख्म शब्दका उच्चारण कैसा लिजलिजा-सा लगता है, देखें जरा इनका भागवत नाम—परियोंके जगत्में रोशनी, वाह कितना कलात्मक, कितना सुरुचिपूर्ण नाम! दमभरके लिये उन रोशनियोंके सहारे मैं परी जगत्की सैर कर आयी, आंख खुली तो सामनेकी मेजके ऊपर तख्तीपर जड़ा देखा—भगवान्को प्रिय पुष्प—हल्के बैंगनी रंगके इन फूलोंको अंग्रेजीमें वाटर हायसिंथके नामसे जाना जाता है—खिलते हैं तो इतनी बहुतायतमें कि तलैयाके चप्पे-चप्पेपर छा जाते हैं। पर्चेपर लिखा है—प्राणमें श्रीकृष्णकी लीला—सच ये श्रीकृष्णके फूल हैं, इनकी एक पंखुड़ी औरोंसे अलग-थलग विभिन्न रंगोंकी छटा दिखलाती हुई कृष्णके मयूरपंखकी याद दिलाती है। पासमें पीली सुनहरी बोगेनवीलियाकी लड़ियां आंखें जुड़ा रहीं हैं—ये हैं भागवत सुरक्षा—इन फूलोंकी बनावटोंमें इस अर्थकी गहराई छिपी है, ये फूल जिस तरह कागजी आवरणमें ढके रहते हैं उसी तरह क्या भागवत सुरक्षा हमेशा हमें अपने दोनों हाथोंकी ओटमें नहीं लिये रहती! यह तो जाना-पहचाना बागोंमें खिलनेवाला फूल है, याद आया, इसे तो शंखपुष्पी कहते हैं, गहरे बैंजनी रंगका यह फूल अपनी बनावटमें शंखका लघु रूप ही मालूम होता है लेकिन मैं तो इसके दूसरे नामको जाननेके लिये लालायित हूं—राधाकी चेतना—वाह! राधा यानी श्रीकृष्ण भगवान्के साथ पूर्ण लगावका प्रतीक। जैसे शंखध्वनि मंदिरोंमें गूंज-गूंज उठती है उसी तरह यह फूल भी श्रीकृष्णके प्रति राधाके प्रेमको वातावरणमें गुंजारित कर रहा है। इस पौधेको कौन भारतीय नहीं जानता—घर घर तुलसीका चौरा पूजा जाता है—तुलसीके बिना पूजा अधूरी, प्रसाद अपूर्ण रह जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है—इसका नाम है भक्ति। तुलसी यानी भक्ति—शब्द निःशब्द हो गये हैं और मैं मन-ही-मन मां भगवतीके चरणोंमें सिर नवा आगे कदम बढ़ाती हूं—एक छोटा-सा गलियारा पार कर दूसरे कमरेमें घुसते ही पीपल, नीमसे भेंट होती है। सखि, तुम शायद मन-ही-मन कह रही हो कि सचमुच बौरा गयी यह। कमरेमें इन महा वृक्षोंके दर्शन! हां छोटे-छोटे गमलोंमें इन छायादार बड़े वृक्षोंने वामन रूप ले रखा था। मनुष्य भी अपनी कलाके कैसे-कैसे खेल दिखाता है! नीमपर पर्ची झूल रही थी आध्यात्मिक वातावरणकी। ऐसा वातावरण जो समस्त गंदगीको निकाल बाहर करता है—मन-ही-मन बुदबुदा उठी, सचमुच यथा नाम तथा गुण।

आगे कदम उठे ही थे कि नजरोंके सामने एक नयी दुनिया खुल गयी—जित देखो तित गुलाब ही गुलाब सुन्दर-सुन्दर फूलदानोंमें सजे मानों मुझे मूक निमंत्रण दे रहे थे—आओ आओ, जरा हमारे रूपको निहारो, गंधके समुद्रमें डुबकियां लगाओ, कलाके गलियारोंमें विचरो—

भला ऐसे मधुर निमंत्रणको अस्वीकार करनेकी हिम्मत कौन मानव रखता है—

फूलोंके राजा गुलाबको कहीं मैं शौख और अपने रूपपर नाज करनेवाला न समझ बैठूं, इसके पहिले इनका सच्चा अर्थ माताजीके शब्दोंमें आंखोंके सामने खिल उठा—"गुलाब—इनके रूप रस गंधकी महान् पूर्णता एक अभीप्साको अभिव्यक्त करती है और यह चैत्य उपहार है।"

सुगन्धके सागरकी पहली लहरके स्पर्शपर देखा—तश्तरीमें छोटी-छोटी किश्तियोंकी न्याई गुलाबी देसी गुलाब बह रहे हैं। सुगंधको हृदय तक भरनेके लिये झुकती हूं कि पास पड़ी पर्ची महककर बोल उठती है—'प्रेममय समर्पण' और मेरा मन कह उठता है, सच प्रेममय समर्पणकी नैयाके सहारे मानव दिव्य नदीके तटपर लग सकता है।

आंखें उठीं और सामने गहरे स्वस्थ लाल रंगका गुलाब मुस्करा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठा। आंखों ही आंखोंमें उसका अभिवादन कर पास पहुंची तो क्षण भरके लिये उसकी पूर्णतापर किंकर्तव्यविमूढ़ हो उठी और सोनेमें सुहागा जैसी चमक रही थीं पंखुड़ियोंपर पानीकी कुछ बूंदें। नीचे लिखा था, भागवत प्रेममें बदले हुए मानव आवेश—काश! धरतीके जीवनमें यह एक जीता-जागता तथ्य बन जाये!

लगता है शुभ्र ज्योत्स्ना उतर आयी है धरापर, या कोई पंखहीन देवदूत खड़ा मन्द-मन्द मुस्कुरा रहा है। पास जाती हूं, श्वेत गुलाब साक्षात् निष्कलंकताकी मूर्त्ति बना खड़ा है, नाम भी उतना ही पवित्र—भगवान्‌के लिये सर्वांगीण प्रेम।

गुलाबोंकी दुनियासे निकलना कितना मुश्किल था, न कदम साथ दे रहे थे न दिल, लेकिन सुना था कि आज प्रदर्शनीका अंतिम दिन है, पूरी न देख पायी तो . . . इसी भयसे कदम आगे उठे नहीं कि एक चिर परिचित खुशबूने ठिठका दिया—अरे यह तो हरित चंपाकी तेज सुगन्ध है, पर्चीपर लिखा था—स्वच्छ मन और उसके गोल सुगंधित फलोंका नाम था—तर्क, वाह! सचमुच तर्क करनेके लिये पहली आवश्यकता है स्वच्छ मनकी।

अरे ये भी फूल हैं क्या? नारंगी लालसे लंबे लंबे—सच, विचित्र हैं और नाम क्या है तेज जबान! इसीलिये तो यह रूप, यह रंग!

आगे बढ़ी कि सामने गत्तेपर लिखा पाया—हम इन्हें खाते हैं, इनका उपयोग करते हैं—अह हा, कैरी यानी आम—जबान पनियाने लगी और तभी नजरोंके सामने चमक उठा—भागवत ज्ञान। बाप रे! कहां इतना बूता मुझमें कि इसे आत्मसात् कर सकूं—वाह! इस खुशबूदार हरी मिर्च का नाम देखूं जरा—'मार'! सच, कोड़ोंकी मारकी तरह जब जबानपर पड़ती है तो आदमी सी-सी कर उठता है। उधर हल्दी अपना रूप संजोये खड़ी थी हल्दी यानी शांति—शांति, जिसके प्रभावसे समस्त रोग शोक दूर हो जाते हैं। तभी तो औरतें न केवल इसका केवल खाने-पीनेकी चीजोंमें इस्तेमाल करती हैं बल्कि त्वचापर लगाकर कांतिके चार चांद भी लगाती हैं। अरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाह, कमाल कर दिया मांने भी। करेलेको नाम दिया मधुरता—लेकिन सचमुच, रक्तको स्वच्छ करनेके लिये इससे मधुर और क्या है? इधर अंगूरके गुच्छोंने बरबस मन मोह लिया—नाम है—भागवत आनंद—आह! उमर खैयाम यह नाम सुनकर सुराकी जननीपर वारि-वारि जाते।

सखी, अबकी बार नजर उठायी और वे टिक गयीं इस वाक्यपर—प्रभो, तूने इन फूलोंमें जादुई गुण भर दिया है, ये हर जगह केवल तेरी ही उपस्थितिकी चर्चा करते हैं, ये धरतीपर अपने साथ तेरी ही मुस्कान लाते हैं।

प्रदर्शनीसे निकलते-निकलते मन झूम-झूमकर गा उठा—

हर शाखमें बसा है
हर जर्रेमें रमा है
हर फूलमें तेरा ही
जल्वा झलक रहा है...

—वन्दना

अमृत-बिन्दु

मैं अपने प्रेमीके आनंदमें मत्त हो गया और और मैंने संसारके राजपथपर ही अपने शरीरसे संसारका जामा उतार फेंका। मैं भला इस बातकी परवा क्यों करूं कि संसारी लोग मेरा उपहास करते हैं और धर्मान्ध अपना मुंह फेर लेते हैं?

*

तेरे प्रेमीके लिये, हे भगवान्! संसारकी गाली जंगली मधु है और जनताका पत्थर मारना शरीरपर ग्रीष्मकालकी वर्षा है। कारण, क्या तू स्वयं ही गाली नहीं देता और पत्थर नहीं मारता, क्या तू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही उन पत्थरोंमें रहकर मुझे मारता और चोट नहीं पहुंचाता ?

*

भगवान्‌में दो ऐसी चीजें हैं जिन्हें मनुष्य अशुभ कहते हैं, एक तो वह जिसे वे एकदम समझ ही नहीं पाते और दूसरी वह जिसे वे ठीक-ठीक नहीं समझते तथा जिसे पाकर दुर्व्यवहार करते हैं; जिस चीजको वे अंधेकी भांति व्यर्थसे रूपमें समझनेकी चेष्टा करते हैं तथा अस्पष्ट रूपमें समझते हैं केवल उसे ही वे शुभ और पवित्र कहते हैं। परंतु मेरे लिये तो उनके अंदरकी सभी चीजें प्रिय हैं।

*

हे मेरे भगवान्, वे कहते हैं कि मैं पागल हूं, क्योंकि तेरे अंदर मुझे कोई दोष नहीं दिखायी देता; परंतु मैं यदि सचमुच तेरे प्रेममें पागल हूं तो मुझे सयाना नहीं बनना।

*

"भूल-भ्रांति, मिथ्यात्व, पद-स्खलन!" वे चिल्लाते हैं। कितनी उज्ज्वल और मनोरम हैं तेरी भूलें, हे प्रभु! तेरा मिथ्यात्व सत्यकी रक्षा करता और उसे जीवित बनाये रखता है; तेरे पदस्खलनोंसे संसार पूर्ण बनता है।

*

जीवन, जीवन, जीवन—आवेगोंको चिल्लाते हुए सुनता हूं; भगवान् भगवान्, भगवान्—आत्माका उत्तर हैं। जबतक जीवनको एकमात्र भगवान्‌के रूपमें नहीं देखता और प्यार नहीं करता तबतक स्वयं जीवन तेरे लिये एक मुहरबन्द आनंद बना रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीर्वाण-वाणी

विद्युत्प्रहार-प्रतिमा क्षमा मता रवौ स्थिते नश्यति सा तमो यथा।
आत्मार्पणं पेषण-चक्रिकान्तरे सा दुर्लभा प्राप्स्यति तुष्टिसेवनात् ॥१॥

सहनशीलता बिजली और गाज समान (कठोर परीक्षा व श्रमकी वस्तु) है, सहनशीलता मध्याह्नोंमें अंधकारके समान (असंभव-सी बात) है। सहनशीलता अपने-आपको चक्कीमें पीसनेके समान है। (रे मनुष्य! यदि तू) संतोषसे काम ले तो वह (सहनशीलता) स्वयं मिल जाएगी।

तिक्तं मधुर-तुल्यं भो! मधुरं गरलायते।
येनाऽऽस्वादितं कष्टं, मधुरं सुखमाप्यते।
कृतमाराधनं येन, निष्ठया दृढया भृशम्।
स एव सफलीभूतः स्वस्य लक्ष्यस्य प्रापणे ॥२॥

(कभी-कभी कड़वा मीठा और मीठा जहर (समान कड़वा) होता है। (इसलिये रे मनुष्य!) जिसने जितना कष्ट सहा (कटुताको चखा) और एक निष्ठासे आराधना की, वह अपने उद्देश्य (मंतव्य) को प्राप्त करनेमें सफल हो गया।

त्वमन्धवद् भ्राम्यसि लक्ष्यहीनस्तवान्तराले स्थित एव शंकरः।
नान्यत्र लभ्यं शिव-दर्शनं त्वया विश्वासमातिष्ठ मदीयवाक्ये ॥३॥

रे मनुष्य! तू क्यों अंधेकी तरह इधर-उधर भटकता है? तेरे हृदयमें ही शिव स्थित हैं, कहीं और शिवके दर्शन तुझे नहीं होंगे। मेरे इस सहज कथन पर तू विश्वास कर।

—भुवनवाणी प्रेस लखनऊसे प्रकाशित 'लल्द्यद'से साभार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जीवन लक्ष्यहीन होता है वह सुखहीन भी होता है। तुम्हारा लक्ष्य होना चाहिये उच्च और विशाल, उदार और उन्मुक्त और फिर तुम्हारा जीवन तुम्हारे लिये और दूसरोंके लिये भी बहुमूल्य हो जायगा।

— श्रीमां

सहारनपुर सर्विस स्टेशन

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Love in her was wider than the universe,
The whole world could take refuge in her single heart.

Sri Aurobindo

079504

Arvind Exports (P) Ltd.

Exporters of Engg. Goods, Pesticides, Chemicals, Ceramics, Readymade Garments & Handicrafts etc.

Calcutta Head Office :

75c, Park Street
Calcutta - 700 016
INDIA

Bombay Office :

76, 77 Atlanta, Nariman Point
Bombay - 400 021
INDIA

Phones:

Offi: 240277 ● 240367
Resi: 814512
Telex: 011-4104
Gram: "ARVIEXPO"

Offi: 249065 ● 248642
Resi: 478368
Telex: 021-7984
Gram: "AUROEXPORT"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A happy beginning
a good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

074504

New Horizon Sugar Mills (Pvt.) Ltd.

Pondicherry

Telegram : 'SAKAR'
Phone : Town Office : 4280
Factory: 4423 4424

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

अंग्रेजीमें सोसायटीकी रजत-जयंती स्मारिका १९ सितंबरको प्रकाशित हुई थी। वह सभी शाखाओं और केंद्रोंको भेजी जा रही है।

सावित्रीके बारेमें हुताके चित्रोंके विडियोका १५ अक्तूबरको 'बीच आफिस'में प्रदर्शन किया गया।

'शब्द'ने सिंगापुरके पुस्तक मेलेमें भाग लिया (३० अगस्तसे ९ सितंबर ८५)। बहुत-से लोगोंने माताजी और श्रीअरविंदकी पुस्तकोंमें रुचि दिखलायी। पुस्तकोंकी प्रदर्शनी सज्जाके लिये 'शब्द' को दूसरा पुरस्कार मिला।

हैदराबाद आकाशवाणीने श्री संजीव रावका भाषण तेलुगुमें प्रसारित किया। विषय था, 'शिक्षाके बारेमें श्रीअरविंद'।

बड़ौदामें श्रीअरविंद निवास १५ अगस्तको श्रीअरविंदका जन्म-दिवस मनानेके लिये खूब सजाया गया। सावित्री पाठ, ध्यान, मार्चपास्ट आदिका कार्यक्रम रहा। सोसायटीके शारीरिक शिक्षण विभागने अभी हालमें एक मदर्स ग्रुप बनाया है, उसने पहली बार अपना प्रदर्शन किया। माताजी और श्रीअरविंदके चित्रोंका और नरेन्द्र पटेलकी चित्रकारीका प्रदर्शन भी हुआ और आश्रमकी फिल्म दिखलायी गयी।

रतलाममें ५ अक्तूबरको चंपकलालजी श्रीअरविंद सोसायटी शाखा रतलाममें पहली बार आये। इस अवसरपर तीन कार्यक्रम आयोजित किये गये। अपराह्नमें उन्होंने श्रीमातृविद्यामंदिरके सभी बच्चोंको मिठाई बांटी। शामको उस भूमिपर एक संक्षिप्त कार्यक्रम आयोजित किया गया जो सोसायटीके भावी-आध्यात्मिक और शैक्षिक कार्यके लिये अर्पित की जा रही है। संक्षिप्त ध्यानके बाद भूमि अर्पणका संकल्प, प्रदाताके द्वारा किया गया और चंपकलालजीने सभीको प्रसाद दिया। रातको एक सभामें छोटे नारायणजी शर्माका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

भाषण हुआ। विषय था, 'वर्तमान संदर्भमें श्रीअरविंद'। भाकी अध्यक्षता बड़ौदा शाखाके अध्यक्ष अम्बाप्रेमीजी ने की। सभी कार्यक्रमोंमें अच्छी उपस्थिति थी।

पूर्व कलकत्ताके क्षेत्रीय सोसायटी केंद्रने सोसायटीकी रजत-जयंतीके सिलसिलेमें १९ सितंबरको बोस सरणीके ध्यान-केंद्रमें और २२ सितंबरको श्यामा प्रसाद हालमें समारोह किये।

बांकुड़ामें १९ सितंबरको रजत जयंती दिवस मनाया गया। वहांके डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेटने एक बस स्टेंडका उद्‌घाटन किया।

बीजापुर (कर्णाटक)में श्रीअरविंद सोसायटीने आदर्श ज़ीवन शिविरका आयोजन किया (४ से ८ अक्तूबर)।

मातृवाणी— अहमदाबादकी सोसायटी शाखाने माताजीके ग्रंथोंके १५ खंडोंका गुजराती अनुवाद प्रकाशित कर दिया है। ये खंड [illegible]से या सेल्स एम्पोरियम अहमदाबाद–३८०००६ या बड़ौदा–३९०००१से ४०० रुपयेमें मिल सकते हैं। पैकिंग, रेल भाड़ा या डाक व्यय अलग।

हमारे कुछ प्रकाशन

श्वेत कमल—माताजीका परिचय	...	२०.००
लाल कमल—श्रीअरविंदका परिचय सजिल्द	...	३५.००
अजिल्द	...	३०.००
गीताकी भूमिका—श्रीअरविंद	...	४.००
श्रीअरविंद—जीवन और दर्शन	...	५.००
श्रीअरविंद और उनका आश्रम	...	५.००
सप्त चतुष्टय—श्रीअरविंद	...	४.००

संपादक पुरोधा एवं अग्निशिखा, पांडिचेरी–६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2009

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri